४

# पत्र व्यवहार

जमनालाल बजाज

का अपनी पत्नी जानकीदेवी बजाज से

कृपया यह ग्रन्थ नीचे निर्देशित तिथि के पूर्व अथवा उक्त तिथि तक वापस कर दें। विलम्ब से लौटाने पर प्रतिदिन दस पैसे विलम्ब शुल्क देना होगा।

जमनालाल बजाज सेवा-ट्रस्ट-माला-७



# पत्र-व्यवहार

## भाग ४

--स्व० जमनालाल बजाज का अपनी पत्नी जानकीदेवी के साथ--

•

पृष्ठभूमि

**जानकीदेवी बजाज**

संपादक

**रामकृष्ण बजाज**

•



१९६३

मुख्य विक्रेता

**सस्ता साहित्य मंडल**

**नई दिल्ली**

जमनालाल बजाज सेवा-ट्रस्ट, वर्धा
की ओर से
मार्तण्ड उपाध्याय,
द्वारा प्रकाशित



पहली बार : १९६३
मूल्य
साढ़े तीन रुपये



मुद्रक
नेशनल प्रिंटिंग वर्क्स,
(दि टाइम्स ऑफ इंडिया प्रेस)
१० दरियागंज, दिल्ली

# निवेदन

जमनालाल सेवा ट्रस्ट-ग्रन्थमाला का यह सातवां खण्ड है। इससे पहले 'विनोवा के पत्र' नाम का छठा खण्ड आपकी सेवा में पहुंच चुका है। इस माला में प्रस्तुत ग्रंथ पत्र-व्यवहार-कड़ी की यह चौथी पुस्तक है। इससे पहले इस कड़ी में देश के राजनैतिक नेताओं से, देशी रियासतों के कार्यकर्ताओं से तथा रचनात्मक कार्यकर्ताओं से हुआ पिताजी का पत्र-व्यवहार तीन खण्डों में निकल चुका है।

इस पुस्तक में पूज्य पिताजी (श्री जमनालाल वजाज) और माताजी (श्रीमती जानकीदेवी वजाज) के वीच हुआ पत्र-व्यवहार संकलित किया गया है। पहले तीन भागों से यह पत्र-व्यवहार एकदम भिन्न प्रकार का है। यह केवल एक पति-पत्नी के वीच का पत्र-व्यवहार नहीं है, बल्कि इन पत्रों में माताजी और पिताजी के जीवन के विभिन्न पहलुओं का दर्शन भी होता है।

यह पत्र-व्यवहार सन् १९११ से प्रारम्भ होता है, जब पिताजी की अवस्था २० वर्ष की और माताजी की अवस्था १६ वर्ष की थी। माताजी मामूली लिख-पढ़ लेती थीं (माताजी के शुरू के कुछ पत्र तो मारवाड़ी भाषा में ही लिखे गये थे।) और पिताजी की शिक्षा भी बहुत ही साधारण हुई थी, लेकिन व्यवहार-ज्ञान की दोनों में कमी नहीं थी।

पिताजी का जीवन एक साधक व योगी का रहा जिसमें गांधीजी की आज्ञा का सूक्ष्मता के साथ पालन करते हुए उनकी मदद से अपनी और अपने निकट के लोगों की आध्यात्मिक व नैतिक उन्नति करते रहने का सतत प्रयत्न चालू रहता था। ऐसे व्यक्ति की पत्नी होकर उनके साथ क़दम से क़दम मिलाकर चलने में कितनी मुसीबतों का सामना करना पड़ सकता है, यह तो अनुभवी लोग ही जान सकते हैं। यद्यपि माताजी की शैक्षणिक व राजनैतिक पृष्ठभूमि एकदम जुदा थी, फिर भी उन्होंने वड़ी सफलता के साथ पिताजी के सत्प्रयत्न में अखीर तक साथ दिया। इसमें माताजी की स्पष्टवादिता, बुद्धिशीलता तथा तत्त्वनिष्ठा और पिताजी की साधक वृत्ति,

संतुलन, सहनशीलता एवं प्रेम पूरी तरह उभरकर पाठकों के सामने आता है। किसी भी बात को अपनाने के बाद माताजी उसके पीछे पूरी लगन से लग जाती थीं, परिणाम फिर चाहे कुछ भी क्यों न हो, उसकी उन्हें परवा नहीं रहती थी। यद्यपि माताजी पर पति-भक्ति का इतना असर था कि अधिकतर बातें तो उनकी तर्क-बुद्धि में आसानी से उतर जाती थीं; लेकिन इसके बावजूद जो बातें उनकी तर्क-बुद्धि में नहीं उतरती थीं, उन्हें वे आसानी से ग्रहण नहीं करती थीं। दोनों के विचारों की इस मधुर मुठभेड़ की झलक इन पत्रों में कई स्थानों पर पाठकों को दिखाई देती है।

इस संग्रह में वही पत्र दिये जा सके हैं, जो आजादी की लड़ाई के दिनों की उथल-पुथल से बच पाये। प्राप्य पत्रों में से प्रायः सभी महत्त्वपूर्ण पत्र ले लिये गये हैं। व्यक्तिगत विषय की वजह से पत्रों को छोड़ा नहीं है। माताजी की भी राय रही कि पत्र छापने ही हों तो सभी तरह के छपने चाहिए। इसलिए इस पुस्तक में कई पत्र एकदम व्यक्तिगत भावों को प्रदर्शित करते हैं तो भी उन्हें छाप दिया गया है।

वास्तव यें पिताजी का सारा जीवन ही इतना सार्वजनिक हो गया था कि उसमें अपनी पत्नी के संदर्भ में भी कुछ व्यक्तिगत अथवा गोपनीय नहीं रह गया था। अतः निजी होते हुए भी इन पत्रों का सार्वजनिक महत्त्व है।

हमारा विश्वास है कि घरेलू तथा सामाजिक समस्याओं में दिलचस्पी रखनेवाले पाठकों को तो ये पत्र उपयोगी होंगे ही, साथ ही राजनीति के, विशेषकर गांधी-युग के स्वतंत्रता-संग्राम के इतिहास के, विद्यार्थियों के लिए भी ये लाभदायक होंगे।

इन पत्रों की पृष्ठभूमि माताजी ने स्वयं लिख दी, इससे इनकी भूमिका समझने में पाठकों को मदद मिलेगी।

इन पत्रों की पांडुलिपि तैयार करने में हमें सर्वश्री रतनलाल जोशी, मदनलाल जैन तथा मुकुल उपाध्याय की जो मदद मिली है, उसके लिए हम उनके आभारी हैं।

—संपादक

# पृष्ठभूमि

इन पत्रों के बारे में क्या लिखूं ! नौ वर्ष की उम्र में जमनालालजी से विवाह हुआ। कच्ची उम्र में ही अपने पीहर जावरा को छोड़कर अपरिचितों के बीच रहने वर्धा आई। जावरा में तो मैं खुली थी, आज़ाद थी, इधर-उधर खेलती-कूदती थी। लेकिन यहां तो घूंघट में ही बैठे रहना पड़ता। ऐसा लगता, किसी जेल में छोड़ दी गई हूं। वर्धा में पल-पल भारी लगता। धार्मिक संस्कार मुझे बचपन में मां से मिले थे और ये संस्कार उम्र के साथ बढ़ते गए। जो भी किताब पढ़ती, उसे भगवान की वाणी समझकर उसकी सब बातों का पालन करने का प्रयत्न करती, जैसे पति या बड़ों के बाद भोजन करना, पति की जूठी थाली में भोजन करना, पति के अंगूठे को धोकर पीना आदि।

जमनालालजी भी धार्मिक प्रवृत्ति के थे। यह वृत्ति उन्हें दादी सद्दीबाईजी से विरासत में मिली थी। यद्यपि घर में धन तो भरपूर था, लेकिन वे उसके मोह से अलिप्त ही रहे। उनका जन्म सीकर में कनीरामजी के यहां हुआ था। पांच वर्ष की उम्र में ही वर्धा में बच्छराजजी के यहां गोद आए। एक बार दादा पोते पर नाराज हो गए। जमनालालजी ने बच्छराजजी के लिए लिखकर पत्र छोड़ दिया कि मुझे आपके धन से मोह नहीं है और वह साधू होने के विचार से घर त्याग कर चले गये। बाद में बच्छराजजी के बहुत समझाने पर वह वापस आने को तैयार हुए।

विवाह के आठ-दस वर्ष बाद तक बिलकुल परदे में ही रही। पत्र लिखने का सवाल ही कहां आता उस समय ! जमनालालजी कहीं बाहर जाते तो दूकान पर पत्र आ जाता था और वहीं से मुझे समाचार मिलते थे। कुछ समाचार उन्हें देने होते तो दूकान के द्वारा ही भिजवाती। उस समय की मर्यादा ही कुछ ऐसी थी, यहां तक कि मुनीम-गुमाश्तों के सामने बच्चों को भी गोद में नहीं लेते थे।

एक बार जमनालालजी कलकत्ता गये, वहां साइकिल चलाते हुए गिर पड़े। घुटनों में चोट आई, दो महीने के करीब खाट पर पड़े रहे। तब ज़रूर पत्र-व्यवहार चला। उसके अलावा कोई ज़रिया भी तो नहीं था उनके हाल-चाल जानने का। लेकिन उस पत्र-व्यवहार में स्वास्थ्य-संबंधी उल्लेख ही रहते थे, और कुछ नहीं।

फिर गांधीजी आये हमारे जीवन में—तूफान की तरह। जमनालालजी ने उन्हें अपने पिता के रूप में ग्रहण किया और आज्ञाकारी पुत्र की तरह उनके विचारों के अनुसार अपनेको ढालने का प्रयत्न करने लगे। गांधीजी के विचारों का जमनालालजी पर गहरा असर पड़ा। अब वह अक्सर बाहर रहने लगे—बापू की रचनात्मक प्रवृत्तियों में पूरा हिस्सा लेते। तब पत्रों का यह सिलसिला शुरू हुआ। उन्होंने मेरा जीवन अपने विचारों के अनुसार ढालना शुरू किया। लेकिन वह अपने विचार से समझाकर ही गले उतारते थे। जो बात अच्छी होती थी, उस ओर इशारा-भर कर देते थे। लेकिन मुझपर पति-भक्ति का तो रंग चढ़ा हुआ था। उनका पत्र मेरे लिए वेद-वाक्य जैसा होता था। इस सिलसिले में उनके एक पत्र का ध्यान आता है, जिसने मेरे जीवन को नया मोड़ दिया। जमनालालजी बापू के साथ दौरे में थे। वहीं से उन्होंने मुझे पत्र लिखा कि बापू का आदेश है कि गहने त्याग दो। उन्होंने लिखा—"बापू ने आज के भाषण में कहा कि सोना कलि का रूप है। दूसरों में ईर्ष्या पैदा करता है, चोर का मन चोरी करने का होता है, शरीर पर मैल जमता है, नाक-कान में दुर्गन्ध आती है, ब्याज का नुकसान होता है।"

ये बातें वह रूबरू कहते तो शायद कुछ बहस हो जाती। लेकिन उनका पत्र तो मेरी जन्म-पत्री। बस, चिट्ठी मेरे सामने थी और मैं एक-एक गहना उतारकर सामने तख्त पर रखती जा रही थी, यहां तक कि पैर की चांदी की कड़ी भी उनकी इच्छा होने के कारण हिम्मत रखे उतारकर रख दी। मारवाड़ी समाज में प्रथा के अनुसार यह कड़ी मरने पर ही खोली जाती थी। ग़रीब-से-ग़रीब के पैर में भी कड़ी तो रहती ही थी।

शुरू में गांधीजी के विचार बहुत क्रान्तिकारी लगे। लेकिन ज्यों-ज्यों समझ बढ़ी, मुझपर उनका असर होने लगा। जमनालालजी के पत्रों का इस परिवर्तन में बहुत बड़ा हाथ था। सन् १९२१ में मैंने उन्हें लिखा, "अपने तो प्राण ही बापू के अर्पण हैं। दूसरी तो बात ही क्या! मुझे तो स्वप्न में भी बापू ही दीखते हैं। सोकर उठती हूं तो खादी के कपड़े पहने हुए। परमात्मा से आशीर्वाद मांगती हूं कि बापूजी का आत्मबल बढ़े। उन्हें कार्य में सफलता हो। आपकी इच्छानुसार आपको तथा मुझे वह सद्बुद्धि प्रदान करे।"

जमनालालजी के जीवन में सादगी, पवित्र आचरण और उच्च संस्कारों का बहुत महत्त्व था। हमारे बच्चे भी इन्हीं संस्कारों में पलें, इसका वह बहुत ध्यान रखते थे। उनके लगभग सब पत्रों में इस बात का उल्लेख रहता था, और मैं भी उनके आदेश के अनुसार ही बच्चों को उचित वाता-

वरण में रखने का प्रयत्न करती थी। हमारे परिवार में तीन पीढ़ी के बाद बच्चे हुए थे। उनपर सबका लाड़-प्यार रहना स्वाभाविक ही था। फिर भी मैंने भावना और श्रद्धावश बच्चों को विनोबाजी के पास सीखने के लिए छोड़ दिया। केवल लड़कों को ही नहीं, पन्द्रह-पन्द्रह बरस की लड़कियों को भी उनके हवाले कर दिया। जहां विनोबाजी के आश्रम में लड़कों का रहना कठिन था, वहां लड़कियों की तो बात ही क्या! सबसे समान परिश्रम कराया जाता था। जमनालालजी को बच्चों की इस उन्नति से स्वभावतः बहुत खुशी होती थी और अपने पत्रों में वह इस बात का उल्लेख करते थे। इससे मेरा भी उत्साह बढ़ता। पति को जिस बात से खुशी होती, उसमें सहायक होने का संतोष रहता।

अब जमनालालजी बापू के 'पांचवें पुत्र' तो बन ही गए थे, बापूजी ने उनका नाम शादीलाल भी रख छोड़ा था, कारण; जमनालालजी को जान-पहचान-वालों के लड़के-लड़कियों के लिए उचित संबंध खोजकर उनकी शादी कराने का बहुत शौक था। ऐसे कई विवाह उन्होंने कराए। वह एक डायरी रखा करते थे, जिसमें शादी के उम्मीदवार लड़के-लड़कियों के नाम लिखे रहते थे। इस पत्र-व्यवहार के कई पत्रों में उनकी इस दिलचस्प प्रवृत्ति के भी उल्लेख मिलेंगे।

जमनालालजी अपने अतिथि-सत्कार के लिए बहुत प्रसिद्ध थे। देश के बड़े-से-बड़े नेता से लगाकर राजे-महाराजे और साधारण कार्यकर्त्ता वर्धा आते तो बजाजवाड़ी में ही ठहरते। किसी असमंजस में पड़े व्यक्ति को तांगेवाले ही बजाजवाड़ी ले आते। लेकिन आनेवाला कोई भी हो, जमनालालजी सबकी सुख-सुविधा का पूरा खयाल रखते। उन्होंने अपने बाल-बच्चों, सेक्रेटरियों तथा नौकरों-चाकरों को तो पूरी व्यवस्था रखने की हिदायत दे ही रखी थी, पर स्वयं भी जबतक सारी व्यवस्था देख नहीं लेते, उन्हें संतोष न होता था। वे हर व्यक्ति की रुचि का भोजन बनवाते तथा उसके आराम का पूरा खयाल रखते।

जब जमनालालजी वर्धा के बाहर रहते और कोई मेहमान आनेवाला होता तो पत्र में पूरी हिदायत लिखकर भेजते कि उन्हें किसी तरह की तकलीफ़ न हो। वह चाहे कहीं भी रहते, अपने मेहमानों का खयाल उन्हें बराबर रहता था।

जमनालालजी का हृदय त्याग, प्रेम और उदारता का अपार समुद्र था। जहां तक त्याग का प्रश्न था, मैं समझती हूं, मैंने अपने-आपको काफी उसके अनुसार ढाला। हालांकि यह अतिशयोक्ति ही थी, लेकिन वह मुझसे

कहा करते थे कि त्याग में तो तुम मुझसे आगे हो। और उसमें बड़ी बात कौनसी थी ! मैं जो कुछ भी थी, सब उन्हींके कारण से थी। एक बार उन्होंने बापू के सामने अपनी सारी ज़मीन-ज़ायदाद छोड़ने की बात कही। बापू ने मुझे बुलाकर कहा कि यह ज़मीन-ज़ायदाद तुम ले लो। मैंने कहा, "बच्चे अपने भाग्य का खाएंगे। मेरा भाग्य तो इनके साथ बंधा है। जैसा ये खाएंगे-पहनेंगे, वैसा ही मैं भी खाऊंगी-पहनूंगी। जिस सांप को ये छोड़ रहे हैं, उसे मैं गले में क्यों लपेटूं !"

लेकिन जहां तक उदारता व प्रेम का प्रश्न था, मैं उसे व्यावहारिकता से परे नहीं अपना सकी थी। उन्हें तो अपने और पराये बच्चों में समानता लगती थी। महिलाश्रम की लड़कियों की सम्हाल रखते और मुझसे कहते कि इनकी मां बन जाओ। लेकिन मैं दूसरे बच्चों को अपने बच्चों जैसा प्यार कहां कर पाती ! यद्यपि जमनालालजी व बापूजी के प्रभाव के कारण बड़ी-बड़ी बातें तो जीवन में आसानी से उतर गईं—गहना छूटा, घूंघट छूटा, मंदिर में हरिजन-प्रवेश को राज़ी हो गई, खादी पहनी। लेकिन कई छोटी-छोटी बातें गले नहीं उतर सकीं। हर व्यक्ति को कुटुंबी जन के जैसा चाहना—यह मुझसे हो सकना कठिन था। उन्हें मेरा यह स्वभाव अच्छा नहीं लगता था। वह चाहते थे कि उदारता और प्रेम में मैं उनसे भी आगे निकलूं। पर यह मुझसे अंत तक नहीं बन पाया। असल में उनकी अति उदारता की वजह से मुझपर उसका उलटा ही असर पड़ा।

और भी कई बातें ऐसी थीं, जिनसे मुझे बहुत परेशानी होती थी। जमनालालजी के कान और सिर में बहुत दर्द रहा करता था। बहुत इलाज कराया, पर कोई लाभ नहीं हुआ। मेरी झुंझलाहट इसलिए भी थी कि वह अस्वस्थ रहते हुए भी हमेशा नयें-नये झंझट मोल लेते रहते थे। उनको अतिथि-सत्कार और सार्वजनिक कार्य में ही आनन्द और सुख मिलता था। मोटर में, रेल में, सब जगह काम की ही बातें होती रहतीं। मैं चाहती थी कि कुछ आराम करें, पर उनको यह बात क्यों रुचने लगी ! अन्त में वह इतने थक जाते कि मुझे भी उनसे बात करने में दया आने लगती। गुस्सा तो मन में रहता ही, लेकिन क्या करती ! अति प्रेम की इन दो अवस्थाओं में मेरा मन चिड़चिड़ा और शारीरिक रुग्णता के कारण शरीर कमज़ोर रहने लगा। मैं सोचने लगी कि सार्वजनिक काम, मेहमानों का आना-जाना, सेक्रेटरियों और नौकरों से माथापच्ची के कारण ही उन्हें आराम नहीं मिलता और मुझे उनकी सेवा का मौक़ा नहीं मिलता। सो उन्हें परेशान करनेवाली इन सब बातों से मैं चिढ़ने लगी। वह कोई सार्वजनिक काम की बातें

करते या दौरे में साथ चलने को कहते तो मुझे गुस्सा आ जाता। दिनों-दिन दोनों के बीच खींचातानी बढ़ने लगी। वह जानते थे कि यह खींचातानी क्यों है और उसका समाधान करने की कोशिश भी करते, लेकिन उनका जीवन तो पूरी तरह सार्वजनिक हो गया था। वह चाहकर भी उससे कैसे छूटते ! सार्वजनिक कार्य मुझे भी प्रिय थे, लेकिन मैं चाहती थी कि वह इसमें इतने लीन न हो जायं कि शरीर की भी सुध न रहे।

मेरी इस अति चिंता के कारण यदि मैं उनसे कुछ करने को कहती तो वह दुराग्रह की सीमा तक पहुंच जाता। इससे जमनालालजी को भी झुंझलाहट होती और वे कभी-कभी नाराज़ हो उठते।

धीरे-धीरे मेरी अशांति बढ़ती गई। छोटी-मोटी बातों को लेकर असंतोष भी बढ़ता गया और मैं चिड़चिड़ी बनती गई। मेरे स्वभाव को चिड़चिड़ा बनाने में नौकरों ने भी मदद की। जमनालालजी को खुश रखने के लिए तो वे बहुत दौड़-धूप करते, पर मेरी बात की अवहेलना की जाती। जमनालालजी हर तरह से नौकरों को खुश रखते थे और उनके साथ परिवार-जैसा व्यवहार करते थे। उनके प्रति किसी भी प्रकार के अन्याय को वह बर्दाश्त नहीं कर सकते थे। इस तरह नौकरों के कारण भी मन को क्लेश रहता।

जमनालालजी के सेक्रेटरियों का ठाट तो और भी बढ़ा-चढ़ा रहता था। वह हमेशा नये-नये युवकों को सेक्रेटरी बनाते, व्यवहार की बातें सिखाते, उनकी ज़रूरतों का खयाल रखते। जमनालालजी के मित्रों की मांग रहती कि काम सीखे हुए होशियार आदमी उनको भी चाहिए। तब वह अपने सेक्रेटरियों को दे देते और अपने लिए नया रंगरूट खोज लेते। हर दूसरे-तीसरे वर्ष इस तरह उनके सेक्रेटरी बदल जाते थे। नये आदमी को कामकाज सिखाने में जमनालालजी का दिमाग़ खाली होता।

इस प्रकार कई सेक्रेटरी आए और गए। उनमें से कई तो आज बड़ी अच्छी-अच्छी जगहों पर हैं, और अच्छा काम कर रहे हैं। लेकिन कुछ ऐसे भी आए, जिनसे बाद में जमनालालजी को और हम सबको बड़ी तकलीफ हुई। इन सेक्रेटरियों के बीच मुझे रहना पड़ता था। अपने स्वभाव के अनुसार कई सेक्रेटरियों से मेरी बनती कैसे ! जमनालालजी उनको बहुत स्वतन्त्रता देते थे, उनके गुणों को खोजकर उनसे काम ले लेते थे। लेकिन मेरे कारण उन पर घर की बातों और व्यवहार को लेकर कुछ कसावट आती थी। मुझे तो उनमें बुराई और कमियां ही दिखाई देती थीं।

जमनालालजी को मेरे इस व्यवहार से बहुत तकलीफ़ होती थी। वह चाहते थे कि मैं अपने स्वभाव को बदलूं। अक्सर इन बातों को लेकर वह मुझ

पर नाराज़ भी हो जाते, मुझे टोंचते। लेकिन मुझसे दूर चले जाने पर उन्हें पश्चात्ताप होता था। पत्रों में वह ऐसा लिखते भी। मुझे भी अपने व्यवहार पर अफ़सोस होता। इस तरह यह खींचातानी अंत तक चलती रही।

उनके अन्त समय के पत्रों में आध्यात्मिक झुकाव और आत्म-मंथन के संकेत मिलते हैं। वैसे तो वे शुरू से ही योग-भ्रष्ट योगी थे। उनका सारा जीवन त्याग, प्रेम और सत्य की एक साधना थी। २५ वर्ष की उम्र से ही उन्होंने कई मृत्यु-पत्र लिखे थे। पिता बापू और गुरु विनोवा के संपर्क में आने से उनके आध्यात्मिक झुकाव को वल ही मिला। और फिर अखीर के दिनों में माता आनन्दमयी से मिलने के बाद तो उनकी आध्यात्मिक प्रवृत्ति को और भी सहारा मिल गया। वह व्यापारिक व अन्य कार्यों से निवृत्त हो गये। उनका प्रयत्न यही रहता कि ऐसी साधना करें कि अधिक-से-अधिक समय पारमार्थिक कामों और चित्त-शुद्धि में लगे। इसके लिए उन्होंने गो-सेवा का कार्य चुना। नालवाड़ी के पास एक कुटिया उन्होंने वनवाई और वहां रहने लगे। कुटिया का नाम उन्होंने 'जानकी-कुटीर' रक्खा। जैसे-जैसे वहां रहते हुए गो-सेवा का काम बढ़ता गया, उस जगह को गोपुरी कहने लगे।

जमनालालजी का नया जीवन-क्रम देखकर मन कुछ खिन्न रहने लगा। मैं उनके काम में कुछ सहयोग तो दे नहीं पाती थी; उनकी आज़ादी में बाधक न वनूं, इस विचार से खादी के प्रचार-कार्य के लिए सीकर चली गई। कुछ दिन बाद वापस वर्धा पहुंची और गोपुरी जाकर उनके साथ रहने लगी। लेकिन हम दोनों वहां पांच रोज़ ही साथ रह पाये।

११ फरवरी १९४२ को अचानक जमनालालजी की मृत्यु हो गई।

इसमें जमनालालजी के जीवन के विभिन्न पहलू सामने आते हैं—बापू और विनोवाजी के प्रति उनकी श्रद्धा-भक्ति, कुटुम्बी जनों के प्रति उनका वात्सल्य, दूसरों के प्रति उनका स्नेह, कर्त्तव्य-निष्ठा, लोकोपयोगी प्रवृत्तियों में उनका रस और योगदान, आदि; पर एक बात विशेष रूप से साफ होती है और वह यह कि वे अपने जीवन को निखारने के लिए बरावर प्रयत्नशील थे। उस दिशा में उनकी साधना बेजोड़ थी।

इन सारे पत्रों की यह पृष्ठभूमि है। इनसे मेरा जीवन वना है और जब जमनालालजी नहीं हैं, इनको उलटने-पलटने से और पुरानी बातें याद करने से मन को एक प्रकार का समाधान और शांति मिलती है। मैं समझती हूं कि औरों को भी इनके पढ़ने से लाभ होगा।

—जानकीदेवी बजाज

# पत्र-व्यवहार

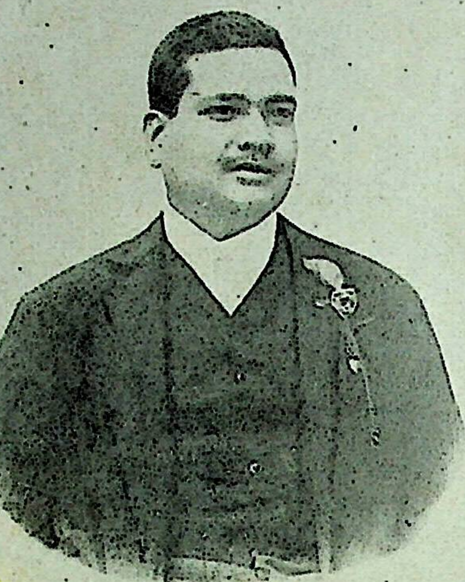
## भाग चार

●

जमनालाल बजाज का अपनी पत्नी
जानकीदेवी बजाज
के साथ

●





रायबहादुर
सेठ जमनालाल बजाज

श्रीमती
जानकीदेवी बजाज

जीवन के पूर्वार्द्ध में

: १ :

श्री लक्ष्मीनारायणजी

वर्धा, (मई १९११)

१०० श्री सिद्ध श्री खुर्जा शुभस्थाने श्रीयुत प्राणनाथ जोग लिखी वर्धा से आपकी दासी का चरण स्पर्श बंचना। यहां वहां श्री लक्ष्मीनाथजी महाराज सदा सहाय हैं। चिट्ठी आपकी आई नहीं, सो जानना। आप प्रसन्न होंगे और आप यहांकी चिंता-फिकर नहीं करते होंगे। यहां सब बहुत राजी-खुशी हैं। मैं भी बहुत राजी हूं। आपकी याद बहुत आती है। मैं जानती हूं जहांतक बनेगा आप जल्दी ही आओगे। परंतु १-२ दिन ज्यादा लगें तो कुछ परवाह नहीं। बस, आपका मन प्रसन्न रहे, आपको तकलीफ़ न हो, इतना ही चाहिए। आप खाने-पीने तथा ठंडाई का इंतजाम बराबर रखते होंगे। मैं भी आपके कहे अनुसार ठंडाई रोज लेती हूं। हरिकिशन की काकी भी यहीं हैं। दत्तूजी की गोविंदी भी यहीं है। रात-दिन रहती है।

आप जयपुर से जो लहरिये लाये हैं, उसमें एक-एक ज्यादा है। सो आप लिखोगे तो हरिकिशन की काकी को गोटा लगाकर एक दे देंगे। ८) तक पड़ जायगा।

कृपा-मेहरबानी जो रखते थे, उससे ज्यादा रखोगे। कोई कमी दीखे तो क्षमा करोगे।

आपको फ़ुरसत मिले तो चिट्ठी का जवाब देना, नहीं तो दूकान में ही आपके हाथ की चिट्ठी राजी-खुशी की आजाय तो जी खुश हो जाय।

इस चिट्ठी को आपको जंचे तो वापस बंद करके रख दें।

संवत् १९६८, मिती जेठ बदी १३

आपकी

बावली

: २ :

वर्धा, २५-७-१३

सिद्धश्री जावरा शुभ स्थान श्री० सौ० प्रिया योग्य लिखी श्री वर्धा से यमुनालाल का सप्रेम बंचना।

'अत्र सर्वत्र शुभं तत्र भूयात्'। अपरंच कृपापत्र तुम्हारा आया। पढ़कर आनन्द हुआ। राजी-खुशी का पत्र दूकान तथा डालू के नाम से देता ही हूं।

कमला बहुत खुश है, लिखा सो ठीक। उसे गोद में ही ज्यादा मत रखना। नीचे फिरने दिया करना। उसके हाथ-पांवों में ताकत बराबर नहीं है। फिरने-खेलने से ताकत आयेगी। कमला की वर्षगांठ के दिन गोठ की और आठ-दस पंडितों को जिमाया, सो बहुत ठीक किया।

मुझे बम्बई से यहां आने के बाद ५-६ दिन सर्दी हो गई थी। पर अब ठीक है। दूध में छुहारा लेने से चली गई। तुम इधर की कोई फ़िकर मत रखना। कमला की याद बहुत आती है। उसकी याद आती है तब थोड़ी देर मन नहीं लगता है। तुमको राखी-पूनम के १-२ दिन पहले यहां पहुंच जाना चाहिए। राखी-पूनम तक एक महीने से अधिक हो भी जायगा, सो ध्यान रहे। अगर सबकी और तुम्हारी इच्छा रक्षा-बंधन वहीं करने की हो तो लिख देना।

डालू किसी तरह की गड़बड़ नहीं करता है, हमने कहा था उसी तरह रहता है, सो ठीक है। उसको राजी रखना। खयाल रखना कि उसे कोई तकलीफ़ न हो। चीज-वस्तु जो चाहिए, डालू से बम्बई लिखवाकर मंगवा लेना। तुम्हारे खर्चने के लिए १५०) की गिन्नी नंदा के साथ भेजी हैं। अगर और चाहिए तो डालू को कह देना। हुंडी भुनवा लेना। किसी जगह कुछ देना वग़ैरा हो, तो बहुत खुशी के साथ देना। किसी तरह का संकोच मत करना। नंदा के साथ पुस्तकें गाने आदि की भेजी हैं, सो बांट देना। मैं अपने शरीर की पूरी संभाल रखता हूं। तुम फिकर मत करना। तुम और कमला बहुत आनंद और खुशी में रहना। जो सामान बम्बई से आगया है, वह सब तुम्हारे आने के बाद ही खोलेंगे।

चिट्ठी देना। मिती श्रावण बदी ७, संवत् १९७० शुक्रवार को लिखी।

जमनालाल का सप्रेम आनन्द बंचना

पुनश्च—कमला को हमारी तरफ से बहुत-बहुत प्यार करना। कहीं देने में व खर्च करने में संकोच मत करना। मेरे अक्षर बराबर पढ़े गये होंगे। जानकारी देना।

: ३ :

वर्धा, ३१-७-१३

सिद्ध श्री वर्धा शुभ स्थान श्रीयुत आप जोग लिखी जावरा से जानकी का प्रणाम बंचना, बहुत आदर के साथ। कृपा-पत्र आपका आया, बांचकर बहुत आनंद हुआ। कारण, आपके हाथ के पत्र का मुझे चाव तो बहुत दिनों से था, पर डरती थी, कहती नहीं थी। आपने लिखा कि पत्र दूकान के तथा डालू के नाम से बराबर देते हैं, सो ठीक है।

कमला को गोदी में ज्यादा रखने की मनाही लिखी, सो आपका पत्र आये बाद से उसे गोदी में ज्यादा लेते-देते नहीं हैं। बालकों में बिठा देते हैं, सो खेलती फिरती है। हाथ और जीभ बहुत चलाती है। पांव-पांव तो अभी ज़रा देर से ही चलेगी। कोई भी बालक बैठा हो तो उसे मारकर भगा देती है। डेढ़-दो बरस के बालकों को तो पास ही नहीं आने देती।

आपका सर्दी-जुकाम मिट गया, पर सोलह आने शरीर बराबर होगा, ऐसी खातरी नहीं होती।

आपने लिखा कि कमला की याद आने पर मन नहीं लगता, सो बांचकर एक बार तो मन में सोच हुआ। बाकी इधर भी जी उलझता है। बार-बार आना होता नहीं। आपने राखी पर बुलाने को लिखा, सो राखी पर तो आने देंगे नहीं। राखी के बाद भेज देंगे। माजी तो कहती हैं कि अभी तो आई हुई-सी लगती ही नहीं है। भादवा बदी अमावस तक चली जाना। श्राद्ध पर तो गये बिना चलेगा नहीं। अगर आपका मन नहीं लगता हो, तो ताकीद कर देना। राखी के एक-दो दिन बाद भेज देंगे, नहीं तो ५-७ दिन बाद आना होगा। डालू को या और किसीको तकलीफ़ न देने की लिखी, सो ठीक है।

नंदा के साथ १५०) रुपये की गिन्नी भेजी, सो पहुंची। रुपया निधड़क खरचने के लिए लिखा, सो ठीक है। पुस्तकें और खिलौने भेजे, सो पहुंचे।

आपने लिखा कि शरीर का पूरा जतन रखना सो ठीक है। बंबई से सब सामान आ गया है। हमारे आये-बाद खोलने की लिखी सो ठीक है। आपने लिखा कि 'कमला को हमारी तरफ से प्यार करना', सो हमने किया। पर आपकी बराबरी थोड़े ही हो सकती है। आपके हाथ के अक्षर बराबर बंच गये। एक बार के बांचने से ही समाचार समझ में आ गये—पर चिट्ठी बांची दो-चार बार। श्रावण वदी १३, बृहस्पतिवार।

प्राणनाथ को

आपकी दासी का प्रणाम वंचना, घणा-घणा मान से।

: ४ :

वर्धा, ४-८-१३

सिद्ध श्री जावरा शुभस्थान सौ० प्रिय पत्नी जानकी महोदया योग्य लिखी श्री वर्धा से यमुनालाल का सप्रेम मंगल वंचना।

"अत्र सर्वत: शुभं तत्र भूयात्"। अपरंच कृपापत्र तुम्हारा श्रावण वदी १३ का आया। बांचकर खुशी हुई। मेरे हाथ का पत्र पढ़ने का चाव तुम्हें बहुत दिनों से था, सो पढ़कर खुशी हुई। मुझे भी तुम्हारे हाथ की चिट्ठी पढ़कर बड़ा आनन्द हुआ। तुम्हारी चिट्ठी निर्मल प्रेम से लिखी रहती है, इसलिए मुझे भी बार-बार पढ़नी पड़ती है। कमला को गोद में अब ज्यादा नहीं रखती हो, सो अच्छा है। बच्चों में खेलती फिरती है, ज़बान और हाथ बहुत चलते हैं, छोटे बच्चों को भगा देती है, यह सब पढ़कर बड़ी खुशी हुई।

श्रीजी उसे आनन्द में रक्खें और दीर्घायु करें। अगर तुम उसकी व्यवस्था सब तरह से अच्छी रखोगी, पवित्र उपदेश देती रहोगी, पुत्री-धर्म बताती रहोगी, तो कमला होनहार पवित्र सुशील कन्या होकर भविष्य में आदर्श स्त्री बन सकेगी।

मेरा स्वास्थ्य ठीक है। फिलहाल थोड़ी सर्दी है। तुम रहती हो, तब तो मैं शरीर की ओर कम ध्यान देता हूं। पर तुम्हारे पीछे शरीर का पूरा ख़याल रखता हूं। तुमने लिखा कि शरीर सोलह आने ठीक होगा, ऐसा भरोसा

नहीं होता है, सो तुम्हारी भूल है । तुम खुद मुझे खुशी के झूठे समाचार लिखती होगी तभी तुमको लगता हैं कि दूसरा भी झूठ ही लिखता हैं ।

मुझे पता चला है कि तुमको सर्दी लगी हुई है । ३-४ दिन दस्त भी लगे और कमला को भी थोड़ी सर्दी है। तुमको वाजिब हकीकत ही लिखनी चाहिए। आगे ध्यान करना ।

तुमको भेजने के लिए मैंने सप्तमी या दशमी का लिखा है । अगर सबकी मंशा यह हो कि राखी पर तुम जावरे ही रहो तो रह जाना और राखी के दूसरे दिन रवाना हो जाना । पर अब जल्दी आ जाना चाहिए । कमला के बिना यहां सूना-सा लगता है । तुम्हारी ओर से समाचार आने पर दुल्ला जाट को तुम्हें लिवाने के लिए यहां से भेज दूंगा ।

यहां की फिकर मत करना। आते समय रास्ते में खूब होशियारी रखना। तीन टिकिट सेकन्ड के ले लेना तथा खंडवे में मंदिर में रसोई जीमकर दूसरी गाड़ी पकड़ लेना। डालू की चिट्ठी बहुत खुशी की आती है। तुम माजी तथा घरवालों के प्रेम में भूलकर कमला की संभाल कम रखती हो, यह लिखा है, सो ख्याल रखना। हमारे अक्षर बराबर पढ़े गये, लिखा सो ठीक ।

और वहां तुम्हारे घर-कुटुंब की जो स्त्रियां व लड़कियां हों, उनको सदुपदेश देते रहना । उनका कर्तव्य उनको अच्छी तरह समझाना । फालतू वक्त मत खोना । तुमने वहां रहकर किस-किसका मार्ग-दर्शन किया तथा उपदेश दिया, इसकी विगत तुमसे प्रत्यक्ष में विस्तार से सुनेंगे तब खुशी होगी । खर्च का हिसाब तुम स्वयं रखती होगी ।

चिरंजीव मोहन की मां को भी अच्छी पुस्तकें देना व उनका कर्तव्य उन्हें समझाना । उनकी उमर छोटी है, आज का वक्त बहुत खोटा हैं । इसका तुमको ख्याल है ही । चिट्ठी जल्दी देना ।

संवत् १९७०, मिती श्रावण सुदी ३ सोमवार को (आज हमारा व्रत है) लिखा जमनालाल का प्रेमपूर्वक आनंद-मंगल और आशीर्वाद व प्यार तुम्हारे लिए और कमला के लिए ।

तुम्हारा मंगल व उन्नति चाहनेवाला हितेच्छु
जमनालाल बजाज

: ५ :

(११-८-१३)

सिद्ध श्री वर्धा शुभस्थान श्रीयुत आप जोग लिखी जावरा से जानकी का प्रणाम बंचना। कृपा पत्र आपका आया। बांचकर खुशी हुई। आपने लिखा कि कमला की अच्छी व्यवस्था रखना तथा उसे पुत्री-धर्म बताना तो अच्छी सुशील कन्या होगी सो तो ठीक है, पर वह जो-कुछ बनेगी आपकी कृपा से ही बन पावेगी। सोमवार के व्रत की पूजा का ध्यान रखेंगे। हमारे पीछे से शरीर का पूरा ध्यान रखते हो लिखा, सो ठीक है।

आपने आने की लिखी सो राखी से पहले तो मेरा आना बिल्कुल नहीं होगा। राखी के बाद ये लोग जरूर भेज देंगे। हमारा और इनका तो मन-राखी के बाद १५ दिन और रहने का है। बाकी आपको तकलीफ होवे तो नहीं रहेंगे। आपका भादवे में बंबई जाने का विचार था, सो हम यहां हैं तब-तक जाना हो जावे तो ठीक है। आपको कमला के बिना सूनापन लगता है, सो तो ठीक ही है।

स्त्रियों व लड़कियों को सदुपदेश देने का लिखा, सो मैं तो अपनी समझ से जितना होता है करती ही हूं। सारी विगत आपसे मिलेंगे तब कहेंगे। आपके लिखने से मुझे और भी जोश आ जाता है। खर्च के हिसाब के बारे में लिखा सो मेहरबानी करके माफ करोगे। वहां आये बाद आपको सब बता देंगे। कमला अब बहुत राजी है।

प्राणनाथ से मेरा प्रेम-नमस्कार बंचना।

कमला की मां

: ६ :

बंबई, ११-९-१४

श्री सौभाग्यवती पवित्र प्रिये,

सप्रेम, हार्दिक आशीर्वाद। तुम्हें पत्र लिखने का दो-तीन रोज से मन हो रहा था। आज पूरा अवकाश था, सो लिखा। यहां मैं दानीजी के पास रहता हूं। वह मेरी सब व्यवस्था उत्तम प्रकार से करते हैं। मैं दूसरी जगह जाने के लिए बहुत कहता हूं, परंतु यह जाने नहीं देते। मेरा स्वास्थ्य ठीक

रहता है। यहां आने के बाद मानसिक चिंता भी कम हो गई है। तुमने प्रेम-पूर्वक, मंगल-कामना के साथ मुझे विदा किया था, सो आशा है, शीघ्र ही सारे कामों की व्यवस्था ठीक-ठीक हो जायगी। वर्धा से यहां चिंता बहुत कम रहती है सो जानना। श्री ईश्वर ने किया तो रूई शीघ्र तेज हो जायगी। तुम किसी प्रकार की चिंता नहीं करना। कमला की बहुत याद आती है। उसे बहुत प्रेम आनंद से रखना। तुम भी खाने-पीने की पूरी व्यवस्था रखना। डालूराम को प्रसन्न रखना। वह कोई बात कहे तो नाराज नहीं होना व उसका मन नहीं दुखाना। यहां मुझे आठ-दस रोज और लगेंगे। रूई की ४०० गांठें बिकी हैं और रहने से बाकी भी बिक जायगी। रुपयों की व्यवस्था बहुत अच्छी तरह से हो गई है। मेरा चित्त प्रसन्न है। पूज्य मामी मिले तो उसको धीरज दिलाना। उनके काम की भी कोशिश की जा रही है। पार पड़ना या नहीं सो तो परमात्मा के अधीन है। तुम उनको भली प्रकार सब तरह से शांत रखना। ज्यादा क्या लिखूं, तुम्हारी तरफ की थोड़ी फिक्र रहती है सो तुम्हारा पत्र आने से मिट जावेगी। मुझे पूर्ण आशा है कि जो मैंने लिखा है या मेरे चलते वक्त जो मैंने कहा है, उसका तुम अवश्य पालन करोगी। तुमको कोई चीज-वस्त चाहिए, सो अवश्य लिख देना। कोई तरह का विचार नहीं लाना। कल शनिवार को पूज्य दादाजी का श्राद्ध यहां करने में आवेगा सो विदित रहे। यहां लड़ाई की कोई गड़बड़ नहीं है।

पत्र पहुंचने पर कमला को मेरी तरफ से प्यार देना।

तुम्हारा हितेच्छु
जमनालाल बजाज

: ७ :

श्री हरि

वर्धा, १४-९-१४

श्रीयुत प्राणनाथ,

जोग लिखी वर्धा से आपकी दासी का प्रणाम वंचना। पत्र आपका आया, पढ़कर बड़ा आनन्द हुआ। प्रेम का ऐसा आनन्द दूसरों के लिए भी होना चाहिए। मुझे चिन्ता यह है कि मैं आपके विचारों के माफिक अभी हूं नहीं। आपके साथ रहने से शायद बन जाऊं। दानीजी के यहां अच्छी व्यवस्था के

साथ आप रहते हैं, सो ठीक है। आपने लिखा कि दानीजी दूसरी जगह जाने नहीं देते। सो कोई हरज नहीं। आपका रहना भला किसको भारी पड़ेगा। वहां जाने से मानसिक चिन्ता बहुत कम हो गई लिखा, सो आनन्द की बात है। आपके गुणों के पीछे किसी बात की कमी नहीं है, फिर भी मनुष्य-शरीर है। थोड़ी-बहुत चिन्ता हो ही जाती है।

आपने लिखा कि तुमने प्रेमपूर्वक मंगल-कामना चाहते हुए मुझे विदा किया और इसके लिए आपने बहुत आभार भी माना, लेकिन मुझे तो यही हर्ष है कि आपके-जैसा सरल स्वभावी ईश्वर-रूपी मनुष्य पति के रूप में मुझे मिला है, और शोक यह है कि ऐसे मनुष्य फिर कहां मिलेंगे। ईश्वर से मेरी यही प्रार्थना है कि वह मेरा मन भी आपके जैसा निर्मल करे और जनम-जनम आपका साथ दे। मुझपर ईश्वर की बड़ी कृपा है कि इसी जनम में हीरा हाथ लग गया है, लेकिन मेरे से लाभ उठाया नहीं जाता।

अक्षरों में या समाचारों में गलती हो तो क्षमा करेंगे। वर्धा से वहां चिन्ता कम रहती है, लिखा सो ठीक ही है। कारण यहां आपके साथ बात-चीत करने वाले कोई थे नहीं। वहां सब प्रकार की संगत रहती है।

बाई कमला बहुत सुखी है। आपको बहुत याद करती है। फोटो में देखकर 'हँह काकाजी'—'हँह काकाजी' कहती है। पूछने से 'काकाजी ममई गया। संतरा लासी, अंगूर लासी' बोलती रहती है। आपका नाम सुनते ही उसका चेहरा खिल जाता है।

आपका पत्र आने से दिल पर बहुत असर हुआ है। आपका जैसा हुकुम है, वैसा ही खाने-पीने का ख्याल रखूंगी। आप कोई चिन्ता न करें। डालूराम वगैरा के बारे में भी जो आपने लिखा है, वह करूंगी। चिट्ठी आने से एक बार मिले बराबर लगता है। आप चित्त को सब प्रकार से प्रसन्न रखियेगा। एक-दो रोज ज्यादा लग जाये तो फिकर नहीं।

आठम का तथा नवमी का श्राद्ध अच्छी तरह से करा दिया है। लड़ाई वगैरा का डर नहीं, लिखा सो ठीक है।

कमला को आपकी तरफ से प्यार किया है।

आपकी शुभचिन्तक
सौ० जानकीबाई

: ८ :

श्री हरिः

बंबई, १८-९-१४

सौभाग्यवती पवित्र प्रिये,

तुम्हारा पत्र पढ़कर हार्दिक आनंद हुआ। अनार, मोसंबी आदि भेजे थी, मिले होंगे। रूई का बाजार दिन-ब-दिन ठीक होता जाता है। गांठें रोज थोड़ी-थोड़ी बेचते हैं। अब खाली एक काम साझे का रहा है, सो ५-७ रोज के अंदर पूरा हो जायगा। कोशिश जारी है। तुम प्रसन्नता के साथ रहना। बिल्कुल फिक्र मत करना। मैं यहां बहुत आनंद से हूं। मानसिक चिंता अब बिल्कुल नहीं रही। पत्र फिर फुरसत से लिखूंगा। तुमने लिखा कि कमला याद करती है—सो उसकी याद हमें भी बहुत आती है। डालूराम की तबीयत ठीक नहीं है, सो उसे दवा लेने का कहना। उसके शरीर की फिक्र रखना। कोई चीज चाहिए तो मंगा लेना।

मि० अश्विन कृष्ण १३, शुक्रवार। पत्र शीघ्रता में लिखा है, सो जानना।

तुम्हारा हितेच्छु
जमनालाल

: ९ :

वर्धा, २०-९-१४

श्रीयुत प्राणनाथ, जीवनप्राण,

जोग लिखी आपकी दासी का प्रणाम बंचना। पत्र आपका आया, पढ़कर खुशी हुई। मगनबाई का पत्र भेजा, लिखा सो ठीक और दाड़िम-मोसम्बी के साथ मुरब्बे के डिब्बे तीन तथा सपट लोशन भेजा, सो मिला।

बाजार का भाव तेज लिखा, सो यहां भी वैसा ही सुना है। हमारी इच्छा थी कि एक दफा तो आपको यहां बुला लेवें, पीछे जरूरत पड़ने पर वापस जा सकते हैं या किसीको भेज सकते हैं, किन्तु बाजार का रुख देखते हुए आपका अभी इधर आना सम्भव नहीं। लिखकर भी क्या फायदा।

एक कार्य रहा लिखा, सो वह भी ईश्वर की कृपा से हो जावेगा। दो-चार रोज ज्यादा-कम की कोई फिक्र नहीं; यद्यपि कभी-कभी फिक्र हो ही

जाती है। बाकी आपके हाथ का एक कार्ड दुकान में रोज आ जाया करे तो मेरे लिए काफी है। मुझे अलग लिखने की विशेष जरूरत नहीं, क्योंकि आपको तो और भी बहुत काम हैं। मुझे तो आपके कुशल समाचार चाहिए, सो दुकान में पूछ लिया करूंगी।

कमला बहुत राजी है। डालूराम को मैंने पूछा कि क्या लिखूं तेरे बारे में, तो कहता है लिख दो—दिन-दिन बीमारी बढ़ती है। कहता है मंदाग्नि हो गई है, और कुछ खाता भी नहीं है। आप पांच-सात रोज में आ जावेंगे, ऐसा डालू कहता है। सच्ची लिख देना। डालू मुझे कुछ कहता नहीं है। आप कह गये इस वास्ते कभी बोलता है तो मैं भी खुशामद कर लेती हूं।

जवाब देने की फुर्सत न मिले तो कोई जरूरत नहीं।

आपकी शुभचिंतक पत्नी

: १० :

बंबई, २३-९-१४

श्री सौभाग्यवती निर्मल प्रिये,

अनेक उत्तम आशीर्वाद। ता० २० का लिखा तुम्हारा पत्र कल मिला।

यहां बाजार का भाव ठीक है। तुम्हारा आना बनता दिखता नहीं, इसलिए लिखने से क्या फायदा? जो तुमने अपनी इच्छा लिखी, सो मेरी भी इच्छा यहां ज्यादा रहने की बिल्कुल नहीं है। तुम्हारी व कमला की आजकल बहुत याद आती है। कल शाम को चिमनीरामजी (मुनीम) को बुलाने का तार दिया था। वह यहां आ जायगा, तब ४-५ रोज रहकर, उसका सब कंपनीवालों और व्यापारियों के साथ परिचय करा दूंगा। फिर मैं वर्धा आ जाऊंगा। बनेगा वहांतक दशहरे के दिन मैं वर्धा पहुंच जाऊंगा, नहीं तो फिर ३-४ दिन और लगेंगे। आनंद के साथ रहना। डालूराम की तबीयत की पूरी संभाल रखना। दवा की व्यवस्था रखना। कमला को प्यार करना। पत्र दूकान में बराबर जाता ही है। यहां अब वर्षा खुल गई है। तुमने पहले पत्र में लिखा था कि 'आप-सरीखे सरल व शुद्ध अंतःकरण के पुरुष दुनिया में थोड़े ही होंगे।' तुम्हारा यह लिखना, तुम्हारा शुद्ध व निश्चल प्रेम मेरे पर हमेशा बना रहता है, उसीके कारण है। बाकी तुम जितना समझती हो उतना साफ निर्मल हृदय मेरा हाल में बिल्कुल नहीं है। श्री परमात्मा की

कृपा हुई व तुम्हारे सरीखी सती पत्नी का सहयोग रहा तो एक दिन अवश्य ही तुम समझती हो वैसा या मेरी इच्छा है वैसा निर्मल मेरा मन हो जायगा। मेरी तबीयत बहुत ठीक है। आज यह पत्र तुम्हें शांति के साथ सुबह ५॥ बजे लिखा है। इसका जवाब पत्र पहुंचे उसी रोज दे देना। कोई चीज वगैरा चाहिए, तो लिख देना। मिती आश्विन शुक्ल ४ सं० १९७१ बुधवार।

तुम्हारा हार्दिक प्रेमी
जमनालाल बजाज

: ११ :

वर्धा, २५-९-१४

श्रीयुत प्राणनाथ, जीवनप्राण,

पत्र आया। चिमनीरामजी आज रवाना होकर कल आपके पास पहुंच जावेंगे। आप इनको सब काम अच्छी तरह समझा देना। दहशरे पर आना हो जावे तव तो बहुत ही अच्छी बात है, नहीं तो कोई फिकर नहीं। दशहरे बाद ५-४ दिन लगें तो लगें, पर काम सब निपटाकर आना। फिर बारबार जाना न पड़े। अभी आपका मन इधर ज्यादा लग रहा है, सो हमारा भी प्रेम तो बहुत है। जब आप दूर रहते हो या कुछ तकलीफ हो तब तो हमारे मन में भी प्रेम बहुत उमड़ता है। पर जब आ जाते हो तव वैसा-का-वैसा खाली। आपके हाथ का पत्र आने से मन को बहुत शांति मिलती है।

विशेष आपने मेरे समाचारों के बदले में लिखा कि तुम्हारा प्रेम हमेशा मेरे ऊपर ज्यादा रहता है। आपका लिखना ठीक है। पर जैसा आप मानते हो वैसा शायद मेरे मन में न भी हो। फिर भी जैसा आप मानते हो वैसा ही प्रेम मन में हमेशा बना रहे तो फिर मुझे किसी बात की परवा नहीं। पर चित्त तो हमेशा समान नहीं रहता। और हम स्त्रियों को तो हमारा सुख ही ज्यादा प्यारा होता है। निःस्वार्थ प्रेम करने लायक हम कहां हैं? लेकिन इस तरह आपके साथ रहने से कभी हो जावेगा।

हम कमला वगैरा सब बहुत प्रसन्न हैं। आप आनंदपूर्वक रहना। मेरे पत्र के वशीभूत होकर चित्त को अशांत मत करना। काम होवे सो शांति से करके आ जाना। पत्र जल्दी में लिखा है।

कमला की मां

: १२ :

कलकत्ता,
पोष ब० ९, सं० १९७४
(६-१-१७)

श्रीमती प्रिय देवी,

सप्रेम आशीर्वाद। विवाह, कांग्रेस, सभा, मिलने आदि की गड़वड़ में पत्र नहीं दिया गया। स्वास्थ्य, बहुत ठीक है। चि० गंगाबिसन की बहू के कन्या हुई, यह दूकान के पत्र से मालूम हो गया था। कन्या व बहू खुश हैं, पढ़कर आनंद हुआ।

यहां मारवाड़ी जाति में विद्या-प्रचार हो, उसका प्रयत्न हो रहा है। श्री परमात्मा ने थोड़ी सफलता भी प्रदान की है। आशा है और भी सफलता मिलेगी। श्री गांधीजी महाराज, उनकी धर्मपत्नी व पुत्र यहां आये थे। अपनी तरफ से ही सब प्रवंध किया गया था। दस रोज तक इनकी सेवा करने का अच्छा मौका मिल गया।

अब मेरा विचार रंगून की तरफ जाने का है। टिकट अभी तक नहीं मिला है, कारण कि स्टीमर थोड़े जाते हैं और जानेवाले बहुत हैं। अगर ता० ११ जनवरी तक टिकट मिल जायगा तो १५-२० रोज उधर घूम आऊंगा। बहुत दिनों से इच्छा है। अगर टिकट नहीं मिला तो ४-५ रोज में वर्धा आ जाऊंगा।

तुम्हारे कारण घर की, वर्धा की तरफ की, कोई फिक्र नहीं है। कमला, बाबू, मदालसा को बहुत राजी रखना। कमला को पढ़ाने के लिए मास्टर बराबर आता होगा। पढ़ाने का बराबर ख्याल रखना।

और तो इन दिनों सब ही आनंद रहा, केवल श्री दामोदरदासजी राठी के स्वर्गवास होने के समाचार सुनकर चित्त थोड़ा व्याकुल हुआ था। परन्तु अच्युत स्वामीजी महाराज के सत्संग का सौभाग्य मुझे कई दिनों से मिलता आया है, इसलिए जीवन-मरण का प्रपंच थोड़ा-बहुत समझ सका हूं। संसार स्वप्नवत् है, इसमें सुख है नहीं जो भी है सब कल्पित है, इस प्रकार विचार करने से शांति मिलती है। सुख, दुख और यह संसार सब मिथ्या है। इसलिए शरीर से जो कुछ सेवा बन सके, वह निःस्वार्थ भाव से करने का हमेशा प्रयत्न रखना ही मनुष्य-जन्म का मुख्य कर्तव्य है।

आशा है, तुम भी यदि यही ध्येय सामने रखकर कार्य करोगी तो तुम्हें भी अवश्य शांति मिलेगी।

सरकार से 'राय बहादुर' की पदवी मिलने के कारण कई जगह से मित्रों के बधाई के तार-पत्र आदि आते हैं। यह सब तो आडंबर है। तथापि श्री परमात्मा ने किया तो इस तरह के आडंबर का भी सेवा करने में उपयोग हो सकेगा। ईश्वर से यही प्रार्थना हमेशा करते रहना आवश्यक है कि वह सद्बुद्धि प्रदान करें, निःस्वार्थ भाव से सेवा करने के लिए बल प्रदान करें।

पत्रोत्तर देने की आवश्यकता नहीं। कोई चीज चाहिए तो लिख देना।

तुम्हारा,
जमनालाल बजाज

: १३ :

श्री लक्ष्मीनारायणजी

(जवाब दिया ता. ९-१०-१९ को)

श्रीयुत प्राणनाथ स्वामीजी,

कागद आपका आया। आपने लिखा कि पैर में मोटर की चोट लगी सो चिंता मत करना। चिंता की कोई बात नहीं। संकट मनुष्य पर आता ही रहता है। आपके शरीर का सोच परमात्मा को है। वह सब ठीक करेगा। वैसे चोट घुटने की है। इससे ज़रा विचार आता है कि शौच आदि जाने में बहुत तकलीफ होती होगी। और आपका स्वभाव भी संकोची है। पर जैसे और कामों में आप हिम्मत करते हो, तो इसमें भी हिम्मत करोगे। ध्यान यही रखिये कि पांव में कोई कसर न रह जाय, कारण चलना-फिरना सब पैर से होता है। हाथ से पैर की ज्यादा जरूरत है। पलंग पर शौच आदि का इंतजाम तो सब होगा ही। जैसा मेरे जी में आया, मैंने लिख दिया। पलंग पर शौच आदि न हो तो नीचे भी न बैठना। गोड़े पर जोर पड़ने से घाव पर जोर पड़ेगा। छेद की हुई कुर्सी पर बैठना।

मैंने गंगाविसनजी को साथ लेकर आने का विचार किया था, पर आपका डर और लोगों की शर्म के मारे सोचा कि तार मंगाकर जाना ठीक

रहेगा। मैंने अपने नाम का तार दिलाने के लिए कहा तो दूकानवालों ने अपने चार नाम डाले। पुरुषों को अपनी अकल से काम करना चाहिए। बाकी मुझे मालूम होते ही मैंने मगनजी को तार रोकने भेजा कि इस तरह से उनको चिंता होगी। सच है, पराधीन कुछ नहीं कर सकता। आप क्षमा करना। आप मुझे बुलाने का तार करो। मेरे आने में कोई तकलीफ नहीं है। छोटी लड़की को लेकर आऊंगी। नई नौकरानी बहुत अच्छी है। गंगा और दादा, दादी तीनों बच्चों के पास रहेंगे। यहां कोई तकलीफ नहीं होगी। ये तो तीनों प्रेमवाले हैं।

आपके हाथ के समाचार से मालूम होता है कि पैर में ज्यादा तकलीफ नहीं। कारण. आप झूठ नहीं लिखते। पर ऐसे वक्त में घरवाला नजदीक होना चाहिए। आखिर यह शरीर क्या काम आवेगा ? हमेशा तो हराम की ही रोटी खाता है।

आपको तो मेरे स्वभाव के बारे में मालूम ही है कि मुझे यह विश्वास रहता है कि मेरे नजदीक रहने से आपको कुछ ज्यादा आराम मिलेगा। खैर, यहां आने की जल्दी मत करना। छोटा गांव होता तो मैं ही नहीं अटकती। पर इतना तो करना कि अगर पलंग से बिल्कुल भी न उठने की बात हो तो मुझे जरूर बुला लेना।

श्री परमात्मा से यही विनती है कि पैर में अथवा शरीर में कोई खोट या खामी न रह जाय। दिन ज्यादा लगें तो परवाह नहीं। बड़े-बड़े संकट मनुष्य ही सहता है। आप किसी तरह की चिंता मत करना। हाल-हकीकत बराबर लिखना।

यहां सब राजी-खुशी हैं। गांव में पहले तो नागपुर से आये हुए लोगों के कारण यहां भी प्लेग के प्रकोप की शिकायत थी। पर दो-चार दिन से बिल्कुल शांति है। कुछ गड़बड़ होगी तो बोर्डिंग के आधे बंगले में चले जायंगे। बगीचे बिल्कुल नहीं जायंगे। कहीं बच्चे कच्चे फल खालें। परमात्मा सब ठीक करेगा।

कमला की मां

: १४ :

दिल्ली जाते समय (रेल में),
पोष सुदी ४, सं० १९७७
(११-२-२१)

प्रिय देवी,

सप्रेम आशीर्वाद। कलकत्ते में कांग्रेस-कमेटी कार्य का होने के बाद थोड़ा महासभा का कार्य करके सोमवती अमावस्या, ता० ७ को श्री नागोरीजी, चौधरीजी, महाबीरप्रसादजी पोद्दार के साथ काशी पहुंचे। वहां श्री शिवप्रसादजी गुप्त के गंगातट के 'सेवा उपवन' नाम की सुन्दर व मनोहर कोठी में उतरे। वहीं उनके साथ गंगास्नान करके फलाहार तथा भोजन किया।

शाम के वक्त मित्रों की सलाह हुई कि कुछ छोड़ना चाहिए। कारण, भारी पर्व का दिन था व काशी-धाम था। इसलिए नीचे मूजिब छोड़ना निश्चय हुआ :—

श्री महावीरप्रसादजी पोद्दार ने ९ मास तक पूर्ण ब्रह्मचर्य पालन की प्रतिज्ञा की व बन सके वहांतक कच्चा अन्न व फल खाकर ही रहने का निश्चय किया। वह तीन मास से कच्चे सूखे गेहूं, चने व फल ही खाते हैं।

श्री गुलाबचंदजी नागोरी ने नौ मास तक ब्रह्मचर्य पालने की प्रतिज्ञा की।

श्री दयालदास चौधरी ने ९ मास तक शक्कर खाना छोड़ दिया।

श्री रामनेरशजी त्रिपाठी ने ९ मास तक ब्रह्मचर्य पालन व पान-सुपारी नहीं खाने का निश्चय किया।

तुम्हारे उत्साह और सलाह से मेरा ब्रह्मचर्य पालने का विचार तो पहले ही हो चुका था। तथापि नौ मास तक ब्रह्मचर्य पालन करने की प्रतिज्ञा का निश्चय मैंने किया है। हाल में एक मास तक तो दूध तथा दूध से बनी हुई चीजें छोड़ दीं, जैसे कि दही, छाछ, घी तथा पूरी, मिठाई, घी की बनी हुई सब चीजें। बाद में यह निश्चय और आगे बढ़ाने का विचार है। बकरी के दूध तथा उससे बनी हुई चीजों की छूट रख ली है। अब तो चने, धानी, फल, सूखी रोटी तथा तेल के साग के साथ काम चल रहा है। अभी तक

तो तकलीफ नहीं मालूम होती है । बिना घी की रोटी व साग अच्छा लगता है ।

कल सुबह १० बजे महात्माजी के साथ काशी से रवाना होकर कल शाम को ही अयोध्या आये । काशी में चार रोज तक प्रातःकाल श्री गंगास्नान का खूब आनंद रहा तथा पू० गांधीजी, मालवीयजी और अन्य विद्वानों व महात्माओं के दर्शन. तथा वार्तालाप का लाभ मिला । अयोध्या में पूज्य महात्माजी का व्याख्यान बहुत ही उत्तम हुआ । वहां एक राजनैतिक काम करनेवाले नेता श्री केदारनाथजी को सरकार ने हाल ही में गिरफ्तार कर लिया था । उनकी धर्मपत्नी का व्याख्यान भी हुआ । वह बहुत ही बहादुरी तथा शांति से काम करनेवाली मालूम होती हैं । अपने पति पर उसकी गहरी भक्ति, प्रेम व श्रद्धा है । ज़रा भी हताश न होकर वह पति का कार्य कर रही है । वह जेल में अपने पति से मिलने गई थी । उसने अपने पति से पूछा कि क्या वह उन्हें छुड़ाने का प्रयत्न करे ? उसपर उस देवी के पति ने कहा कि अगर मुझे फांसी का हुक्म भी हो जाय तो तुम छुड़ाने का प्रयत्न नहीं करना । देश-सेवा के लिए आनंद से मरना ही मनुष्यत्व है । तुम आनंद व शांति से चर्खे का तथा सूत कातने का प्रचार करो, इस आशय की बातें उस देवी ने अपने मुंह से सभा में कहीं । अगर यह देवी इतना धीरज व शांति नहीं रखती तो शायद उसके पति को माननेवाली जनता उसे छुड़ाने के लिए कोशिश अथवा धूमधाम करती । नतीजा यह होता कि महात्माजी के सिद्धान्त के मुताबिक स्वराज्य के कार्य में बाधा खड़ी हो जाती ।

इस तरह की एक बात और लिखना रह गई । श्री बाबा रामचंद्र नाम से एक नेता इसी प्रांत (यू. पी. ) में प्रसिद्ध थे, खासकर किसानों में । उन्हें भी सरकार ने काशी में गांधीजी का व्याख्यान होते समय गिरफ्तार कर लिया । वहां बहुत भारी भीड़ थी । पर सभा में पूर्ण शांति रही। गिरफ्तारी के समय मैं भी वहीं था । लोगों को शान्त रखने का प्रयत्न किया गया तथा जमा हुए लोगों ने खूब ही शांति तथा आनंद प्रकट किया ।

महात्माजी के कारण जमाना एकदम बदल गया । मुझे इस दौरे में

वहुत आनंद तथा लाभ हो रहा है। परमात्मा ने किया तो हमारे जीवन की उन्नति अवश्य होगी। तुम्हारी कई वार याद आया करती है। मुझे वहुत आशा है कि तुम किसी तरह से भी पीछे नहीं रहोगी। धैर्य, शांति व सत्य के साथ कार्य करती रहोगी। मेरी समझ से कम-से-कम नौ मास तक कोई भी गहना-दागीना नहीं पहनने का तुम व्रत ले लो। नथ छोड़कर पांव की कड़ी भी निकाल देनी चाहिए व स्वदेशी कपड़े ही उपयोग में लाने चाहिए। कपड़े के वारे में तो तुमने निश्चय-सा कर ही लिया है।

सत्याग्रह-आश्रम तथा मेहमानों की पूरी निगाह रखना, चर्खे व सूत का खूब प्रचार करना।

दिल्ली से भिवानी, रोहतक, मथुरा आदि होकर वर्धा अंदाज ८-१० रोज तक आना होता दिखता है। पूज्य बापूजी का साथ छोड़ते जी दुःख पाता है व उनका भी हृदय से बहुत ही ज्यादा प्रेम है। इसलिए उनकी आज्ञा मुताविक ही आना हो सकेगा।

अवकी वार वकरी का घी तुमने जो दिया उसमें बा (माताजी) कहती थीं कि थोड़ी गंध आने लगी थी। आगे और भी शुद्ध घी जमा करने पर निगाह रखना।

वाई व वावू को प्यार करना।

(यह पत्र अपूर्ण मिला है)

: १५ :

वंबई,
फागुन ब० ६, सं० १९७७
(२८-२-२१)

प्रिय देवी,

सप्रेम आशीर्वाद। पत्र तुम्हारा मिला। पढ़कर बहुत आनंद हुआ। तुमसे ऐसी ही आशा थी। परमात्मा सब ठीक करेगा। पूज्य गोपीकिशनजी की पूरी सम्भाल व व्यवस्था रखना, जिससे उन्हें पूर्ण आराम मिले। मैंने भी उन्हें एक दिलासाभरा पत्र लिख दिया है। आशा है, उससे उन्हें शांति मिलेगी।

आश्रम का कार्य बराबर संभाला जाता है, सो ठीक है। चर्खे का खूब जोर से प्रचार होना चाहिए। वर्धा में खादी चारों तरफ फैल जानी चाहिए। अपना घर तो पूरी तरह से पवित्र और शुद्ध रहना चाहिए। इससे ज्यादा क्या लिखूं ?

कल इतवार की रात को भाई सीताराम पोद्दार का ९।। बजे के करीब स्वर्गवास हो गया। दो दिन तक उनकी थोड़ी-बहुत जो सेवा बन सकी, सो की। फिक्र तो हुई, परन्तु विचार करके धीरज धारण किया। उनके पिता पूज्य जीवराजजी ने खूब हिम्मत रखी है।

अबकी बार भ्रमण में बहुत लाभ हुआ व शांति विशेष मिली। श्री अच्युत स्वामीजी तथा एक और महाराज का सत्संग बहुत उत्तम रहा।

बच्चों की पढ़ाई पर पूरी निगाह रखना। मेरी ओर से उन्हें प्यार करना।

तुम्हारा,
जमनालाल बजाज

पुनश्च—खासकर अपने कुटुम्ब में तो किसीको भी विदेशी कपड़ा नहीं पहनना चाहिए।

: १६ :

बंबई,
फागुन सुदी १२, सं० १९७७
(६-३-२१)

प्रिय देवी,

सविनय प्रेम। पत्र तुम्हारा पहले आया था, उसका जवाब दिया ही था। पूज्य गोपीकिशनजी का स्वास्थ्य बराबर नहीं रहता। मेरी समझ से तो इन्हें शांत व ठंडी जगह रखने से ही शांति मिल सकेगी। स्वास्थ्य भी बिना औषधि व उपचार के ठीक हो सकेगा। तुम मुनासिब समझो तो इन्हें यहां भेज देना।

श्रीयुत गोविंदराव हिरवे आज की गाड़ी से वर्धा आते हैं। यह बहुत ही उत्तम विचारवाले और विद्वान व्यक्ति हैं। इन्हें बालकों की शिक्षा का

भार पूरी तरह से दिया है। वाई कमला, बाबू व प्रहलाद को इनकी इच्छा-अनुसार पढ़ाने देना व बालकों का रहन-सहन भी इनकी इच्छा के मुताविक ही रहे, ऐसी व्यवस्था कर देना। कम-से-कम एक घंटा, और हो सके तो दो घंटे, रोज नियम से तुम इनके पास हिन्दी या संस्कृत और राजनैतिक बातें पढ़ना और समझना, जिससे तुम्हें भी लाभ होगा। इस तरह का प्रवन्ध अवश्य कर लेना। अगर इनमें कोई फेरफार करना हो तो मेरे आने पर तुम्हारी सलाह से कर लेंगे। बाई कमला की पढ़ाई की बहुत चिन्ता थी, वह इनके रहने से अब कम हो जायगी। इनका पूरी तरह से उपयोग लेना तुम्हारे हाथ ह।

इस अमावस्या को दूध-घृत न लेने के व्रत को एक मास हो जायगा। अब आगे यह व्रत न बढ़ाते हुए सात चीजों से ज्यादा एक बार में नहीं लेने का व्रत लेने का विचार है। दूध, दही, घी आदि बिलकुल छोड़ने से मुसाफिरी में स्वयं को तथा जिनके यहां जायं उनको थोड़ा कष्ट होता है। इसलिए उसे आगे नहीं बढ़ाने का निश्चय है। ब्रह्मचर्य व्रत पालने के लिए मन में काफी श्रद्धा और उत्साह है। अब ९ मास तक तो ब्रह्मचर्यपालन व्रत के अनुसार धर्म ही हो गया है, इसलिए पाला ही जायगा। और आगे भी उसे पालने में विशेष कष्ट नहीं होगा, ऐसा मालूम होता है। दिन-भर देशकार्य तथा अच्छी संगति में लगे रहने से मनोविकार शांत रहते हैं, ऐसा अनुभव और विश्वास हो रहा है।

इस बार की मुसाफिरी पूज्य बापूजी के साथ हुई, उससे बहुत फायदा हुआ है। बहुत करके बर्धा शनिवार को पहुंचूंगा।

तुम्हारा,
जमनालाल

: १७ :

वर्धा,
फाल्गुन बदी १३
(७-८ मार्च २१)

श्रीयुत प्राणनाथ,

प्रणाम। पत्र आपके दो आये। नागपुरवाले गोपीकिशनजी बजाज को

बुलाने का लिखा सो ठीक। वह कच्चे मन के हैं। बीच में आपके पकड़े जाने की खबर सुनकर डर गये। रात को उन्हें नींद नहीं आती है। उन्हें लगता है कि आप अगर पकड़े गये तो हम सबका क्या होगा ? इसलिए उन्हें दिन-रात सपने आते हैं और सपनों की बातों को सही मानकर वह घबरा जाते हैं। मैंने बहुत समझाया, परन्तु उनके गले नहीं उतरता। इनकी दवा तो यही है कि आपसे मुलाकात होनी चाहिए और डर दूर होना चाहिए। शायद कुछ दिन आपके साथ रहने और मजबूती की बातें सुनने से उनके मन में जो भ्रम पैदा हो गया है, वह निकल जाय। फिलहाल तो मैंने इन्हें अच्छी तरह सम्भाल लिया है। आपके यहां आने में अड़चन मुझे यह दीखती है कि सरकार की दमन-नीति शुरू हो गई है। इसलिए यह संभव नहीं लगता है कि आप चुप बैठेंगे और 'हुकुम' तो आता ही दीखता है। यों चुप बैठने का समय है भी नहीं। मेरी समझ में तारीफ तो इसीमें है कि काम करते हुए भी गिरफ्तार होने से बच जावें। वैसे इस बारे में अधिक विचार की जरूरत नहीं है। हमें तो कर्त्तव्य करते जाना है। हां, यदि आपको विशेष काम न हो, तो एक बार नागपुरवालों से मिल लें। उनसे विचार कर लें, फिर जायं।

हिरवे मास्टरजी के बारे में आपने लिखा, सो वैसा ही करेंगे जैसा आपने लिखा है। आप किसी प्रकार की चिन्ता मत करियेगा। बालक प्रसन्न हैं।

आपके वास्ते बकरी के घी के और चने के पारे भेजे हैं, सो काम में लीजियेगा। जानती हूं कि आप (बापूजी की) नकल करने को तैयार नहीं हैं, परन्तु ये तो आपको खाने ही होंगे।

आपकी हितेच्छु,
जानकी

: १८ :

वर्धा, १३-५-२१

श्रीयुत प्राणनाथ,

प्रणाम। ता० ५ का पत्र मिला। ता० ५-६ को आपको भी मेरा पत्र मिला होगा। बाद में फुरसत नहीं मिली होगी। मेरे पत्र से आपको किंचित

दुःख हुआ होगा। परस्पर बातचीत का मौका कम होने के कारण मन के भाव लिखने से मन साफ हो जाता है। इसलिए कुछ लिखा था। बाकी आपके लिखे अनुसार आनंद में रहती हूं। घर में सतोगुण से सतयुग का बास हो गया है। इससे ज्यादा हमें और चाहिए भी क्या? परमात्मा करे आपकी इच्छा पूर्ण हो। आप चाहते हैं कि आपकी इच्छानुसार मेरा स्वभाव बने, मुझे आशा है कि आपके साथ रहने से वह अवश्य हो जायगा। मैं देखती हूं दिन-दिन फर्क तो पड़ता ही जाता है।

आप अपने शरीर को संभालते रहिये। शरीर के पीछे ही तो सारी बात है। बीच-बीच में आराम लेने से काम ज्यादा होता है। बाकी शुद्ध मन रहने से तो ईश्वर आप ही शक्ति देता है। मुसाफिरी की बात तो आपके हाथ में है नहीं। उमा बाई तथा सब बच्चे राजी हैं। देश की तरफ जाने का यदि काम पड़े और उचित समझें तो हमें भी ले चलें।

पहली तारीख तक स्वदेशी का पूर्ण प्रचार हो जाय। दिन थोड़े हैं, परमात्मा कैसे लाज रखेगा? ईश्वर को इस वक्त तो हिन्दुस्तान की लाज रखनी ही चाहिए। परीक्षा बड़ी है, हमारी शक्ति कम है।

मारवाड़ी और व्यापारी भाइयों को यह सोचना चाहिए कि इस आपत-काल में वे अपना धन लगायें। अगर इस समय वे अपने धन को काम में न लायेंगे तो क्या मरने के पीछे लावेंगे? यह कमाई इस देश के लोगों के ही तो काम में आयेगी। जीतेजी तो पेट भरता ही है, होना होगा सो होगा ही। ऐसा अच्छा अवसर फिर हाथ में न आयेगा। बापू को बड़ी तकलीफ है। ईश्वर रक्षा करेगा। यहां खादी का प्रचार ज्यादा तो कुछ होता नहीं। गांववालों पर असर नहीं होता। दौरा करना लियाकत के बिना उचित नहीं। होता है उतना करती हूं। आप किसी प्रकार की चिंता न करके आनंद के साथ काम करते रहिये। आनेवालों का हम यथायोग्य ध्यान रखते हैं, कारण दिन-पर-दिन हमारा अनुभव बढ़ रहा है। विशेष समाचार है नहीं।

आपकी हितेच्छु,
जानकी

: १९ :

वंबई,
असाढ़ सुदी ९, सं० १९७८
(२९-६-२१)

श्री प्रिय देवी,

सप्रेम आशीर्वाद। पत्र लिखने का बहुत दिनों से विचार था, परन्तु स्वराज्य-फंड के कार्य में लगे रहने के कारण नहीं लिख सका।

परमात्मा की कृपा से पूज्य गांधीजी और हिन्दुस्तान की बात रह जायगी, ऐसे चिन्ह दिखाई देते हैं। तुम्हारी हार्दिक व शुभ विदाई के कारण मुझे कार्य में बराबर सफलता मिलती जा रही है। मन को बड़ा संतोष है।

संभव है, मुझे पूज्य बापूजी के साथ मद्रास, लखनऊ, कलकत्ता की तरफ जाना पड़े। स्वास्थ्य बहुत ठीक है।

बच्चों की पढ़ाई आदि का ध्यान रखना। अगर तुम्हारा बम्बई रहना होता तो तुम स्त्रियों में खूब काम कर सकती। अभी भी स्त्रियों में अच्छा कार्य हो रहा है। खैर, वहांपर ही चर्खों का प्रचार तथा मेंबर बनाने का कार्य करते जाना।

पत्र फिर देने का विचार है। अभी चंदे के लिए बाहर जाना है।

बच्चों में किसीको कम-ज्यादा नहीं समझने की कोशिश करना। प्रहलाद और बाबू एक समान हो सके, तथा और बातों में भी इस त्रुटि को कम करने की कोशिश करना।

तुम्हारा,
जमनालाल

: २० :

पटना के नजदीक (रेल में),
१५-८-२१

प्रिय देवी,

सप्रेम वन्देमातरम्। तुम्हें बहुत दिनों से पत्र लिखने का विचार था, परन्तु लिख नहीं पाया। वंबई में स्वदेशी का कार्य ठीक चल रहा है। तुम्हारे लिए साड़ी का कपड़ा नमूने के लिए भिजवाया है, सो मिला होगा। अब

हम तुम दोनों विदेशी कपड़ा नहीं पहन सकते, इसका पूरा ध्यान रखना। अपना सब घर-कुटुंब पूरा स्वदेशी वस्त्र पहननेवाला तथा सादगी से जीवन वितानेवाला होना चाहिए। इसका पूरा प्रयत्न करते रहना होगा। श्री मंदिर में तो अब विदेशी कपड़े का ख्याल सपने में भी नहीं रहना चाहिए। अगर रहा तो तुम जिम्मेवार हो। यदि तुमसे हो सके तो विदेशी सजावट, फर्नीचर आदि भी घर से बाहर बगीचे में रखवा दो। सब बच्चों की पढ़ाई का पूरा प्रबंध रखो। श्री विनोबाजी की सलाह से बच्चों की पढ़ाई के लिए योग्य आदमी ढूंढ़ने की व्यवस्था हो रही है। तुम भी आश्रम में बराबर जाती रहना। श्री भावेजी की संगत का लाभ लेना और उनके उपदेश श्रवण करते रहना। भावेजी बहुत विद्वान्, पवित्र तथा चरित्रवान व्यक्ति हैं। इनकी सत्संगति से तुम्हें अवश्य लाभ होगा। आश्रम के बालकों से खूब प्रेम का वर्ताव करना। उनकी बीमारी आदि में पूर्ण सहायता देने तथा सेवा करने का ध्यान रखना। ऐसा करने से तुम्हारी बड़ी उन्नति होगी, ऐसा मेरा विश्वास है। जहांतक हो सके तुम्हें नियम से आश्रम में जाना चाहिए। अगर वहांपर थोड़ी देर चर्खा भी कातो तो और भी अच्छा।

ये सब बातें तुम्हें इसलिए लिखी हैं कि भविष्य में हमें अपना जीवन बहुत ही सादगी से बिताना है। इसलिए इसका अभ्यास व ज्ञान पूरी तरह से हासिल कर लेना चाहिए। तुम्हारे सादा रहन-सहन तथा प्रेममय उदार व्यवहार से हमारी तो उन्नति होगी ही, परन्तु हजारों स्त्री-पुरुषों पर भी इसका असर पड़ेगा। परमात्मा तुम्हारा स्वभाव प्रेममय कर दे और मुझमें जो कमजोरी है, वह बिलकुल मिटा दे, तो हम दोनों का मनुष्य-जन्म सार्थक हो जाय। मुझे आशा है, तुम्हारे पवित्र तप से इन दोनों बातों में हमें शीघ्र सफलता मिलेगी। ईश्वर से हमेशा प्रार्थना करते रहना होगा और अपनी आत्मा में विश्वास रखना होगा।

मैं कोई दो-ढाई घंटे बाद पूज्य बापूजी के पास पहुंच जाऊंगा। कल पटना में कमेटी का कार्य होगा। बाद में मुझे तो ऐसा दिखता है कि पूज्य बापूजी के साथ कलकत्ता, आसाम, मद्रास आदि स्थानों में जाना होगा। वह तो मुझे पहले ही ले जाना चाहते थे, परन्तु बम्बई के मित्रों न नहीं जाने दिया।

बापूजी के साथ रहने से मुझे तो बहुत फायदा पहुंचेगा, ऐसा मेरा विश्वास बंध गया है। मेरी इच्छा तो यह है कि तुम और मैं दोनों उनके साथ भ्रमण में रहा करें, जिससे उनकी सेवा करने का मौका भी मिले तथा हमारा ज्ञान भी बढ़े। ईश्वर की दया से हमारी यह इच्छा भी पूर्ण हो जायगी।

एक बार देश में जाने का बहुत मन होता है। पूज्य बापूजी छुट्टी देंगे तो वहां तुम्हें भी साथ ले जाने का विचार है। अगर कलकत्ते जाना हुआ तो तार से दुकान पर खबर दे दूंगा। वहां के पते पर तुम्हारे मन के विचार पूरी तरह लिख भेजना।

घर में आये हुए अतिथि की सेवा तथा प्रबंध बराबर रखना।

अहमदाबाद से 'हिन्दी नवजीवन' ता० १९ को निकलेगा। इसे पूरे ध्यान से पढ़ा करना।

तुम्हारा,<br>
जमनालाल

: २१ :

तेजपुर (आसाम),<br>
भाद्रवा बदी ४, सं० १९७८<br>
(२२-८-२१)

प्रिय देवी,

सप्रेम वंदेमातरम्। पत्र तुम्हें पटना से पोस्ट किया था, वह मिला होगा। उसमें सब बात लिखी ही थीं। पटना से एक रोज कलकत्ता ठहरते हुए ता० १८ को गोहाटी पहुंचे। श्रावणी पूर्णिमा उसी दिन थी। रास्ते में रेलवे स्टेशन पर स्नान करके पूज्य बापू के हाथ से नई जनेऊ पहनी व उसी रोज शाम को ही राखी बंधवाई। कलकत्त से हाथ का कता हुआ और कसुम्बें में रंगा हुआ सूत का तार साथ ले आया थे। उन्होंने बड़े प्रेम और प्रसन्नता से राखी बांधी। मैंने राखी बांधने की दक्षिणा के लिए पूछा तो उन्होंने विरासत संभालने के लिए कहा। तब मैंने कहा कि आप आशीर्वाद के द्वारा मेरा आत्मिक बल इतना बढ़ा दीजिये। यह बात तुम्हारे ध्यान में रहे, इसलिए लिखी है। रक्षा-बंधन का दिन खाली नहीं गया।

मेरी समझ से तो बापू ने इस भाव से राखी अभी तक और किसीको नहीं बांधी होगी ।

जिस तरह हम लोगों की जवाबदारी बढ़ती जाती है उसी तरह परमात्मा हमारी ताकत भी बढ़ा देगा, ऐसा मुझे विश्वास है । अपनी दिनचर्या हम जितनी सादगी और सत्संगति में बितायेंगे साधना में उतनी ही सफलता हमें प्राप्त होगी । मुझे तुमको यही लिखना है कि गृहस्थी के छोटे-छोटे प्रपंचों की तरफ विशेष ध्यान न रखकर मनुष्य के असली कर्तव्य की तरफ अपना ध्यान मोड़ो । हमें हमेशा प्राणिमात्र के लिए प्रेममय बर्ताव कायम रखते हुए आनंदमय जीवन बिताना है । यह आनंद जितना बढ़ेगा उतनी ही जल्दी हमें ध्येय की प्राप्ति होगी । इसलिए मन लगाकर कर्तव्य करती जाओ । खूब प्रसन्न रहो । जिंदगी को भार-रूप मत समझो । जहांतक स्वराज्य नहीं प्राप्त हो वहांतक स्वराज्य के सिवाय दूसरी बातों का खयाल भी हमें नहीं आना चाहिए । इतना मन उसमें लगा दो । सत्याग्रह-आश्रम में हमेशा जाया करती होगी। वहां जाने से मन को अवश्य शांति मिलेगी। यदि पूज्य विनोबाजी का तुम्हारे ऊपर विश्वास पैदा हो गया तो आध्यात्मिक ताकत बढ़ाने का मार्ग भी वह तुम्हें बतायेंगे। उनकी सत्संगति से तुम्हारी दिनचर्या अवश्य सुधार जायगी।

सब बच्चों तथा कुटुंबियों से खूब प्रेम का बर्ताव रखना । अतिथियों का पूरा ध्यान रखना ।

तुम्हारा,
जमनालाल

: २२ :

(इस पत्र के शुरू के पृष्ठ नहीं मिले हैं)
तेजपुर, (२५।२६-८-२१)

गोहाटी में सफलता अच्छी मिली है ।

मारवाड़ी व्यापारियों ने भविष्य में विदेशी सूत का कपड़ा नहीं मंगाने की प्रतिज्ञा कर ली है । यह कार्य तो बापू के ही प्रताप से हुआ । परन्तु विशेष उद्योग किये बिना ही थोड़ा यश इसमें मुझे भी मिल गया । यहां कार्यकर्ताओं ने बड़ा उत्साह दिखलाया । गोहाटी में विदेशी कपड़ों की होली भी अच्छी

हुई। कीमती कपड़े भी जलाये गए। यहां के लोग बड़े भोले हैं। परन्तु बापूजी पर उनकी गहरी श्रद्धा, प्रेम है तथा उनमें त्यागभाव भी है।

गोहाटी से स्टीमर द्वारा उन्नीस घंटे ब्रह्मपुत्र में यात्रा कर, कल यहां पहुंचे। रास्ते का दृश्य बहुत ही मनोहर तथा सुन्दर था। गोहाटी में पहाड़ के ऊपर कामख्यादेवी का प्रचीन मंदिर है। वहां भी गया था। इधर के प्राकृतिक दृश्य बहुत ही सुन्दर और देखने योग्य हैं। चित्त बहुत प्रफुल्लित है। एक तो बापू का साथ दूसरे नाना प्रकार के दृश्य तथा नये-नये मनुष्यों से भेंट का लाभ। जहां से यह पत्र लिख रहा हूं उस नगर का प्राचीन नाम शोणितपुर है। यह भी ऐतिहासिक जगह है। यहां से अनिरुद्ध उषा का हरण-करके ले गये थे और बाणासुर से उनका युद्ध हुआ था। यहांपर भी मारवाड़ियों के २५–३० घर हैं। मारवाड़ी लोग हिन्दुस्तान में खूब दूर-दूर तक फैले हुए हैं। वे यहां स्त्री-बच्चोंसहित रहते हैं। मुझे आशा है यहांपर भी हमारे काम में सफलता होगी। हमारे साथ पू० मौलाना मुहम्मद अली साहब की धर्मपत्नी भी हैं। वह बुर्का पहनती हैं। बापूजी तथा हम लोगों से बुर्के में से ही बोलती हैं। स्त्रियों में व्याख्यान देती हैं। बहुत फुर्ती रखती हैं।

हां, एक बात लिखना भूल गया। गोहाटी में स्त्रियों की तीन सभाएं हुई थीं, जिसमें एक मारवाड़ी स्त्रियों की भी थी। करीब १५० स्त्रियां होंगी। उसमें शोरगुल तो था, किन्तु स्वदेशी-प्रचार का असर वहां अच्छा हुआ। उस सभा में मुझे बापूजी के भाषण का भावार्थ मारवाड़ी भाषा में समझाना पड़ा था। इस पूरे सूबे में अभी एक मास लगता मालूम होता है। तुम पत्र कलकत्ते, दूकान के पते पर देना।

तुम्हारा,
जमनालाल

: २३ :

सिलहट (आसाम),
२९-८-२१

प्रिय देवी,

सप्रेम वन्देमातरम्। तेजपुर से लिखा हुआ पत्र तुम्हें समय

पर मिल गया होगा। आसाम के भ्रमण में कई बातें नई देखने में आईं। इस तरफ भी पूज्य बापूजी में लोगों की बहुत श्रद्धा-भक्ति है। आसाम में मारवाड़ियों के, खासकर अग्रवालों के बहुत घर हैं। गांव-गांव में और जंगल-बगीचों में भी इनकी दूकानें हैं। डिबरूगढ़ में मारवाड़ियों की तरफ से बापूजी का अच्छा स्वागत हुआ। मैं वहां एक रोज पहले ही पहुंच गया था। मारवाड़ी स्त्रियों की सभा हुई। महात्माजी ने विदेशी वस्त्र त्यागने के बारे में तो कहा ही, साथ ही मारवाड़ी समाज में गहनों की बुरी प्रथा के बारे में भी कहा। उनके कहने का आशय था कि गहनों से स्त्रियों की सुन्दरता नष्ट होती है। जहांतक बने गहने नहीं पहने जायं। अगर पहने ही जायं तो बहुत थोड़े और कपड़े भी साफ-स्वच्छ, सफेद रंग के ही ज्यादा इस्तेमाल में लाये जायं, जिससे मारवाड़ी बहनें भी, आसामी बहनों की तरह, सीताजी के समान दीखने लगें। मुझे यह भी कहा कि जिस तरह से हो, रंग-बिरंगे कपड़े अधिक पहनने का चलन कम करने की चेष्टा करनी चाहिए।

डिबरूगढ़ से हम लोग सिलचर के लिए रवाना हुए। करीब ३२ घंटे में सिलचर पहुंचे। वहां सारा गांव खूब सजाया गया था। रात को दीयों की रोशनी दीवाली से बढ़कर की गई थी। केले के खंभे तथा रोशनी बहुत ही सुन्दर ढंग से सजाई गई थी। सिलचर जाते समय रास्ते में दृश्य भी बहुत सुन्दर और मनोहर थे। ऐसे समय में तुम्हारी याद आती है कि तुम भी साथ होती तो ये सब सुन्दर दृश्य देख सकती। रेल की यात्रा में रात को नींद बहुत कम आ पाती है। हजारों लोग स्टेशनों पर जमा हो जाते हैं और जय-जयकार करते हैं। महात्माजी के दर्शन कराने की खूब प्रार्थना करते हैं। मैं बापूजी के डिब्बे में ही रहता हूं। बहुत बार मुझे ही उन्हें बापूजी के दर्शनों से वंचित करने का कठोर कार्य करना पड़ता है।

आज बापूजी के मौन का दिन है। यहां सिलहट में, नदी के किनारे, एक बीकानेरी मारवाड़ी ओसवाल सज्जन के घर बापू शांति से लिख रहे हैं। वहीं से यह पत्र में तुम्हें लिख रहा हूं। यहां से चटगांव और बारीसाल होकर ४ तारीख की रात को या ५ की सवेरे कलकत्ता पहुंचने का कार्यक्रम है। मेरा चित्त खूब प्रसन्न रहता है। मन में किसी तरह की चिंता नहीं है।

अब तो यही कामना है कि प्रसन्न मुख रहते हुए तथा आनंद के हिंडोले लेते हुए यह जन्म व्यतीत किया जाय। ज्यादा गंभीर रहने तथा चिंता करने से कोई फायदा नहीं। उससे कार्य भी कम होता है। बापू इतना भारी कार्य करके भी खूब आनंद में रहते हैं। कभी-कभी तो खूब हँसा करते हैं। वह मुझे कहा करते हैं कि अगर मुझे फांसी का हुक्म होगा तो भी मैं सब कार्य करते-करते, हँसते हुए ही, फांसी पर चढ़ जाऊंगा। ऐसा मेरा मन कहता है। यह सब बातें तुम्हें इसलिए लिखी हैं कि तुम बहुत ज्यादा फिक्र किया करती हो। सो अब भविष्य के लिए, जितने आनंद का उपभोग हो सके, उतना करना चाहिए। हमें तो अपना चरित्र शुद्ध बनाते हुए, आनंद से हँसते-हँसते, सब शारीरिक कष्ट सहते हुए मृत्यु प्राप्त करनी है।

बच्चों को खूब प्यार करना तथा सबको आनंद में रखना।

गोहाटी में बापू जिनके घर ठहरे थे, श्रीयुत फुकनबाबू विलायत से बैरिस्टरी पास हैं। बड़े शौकीन व्यक्ति हैं। परन्तु उन्होंने अपने यहां के तमाम विदेशी कपड़े, स्त्रियों के सुन्दर-सुन्दर तथा कीमती-से-कीमती कपड़े बापू की प्रेरणा से आग में जला दिये। सब मिलाकर करीब साढ़े तीन हजार के कपड़े थे। उनके साथ और भी लोगों ने विदेशी कपड़े जलाये। ये सब देखते हुए अब तुम घर में कोई भारी या हलका विदेशी कपड़ा नहीं रख सकती, सो विचार कर लेना। श्री फुकनबाबू कोई बड़े धनी आदमी भी नहीं हैं।

माया जितनी कम होगी, उतना ही आनंद ज्यादा बढ़ेगा। बस, प्रेम और आनंद के साथ तुमसे विदा लेता हूं। वंदेमातरम्

तुम्हारा,<br>
जमनालाल

: २४ :

वर्धा, ५-९-२१

श्रीयुत प्राणनाथ,

नमस्कार-प्रणाम।

आपके तीन पत्र मिले। पढ़कर आनन्द हुआ। पत्रों से मन पर असर भी खूब होता है। आपके कार्य में बाधा होगी, इसलिए आपके हाथ का पत्र नहीं मंगवाना चाहती।

मंदिर में तो विदेशी कपड़ा नाम के लिए भी नहीं है। मुकुट चांदी-सोने के बनवाने का विचार है। फिलहाल खादी के बना लिये हैं।

घर के लिए फर्नीचर की भी अड़चन है। उसमें भी विचारों के माफिक फेर-फार हो रहा है। अलग एक कमरे में नया कपड़ा रखा है, उसमें घर का तो एक हजार से ज्यादा नहीं है, किन्तु मंदिर की हजारों रुपये की पोशाकें हैं। उसके बारे में जैसा सोचा जायगा, वैसा करेंगे। अपने तो प्राण ही बापू के अर्पण हैं। दूसरी तो बात ही क्या ? मुझे तो स्वप्न में भी बापू ही दीखते हैं। सोकर उठती हूं तो बापूजी की आज्ञानुसार खादी के कपड़े पहने हुए परमात्मा से आशीर्वाद मांगती हूं कि बापूजी का आत्मबल बढ़े। उन्हें कार्य में सफलता हो। आपकी इच्छानुसार आपको तथा मुझे वह सद्बुद्धि प्रदान करें।

मुझे तो पूर्ण आशा है कि हमें कार्य में सफलता जरूर मिलेगी। बाकी लोगों का तो उत्साह जितना सामने रहता है, उतना पीछे नहीं रहता। लेकिन समय आने पर ईश्वर आप ही शक्ति देगा।

बंबई से कपड़े भिजवाये थे, जिनमें कुछ का एक तथा कुछ के दोनों सूत मील के थे। ये कपड़े लोगों के विश्वास पर भिजवा दिये गए थे। किन्तु अपने लिए तो दोनों सूत हाथ के ही होने चाहिए, ऐसी इच्छा रहती है। आश्रम में तो ऐसा है ही। एक धोती-जोड़ा और मंदिर के प्रसाद के चने पुलगांववाले मुनीमजी के साथ आपके लिए भेजे हैं। धोती-जोड़ा वजन में बहुत ही हल्का है। उसके दोनों सूत हाथ के हैं। आप उन्हें पहनना। वैसे मेरे भी काम आ जायगा।

देस जाने के बारे में आपने पूछा है, सो वहां आपका ज्यादा रहना तो होगा नहीं। अकेली मैं भी नहीं रह सकूंगी। बच्चों का साथ, पसली का दर्द, ठण्डा मुल्क। तकलीफ होती है। जाने की इच्छा यों थी कि आपके साथ स्त्रियों की एक-दो सभाएं भी हो जातीं। स्त्रियों में आपकी मांजी भी प्रचार तो करती ही होंगी। आप आनन्द के साथ कार्य करते रहिये। इधर आने का कार्यक्रम अपनी जरूरत के माफिक रखना। काम के साथ आराम की भी जरूरत है, कारण, ज्यादा मेहनत किसी-न-किसी रूप में फिर तकलीफ देती ही है।

आप कहीं भी रहें, परमात्मा से यही प्रार्थना है कि आपका कुशल समाचार मिलता रहे। यों साथ रहने की मेरी बहुत इच्छा रहती है, किन्तु बच्चे छोटे हैं, उन्हें अकेला छोड़ना ठीक नहीं, साथ लेना भी ठीक नहीं। आश्रम में जाती रहती हूं। आपने लिखा है कि माया जितनी कम हो उतनी ही अच्छी, सो सच्ची बात तो यह है कि आपको बापूजी के साथ की जितनी जरूरत है उतनी ही मुझे आपके साथ की है। गहना-कपड़ा तो मुझे बेड़ी के माफिक हो गया है। आपकी आज्ञा हो तो एक सफेद साड़ी पहनकर रह सकती हूं। उसमें तो बहुत आनन्द है। परन्तु हमारे नसीब में वह कहां ? कुछ लायक बनें तभी वैसा आनन्द ले सकते हैं। जेवर जितना है, बापूजी की सलाह से उसका चाहे जो उपयोग करने का अधिकार आपको है। अहमदाबाद-कांग्रेस के बाद अपनेको साथ ही रहना चाहिए, कारण, 'पराधीन सपने सुख नाहीं', इसका अनुभव मुझे हो रहा है। यों तकलीफ कुछ नहीं है। आप चिन्ता न करें।

गुलाबबाई वगैरा सब राजी हैं। आपके लिखे मुताबिक समझा देती हूं। मानती भी हैं। गुलाबबाई के कपड़े खादी के हो जावेंगे। बच्चों की पढ़ाई ठीक चल रही है। अमृतलाल मास्टर मुझे बहुत पसन्द हैं।

केशरबाई की सास (गोद की) आई है। मैंने कह दिया है कि "आप बारह-छ महीने यहां रहें मन मिलाइये, मिल गया तो केशरबाई को ले जाइये। घर आप ही का है। चाहे जहां रहिये। परन्तु अब बार-बार हमारा भेजना और आपका उनको घर से निकालना ठीक नहीं है।" चार रोज से अपने ही पास बहुत प्रेम के साथ रहती हैं। खादी पहनने पर भी मन चलता है। केशरबाई का मैं सब ठीक कर लूंगी। आप चिन्ता बिलकुल न करें।

स्वदेशी के बारे में घर को तो चाहे जैसा बना सकते हैं, पर अकेली होने से गांव की स्त्रियों का उत्साह नहीं बढ़ा सकती। इतना दुःख रहता है। बाकी आपके लिखे मुताबिक सहज आनन्द में जो कुछ बने वही करते जाने की बात मुझे भी पसंद है। पास आवे तो अछूता नहीं छोड़ते। बात तो इसके सिवा दूसरी अच्छी ही नहीं लगती। खादी-ही-खादी दीखती है।

'हिन्दी नवजीवन' बराबर पढ़ती हूं। तीसरा अंक आज ही आया है। आप आसाम की ओर बापू के साथ थे, इसलिए कुछ चिंता नहीं हुई।

आपकी इच्छा के माफिक तो मैं आपके साथ रहने से ही बन सकती हूं, अन्यथा कठिन है। आपको समय मिले तो समाचार देना। कुछ जल्दी नहीं है। मैं कुशल हूं। आप निश्चिन्त रहिये। प्रेमानंद रखिये।

आपकी प्रेमालु,
कमला की मां

: २५ :

कलकत्ता, १३-९-२१

प्रिय देवी,

सप्रेम वन्देमातरम्। तुम्हारे दो पत्र एक ता. ५-९ का व दूसरा बिना तारीख का मिला। समाचार विदित हुए। पत्र पढ़कर आनन्द हुआ। तुम्हें पहले पत्र का जवाब शीघ्र देने का विचार था, परन्तु महात्माजी के यहां रहने और वर्किंग कमेटी में अधिक समय लगने के कारण पत्र नहीं लिख सका। तुम्हें पत्र लिखने में बड़ा आनन्द और शांति मिलती है।

मंदिर में प्रायः सब स्वदेशी कपड़ा हो गया। मुकुट सोने-चांदी के बनवाने का विचार लिखा सो ठीक। नहीं बने, वहांतक खादी के बना लिये जावें। जो विशेष फर्नीचर हो, उसे बगीचे के बंगले में रखाया जा सकता है।

'मेरे तो प्राण ही बापू को अर्पण हैं, सपने में भी बापू ही दीखते हैं'— तुम्हारे पत्र में यह पढ़कर मुझे बहुत ही संतोष और प्रसन्नता हुई। परमात्मा हमारी बुद्धि ऐसी ही बनाये रखे। मुझे विश्वास है, परमात्मा अवश्य हमें सफलता और शक्ति प्रदान करेगा।

तुम्हें बम्बई से जो कपड़े भेजे थे, वे जहांतक याद है, हाथ के सूत के तथा हाथ के बने हुए आंध्र प्रदेश के हैं। नमूने के तौर पर तुम्हें भेजे थे कि इस तरह की बारीक खादी भी तैयार होने लग गई है। तुमने धोती-जोड़ा भेजा, सो पहुंच गया। उसका उपयोग कर रहा हूं। धोती-जोड़ा ठीक है। रेशम की माफिक लगता है।

पूज्य बापूजी आज मद्रास की तरफ जायंगे। मुझे ९-१० रोज यहां ठहरने के लिए कहा है। आशा है, यहां रहने से कुछ सफलता मिल जाय। थोड़ी विश्रांति लेते रहने का तुमने लिखा, सो जिस रोज कार्य ठीक हो

जाता है उस रोज विश्रांति अपने आप ही मिल जाती है। बाकी अब फिक्र कम रहती है। प्राय: आनन्द से ही सारा समय व्यतीत होता है।

पत्र फिर विशेष अवकाश मिलने पर लिखने का विचार है। आज बापूजी जा रहे हैं, वहां जाना है। रात को २-२॥ बजे सोया था। सुबह ६ बजे स्नान करके तुम्हें पत्र लिखना शुरू किया है। कमला के हाथ से भी पत्र लिखवाया करना, जिससे उसकी आदत पड़ जाय।

तुम्हारा,
जमनालाल

२६ :

कलकत्ता,
भादवा सुदी, १५
(१७-९-२१)

प्रिय देवी,

सप्रेम वंदेमातरम्। ता० १६-९ का लिखा हुआ तुम्हारा पत्र आज मिला। पढ़कर आनंद हुआ। तुमने लिखा कि पहले पत्र का जवाब देने में देर हुई जिससे चिंता हो गई थी, सो इस तरह चिंता होना ठीक नहीं है। कठिन परीक्षा का समय तो अब आनेवाला है। हम लोगों का जेल जाना बहुत जल्दी संभव हो सकता है। अगर इस तरह की छोटी-छोटी बातों से चिंता हुआ करेगी तो आगे असली ध्येय की प्राप्ति में देर लगेगी और बाधा पहुंचेगी। मन को सदैव शांत और आनंद में रखने की पूरी चेष्टा करनी चाहिए। जब हम लोगों का परमात्मा पर पूरा विश्वास है तथा बापू का आशीर्वाद हमें प्राप्त है तो फिर हमें क्या चिंता होनी चाहिए? आशा है, पत्र में इतना खुलासेवार लिखने का आशय तुम समझ गई होगी। भविष्य में कभी किसी कारण चिंता पैदा हो जाय तो इस पत्र को स्मरण करने का ध्यान रखना। परमात्मा जो कुछ करता है, ठीक ही करता है।

यहां विदेशी कपड़े तथा सूत के व्यापारियों से विदेशी वस्त्र-बहिष्कार में अच्छी सफलता मिल रही है। परमात्मा ने चाहा तो सोमवार तक पूरी सफलता मिल जावेगी। इसमें संदेह नहीं रहा।

आज मौलाना मुहम्मद अली, शौकतअली तथा डा० किचलू की

गिरफ्तारी का समाचार मिला। यहां अभी तक पूरी शांति है। परमात्मा सब जगह शांति रखेगा तो हमारा स्वराज्य-प्राप्ति का उद्देश्य शीघ्र सफल होगा।

कलकत्ते में जो कार्य होता है, समाचार-पत्रों में उसका हाल पढ़ लिया करती होगी। यहां मुझे अजमेर, कराची, अमृतसर, भागलपुर आदि गांवों में आने के लिए तार-पत्र आ रहे हैं। यहां का कार्य समाप्त होने पर २-४ रोज में ही बापू की आज्ञा होगी तो वहां जाने का विचार है, अथवा वर्धा आकर फिर कहां जाना है, यह निश्चय किया जायगा।

चि० राधाकिसन खूब हिम्मत और प्रेम के साथ देश-सेवा का कार्य कर रहा है। उसका पत्र पढ़कर बड़ी प्रसन्नता हुई। उसे बधाई का तार और पत्र दिया है। इस तरह की लगन के सब घरवाले हो जायं तो और भी आनंद बढ़े।

कल यहांपर विदेशी कपड़े का बहिष्कार करनेवाले ३८ स्वयंसेवक प्रसन्नतापूर्वक जेल में जाने के लिए गिरफ्तार हुए हैं। कल ही जिन मजदूरों को विदेशी कपड़ा नहीं उठाने के कारण सरकार ने दूसरा अपराध लगाकर सात रोज के लिए जेल भेजा था, वे छूटकर आये थे। उनका बहुत बड़ा स्वागत किया गया।

पत्र जहांतक बने शुद्ध और साफ अक्षरों में लिखने का अभ्यास करना चाहिए। यहां का और सब हाल श्री सत्यदेवजी से पूछ लेना।

तुम्हारा,
जमनालाल

: २७ :

कानपुर जाते हुए (रेल में),
१२-१०-२१ (विजयादशमी)

प्रिय देवी,

सप्रेम वन्देमातरम्। पत्र तुमको बंबई से नहीं लिख सका। अजमेर जाना बिलकुल निश्चित हो चुका था, परन्तु कानपुर से कई तार आये। इससे महात्माजी ने पहले कानपुर जाने की आज्ञा दी और यहां आना पड़ा। कानपुर दो रोज ठहरकर अजमेर जाने का विचार है। वहां से

ता० १८-१९ तक सीकर पहुंचना होगा, ऐसा लगता है। फिर पंजाब और सिंध-हैदराबाद जाने का विचार है।

आज विजयादशमी है। आज के दिन हमारे धर्मयुद्ध की विजय हुई थी। इसलिए परमात्मा से प्रार्थना है कि हमारे इस पवित्र धर्मयुद्ध में भी वह हमें शीघ्र सफलता प्रदान करे। मुझे तो पूर्ण विश्वास है कि हमारी विजय अवश्य होगी। अब तो स्वदेशी पर ही पूरा जोर देना हैं। रात-दिन स्वदेशी का खूब प्रचार हो, विदेशी कपड़ा एकदम बंद हो जाय, इस तरह का उद्योग करना है।

तुम्हें मालूम हुआ ही होगा कि बंबई में करीब ४५ सज्जनों ने सही करके सरकार को ललकारा है कि अली-बंधु वगैरा पर जो अपराध लगाया है, वह अपराध हम भी करते हैं और वैसा करना अपना कर्त्तव्य समझते हैं। अब देखें सरकार क्या करती है ? अगर न्याय करना चाहती है तो सही करनेवाले इन सबोंको पकड़ना चाहिए, नहीं तो अली-भाइयों पर से यह धारा उठा लेनी चाहिए। अगर तुम बंबई में उस रोज होती तो तुम्हारी भी सही हो जाती। जब श्री सरोजिनी नायडू और अनसूया बहन ने सही की तब मुझे तुम्हारी बड़ी याद आई। अब तो खुली लड़ाई छिड़ चुकी है। परमात्मा हम सबको धैर्य और हिम्मत बनाये रखे, यही प्रार्थना है।

नींद खूब शांति से आती है। जिस दिन कुछ कार्य नहीं होता, उस दिन अलबत्ता विचार हो जाता है। परन्तु अब तो ऐसे मौके कम ही आते हैं।

दशहरे का सोना-पत्र इसी पत्र को समझ लेना है। बच्चों को और सारे कुटुंब को खूब प्यार के साथ असली सिद्धान्त और ध्येय पर लाने की चेष्टा करती रहना। पत्र पढ़ने में तुम्हें कष्ट होगा, क्योंकि चलती गाड़ी में लिखा है।

तुम्हारा,
जमनालाल

: २८ :

तिलक स्कूल आफ पोलिटिक्स, लाहौर,
दीपावली, कार्तिक बदी ३०, सं० १९७८
(३०-१०-२१)

प्रिय देवी,

सप्रेम वंदेमातरम्। दशहरे के बाद आजतक तुमको पत्र नहीं लिख

सका, कारण, इस दौरे में अवकाश कम मिला। करांची से अभी रात को ९।। के करीब यहां लाहौर पू० लाला लाजपतरायजी के घर पर पहुंचा हूं। आज की यह दीपावली की रात, इस पवित्र घर में विताई जायगी। यहां कल रहकर ता० १ को अमृतसर और ३ को दिल्ली जाने का विचार है। वहां से, संभव है, वंबई होकर वर्धा आना हो। अगर पू० वापूजी दूसरी आज्ञा देंगे तो वैसा करूंगा। स्वास्थ्य खूब अच्छा है। शेखावाटी का दौरा जल्दी-जल्दी में ठीक ही हो गया। स्वदेशी का अच्छा प्रचार हो जायगा। वीकानेर राज्य में तो सभा वगैरा राज्यवालों ने नहीं होने दी। वहां की कार्रवाई तो हास्यजनक थी। हम लोगों के लिए वीकानेर-राज के बड़े-से-बड़े पुलिस अफसरों को खूब परिश्रम करना पड़ा। अगर तुम साथ होती तो दृश्य देखने योग्य ही था। मुसाफिरी में खूब अच्छा अनुभव मिल रहा है। जोधपुर में दो महात्माओं से भेंट हुई। योग्य थे। करांची में मौलाना शौकतअली, मुहम्मदअली और शंकराचार्य से भेंट हुई तथा उनका मुकदमा भी देखा। ये लोग जेल में वड़े आनंद में हैं। २-३ जनों का तो वजन काफी वढ़ गया है।

स्वदेशी का कार्य ठीक हो रहा है।

तुम्हारा,
जमनालाल

: २९ :

वर्धा, २५-११-२१

श्रीयुत प्राणनाथ,

सप्रेम नमस्कार। पत्र आपका दुकान में आया। हकीकत मालूम हुई और दो-चार दिन वंबई ठहरोगे और जरूरत पड़ने पर बाहर भी जाना पड़े यह लिखा सो आजकल वड़े जोखम के दिन हैं। गाड़ी, मोटर में अथवा पैदल संभालकर चलना चाहिए। कलकत्तेवाले केसरदेवजी जैसे भी फंस गये। उसमें क्या फायदा! काम करते जाना, समय-वे-समय बहुत होशियारी से बचते जाना, इसीमें बहादुरी है। थोड़ा-सा काम किया और प्राण दे दिये उसमें कुछ तारीफ नहीं। आप समझदार हैं, परंतु सभी बातों में चूकोगे नहीं ऐसा आपको और मुझे दोनों को नहीं मानना चाहिए। समझदार

आदमी को देश के लिए और अपने लिए जीने की इच्छा जरूर रखनी चाहिए।

लाहौर में बड़े लाट का पुतला हटाने के लिए आपका जाना तो जरूरी नहीं होगा न ? अगर हो तो ऐसी जगह मुझे लिये बिना आप नहीं जायंगे। महात्माजी की कृपा से शांति एक दफा तो जरूर होगी ही।

डेलीगेट के फार्म आप पूछते थे सो आपकी इच्छानुसार भरवा देंगे। यहां सब कुशल से हैं। नानू दो-चार दिन में ठीक हो जायगा। गुलाबबाई को उनके घरवाले यहां नहीं छोड़ते, सो बिदा करके राजी-खुशी भेज देंगे। आप कोई भी चिन्ता न करें।

कमला की मां

: ३० :

वर्धा, २९-१-२२

प्रिय देवी,

सप्रेम वंदेमातरम्। बारडोली जाते समय दिया हुआ बापूजी का संदेश हमेशा मनन करने योग्य है। कल नागपुर, वर्धा और प्रान्त में युवराज के आगमन के कारण हड़ताल अच्छी होती दीखती है। मैं कल नागपुर गया था। आज फिर जाऊंगा। तुम आश्रम का खूब फायदा उठा रही हो। क्या पिकेटिंग शुरू हो गई ? अगर नहीं तो, कब शुरू होगी ? मेरा विचार शुक्रवार ता० ३ को रवाना होकर कलकत्ता जाने का है। ५-७ रोज लगेंगे। पत्र कलकत्ता देना। यहां पूज्य माजी बच्चों को खूब याद करती हैं।

श्री सरलादेवी ठीक हो गई होंगी। प्रणाम कहना। तुम्हारा १५ रोज में यहां आना हो जायगा क्या ?

यहां सब प्रसन्न हैं। बच्चों को मेरी ओर से प्यार करना। सोनीराम को राजी रखना। श्री गोमतीबहन को वंदेमातरम् कहना।

तुम्हारा,
जमनालाल

: ३१ :

साबरमती, २-२-२२

श्रीयुत प्राणनाथ,

सप्रेम नमस्कार ! पत्र आपका मिला। बापूजी ने बारडोली जाते

वक्त प्रार्थना में जो बातें कही थीं, सो मैंने भी बराबर सुनीं। कोई १५ मिनिट पहले जाकर उनके पास बैठ गई थी। मैंने दो बात याद रक्खीं। एक तो उन्होंने कहा—यह नहीं मान लेना चाहिए कि हमारे मन का मैल धुल गया है। जैसे-जैसे धुलता है वैसे-वैसे ज्यादा-ज्यादा दीखता भी जाता है। इसलिए धोते ही जाना चाहिए। कहांतक धोयेंगे, ऐसा सोचकर उदासीन नहीं होना चाहिए और यदि उदासीनता हो तो वह आनन्दमयी ही हो, चिंतायुक्त नहीं।

दूसरी यह कि 'सत्य में ब्रह्म है किन्तु कहीं दीखता नहीं', इसलिए विश्वास नहीं आता। उपाय यह है कि इसको उल्टा करो याने करके देखो; तब तो विश्वास आयगा ही कि सत्य में ब्रह्म है, कारण सत्य तो प्रत्यक्ष दीखता है।

दोनों बातों से समाधान मिला। गोमतीबेन के पास जो कुछ पठन-पाठन होगा, सुनने जाया करूंगी। गोमतीबेन ने कहा है कि काम के कारण वह लिख नहीं पायेंगी। मुझे लिखने को कहा है। मौन चालू है। अच्छी हैं।

खादी बेचने के लिए गांव की स्त्रियां पहली तारीख को गई थीं। अच्छी बिक्री हुई। ता० २ को हम सब गये थे। १५० स्त्रियों का जलूस निकाला था। चार-चार स्त्रियों की दो-दो लाइनें बनी थीं। गाती हुई हम सब चली जा रही थीं— "कायदा नो भंग करीशूं रे, अमे स्वराज्य लईशूं।"[1]

जुलूस पहले से अच्छा था। कोई पीछे नहीं फिरता था। जुलूस में स्त्रियां बड़ी निडर और खुश दिखाई देती थीं। ता० ३ को फिर गाना गाते, ताली बजाते, जुलूस निकालेंगी। अगर मिला तो आगे-आगे चलने के लिए बाजा भी किराये पर कर लिया जायगा। अब देखें क्या होता है? सरलादेवी के पति आये थे। बंबई भेजा है। महात्माजी से मिलकर आवेंगे सरलादेवी ता० ८ तक जायंगी। उन्होंने आपको नागपुर चिट्ठी दी थी। पहुंची या नहीं? पूछा है।

आप वर्धा जायं तब लिख दीजियेगा, हम भी आ जायंगे। अब हमारा यहां ज्यादा रहने का विचार नहीं है। लेकिन आपका तो वर्धा रहना होगा न!

---

[1] हम क़ानून तोड़ेंगे और स्वराज्य लेंगे।

नहीं तो हमारा क्या ? हम तो कहीं भी पड़े रह सकते हैं। बच्चों के बारे में आपके लिखे मुताबिक कोशिश करूंगी।

बापूजी ने बड़ा कठिन प्रण लिया है। ईश्वर उन्हें यश दे और हिन्दुस्तान की लाज रखे। आपकी आरती उतारकर कहती हूं कि कलकत्ते का काम जरूर यश लायगा।

मदालसा को बड़ोदा भेजा था। पांव ठीक हो चला है। मैंने मानिकरावजी की गोली शुरू की है।

मेरी कई बातों का तो अच्छा समाधान हो गया है। अब यहां रहने की ज्यादा जरूरत नहीं है।

आपकी हितेच्छु,
जानकीदेवी

: ३२ :

साबरमती-आश्रम,
२०-३-२२

प्रिय जानकी,

सप्रेम वंदेमातरम्। पूज्य बापूजी के मुकदमे का सब हाल समाचारपत्रों में पढ़ा होगा। मुझे इस समय यहां आने से बहुत लाभ हुआ। बापू से खूब बातें हुईं। बापू ने हमेशा के लिए संग्रह के वास्ते एक बहुत ही सुन्दर पत्र[१] लिखकर दिया है। किसी समय अशांति मालूम हो तो उस पत्र से बहुत लाभ पहुंचेगा।

---

१ पत्र नीचे लिखे अनुसार है—

१६-३-२२

चि० जमनालाल,

जैसे-जैसे मैं सत्य की शोध करता जाता हूं, मुझे प्रतीत होता है कि उसमें सबकुछ आ जाता है। प्रायः यह प्रतीत होता रहता है कि अहिंसा में वह नहीं है, परन्तु उसमें अहिंसा है। निर्मल अंतःकरण को जिस समय जो प्रतीत हो वह सत्य है। उसपर दृढ़ रहने से शुद्ध सत्य की प्राप्ति हो जाती है। इसमें मुझे कहीं धर्म-संकट भी मालूम नहीं होता। लेकिन अहिंसा किसे कहें, इसका निर्णय करने में प्रायः कठिनाई का अनुभव होता है। जन्तुनाशक

कोर्ट का दृश्य अद्‌भुत था। ऐसा मालूम होता था जैसे जज तथा उसके साथी ही दोषी हैं तथा बापू प्रेम से उनको दोष से मुक्त होने का उपदेश कर रहे हैं। जज आदि अंग्रेज थे। फिर भी उनपर खूब असर हुआ। १८ मार्च का दिन हमेशा याद रखने योग्य है। यह दिन हमारे भविष्य के इतिहास में विजली की तरह चमकता रहेगा। अच्छा होता, अगर तुम आ जातीं। खैर, कोई बात नहीं। बापू ने मुझ खूब जोर से पीठ ठोंककर आशीर्वाद दिया। अब मुझे पूरा विश्वास है कि हम लोग अपनी उन्नति अवश्य कर सकेंगे। जिम्मेदारी खूब बढ़ गई है। अब कार्य की दृष्टि से जेल जाने की बिल्कुल जरूरत नहीं मालूम होती। हां, शांति तथा विश्राम के लिए जाने की इच्छा होना संभव है। परन्तु इसे रोकना होगा। कार्य करते हुए वैसा मौका आ गया तो आनंद की बात है। जान-बूझकर नहीं जाना है। बंबई में तथा यहां मेरे गिरफ्तार होने की चर्चा बहुत जोर से थी। परन्तु उस चर्चा में कम-से-कम फिलहाल तो कोई दम नहीं है। अगर मुझे गिर्फ्तार होना ही पड़े तो उस हालत में 'हिन्दी-नवजीवन' में प्रकाशक की हैसियत से मेरी जगह तुम्हारा नाम रक्खा जाय, ऐसा मेरा विचार हुआ

---

पानी का उपयोग भी हिंसा है। हिंसामय जगत में अहिंसामय बनकर रहना है। वह तो सत्य पर दृढ़ रहने से ही हो सकता है। इसलिए मैं तो सत्य में से अहिंसा को फलित कर सकता हूं। सत्य में से प्रेम की प्राप्ति होती है। सत्य में से मृदुता मिलती है। सत्यवादी सत्याग्रही को एकदम नम्र होना चाहिए। जैसे-जैसे उसका सत्य बढ़ता है, वैसे ही वह नम्र बनता जायगा। प्रति क्षण मैं इसका अनुभव कर रहा हूं। इस समय सत्य का मुझे जितना ख्याल है, उतना एक वर्ष पहले न था, और इस समय में अपनी अल्पता को जितना अनुभव कर रहा हूं, उतना एक साल पहले नहीं कर पाता था।

मेरी दृष्टि में, 'ब्रह्म सत्यं जगन्मिथ्या' इस कथन का चमत्कार दिनों-दिन बढ़ता जाता है। इसलिए हमें हमेशा धीरज रखना चाहिए। धैर्य पालन से हमारे अंदर की कठोरता चली जायगी। कठोरता के न रहने पर हममें सहिष्णुता बढ़ेगी। अपने दोष हमें पहाड़ जितने बड़े प्रतीत होंगे, और संसार के राई से। शरीर की स्थिति अहंकार को लेकर है। शरीर का

था। इस वारे में मने महात्माजी से पूछा था। उन्होंने भी कहा कि ऐसे मौके पर तुम्हारा नाम रखा जा सकता है। खैर, हाल में तो यह मौका नहीं है, जब आयेगा तब देखा जायेगा।

हां, एक बात लिखनी रह गई। ता: १८ को सुबह मैं तथा कोर्ट में कई लोग रोये। प्रेम और वियोग के कारण मेरी आंखों में आंसू भर आये थे। मैंने उन्हें वाहर जाकर पोंछ डाला। वापू खूब हँसते थे। कई लोग खूब हिम्मत रखे हुए थे।

अब मेरा कार्यक्रम इस प्रकार रहेगा—

ता० २१ से २६ तक वंबई।

ता० २७ को खंडवा में सुंदरलालजी से मिलना।

---

आत्यंतिक नाश मोक्ष है। जिसके अहंकार का सर्वथा नाश हुआ है, वह मूर्तिमन्त सत्य बन जाता है। उसे ब्रह्म कहने में भी कोई बाधा नहीं हो सकती। इसीलिए परमेश्वर का प्यारा नाम तो दासानुदास है।

स्त्री, पुत्र, मित्र परिग्रह सबकुछ सत्य के अधीन रहना चाहिए। सत्य की शोध करते हुए इन सबका त्याग करने को तत्पर रहें तो ही सत्याग्रही हुआ जा सकता है।

इस धर्म का पालन अपेक्षाकृत सहज हो जाय, इस हेतु से मैं इस प्रवृत्ति में पड़ा हूं, और तुम्हारे समान लोगों को होमने में भी नहीं झिझकता। इसका बाह्य स्वरूप हिंद स्वराज्य है। उसका सच्चा स्वरूप तो उस-उस व्यक्ति का स्वराज्य है। अभी एक भी ऐसा शुद्ध सत्याग्रही उत्पन्न नहीं हुआ है। इसी कारण यह देर हो रही है। किन्तु इसमें घबराने की तो कोई बात ही नहीं। इससे तो यही सिद्ध होता है कि हमें और भी अधिक प्रयत्न करना चाहिए।

तुम पांचवें पुत्र तो बने ही हो। किन्तु मैं योग्य पिता बनने का प्रयत्न कर रहा हूं। दत्तक लेनेवाले का दायित्व कोई साधारण नहीं है। ईश्वर मेरी सहायता करे और मैं इसी जन्म में उसके योग्य बनूं।

शुभेच्छुक,
बापू के आशीर्वाद

ता० २८ को इंदौर महासभा के लिए जाना।

ता० १ तक वहां रहकर पीछे वंबई या वर्धा आना।

अव खादी का कार्य जोर से करना है। इसलिए वंबई विशेष रहना पड़ेगा। शायद तुम लोगों को भी वंबई रहना पड़े। यहां आश्रम में सव प्रसन्न हैं। वा अपना कार्य नियमित रूप से और धैर्य से करती हैं। सरलादेवी आज जा रही हैं। तुम्हें याद करती हैं।

तुम्हारा,
जमनालाल

पुनश्च—हाल में ही जो 'आश्रम भजनावली' छपी है, वह तुम्हारे लिए भेजता हूं। इसे पढ़कर तुम्हें खूब लाभ मिलना संभव है। सभी आवश्यक बातें एक जगह हैं। कुछ कोरे पन्ने हैं, उनमें कुछ लिखना मत। कुछ अच्छे भजन मिलेंगे तो उनमें लिखेंगे।

: ३३ :

वर्धा, २३-३-२२

श्रीयुत प्राणनाथ,

चिट्ठी आपकी आई। समाचार मालूम हुआ। पू० महात्माजी के मुकदमे की हकीकत सुनकर दुःख और आनंद दोनों हुआ। आपका प्रोग्राम देखा। ता० १ तक आना होगा और सो भी 'शायद'। वंबई-वर्धा का नक्की नहीं। खैर, ईश्वर की मरजी। मेरी इच्छा थी कि धूप में कम फिरते और थोड़ा आराम मिलता तो अच्छा होता। परन्तु समय ऐसा आया, क्या करें? आपके पास छाता भी नहीं। आपका खादी का छाता यहां तो नहीं है। वहां हो तो ले लेना।

आपका कार्यक्रम ठीक मालूम हो जावे तो भुसावल स्टेशन पर नानू को भेज देवें, मुसाफिरी में काम आ जायगा। नानू की तबियत ठीक हो गई है। आप गये तव आपके मन में उसके बारे में दुःख हुआ। परन्तु मैं समझ गई कि आपके गये बाद इसको संभालना मेरा कर्तव्य है। मुसाफिरी के कारण उसके शरीर में गरमी बहुत रहती है। इसलिए पुरान आंवले वगैरा देना अच्छा समझा और बिना दवाई के उसे आराम हो गया।

भुसावल स्टेशन पर दो कुर्ते आपके भेजेंगे। संतरे का शरबत काशी बाई से घर पर बनवाया था। आज एक शीशी भेजते हैं, एक नानू के साथ भेज देंगे। शरीर की संभाल पूरी रखना। तबीयत ठीक हो तभी काम कर सकोगे। धूप से बचना। गये थे उस रोज तो मन को बहुत दुःख हुआ था। अब तो ठीक है। परन्तु एक जगह रहकर ज्यादा काम हो, ऐसा करना चाहिए।

संतरे का शरबत पानी में मिलाकर लेना। संतरे भी भेजे हैं। संतरे खाने में बहुत देर लगती है, पर शरबत तो आधा मिनट में तैयार, पानी में डाला और पी लिया। अपने हाथ से डालना चाहिए, दूसरे से मांगा-मांगी में तो कई खटपट है।

मास्टर की पढ़ाई शुरू है।

आपकी हितेच्छु,
जानकीदेवी

: ३४ :

बंबई,
चैत सुदी १२, सं० १९७९
(९-४-२२)

प्रिय देवी,

सप्रेम वंदेमातरम्। पत्र तुम्हारा इधर नहीं मिला। क्या तुम सब बंबई नहीं रह सकोगे? अब तो यहीं पर ज्यादा काम हो सकता है। सब तरह के काम करने के साधन यहांपर ज्यादा हैं। तुम विचार कर देखना। आजकल मन थोड़ा व्यग्र रहता है। कार्य का जो भार पूज्य बापू तथा वर्किंग कमेटी ने दिया है, वह जब व्यवस्थापूर्वक होने लगेगा, तभी शांति मिलेगी। तुम शांति से अपना कर्तव्य करती रहना। बापू को कैद की सजा हुई, उस दिन से मन में ऐसी इच्छा थी कि हो सके वहांतक चर्खा थोड़ी देर तो अवश्य काता जाना चाहिए। परन्तु कई कारणों से यह इच्छा पूरी नहीं हो सकी। इससे भी मन में थोड़ी अशांति रहती है। यहां घूमने का कार्य ज्यादा रहता है। तुम तो कम-से-कम एक घंटा चर्खा कातने का हर रोज प्रयत्न किया करो।

अभी अगर मैं दूसरी जगह जाऊं तो जो कार्य शुरू हुआ है, उसमें थोड़ी हानि पहुंचना संभव है। परन्तु एक बार वर्धा आकर फिर ता० २० के लिए कलकत्ता जाना आवश्यक है। मैं बहुत करके ता० १५ को सुबह वर्धा पहुंच जाऊंगा। पूज्य काकाजी[1] का स्वास्थ्य ठीक नहीं रहता है। तुम संभाल कर लिया करो। जिस तरह से इन्हें आराम पहुंचे, वैसी व्यवस्था रखो।

बापू के जेल में गये बाद कार्य की जवाबदारी ज्यादा मालूम होती है। परंतु जाते समय बापू जो देन अपने हाथ का लिखा हुआ उपदेश दे गये, उससे बड़ी शांति मिलती है और जिम्मेदारी का भान होता है।

अब तुम्हें कम-से-कम फालतू गहने तो बेचकर वे रुपये खादी में लगा देने चाहिए। जो गहना बेचना हो सो समय मिले तो अलग निकालकर रख छोड़ना।

इंदौर में महासभा[2] अच्छी हो गई। स्त्रियां खूब आई थीं। प्रार्थना रोज हुआ करती होगी। जहांतक बन पड़ता है, आगे-पीछे प्रार्थना करने का ध्यान मैं भी रखता हूं। भाई देवदास गांधी और जमनादास यहींपर हैं। रामदास भी आये थे। कल ही वापस गये हैं। इन लोगों के पास रहने से शांति मिलती है।

बच्चों को प्यार। अबकी बार अहमदाबाद से अपना फोटो ले आया हूं। वर्धा आते समय साथ लाने का विचार है। बच्चों की पढ़ाई ठीक चल रही होगी। तुम पू० विनोवाजी से मिलती ही होगी।

पूज्य माजी को प्रणाम कहना।

तुम्हारा,
जमनालाल

: ३५ :

वर्धा, (१०-४-२२)

श्रीयुत प्राणनाथ,

सप्रेम प्रणाम। पत्र आपका मिला। पढ़ने से पहले तथा पीछे मन व्यग्र तो जरूर ही होता है। कारण, एक तो कृष्ण के वियोग में जो हालत

---

१ जमनालालजी के जनक श्री कनीरामजी।

२ अग्रवाल महासभा का अधिवेशन।

गोपियों की थी, सो मांजी, काकाजी तथा मेरी हो रही है। आने के नाम से भी शांति नहीं मिलती, क्योंकि जाना पहले दीखता है। ज्यादा जवाबदारी देखकर यही होता है। ईश्वर कैसे बेड़ा पार करेगा, परन्तु आगे के विचारों से जरा शांति मिलती है कि स्वराज्य मिले या न मिले, ऐसा समय आने से मनुष्य-जन्म के कर्त्तव्य का तो पालन हो गया। जैसे कृष्ण ने अर्जुन से कहा था—'जीते तो कीर्ति मिलेगी, मरे तो मोक्ष।'

परंतु अब एक विचार है कि एक जगह रहकर काम करें। बापू के हाथ का पत्र देखने से शांति मिलती है। आपने सूत कातने का लिखा, सो आपके बदले जहांतक होगा मैं कातूंगी,। आपका काम दूसरा है। आपसे सूत कातना नहीं होगा।

बाबू, ओम, दादाजी अभी तो सब ठीक हैं। दादाजी कच्चाई लाते हैं। मैं उनके संतोष के माफिक व्यवस्था रखती हूं। मैंने विचार किया है कि दूसरों के आशीर्वाद के बदले माता-पिता का ही हार्दिक आशीर्वाद मिले तो कितना अच्छा !

बंबई शौक के लिए तो आने का विचार नहीं है ? आपका वहां रहना निश्चित हो तो मैं विचार करूं।

जेवर मैंने छांटे हैं। सब नहीं निकालेंगे। कुछ राधाकिसन के ब्याह के वास्ते हैं, कुछ अभी मोती के बनाये, सो नये हैं। वे नेवटियों को कमला के लिए मोल दे देंगे। गढ़ाई नहीं लेंगे। दो-चार घर में रखेंगे। बहुत-से-बहुत १५ हजार का निकलेगा। सो मूल खादी के काम में न लगाकर ब्याज भले ही धरमादे में लगा दो। खादी के काम में भी मूल जाने का डर है। आगे आपकी मरजी।

और खादी का काम करो तो ५-४ आदमियों का साथ जरूर रखना, नहीं तो आप कहांतक देखोगे, आपके पीछे काम बहुत है।

पत्र मांजी को बंचवा दूंगी। प्रार्थना शाम की तो हो जाती है। सवेरे कभी चूकती है। अभी दो रोज से तो सेठीजी भी आ बैठते हैं और कहते हैं कि घर-घर को आश्रम बना दो। आप किसी प्रकार की चिंता मत करना। आपको थोड़ा आराम मिलता तो ठीक था। आपकी हितेच्छु,

जानकी

: ३६ :

वंबई, २२-७-२२

प्रिय देवी,

सप्रेम वंदेमातरम् । तुम्हें पत्र लिखन का विचार करता रहा, परंतु लिख नहीं सका। कल ही से थोड़ा अवकाश मिला है। यहां आये बाद तुम्हारे पत्र की प्रतीक्षा रोज किया करता हूं। आशा है, इस पत्र का जवाव शीघ्र भेजोगी। मेरा स्वास्थ्य ठीक है। यहां आजकल वरसात बहुत है। मैं दूकान पर ही रहता हूं। वंगले में पं. मोतीलालजी (नेहरू) के घर के लोग रहते हैं। उनकी सब व्यवस्था अपनी ओर से हो रही है। आज मोतीलालजी के लड़के जवाहरलालजी की पत्नी कमलावहन का आपरेशन होनेवाला है। आपरेशन मामूली है।

वच्चों की पढ़ाई, खासकर कमला और प्रहलाद की, बराबर हो, इसका ध्यान रखना। प्रहलाद को खूब प्यार करना। वह तुम्हें हृदय से मां समझने लगे तब समझना चाहिए कि तुम्हारा हृदय पूरी तरह पवित्र और प्रेममय हो गया है। हृदय की परीक्षा तो और भी हो सकती है। वह तो तुम्हारे साथ ही है। खासकर शांति की मां पर असर डालना।

तुम्हारे लिए आज चि. राधाकिसन के साथ 'प्रेमाश्रम'[१] किताब भेज रहा हूं। तुम इसे अवश्य विचार के साथ पढ़ लेना। यह तुम्हें 'टाम काका की कुटिया' से भी ज्यादा पसंद आयेगी। बड़े अच्छे ढंग से लिखी है। कई बातें जीवन में लेने योग्य हैं। तुम इसे पढ़ना। फिर चि. गंगाविसन को पढ़ने देना। औरों से भी पढ़वाना। अध्ययन तो तुम्हारा चलता ही होगा।

श्री किशोरलालभाई (मशरूवाला) वर्धा गये थे। एक रोज आश्रम में ठहरे। तुम्हें पता भी नहीं लगा। उन्हें घर लाकर १-२ रोज रखना चाहिए था। भोजन कराना था। खैर, इस बार तो तुम्हें मालूम नहीं हुआ। आगे के लिए ध्यान रखना। आश्रम में या दूकान पर ऐसे व्यक्ति आयें तो अवश्य सत्संग का लाभ लेना चाहिए। मैंने कल उनके यहां ही भोजन किया। वह

---

[१] प्रेमचंदजी का प्रसिद्ध उपन्यास

यहींपर हैं। आज अहमदाबाद जायंगे। मेरा विचार भी वर्धा आने का है। शायद जल्दी ही आना हो।

बच्चों को प्यार।

तुम्हारा,
जमनालाल

: ३७ :

बंबई, ९-१०-२२

प्रिय देवी,

सप्रेम वंदेमातरम्। तुम्हें मालूम ही है कि मैं वर्धा ८ या ९ ता० को पहुंचनेवाला था। परंतु यहां एक बड़े रुई-व्यापारी का काम बिगड़ गया, जिससे लोगों के लाखों रुपये रह गये। अपनी दूकान में तो जोखिम नहीं है, परन्तु चिरंजीलालजी की दूकान के अंदाजन ५० हजार रुपये उसमें रह गये। इसकी तजवीज अपनेको ही करनी पड़ेगी। और भी बहुत-सी गड़बड़ है। इसलिए मुझे यहां रुकना पड़ा। ईश्वर सब ठीक करेगा।

अभी ५-७ रोज दूकान के काम के लिए मुझे यहां ठहरना पड़ेगा। मदालसा व ओम् की खांसी कम होगी। बच्चों को राजी रखना। किसी तरह चिंता मत करना।

तुम्हारा,
जमनालाल

पुनश्च—पूज्य बापूजी बच्चों की व तुम्हारी याद करते थे। तुमपर उनका बहुत प्रेम और श्रद्धा है, ऐसा उनके कहने से मालूम होता था। उनका स्वास्थ्य ठीक है।

: ३८ :

बंबई, १३-८-२३

प्रिय देवी,

सप्रेम वंदेमातरम्। तुम्हारा पत्र मिला। पढ़कर संतोष हुआ। तुम्हें पूज्य बापू के उपदेश के अनुसार अपने दोष ही अधिक देखने चाहिए। ज्यों-ज्यों अंतःकरण शुद्ध होता जायगा दूसरों के दोष देखने की आदत मिटती जायगी। मुझे पूरा विश्वास है।

'सप्ताह' (भागवत) पढ़नेवाला ठीक मिल जाय तो अपने मंदिर में या घर पर बैठाकर भी तुम सुन सकती हो। मैं आज पू. जाजूजी को लेकर साबरमती-आश्रम जा रहा हूं। वहां आश्रम, 'यंग इंडिया', 'नवजीवन', 'हिन्दी-नवजीवन' बुनाईशाला (जो हमारे खादी-विभाग के नीचे चल रही है) आदि के लिए खर्च वगैरा की व्यवस्था करनी है व उनका कार्य देखना है। पूज्य बापू ने जेल से जो सूत कातकर भेजा है, उसका भी प्रबंध करना है। उसकी खूब कीमत आयेगी। हमें वहां २-३ रोज लगेंगे। वहां से आकर ३१ ता. तक वर्धा पहुंचने का विचार है। वर्धा की तरफ ५-१० रोज घूमकर कलकत्ता की तरफ जाना पड़ेगा।

पं. मोतीलालजी के घरवालों के लिए मुझे यहां रहने की जरूरत नहीं है। उनके लिए प्रबंध कर दिया जायगा।

क्या अबके सोमवती (अमावस) को तुमने चर्खे बांटे ?

तुम्हारे पत्र से किसनी वर्धा मालूम होती है। उसे पूरा उपदेश देकर कर्तव्य-ज्ञान बराबर समझना।

तुम्हारा,
जमनालाल

: ३९ :

पूना,
आश्विन बदी १२,
(७-१०-२३)

श्री सौ० देवी,

सप्रेम वंदेमातरम्। आज तार दिया सो पहुंच गया होगा। मुझे जोर का बुखार कई दिनों तक आया। बुखार पित्त के कारण हो गया था। अबकी बार पूज्य दादाजी का श्राद्ध चिंचवड के आश्रम में जाकर किया। उस दिन जीमने में अंदाज ३॥ बज गये थे। पहले दिन भी भोजन नहीं किया था। दूध, फल लिये थे। बहुत करके इसी कारण से बुखार हुआ होगा। सभा-सोसाइटियों के कारण बंबई में भी शांति बराबर नहीं मिली थी। बापूजी की जन्म-गांठ के लिए २-३ दिन के लिए यहां आया था। ५-६ दिन में दशहरे तक वर्धा आने का विचार है। वहां आकर पीछे थोड़े दिन जाजूजी के पास रहेंगे। तभी शांति मिल सकेगी।

इस वक्त श्री रामनारायणजी व चि. रामनिवास की माताजी न प्रेम के साथ हमारी खूब सेवा-खातिर का इंतजाम कर रखा है। निवास की मांजी के विचारों में खूब परिवर्तन होता जाता है। एक दिन जरूर इनसे देश को बहुत लाभ पहुंचेगा।

छोटा बाबू तुम्हारे मन-माफिक होगा। अब तुम्हारी आशा पूरी हो गई। तुम्हारी याद तो खूब आती रहती है। बाकी अब तुम्हारी फिकर करने की जरूरत नहीं रही। तुम खुद अपना तथा दूसरों का सब इंतजाम कर सकोगी, ऐसा विश्वास हो गया है। जलवे के वक्त तुम्हारी इच्छा हो उस मुताबिक करना। दान बगैरा देना हो तो गरीब सत्पात्रों को ही खादी बांटना ठीक रहेगा। रु. ११०००) जलवे की मिती को तुम्हारे जमा हो जायंगे। तुमको अपना आगे का समय ज्यादा परमार्थ में ही लगाना पड़ेगा। परमात्मा ने किया तो सब ठीक हो जायगा। बाबू को, कमला को, राजी रखना। तुम अपनी खूब सम्भाल रखना।

पू. काकाजी व मां को कह देना कि मेरी फिकर नहीं करें। इस तरह कभी-कभी बुखार बगैरा आना तो मामूली बात है।

जमनालाल का वंदेमातरम्

: ४० :

ओंगल, १०-१-२४

प्रिय देवी,

सप्रेम वंदेमातरम्। कोकनाडा-कांग्रेस ने रचनात्मक कार्य, खासकर खादी के कार्य को खूब महत्व दिया है। खादी-बोर्ड को विशेष अधिकार भी दिया है। पूज्य राजगोपालाचारी, मगनलालभाई गांधी, शंकरलाल बेंकर आदि की सलाह से खादी-बोर्ड का काम एकदम शुरू करना पड़ा है। मैं इस बोर्ड का सभापति हूं। इस कारण मुझे भी साथ में घूमना पड़ता है। दक्षिण भारत में अंदाजन एक मास घूमना पड़ेगा। यहां खादी-प्रचार का कार्य खूब हो सकता है। कई गांवों को देखने का मौका लगा, तो मालूम हुआ कि यहां सूत कातनेवाली स्त्रियां और बुननेवाले जुलाहों की काफी अच्छी संख्या है। इन्हें बराबर रूई देकर इनसे सूत, कपड़ा लेने व बेचने

की अच्छी व्यवस्था हो जाय, तो लाखों रुपये की खादी आंध्र प्रदेश बना सकता है। यहां घूमने से पूज्य बापूजी द्वारा खादी को महत्व देने का कारण पूरी तरह समझ में आया। अब तो रोज चर्खा काते बिना शांति नहीं मिलती। मद्रास में चर्खा साथ रखने की व्यवस्था करना है। हिन्दुस्तानी का भी प्रचार इस प्रांत में अच्छा हो रहा है।

इस बार की कांग्रेस ठीक हुई। प्रबंध बहुत ही उत्तम था। तुम्हारी गैरहाजिरी कई बार याद आया करती थी। सब बड़े-छोटे नेता, प्रतिनिधि एक ही मैदान में झोंपड़ियों में रहते थे। मोटरगाड़ी की जरूरत नहीं पड़ती थी। स्टेशन भी वहींपर बना दिया गया था। आखिरी दिन तमाम नेता-प्रतिनिधियों का, हिन्दू, मुसलमान, ब्राह्मण, अंत्यज सबका—एक ही पंगत में बैठकर भोजन हुआ। पंगत बहुत बड़ी और देखने योग्य थी।

अबकी बार बंबई पहुंचते ही ५-६-परिचित मित्रों की मृत्यु का एक साथ समाचार मिला। इससे यही मन में आता है कि समय व्यर्थ न गंवाया जाय। जितना सेवा-कार्य बन सके कर लेना ही परम कर्तव्य है। बाकी सारी चिंता-फिक्र छोड़कर अब तो खासतौर पर खादी-प्रचार और हिन्दुस्तानी-प्रचार का ही काम करने का विचार है। इससे करोड़ों देश-भाइयों की सेवा करने का अवसर मिलेगा। ये दोनों कार्य ऐसे हैं, जिनमें किसी भी तरह की शंका व संदेह की गुंजाइश नहीं। आशा है, तुम भी इन दोनों कार्यों में खूब सहायता करोगी।

तुम्हारा स्वास्थ्य ठीक होगा। बालक सब ठीक होंगे। प्रायः बच्चों का सब भार तुम्हारे ही ऊपर डाल देना पड़ता है। मन में इस बात का विचार तो आता है, परन्तु दूसरा संतोषकारक उपाय दिखाई नहीं देता।

तुम्हें थोड़ा भी समय मिले तो नियमपूर्वक कातना जरूर शुरू कर देना। आश्रम में प्रार्थना करने या गीता समझने में थोड़ा समय लगाना चाहिए। अब हम लोगों को निश्चित जीवन बिताना होगा। कमजोरियां खूब याद आया करती हैं। परमात्मा की कृपा और तुम्हारे तप की मदद से, आशा है कि एक दिन मन को पूरा संतोष मिल सकेगा। तुम्हारे लिए मेरे हृदय में भक्ति व पूजा का भाव रहता है, परंतु मेरी ओर से व्यवहार में वह पूरी तरह प्रकट नहीं हो पाता है। यह देखकर कई बार दुःख और

लज्जा का अनुभव करता हूं। परंतु तुम मेरे हृदय को भली प्रकार जान गई हो, इसलिए गलतफहमी नहीं होती, इससे थोड़ी शांति भी रहती है। तुम्हारे साथ खूब मृदुता और प्रेम का व्यवहार करने का कई बार निश्चय करने पर भी हृदय का प्रेम मैं बातचीत में प्रकट नहीं कर पाता। इसकी कमी मालूम हुआ करती है। प्रयत्न करने पर परमात्मा की दया से यह बाहरी कठोरता भी कम हो जायगी और अपना घर-कुटुंब भविष्य में आदर्श बन सकेगा, ऐसा मेरे विश्वास होता है। आज वह आदर्श नहीं बन पाया है तो इसका विशेष जिम्मेदार मैं ही हूं।

आज थोड़ा विश्राम मिला है, इससे इतना सब लिख दिया है। मुसाफिरी में एक यह भी फायदा है। काम में अधिक लगे रहने के कारण कई विचारों को प्रकट होने का बहुत कम मौका मिलता है, इससे भी शांति रहती है।

अब ज्यादा पत्र लिखना संभव नहीं हो सकेगा। प्रोग्राम पत्रों में छपता ही है। दूकान को खबरं दे दी जाती है। स्वास्थ्य खूब ठीक है। साथी बहुत ही संतोषकारक हैं।

जमनालाल का वंदेमातरम्

: ४१ :

वीरुदुपट्टी, १८-१-२४

प्रिय देवी,

सप्रेम वंदेमातरम्। पत्र तुम्हें ओंगल से दिया था, सो समय पर मिला होगा।

अभी यहां पूज्य राजगोपालाचारीजी के साथ आया हूं। इधर के लोगों में पूज्य बापू के लिए बड़ी भक्ति है। खादी का प्रचार भी गांवों में ठीक हो रहा है। दिन-ब-दिन और बढ़ने की आशा है।

हम आज जहां ठहरे हैं, वह घर नाडा-जाति में एक प्रकार से उच्च अत्यंज जाति का है। इनके घर में हाथी, मंदिर आदि हैं। हमें खूब स्वागत-पूर्वक ले आये हैं। घर की व्यवस्था आदि सब ब्राह्मण-घरों के मुताबिक है। अब शायद पूज्य राजाजी की आज्ञा से यहां कुछ खाना भी पड़ेगा।

यहां से रात को एक रोज के लिए श्रीरामेश्वरजी जाना निश्चित हुआ है। तुम्हारे बिना वहां जाने से मन में विचार तो होता है, परन्तु एक बार हो आना ही निश्चय किया है। वहांपर भी खद्दर का थोड़ा प्रचार होना संभव है। कांग्रेस-कमेटी कायम हो गई है। इस मुसाफिरी में से २४ ता० को फिर मद्रास पहुंचेंगे। वहां से मैं अकेला बंबई होकर वर्धा आने का विचार कर रहा हूं। श्री राजाजी, शंकरलालभाई महाराष्ट्र प्रांत में घूमकर ७-८ रोज में, मेरे वर्धा पहुंचने के बाद, वहां आयेंगे और बाद में मुझे इनके साथ बिहार, पंजाब आदि जगह जाना पड़ेगा।

पूज्य बापूजी का आपरेशन तो ठीक हो गया। एक बड़ी भारी घाटी में से बचाव हुआ। अब तो ऐसा मालूम होता है कि शायद सरकार उन्हें शीघ्र छोड़ दे। देश और विलायत की हालत दिन-ब-दिन खराब होती जाती है। सरकार भविष्य का विचार करेगी तो छोड़ने में ही उसे एक प्रकार से लाभ है। परन्तु बापूजी अगर हम लोगों के, याने देश की जनता के, जोर से छूटें तो उसका विशेष प्रभाव पड़ेगा। खैर, जो होगा ठीक ही होगा।

अब अपने घर मिल का कपड़ा भी न आने पावे, इसका ख्याल रखना। चि० गंगाबिसन को भी लिखा है कि चि० लक्ष्मण के विवाह में शुद्ध खादी के सिवा दूसरे किसी भी कपड़े का उपयोग होना अनुचित होगा, यह ख्याल रखना।

छोटा बाबू (राम) राजी होगा। कमलनयन ठीक होगा। पत्र दो तो बंबई देना।

जमनालाल का वंदेमातरम्

पुनश्च—पू० राजाजी के साथ रहने से बड़ी शांति मिलती है। चर्खे और खद्दर के ही प्रायः स्वप्न आया करते हैं।

: ४२ :

दिल्ली, आसोज ब० ९, सं० १९८१
(२१-९-२४)

प्रिय देवी,

यहां पहुंचने की सूचना तार और पत्र द्वारा भेज चुका हूं।

पूज्य बापूजी से मिला। बातें हुई। बापू ने बहुत बड़ी तपश्चर्या आरंभ-की है। बापू का आत्मिक बल और परमात्मा पर उनकी जो श्रद्धा है, उसे देखते हुए विश्वास होता है कि उपवास पार पड़ जायंगे। बा भी आज आई हैं। मेरे पास ही ठहरी हैं। बापू की तपश्चर्या देखकर मन में बहुत-सी कल्पनाएं उठा करती हैं, परंतु खुद की कमजोरी देखकर लज्जा होती है। बापू के इस व्रत से हम लोगों के जीवन और आचरण में फर्क आ जाय तो भावी जीवन-अवश्य सुखकर बीत सकता है। मेरी राय तो यह है कि तुम अहमदाबाद-आश्रम में जाने का विचार रखो। वहां रहने से आध्यात्मिक लाभ जरूर संभव है। मन की कृपणता कम होकर दयाभाव, विश्व-प्रेम, व आत्मिक बल बढ़ाने का साधन वहां मिलेगा। बच्चों की पढ़ाई में वहां की सत्संगति से पूरा-पूरा लाभ होगा। तुम्हारा वहां जाना हुआ तो मैं भी यहीं से राजपूताना और अहमदाबाद होकर वर्धा की ओर जाने का विचार करूंगा। तुम बालकों को लेकर कबतक आओगी लिखना। चि० राधाकिसन बापू की सेवा में रहता है।

विनोबा आज यहां पहुंच गये। पूज्य काकाजी व माजी को भी इस तरह के मौके का रहस्य समझाना जरूरी है। तुमसे समझाया जावे उतना जरूर समझाना। चर्खा घर भर में बराबर चालू रहे। बापू के लिए हृदय से प्रार्थना होती रहे, इसका ख्याल रखना।

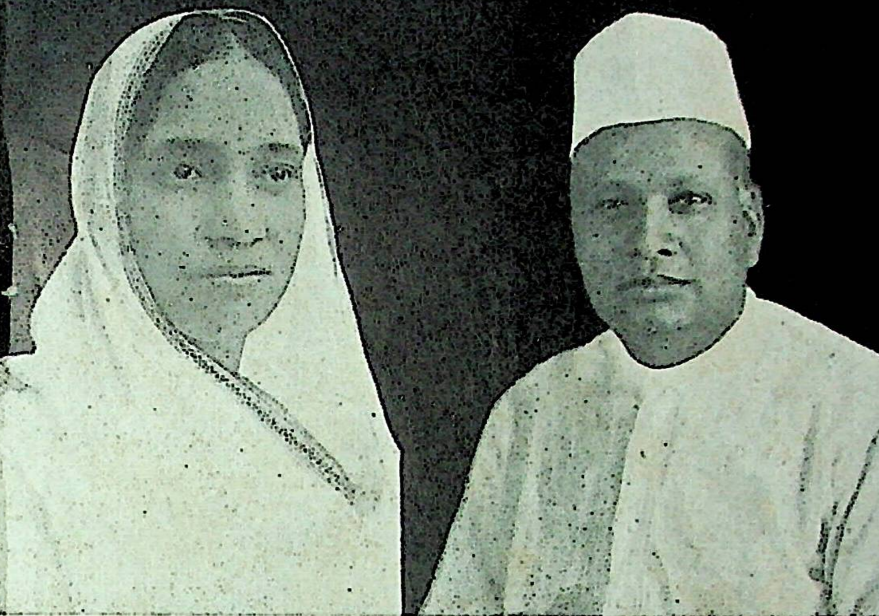
जमनालाल का वंदेमातरम्

: ४३ :

वर्धा, ६-११-२४

प्रिय देवी,

मैं काफी समय से तुम्हें पत्र लिखना चाहता था, परंतु लिख नहीं सका। दीपावली के निमित्त भी तुम्हारे नाम से पत्र नहीं भेज सका। तुमने जिस प्रेम व श्रद्धा-भक्ति से मेरी सेवा की और मेरे कारण कई तरह के कष्टों का सामना तुम कर रही हो, वह मुझे भली प्रकार ज्ञात है। इसके अलावा तुम्हारे सरीखी पवित्र देवी के साथ जिस निर्मल प्रेम व भक्ति के साथ मेरी ओर से व्यवहार होना चाहिए वह नहीं हो सका, इसका भी



श्री जमनालाल बजाज तथा श्रीमती जानकीदेवी बजाज : : जीवन के उत्तरार्द्ध में

मुझ दुख व स्मरण वना रहता है। तुम्हारे साथ बातचीत करते समय जितना प्रेम हृदय में रहता है, वह मैं प्रकट नहीं कर सकता। इस त्रुटि का मुझे पता है। परन्तु मैं तुम्हें इतना ही विश्वास दिलाना चाहता हूं कि बहुत अंशों में मैं तुमको अपने-आपसे ज्यादा पवित्र समझता हूं। तुम्हारे हृदय में उदारता व प्रेम अधिक बढ़ते हुए देखने की मेरी इच्छा रहती है। आशा है, आश्रम-जीवन से प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष लाभ तुम्हें अवश्य मिलेगा, जिससे हम लोगों के भावी जीवन में सुख की वृद्धि होगी। मुझमें जो टोकने की आदत पड़ी हुई है, उसका दुखदायक उपयोग बोलचाल में होता है। आशा है, इसे तुम क्षमा करोगी। असल में मेरी यह इच्छा रहती है कि तुम मुझसे अधिक उदारता, प्रेम व सत्यता अपने जीवन में प्राप्त करो।

कमला के विवाह के लिए फतेहपुर लिख दिया गया है कि मेरे विचार तो उन्हें मालूम ही हैं। इतने पर भी उनकी इच्छा हो तो वे जिस महूर्त पर चाहेंगे विवाह कर दिया जायगा।

(यह पत्र अधूरा ही मिला है।)

: ४४ :

बंबई, माह व० १२, सं. १९८१
(२१-१-२५)

श्री प्रिय देवी,

तुम्हारा पत्र अभी मिला। कमल की पढ़ाई के बारे में समाचार लिखा, सो पढ़कर संतोष हुआ।

तुमने हल्दी का सेवन किया, पर इसपर पथ्य बराबर विधिपूर्वक पालने का खयाल रखना, जिससे पूरा फायदा हो। मेरा स्वास्थ्य इस समय बहुत ही ठीक है।

चिरंजीव मदालसा का पत्र मिला। पढ़कर खुशी हुई। इसे खूब पढ़ाने की इच्छा है, सो खूब प्यार से पढ़ाने का ध्यान रखना। अगर यह आजन्म ब्रह्मचर्य से रहकर स्त्री-जाति की सेवा करने लायक बन जाय तो यह हमारे कुल का भूषण होगी। इसे अभीसे भविष्य की दृष्टि रखकर तैयार करना।

मेरा विचार यहां से शनिवार को रवाना होकर इतवार को खामगांव

और सोमवार को वर्धा जाने का है। वहां से ८-१० ता० तक साबरमती आने का है। पांच-सात रोज वहां रहना भी चाहता हूं।

चिरंजीव कमला को जितने गुण अव प्रेम के साथ तुम दे सको, देने का समय है।

जमनालाल का वंदेमातरम्

: ४५ :

सीकर, ३०-३-२५

प्रिय देवी,

मैं फतेहपुर से कल यहां आया। यहां के राजा व प्रजा में जकात आदि के मामलों में मतभेद हो रहा है। उसे सुलझाने में दो रोज लगेंगे, ऐसा दिखता है।

महासभा इस वर्ष बहुत सफलतापूर्वक हो गई। बहुत लोग जमा हुए थे। अच्छे-अच्छे लोग आये थे। प्रबंध बड़ा सुन्दर था।

चि० कमला का विवाह आगामी वर्ष चैत सुदी में होने की बात है। अगर आगामी वर्ष से पहले कोई श्रेष्ठ मुहूर्त निकलेगा तो बात अलग है। बहुत करके चैत में ही होगा।

मेरा विचार जयपुर, अजमेर होकर यू० पी० बनारस आदि स्थानों में भाई शंकरलाल बेंकर के साथ जाने का है। आश्रम ता० २० के लगभग आना होगा। ऐसा मालूम होता है।

पूज्य जाजूजी सीकर, फतेहपुर रहकर बीकानेर गये।

बच्चों को प्यार से रखना। चि० शांति को सभा का हाल कह देना।

जमनालाल का वंदेमातरम्

: ४६ :

वर्धा, २-७-२५

प्रिय देवी,

पत्र मिला। मैं यहां आकर नागपुर, जबलपुर गया था। कल वापस आया हूं। चि० मोतीलाल आर्वीवाले (राधा के पति) की आज सुबह

नागपुर में मृत्यु हो गई। इलाज वगैरा तो नागपुर जाने के बाद बहुत हुआ। परंतु बीमारी बहुत बढ़ गई थी। चिंता की बात तो हुई, परन्तु वह करने से कोई लाभ नहीं।

चि० मदालसा आनंद के साथ शारदा-मंदिर में रहती हो तो वहां छोड़ देना। दो-चार रोज शांता व कमला के पास आ-जा सके, इसका प्रबंध कर देना, नहीं तो तुम्हारे साथ ले आना। तुम्हें अब एक बार पहले वर्धा आना पड़ेगा। यहां कुछ रोज रहकर बाद में जावरा जा सकोगी। तुम्हें ठीक लगे तो उमा को भी साथ ले आना। पर मेरा तो ख्याल है कि उमा का मन लग जायगा। मन तो मदालसा का भी लग जायगा। परन्तु अभी इतना जोर देना ठीक नहीं होगा। चि० रामेश्वरप्रसाद को भी कह देना कि अगर उमा, मदालसा शारदा-मन्दिर में रहें तो वह भी २-४ रोज में घूमते-फिरते देख आया करेगा, जिसमें तुम्हें संतोष हो और वहां के लोगों की राय हो उस प्रकार करना और एक बार यहां जल्दी आ जाना। मेरा यहां से १४ ता० को कलकत्ता जाना संभव है। तुम्हारे यहां आने से पूज्य काकाजी, माजी को भी संतोष हो जायगा।

चि० शांता व कमला राजी-खुशी होंगी। चि० शांता का घर आदि का प्रबंध हो गया होगा। सब हाल लिखने को कहना। पढ़ाई आदि का सामान जो यहां जरूरी हो वही साथ में लाना। बाकी वहांपर छोड़ देना। अगर शांता के लिए आश्रम में घर का प्रबंध नहीं हुआ तो अपना घर उनके हवाले कर आना। भूलना नहीं।

जमनालाल का वंदेमातरम्

: ४७ :

साबरमती-आश्रम, भादवा सु० ७
(२६-८-२५)

प्रिय देवी,

मैं यहां इतवार को सुबह पहुंचा। चि० शांति, कमला, ओम बहुत राजी हैं। चि० कमला तो बहुत समझदार, सुशील तथा गंभीर मालूम होती है। चि० ओम का मन शारदा-मंदिर में लग गया। वहां रहने से भविष्य में इसकी भली प्रकार उन्नति होगी, ऐसा मालूम होता है। दीपावली की

छुटिट्यों में ओम को वर्धा बुलवा लेंगे। इन बच्चों की ओर से तुम चिंता नहीं रखना।

मैं आज रात को यहां से रवाना होकर एक रोज रास्ते में आबू पहाड़ का दृश्य देखता हुआ शनिवार ता. २९ को सुबह अजमेर पहुंच जाने का विचार रखता हूं। मेरा स्वास्थ्य बहुत ठीक है। राजपूताना से ता० २२ को सीधे पटना कमेटी के लिए जाना पड़ेगा। उसके थोड़े रोज बाद वर्धा आना संभव है।

पूज्य काकाजी के पास प्रायः तुम थोड़ी देर बैठा करती होगी। उनका स्वास्थ्य ठीक रहता होगा। चि० मदालसा को धोत्रे पढ़ाते होंगे। यदि नहीं तो इनके पास करीब एक घंटा रोज सुबह पढ़ाने का प्रबंध करना।

जमनालाल का वंदेमातरम्

: ४८ :

पटना, भादवा सुदी ५, सं० १९८२
(२३-९-२५)

प्रिय देवी,

तुम्हारे दो पत्र मिले। पढ़कर संतोष हुआ। तुमन तुम्हारे विचार या जो शंका थी वह बापूजी को कह दी, यह जानकर अधिक खुशी हुई। मेरी फिलहाल पू० बापूजी से घरेलू मामले के बारे में बात नहीं हो पाई है। कारण, वह बहुत काम में लगे हुए हैं। बात होने पर तुम्हें भी मालूम होगा ही।

कुमारी मणिबहन का वर्धा आना कठिन है। फिलहाल तो वह पढ़ा रही है। बाद में भी वह वर्धा रहना पसंद नहीं करेगी। उसका स्वभाव तेज है। अब चि० कमला का विवाह हो वहांतक उसे तुमने अपने पास रखने का लिखा सो ठीक है। वर्धा रहकर भी पढ़ाई की व्यवस्था हो सकेगी। जैसी तुम्हारी इच्छा होगी वैसा ही प्रबंध कर दिया जायगा। चि० शांता बंबई रहना पसंद करेगी या वर्धा, यह उसकी मर्जी पर ही छोड़ना होगा। उसकी हार्दिक इच्छा वर्धा रहने की होगी तो वर्धा रह सकती है, नहीं तो बंबई। जैसी उसकी इच्छा हो।

जमनालाल बजाज का वंदेमातरम्

: ४९ :

मलकाचक (बिहार),
विजयादशमी (२७-९-२५)

प्रिय देवी,

पत्र तुम्हारे मिले थे। जवाब में पत्र लिखा था, सो मिला होगा। पूज्य बापूजी तुम्हारे बारे में बात करते थे। तुम्हारी बातचीत का उनपर बहुत ही अच्छा असर हुआ, ऐसा दिखाई देता है। तुमसे वह बहुत आशा रखते हैं।

चि० कमला और ओम, वर्धा आ गई होंगी। मेरा भागलपुर होकर बीकानेर जाने का विचार हो रहा है। बीकानेर ता० ४ को पहुंचना होगा। वहां से चुरू, कोटा आदि होकर बंबई होते हुए ता० २० तक दीपावली पर वर्धा पहुंचने का विचार है। जावरा में एक दिन ठहरना हुआ था। चि० कृष्णा को १०० रुपये हाथ खर्च के लिए दिये थे। तुम्हें मालूम रहे, इसलिए लिख दिया है।

गोटा पटने में तो बढ़िया नहीं होता है तथा सूत शुद्ध नहीं बनता। बनारस में देकर बनाया जावे तो शुद्ध बन सकता है। तुम्हें जिस प्रकार का कपड़ा चाहिए, उसकी फहरिस्त बनाकर तैयार रखना। मेरे वहां आने पर बनारस लिख दिया जायगा। चि० कमला का विवाह बंबई में करने के बारे में पूज्य बापूजी की इच्छा मालूम हुई। इस बारे में और विचार करना पड़ेगा।

पूज्य काकाजी व मा को प्रणाम कहना। चि० रामगोपाल के यहां बालक हुआ होगा। लिखना।

बीकानेर से कोई सामान मंगाना हो तो लिख भेजना।

जमनालाल का वंदेमातरम्

: ५० :

कोटा, १३-१०-२५

प्रिय देवी,

पत्र तुम्हारा नहीं मिला। मैं जोधपुर, जयपुर, सीकर जाकर यहां आया हूं। इधर राजा-महाराजाओं से मिलकर बात करने से

खादी का काम राजपूताना में खूब हो सकता है, ऐसा दिखाई देता है।

मेरा स्वास्थ्य ठीक है। आज यहां से अजमेर जाकर वहां से उदयपुर राणाजी से मिलने जाने का विचार है। आशा है, तुम और बालक राजी-खुशी होगे। पू० काकाजी का स्वास्थ्य ठीक रहता होगा। मेरे साथ भाई मणिलालजी कोठारी और बनारसीप्रसाद झुनझुनवाला आदि हैं। किसी प्रकार की चिंता मत करना। चि० हरिकिशन का क्या हाल है? पत्र का जवाब शीघ्र दे सको तो पोस्ट मास्टर, उदयपुर के पते से भेजना, नहीं तो फिर कांग्रेस-कमेटी, मुरादपुर (पटना) के ठिकाने से भेजना।

जमनालाल का वंदेमातरम्

: ५१ :

बंबई, दीपावली (३०-११-२५)

प्रिय देवी,

आज मैं यहां कुशलपूर्वक पहुंच गया। मेरा वर्धा जल्दी आने का विचार तो था और है भी; परन्तु ५-७ रोज इधर लगेंगे, ऐसा दिखता है। पू० बापूजी ता० २० को यहां आवेंगे और ता० २१ को चले जावेंगे। बाद में मुझे दो रोज के लिए पूना जाना पड़ेगा। श्री रामनारायणजी तथा चि० रामनिवास की माता का स्वास्थ्य ठीक नहीं है, ऐसा सुना है। श्री बैजनाथजी रुइया का देहान्त हो गया। इसलिए भी मिलना है तथा इनसे खद्दर के कार्य में सहायता लेनी है। मेरा भी ३-४ रोज यहां कार्य है।

पूज्य बापूजी की इच्छा कमला का विवाह बंबई में करने की है। शायद श्री केशवदेवजी नेवटिया भी बंबई पसंद करें। अब तुम्हारी तथा पू० काकाजी वगैरा की क्या इच्छा है, लिखना, ताकि बात करने में सुभीता रहे। मेरा स्वास्थ्य ठीक है। राजपूताना में ठीक सफलता मिली ऐसा समझना, अनुचित नहीं होगा। वर्धा पहुंचने का निश्चित समय पीछे लिखूंगा। बच्चे सब अच्छे होंगे।

शायद चि० शांति मेरे साथ वर्धा आवे। पू० काकाजी व मां को दीपावली का प्रणाम कहना। चि० हरिकिशन कहां है, उसकी तबियत कैसी है?

जमनालाल का वंदेमातरम्

: ५२ :

बंबई, (१०-१-२६)

प्रिय जानकीदेवी,

पत्र तुम्हारा मिला। मैं रात पूना से वापस आया। चि० कमला के विवाह के बारे में चि० मणि बहन का पत्र मिला। वर्धा में विवाह होता तो खुशी होती, अगर दोनों ओर से सिद्धांत के माफिक विवाह होने में पूरी सुविधा होती। वह नहीं है। सामनेवालों को वर्धा में इस प्रकार विवाह करने में बहुत-सी बाधाएं हैं। इससे आश्रम का ही नक्की करना उचित है।

कुछ रोज बाद साबरमती जाने का मेरा विचार है। तब और खुलासा बातें पू० बापूजी से कर ली जायंगी। पू० बापूजी ने पू० काका साहब आदि को पहले से ही कमला का विवाह आश्रम में करने का विचार लिख दिया है। मुझे यह पूना में मालूम हुआ।

कमला का मन जिन-जिन गहने-दागीनों पर हो, वे अवश्य उसे दे दिये जायं। इसमें मेरी पूर्ण सम्मति है। परन्तु मेरी समझ यह है कि गहनों पर जितना ज्यादा तुम उसका मन समझती हो, उतना शायद नहीं है। गहने नहीं मिलते, इसलिए वह पढ़ाई पर मन नहीं लगाती, यह बात मेरे विचार से सही नहीं है। मेरी समझ से एक तो उसके आस-पास का वातावरण बहुत पुराने ढंग का है, दूसरे उसकी याददाश्त थोड़ी कमजोर है, इसलिए उससे याद करना आदि नहीं बनता। उसे ठीक तरह से समझाकर पढ़ाया जाय तो लाभ हो सकता है। अब तो पढ़ाई का भार मणिबहन पर छोड़ दिया है, उसे ठीक लगे उसके मुताबिक किया जाय।

जमनालाल का वंदेमातरम्

: ५३ :

बंबई, (३०-१-२६)

प्रिय देवी,

मैं आज साबरमती जाकर आया। पू० बापूजी को १०४ डिग्री ज्वर हो गया था। उनका वजन तो हाल में ९७.५ रतल रह गया है। इसलिए वहां जाना पड़ा कि दूसरी जगह बदली जाय या अन्य इंतजाम किया जाय। विचार करने पर डाक्टरों की राय हुई कि अभी दूसरी जगह ले जाने की जरूरत नहीं।

गरमी में भले ले जाया जाय। आश्रम में ही आराम से रह सकें, थोड़ा आराम लेते रहें तो जल्दी वजन बढ़ जायगा और एक हाथ में जो दर्द रहता है, वह भी कम हो जायेगा। पूज्य बापू ने दवा लेना और आराम करना स्वीकार कर लिया है। परमात्मा ने किया तो जल्दी ठीक हो जायंगे। बाकी आश्रम में सब ठीक है।

गोमतीबहन ने करीब १५ दिन के उपवास किये थे, सो बहुत कमजोर हो गई हैं। नाथजी महाराज वहींपर हैं। अब थोड़ा फल लेना शुरू किया है। ८-१० रोज में चलने-फिरने लग जाने की आशा है। उपवास, बीमारी के कारण, बापू ने कराये थे।

चि० कमला के विवाह के बारे में बातचीत के लिए श्री केशवदेवजी यहां आ गए थे। पूज्य बापू की बीमारी तथा मित्रों के आग्रह के कारण इस प्रश्न पर फिर विचार करना जरूरी हो गया था कि विवाह आश्रम में किया जाय या बंबई या वर्धा में। श्री केवशदेवजी ने तो कह दिया था कि अब विवाह आश्रम में ही करना उचित होगा। तो भी पू० बापूजी के विचार फिर से जानना जरूरी था। उन्होंने तो कहा है कि सब तरह का विचार करते हुए मुझे तो आश्रम में ही विवाह करना ठीक मालूम होता है। फिर भी चि० रामेश्वरप्रसाद की इच्छा भी देख लो। वह भी वहीं आगया था। उसने कहा कि मुझे तो आश्रम में ही विवाह करना अधिक पसंद है। उसने आश्रम में विवाह करने के जो कारण बतलाये, उससे पूज्य बापूजी को व मुझे बहुत ही संतोष हुआ। अब विवाह आश्रम में होना निश्चित हो गया है। मेरा बुधवार तक वर्धा आना होगा, । वहां आने पर और विचार कर लिया जायगा।

चि० मणिबहन को कह देना कि बापू की ओर से पत्र न आने से चिंता न करें।

जमनालाल का वंदेमातरम्

: ५४ :

साबरमती, आसोज बदी ११ (२-१०-२६)

प्राणेश,

पत्र पहले आये थे। कृष्णदासजी से कुछ खबर पाई है। आपने मना तो कर दिया था, मगर फिर भी उन्होंने इतना कहा कि आपके चेहरे पर थकावट

दिखाई देती है। किस बात से होगी, समझ में नहीं आती। वर्धा झंझट का घर तो है ही, पर चेहरे पर असर तो कुछ मेरे ही कारण कुछ कर न सके हों इस रुकावट (के विचार) से हो तो भले ही हो। अथवा मीटिंगों से होगी। बीमारी बुखार वगैरा तो है नहीं। खाने-पीने का तो आपको ज्यादा असर होता ही नहीं। वर्धा में भोजन तो अनुकूल ही मिला होगा। खैर, कृष्णदासजी को कुछ न लिखें। मुझे विशेष चिंता नहीं है।

आपकी चिंता मिटना पहली बात है। आपको घर की तरफ की जो चिंता है तो वह एकदम मिटा दी जायगी और बाहर की हो तब तो ऐसे ही चलेगा। पर सिर पर बोझ नहीं रहना चाहिए।

माजी, काकाजी यहां आ जायं तो भी अच्छा है। जगह तो बहुत हो गई है। उनको लिखकर देखना। बच्चे बराबर पढ़ने जाते हैं। आप प्रसन्न रहना। मुझे विशेष विचार तो नहीं है। सिर्फ ज्यादा घूमने से एक जगह रह नहीं सकते हैं, यह विचार आ जाता है। हरिभाऊजी वगैरा को आपके साथ ज़रा घूमने में मजा आता है, इसलिए बार-बार राजपूताना बुलाते हैं। और आप जबान देकर बिक जाते हैं।

कल बापूजी की जयंती (चर्खा बारस) है। गये वर्ष, कहते हैं, जयंती के बाद बीमारी बढ़ी थी। कदाचित इस बार भी बुखार जोर करे। ५-६ जनों को आ गया है। आशा है ज्यादा जोर तो न होगा। मीराबहन को अभी यहां न आने दें तो ठीक।

मैं अपने वर्ग (क्लास में) पढ़ने आई हूं। मदालसा कहती है कि ओम् सोई है, उसका शरीर गरम है। शायद धूप में घूमने से बुखार आ गया हो। घर जाकर देखूंगी। बुखार होगा तो एक दो-रोज में चला जायगा। आप अपनी तबीयत के हाल लिखना। यह पत्र पहुंचे तबतक आपने कोई पत्र न भेजा हो तो अपनी तबीयत की खबर तार से दीजिये।

कमला की मां

: ५५ :

वर्धा, ६-११-२६

प्रिय देवी,

ता० ३-११ का सबका मिलकर लिखा हुआ पत्र मिला। कल दीपावली

हो गई। चि० कमलनयन ने पगड़ी बांधकर बड़े ठाट-वाट से पूजा की। मुझे तो दूसरे काम में अधिक समय लगाना पड़ा। आश्रम में सभा थी।

आशा है, तुम पू० बापूजी के उपदेश तथा सत्संग से अधिक उदार तथा ध्येयपूर्ण जीवन बिताने का निश्चय करके यहां आओगी। अब सच बात तो यह है कि तुमसे मुझे अपने और घर के सुधार-परिवर्तन में पूरी सहायता मिलनी चाहिए। अब थोड़े वर्ष मानसिक सुधारों की बागडोर तुम अपने हाथ में ले सको तो मुझे कितना सुख और संतोष मिले। तुम चाहो तो पूज्य बापूजी व विनोबा की सहायता से अपने जीवन को और घर को ठीक कर सकती हो। मेरी कमजोरी भी दूर कर सकती हो। परन्तु यह बात तब ही हो सकती है जब तुममें आत्मविश्वास पैदा हो और तुम आदर्श प्राप्ति का भार अपने ऊपर लो। मेरा स्वास्थ्य ठीक है।

जमनालाल का वंदेमातरम्

: ५६ :

साबरमती, १५-११-२६

प्राणेश्वर,

दीपमालिका की पूजन बाबू ने कराई सो ठीक। आपको काम था, सो आपको तो छिप जाने पर भी लोग छोड़ेंगे नहीं।

आपने लिखा कि बापूजी की संगत से उदार तथा ध्येयपूर्ण जीवन बिताने का निश्चय करके आओगी, सो उदारता में तो मैं जानती हूं थोड़ा फरक तो जरूर पड़ेगा। कारण, यहां पैसों की छूट न होने पर भी जरूरत होने पर राजाओं से ज्यादा उदारता देखकर बार-बार विचार आया करता है। जीवन भर का निश्चय करना खेल थोड़े ही है, वह तो मुश्किल से होगा। जैसे-जैसे ज्ञान होगा, त्याग हो जायगा। त्याग से ज्ञान नहीं होगा। मैं देखती हूं और अनुभवी विद्वानों की सलाह ली तो यही मिला कि इच्छा के विरुद्ध करने से बेलाबेन को अभी तक शांति नहीं हुई। इतनी समझदारी से रहती है, खुद समझदार भी है, परन्तु जबरन शांति रखनी पड़ने पर ताराबेन व बेलाबेन को हिस्टीरिया की बीमारी होगई। और इन बातों का असर पुरुषों को भी अशांत करता होगा। बाकी मेरे लिए यह बात तो नहीं है।

आपने लिखा कि घर का परिवर्तन होना चाहिए, सो मेरी पूरी इच्छा

हैं। परन्तु एक बरस आप घर पर रहकर एक वार पटरी बैठा दो। कारण यह है कि आज तक तो मैंने घर का भार कभी उठाया नहीं, और अब हिम्मत करूं तो कुछ स्वार्थ हो तभी कष्ट उठाया जाय। स्वार्थ यही कि घर के आदमी से ही घर कहलाता है। दूसरी बातें तो फिर आप से ही हो जाती हैं। आपकी कमजोरी तो मैं संभालने की चेष्टा करूं, हिम्मत भी रखूं, लेकिन कमजोरी तो मुझमें भी है। आपके साथ रहने से जोखिम भी मालूम होती है। बाकी ब्रह्मचर्य के बारे में आपकी जो पालन करने की इच्छा है, वह मेरे लिए भी यह आत्मा से व्रत-सा हो गया है। घर के बारे में बापूजी को अपनी स्पष्ट इच्छा बता दूंगी। आप चिंता न करियें।

मुझे आपके खाने-पीने से अशांति रहती है। यदि आप घर का बना घी और हाथ का पिसा आटा खाने का भी नियम ले लो तो पूरी शांति हो जाय। परन्तु आप तो मूंगफली खाते हो। सिर में चक्कर आवें तब भी उसका दोष नहीं समझते। इसमें सस्तेपन के सिवाय दूसरी विशेषता मुझे नहीं दीखती।

आपने लिखा कि तुम्हें आत्म-विश्वास होना चाहिए सो उस बारे में मैं कुछ नहीं कह सकती। कारण कि आत्म-विश्वास हुआ तो 'आत्मवत् सर्व-भूतेषु' होने में क्या देर है।

खैर, आपके पत्र से मुझे शांति मिली और मेरा विचार आपकी इच्छा-नुसार करने का है। घर का भार तो हरेक स्त्री उठाती है और अब उठाये बिना जो दूसरे भी काम हम जमाना चाहते हैं सो वैसा होना कठिन है। अपने घर का रंग कुछ निराला ही था। आपको भी इसका अनुभव तो हुआ ही है। अब आप ही ठीक हो जावेगा। आपने आदर्शपन का भार लेने को लिखा सो इसे मन में रख के चलें तो हो सकता है।

कमला की मां

: ५७ :

(इस पत्र का शुरू का पृष्ठ नहीं मिला है।)

साबरमती, (दिसंबर, १९२६)

बापूजी की लिखावट थी कि ४ बजे की प्रार्थना सार्वजनिक है उसमें सबको आना चाहिए। चाहें तो समय बदलने का अधिकार सबको है। स्त्रियों में ज्यादा मत ५ बजे का हुआ। राधाबहन वगैरा का ६ बजे का हुआ।

ज्यादा ४।। बजे का है, सो ठीक है। मैंने तो ४।। बजे का ही पसंद किया व जाना शुरू कर दिया है। ४।। बजे की प्रार्थना के लिए उठना सहज है। पांच बजे के बाद ज्यादा आलस्य आता है। आदत न होने से शरीर दुखने लगता है। ४।। बजे एक दफा उठ जाने के बाद आनन्द आता है। गंगाबहन, वेला-बहन के साथ स्टेशन तक घूमकर आ जाते हैं।

आपकी तबीयत की एक रात को बहुत चिंता रही। पर आंसू तो किसको दिखावें यहां। दुनिया में अपना आदमी एक अजब चीज है। उसकी आशा दूसरा कौन पूरी कर सके ?

चाहे जो हो, आपको सब तरह का आराम मिलना जरूरी है। आप आराम लेने का विचार करने का सोचते तो बहुत हैं, परन्तु आपको पूरा आराम मिल नहीं पाता। दूसरी जगह घर की-सी स्वतन्त्रता और अपनापन कहीं नहीं मिलता। और घर में मनचाही निश्चितता नहीं मिल पाती। अपने दूर बैठे जैसा विचार करते हैं, पास आने पर व्यवहार उससे उल्टा हो जाता है। लेकिन अबकी बार आपके आश्रम में आने पर आपकी इच्छानुसार सब बातें करने का निश्चय किया है। और आप हमें क्या दुख देते हैं ? बिना समझे-विचारे कुछ करने को थोड़े ही कहते हैं। लेकिन किसीने कहा था कि यह तो पांच-सात वर्ष का शनिश्चर है। अब यह उतरने आ गया मालूम होता है। यों तो इन बातों को मानती तो मैं भी नहीं हूं, लेकिन आपकी तकलीफों को देखकर कुछ ख्याल होने लगता है।

आपने नासिक और पूना जाने का इरादा लिखा सो ठीक है। पूना की हवा ज्यादा अच्छी होगी। बाकी घनश्यामदासजी के साथ जहां भी जावें सब अच्छा ही है। दिमाग को आराम तो तभी मिले जब निश्चय करके एक मास आश्रम में ही रहो। और किसी जगह आराम नहीं मिलेगा। बाकी अभी तो उनके साथ का ही विचार रखो, यहां आओगे जब देख लेंगे।

कमला की मां

: ५८ :

साबरमती, १७-८-२७

प्राणेश,

आपके दो कार्ड आये। मुझे बुखार आपके जाने के बाद से नहीं आया।

कुनैन की एक गोली लेकर नीम के पत्तों का रस नमक डालकर रोज सवेरे पीती हूं। बच्चों के फोड़े सूख गये। वर्ग में जाते हैं। आप वर्धा कितने दिन रहनेवाले हैं ? कमलनयन की चिट्ठी आई थी। अब आप रूबरू मिल ही लोगे। आपने कहा था कि कमलनयन को दो बरस मेरे हाथ में दे दो, पीछे देखना। सो मुझे जैसा लिखोगे, या कहोगे, वैसा मंजूर है।

नौकरों की तरफ की शिकायत अब नहीं आवेगी। एक बात से निवृत्त हो गये। और भी सब बातें ध्यान में तो जमी ही हुई हैं, अमल में लाने के वक्त तो कोई-न-कोई बहाना कमजोरी के कारण आ ही जाता है। खर्च का बंधन करो तो पहले मेरा करना, आपका तो किया हुआ ही है।

चर्खा कातने के वक्त की आपकी बैठक तो बहुत ही अच्छी प्रयोग लायक सीधी होती है, यह मैं कहना भूल गई और सामने बड़ाई करने से तो अपनी बात मानो चली जाती है। अब एक जगह रहोगे तब बापूजी से कहकर पट्टे का प्रयोग कराना है। ४-६ महीनें में बहुत फायदा होगा। आजकल शरीर सुडौल तो लगने लगा है, तेज जायगा तो कहां जायगा ?

कमला की मां

: ५९ :

अहमदाबाद

(जवाब दिया, २७-८-२७ को)

प्राणेश,

अष्टमी का लिखा पत्र मिला। कमलनयन के बारे में संतोष है। परन्तु काशीबहन कहती हैं कि विनोबा पर पूज्य भाव तो है, पर विनोबा की खुराक में तत्व नहीं है। प्रभुदास जबसे विनोबा के पास रहा तबसे उसकी जो तबियत बिगड़ी है तो अब कितना परिश्रम और खर्च करके भी क्या पहले जैसी बननेवाली है। आप आओ जब काशीबहन से मिल लेना। कुछ जल्दी तो है नहीं। बस इस बात का विश्वास कोई करा दे कि तबीयत के बारे में कभी पछतावा न करना पड़े। फिर तो मैं कहती हूं कि पांच वर्ष भी उससे मिलने की इच्छा न करूं। पर काशीबहन का कहना है कि गुलाब और बोरडी

(बेर की झाड़ी)एक कैसे हो सकते हैं ? इस बात का निर्णय आप यहां आयेंगे तब कर लेंगे ।

आश्रम में तो २००) में खर्च चल जायगा, ऐसा लगता है । पीछे कम-ज्यादा हुआ तो देख लेंगे, एक बार करके देखें । सबकी तबियत अच्छी है । अकाल फंड में मजूरी करके सबको देना है, इसलिए तीनों बालकों ने घास खोदकर पैसे दिये हैं ।

कमला की मां

: ६० :

सावरमती, (२५-९-२७)

प्राणेश,

आपका कार्ड मिला। मीराबहन का तार, जो कार्ड पर था, सो कृष्णभाई को वंचाया था । वह तार सबको वंचाने की जरूरत थी, पर मुझे याद नहीं आया । अब पढ़ा दूंगी । कमला को आपके लिखे अनुसार लक्ष्मण ले आवेगा, मैं भी जाऊंगी तो रामेश्वरजी से मिलकर आ जाऊंगी ।

घर का काम बीच-बीच में किसी-न-किसी कारण से धीमा पड़ जाता है । बाकी अब १०-१२ रोज में पूरा हो जायगा । ४००) रुपयों का खर्च तो हो जायगा, पर ५-६ वर्ष का रहना सुखकर हो जायगा । डर तो लगता है, पर बार-बार नहीं करना पड़ेगा । जो भी रहेगा, उसको आराम हो जायगा । उमा को एक रोज ही बुखार आया था । अब सब अच्छे हैं ।

कमला की मां

: ६१ :

सावरमती-आश्रम, (१९-४-२८)

पूज्यश्री,

बदरीनारायणजी जाने के बारे में आपका पत्र अभी मिला । आपका पूज्य काकाजी के साथ वहां जाने का विचार है, यह पढ़कर हमारी भी इच्छा हुई है कि आपके साथ बच्चोंसहित बदरीनारायण चले चलें । चि० कमला और कमलनयन को साथ लेना ही है । जब निश्चय का पत्र देवें तब लिखेंगे कि क्या तैयारी की जाय ।

कल एक पंजाबी भाई कहता था कि मैं बदरीनारायण साइकल पर ७॥

रोज में जाकर आया, मेरे पास वहां का सर्टिफिकेट व मेडल है। गुलावचंद-जी ने कहा कि मैं भी साइकल पर तो जा सकता हूं। तव वह बोला कि मेरा मन तो इस साल भी था, परन्तु अब तो एक साल खादी का काम ही सीखना है। ये वातें, राष्ट्रीय सप्ताह का सूत वुनने के लिए देने गई थी तव अचानक हो गईं।

वदरीनारायण जाने की इच्छा तो इस कारण होती है कि आप यात्रा के कारण तो जाओगे नहीं और आपके संग के विना जाना मैं पसंद न करूं। इसलिए काकाजी के कारण सबका ही जाना हो जायगा। आया मौका नहीं गंवाना चाहिए और वालकों को भी ऐसी कठिन मुसाफिरी पीछे कौन कराये? वापूजी से तो मैंने नहीं पूछा। खास समय लेंगे तो पीछे ही पूछा जायगा। मालूम होता है संग मोटा होगा। वाकी आप सोच लेंगे। मुझे कोई आपत्ति नहीं है, आपको जिसमें आनन्द है, उसीमें मुझे भी आनन्द है। इस समय अकेले रहने में वहुत-सा अनुभव मिला है। अपनी पिछली भूलों पर भी पश्चात्ताप होता है। आप मुझे पत्र दें, उसमें कमला की मां लिखा करें।

कमला की मां

: ६२ :

सावरमती,
(जवाव दिया, २-५-२८ को)

पूज्यश्री,

मगनलालभाई के देहांत का दु:ख तो सबको लगा है। संतोषवहन, राधा-वहन का आदर्श देखकर तो आश्चर्य होता है। काकाजी के साथ वदरीनारायण जाने के वारे में तो वापूजी जैसा कह देंगे सो तो करोगे ही। पर आपके वारे में डाक्टरों की सलाह ले लेनी चाहिए। खास तो आप जो जवान-जवान हैं, उनके वारे में पूछ लेना चाहिए, कारण कि वूढ़े कभी-कभी सहन भी कर जाते हैं। वैसे तो मैं जानती हूं कि आपको अभी कहीं छिपकर भी शांति लेना मुश्किल है। इस कारण यात्रा से कदाचित फायदा ही पहुंचेगा। जितना समझते हैं, उतना ज्यादा विचार करते हैं। वैसे विचार करना अच्छा तो है ही।

और वहां जाना तो काकाजी के आग्रह पर ही है। अपनी तो खास इच्छा

अब है भी नहीं। कमलनयन को ले जाने का मन था, पर वह मन नहीं चलाता हो तो फिर छोड़ देना ठीक है। मैंने तो उसको लिखा ही नहीं, पर उसको मालूम होगा। मालूम होने पर भी वह इच्छा न करे तो वह जाने। मुख्य रूप से आपको शांति व आराम मिले तो फिर कोई विचार करने की जरूरत नहीं है। बापूजी से तो मैंने कहा था कि 'अगर यहां अथवा कहीं भी आपको (उनकी) जरूरत दीखे तो कहदें।' यह जरूरी नहीं कि यात्रा पर जाना ही चाहिए। बापूजी कहते थे कि 'जरूरत नहीं है, वरना तो मैं कहता ही।' सो अब जाना हो तो काम की फिक्र छोड़ दें। यहां बालकों के खाने का इंतजाम तो रसोड़े में मजे से हो जायगा। यात्रा पर नहीं जाना हुआ तो कहीं जाने की जरूरत नहीं है। आप डाक्टर को दिखाकर लिखना।

बच्चों की व्यवस्था मैं आप ही कर लूंगी, आप विचार न करें।

कमला की मां

: ६३ :

साबरमती,

(जवाब दिया, ११-७-२८ को)

श्रीयुत,

पत्र नहीं, कार्ड आज मिला। गुलाबबाई के पास जाने का विचार किया था। तार आया था कि तुरत आओ। पर हमें मालूम नहीं था कि कबका आपरेशन है व उनका पता क्या है। आज तार आया है तब पता चला कि आपरेशन हो गया। अब यहां बुलाना हो तो आप लिख देना। मेरे न जाने से गुलाबबाई को बुरा लगा होगा, पर पहले से खबर न होने से मैं क्या करती।

यहां रसोड़े में खाने-पीने का तो ठीक चलता है। मैंने तो चातुर्मास-भर रसोड़े में खाने का निश्चय किया है और सचमुच कुएं का पानी भी घी समझकर पीती हूं। अपना वजन भी इसीसे बढ़ाऊंगी, यह भी निश्चय किया है। आखिर में होगा क्या, यह ईश्वर जाने। बच्चों को छोड़कर जाने की सलाह बापूजी के सिवाय और कोई नहीं देता है। आपको अनुभव लेना हो तो लें।

कल सुबह बहनों की प्रार्थना में व तीन बजे पुरुषों की सभा में रसोड़ा एक करना तो सबसे कबूल करा लिया है। बाकी किस तरह से हँसाते-रुलाते

कराया, सो तो दोनों सभा में मैं हाजिर थी। इस वक्त सीखने को तो खूब मिलता है और यह दो-चार मास का प्रयोग तो जरूर ही देखने लायक है। पूरी जिंदगी का सवाल तो ईश्वर जाने।

मेरे पत्र नहीं देने से आपके मन में विचार आना संभव है। लेकिन राजी-खुशी के समाचार तो कोई-न-कोई लिख ही देता है। कमलनयन का पत्र था कि उसे मियादी बुखार आ गया था, अब ठीक है। मुझे तो जब रामेश्वरजी ने लिखा तब मालूम हुआ। बाकी मैं तो यही अच्छा समझती हूं कि बीमारी की खबर नहीं आनी चाहिए। या तो ठीक हो जाय या मर जाय, तब ही खबर देना अच्छा है।

कमला की मां

: ६४ :

कोचीन स्टेट, (मलाबार)
१०-२-२९

प्रिय जानकी,

चि० कमल के नाम का तुम्हारा पत्र कल यहां मिला। उसे मदुरा में ज्वर आ गया। इसलिए उसे वहांपर ही श्री हरिहर शर्मा के साथ वहां के डाक्टर व पू० राजाजी के कहने से छोड़ दिया है। श्री शर्मा सेवा व प्रेम में बहुत ही सज्जन समझे जाते हैं। तुम चिंता नहीं करना। तुम्हारा पत्र उसके पास आज भिजवा देता हूं। उसकी रामेश्वरम् भी जाने की बहुत इच्छा है, सो तबियत बिल्कुल ठीक हो जाने पर उसे रामेश्वरम् भी दिखा दिया जायगा। कन्या-कुमारी देखने की भी उसकी इच्छा है। वह दूसरी बार तुम लोगों के साथ दिखा देंगे। चि० मदालसा के दांत का इलाज बराबर हो गया होगा। चि० कमला बहुत राजी होगी।

हिन्दी-प्रचार का कार्य ठीक चल रहा है। अगर तुम इस मुसाफिरी में मेरे साथ आतीं तो तुम्हें एक दूसरी दुनिया देखने का भी अनुभव होता। खैर, फिर सही। बरमा में नहीं जाऊंगा।

जमनालाल का वंदेमातरम्

पुनश्च—तुम व कमला मिलकर, पूर्ण हकीकत का पत्र, 'बेंगलोर खादी कार्यालय', फोर्ट, के पते से अवश्य भिजवा देना।

: ६५ :

कोयंबतूर, १५-२-२९

प्रिय जानकीदेवी,

पत्र तुम्हारा वहुत दिनों के वाद मिला। पढ़कर सुख हुआ। चि० कमल-नयन का स्वास्थ्य अव वहुत ठीक है। आज वह रामेश्वरम् में है। वहां से कन्याकुमारी जाने के वाद मैसूर में मिलने का लिखा है। देखने-भालने की इच्छा उसे वहुत रहती है। एक प्रकार से यह अच्छा भी है।

तुम इस दौरे में रहतीं या सव वालक साथ रहते तो उन्हें वहुत अनुभव तथा नई-नई वातें सीखने को मिलतीं। फिर दूसरी वार अगर इधर आना हुआ तो तुम लोगों को साथ लाने का विचार है। आश्रम के संवंध में तुमने अपने विचार लिखे, जानकर समाधान हुआ। परमात्मा ने चाहा तो हम लोग भी अपना जीवन आदर्श वना सकेंगे।

वंवई के दंगे के कारण थोड़ी चिंता थी। अव वहां शांति हो गई, यह जानकर चिंता कम हुई। अवकी वार गर्मी के दिनों में कहां रहने का विचार है? चि० कमला के साथ विचार कर रखना। चि० मदालसा व उमा से कहना कि पत्र मिल गये। मेरा स्वास्थ्य वहुत ही उत्तम है।

जमनालाल का वंदेमातरम्

: ६६ :

मद्रास, २५-२-२९

प्रिय जानकी,

तुम्हारा पत्र मिला। वर्धा में प्लेग के समाचार पढ़कर थोड़ी चिंता रहती है। दुकानवालों को पत्र लिखा है। तुम लोग चिंचवड़ आना पसंद करो तो सोचो। चि० कमल को श्री कस्तूरचन्दजी के साथ पूना भेज देने का विचार है। तुम लोग वहां आना पसंद करोगे तो ठीक ही है, नहीं तो वह १-२ महीना वहां रह लेगा। चिंचवड़ में अपना एक छोटा-सा मकान भाड़े से रख छोड़ा है। वहां सासवने के माफिक ही छोटे प्रमाण में बालकों को विद्यालय आदि का लाभ मिल सकता है।

चि० माणक की माता सौभाग्यवती देवी (दानी) आजकल बीमार

रहती हैं, ताप आता है। हिस्टीरिया की बीमारी हो गई है। तुम चि० कमला से उसके पास पत्र जरूर लिखा भेजना। तुम भी लिखना।

श्री राजकुमारी (ऋषभदास रांका की पत्नी) की संभाल तुम रखोगी, यह जानकर संतोष हुआ। यह लड़की बहुत गरीब है। इसने बहुत कष्ट उठाया है। सो सब प्रकार से प्रेम-मदद करना अपना कर्तव्य है।

ऋषभदास का पत्र उसे दे देना।

जमनालाल का वंदेमातरम्

: ६७ :

साबरमती, ५-४-२९

प्रिय जानकी,

जालंधर में सभा ठीक हुई थी। अगर तुम साथ आतीं, तो तुम्हें नई बातें देखने को मिलतीं व संतोष भी होता। इस भ्रमण में दो काम महत्व के और भी हो गये, जिससे थोड़ा बोझ कम हो गया। एक तो श्री रामनारायणजी रूइया की लड़की चि० सुशीला की सगाई लाहौरवाले सर शादीलालजी, चीफ जस्टिस के बड़े लड़के से कर दी गई और दूसरे पू० मगनलालभाई गांधी की लड़की चि० रुक्मिणी का संबंध कल यहांपर चि० बनारसीलाल बजाज के साथ हो गया। यह विवाह इस वर्ष नहीं तो अगले वर्ष होगा। कल यह संबंध करके बापूजी आंध्र के लिए बंबई रवाना हो गये। वर्धा में गरमी ज्यादा पड़ने लग गई होगी। बीमारी (प्लेग) की भी थोड़ी गड़बड़ तो है ही। इसलिए पहले निश्चित हुए कार्यक्रम के मुताबिक रामनवमी के दूसरे दिन तुम लोग रवाना होकर बंबई आ जाओ।

चि० मदालसा व चि० रामकृष्ण की तबीयत ठीक होगी। धूप का ख्याल रखना। चि० गंगाबिसन का स्वास्थ्य भी ठीक नहीं बतलाते। अब ठीक हो गया होगा। चि० राधाकिसन का कहना था कि पूज्य मां की इच्छा बदरी-नारायण जाने की बहुत है और मेरे साथ जाना चाहती है। सो इस वर्ष तो मेरा जाना संभव नहीं। अगर तुम मां के साथ जाने का विचार कर सको तो तुम व चि० राधाकिसन, लक्ष्मण रसोइया, चि० रामकृष्ण, एक नौकर, बाई केसर या गुलाब जाना चाहे तो जा सकते हो। विचार करके लिखना।

मेरा आगे का प्रोग्राम अभी निश्चित नहीं हुआ है। या तो थोड़े दिन यहां

रहूंगा, नहीं तो फिर बंबई जाऊंगा। अजमेरवालों का बहुत आग्रह है कि महासभा के मौके पर जरूर आना। परन्तु अभी तक मेरी इच्छा कम है। पत्र बंबई देना।

श्री छगनलालभाई गांधी से तथा पू० बा से रुपये-पैसे के मामले कुछ गफलत हुई, जो दुनियादारी की दृष्टि से बहुत भारी कसूर नहीं समझी जाती, इस संबंध में पू० बापूजी ने इस बार के 'नवजीवन' में, अपने हृदय में वे कितना दुःख अनुभव करते हैं, वह लिखा है। तुम उसे भली प्रकार पढ़ने का प्रयत्न करना। यहां आश्रम में रहनेवालों की कमजोरियों से पू० बापूजी को बहुत दुःख हुआ करता है। अपने पास इसका कोई उपाय दिखाई नहीं देता।

जमनालाल का वंदेमातरम्

: ६८ :

साबरमती-आश्रम, ७-४-२९

प्रिय जानकी,

पत्र तुम्हें परसों दिया ही था। आज बाई गुलाब व नर्मदा का आया हुआ पत्र भेज रहा हूं। मैं यहां से कल अजमेर जा रहा हूं। वहां से महासभा का कार्य खत्म करके सोमवार ता० १५ अथवा मंगलवार १६ तक बंबई पहुंचने का विचार है।

इस बार के 'नवजीवन' में पूज्य बापूजी का आश्रम-संबंधी लेख पढ़कर हृदय फटता है। पर कुछ उपाय नहीं। तुम खूब विचार के साथ इस लेख को २-४ बार पढ़ना।

(यह पत्र अधूरा मिला है।)

: ६९ :

श्रीनगर, ५-७-२९

प्रिय जानकी,

चिंचवड़ रवाना होने के बाद आज तुम्हारा पहला पत्र मिला। पत्र अमृतसर से यहां भेजा गया था। पत्र पढ़कर संतोष और खुशी होती है। परमात्मा करे और जैसा तुमने सोचा है, वह सफलता के साथ निभ जाय तो हम लोगों का जीवन भी सुखी और निश्चित हो जाय। सार्वजनिक सेवा में भी मन अधिक लगे और तुम्हारा भी उपयोग हो सके व चि० नर्मदा, मदालसा

उमा की पढ़ाई की व्यवस्था संतोषजनक हो गई, यह जानकर चिंता कम हुई। तुम चाहोगी तो वर्धा में सब व्यवस्था पूर्ण संतोषप्रद हो सकगी। चि० कमल की अंग्रेजी की पढ़ाई पू० विनोबा ने शुरू कर दी, सो ठीक है। इससे तुम सबों-का संतोष रहेगा। चि० रुक्मिणीबहन के बारे में मैंने पू० बापूजी को लिख दिया है। उनकी जैसी इच्छा होगी वैसा करेंगे। वर्धा भेजना होगा तो किसी-के साथ वर्धा भिजवा देंगे।

मेरा वर्धा ता० २० तक पहुंचना होगा। यहां खद्दर भंडार जो ता० ४ को खुलनेवाला था, वह राज्य के कारण ता० ११ को खुलना निश्चय हुआ है। थोड़ा घूम-फिरकर देखने का विचार भी कर लिया है। पू० बापूजी तो बहुत जोर देकर लिख रहे हैं कि मैं यहां ज्यादा दिन रहूं। परन्तु बिना काम के मन नहीं लगेगा और तुम सब लोगों और बालकों के बिना देखने में विशेष आनन्द तथा शांति नहीं मिलती।

जमनालाल का वंदेमातरम्

: ७० :

(वर्धा)

(जवाब दिया, ५-७-२९ को

पूज्यश्री,

पत्र आपका आया। राधाकिसन से मैं बहुत दिनों से लिखवाने का विचार कर रही हूं, पर आलस्य में दिन चले जाते हैं। अब हमने साथ रहने का तो निश्चय कर लिया है। साथ रहने से दुर्गुण चले जाते हैं व आपकी सारी आशाएं पूरी हो सकती हैं। अबकी बार आप आओगे तब आपका जी राजी हो जायगा। लड़कियों की पढ़ाई तो पूरी संतोषकारक हो रही है। पर बाबू को चार पाली एकांतरा बुखार आ गया, जिससे दिन बरबाद हो गये। बापट की दवाई है। दो पाली गई। अब ४-५ दिन में आश्रम जाना-आना शुरू हो जायगा। आप निश्चिंत रहें।

बाबू की चिंता मत करना। अबकी बार काढ़ा देकर बुखार की जड़ मिटा देने का विचार है। एक-दो मास बराबर देंगे। माजी[1] के घर में बैठी रहने

---

[1]जमनालालजी की जननी बिरधीबाई।

से घर का रूप कुछ और ही हो जाता है। एक-दो बरस साथ रहने का स्वाद आ गया तो सदा के लिए निश्चिंत हो जायंगे। उमा को तीसरी में पास करके चौथी में बिठाया है। मदु ने और मैंने अंग्रेजी शुरू कर दी है।

कमला की मां

: ७१ :

वर्धा,

(जवाब दिया, ३-९-२९ को)

प्राणेश,

आपके समाचार राधाकिसन के पास आते रहते हैं। राधाकिसन से मुझे बहुत शांति मिलती है। जो यह रोना था कि घर के आदमी बिना घर कैसा, सो अब सब ठीक हो गया। मन को १२ आना शांति तो अंदर से मिलने लगी है। हां, थोड़ी कोशिश और करनी है सो दिवाली बाद में मास-दो मास आपके साथ चल सकती हूं। तब सब ठीक हो ही जायगा। आपको आजतक बहुत दुःख दिया है, सो अब आपकी इच्छा पूरी हो जायगी।

यहां सब राजी हैं। आप प्रसन्न रहना।

कमला की मां का प्रणाम

: ७२ :

साबरमती, ३-९-२९

प्रिय जानकी,

तुम्हारा बिना तारीख-मिती का पत्र आज मिला। पढ़कर संतोष हुआ। चि० राधाकिसन के प्रति तुम्हारा प्रेम और समाधान देखकर सुख हुआ। मेरा तो विश्वास है कि अगर तुम चाहो तो अब उन्नति और विकास करते हुए आदर्श जीवन बिताने लायक अपनेको जरूर बना सकती हो। तुमने मेरी जो सेवा की है और मेरे सामाजिक, राजनैतिक व क्रांतिकारक विचारों में सहायता दी है, वह मैं भूल नहीं सकता। हां, इस बात का मुझे अवश्य दुःख रहा है कि तुम्हारे पास इतनी साधन-सामग्री होते हुए भी तुमसे उसका पूरा लाभ नहीं उठाया जाता। परमात्मा ने किया तो यह चिंता व दुःख, जो मेरी समझ से तुम्हारी ही उन्नति का बाधक रहा है, अब शीघ्र ही मिट जायगा।

जमनालाल का वंदेमातरम्

: ७३ :

सावरमती-आश्रम, १५-२-३०

प्रिय जानकी,

नानू जाट पहुंचा। तुम्हारा पत्र मिला। चि० उमा के वारे में मेरे विचार तो तुम भली प्रकार जानती ही हो। फिर भी तुम्हें जहांतक संतोष न हो और उचित नहीं मालूम हो, वहांतक क्या किया जाये? मैं समझता हूं, चि० उमा की व्यवस्था मेरे वहां आने के वाद ही निश्चित करना ठीक रहेगा।

पू० वापूजी ने आजकल खूब उत्साह व जोर से लड़ाई की तैयारी कर रखी है। यहां का वातावरण जोश और उत्साह से भरा हुआ है। छोटे-छोटे बच्चों ने भी जेल जाने की इच्छा कर रखी है। तुम इस समय यहां रहतीं, तो तुम्हें भी वड़ा लाभ मिलता। अगर तुम्हारा उत्साह और इच्छा होती तो पूज्य वापूजी तुम्हारा नाम भी जेल की फेहरिस्त में लिखा देते।

जमनालाल का वंदेमातरम्

: ७४ :

वंबई, २८-३-३०

प्रिय जानकी,

तुम्हारा पत्र मिला। तुम अव मेरे साथ रहकर काम करो। उसमें तुम्हें अधिक संतोष रहेगा। पू० विनोवा की परवानगी ले लेना और बाई केसर को लेकर आ जाना। चि० कमल अव ठीक हो गया होगा। चि० शांति को कृष्णा की अकाल-मृत्यु पर समवेदना का पत्र दे दिया होगा।

जमनालाल का वंदेमातरम्

: ७५ :

नासिक रोड सेंट्रल जेल, कैदी नं. २१८१,
२१-६-३०

प्रिय जानकी,

वृहस्पतिवार को बाई केसरवाई, गुलाव वगैरा मिल गये। तुम्हारी व अन्य बहनों की दो बार थोड़े समय की गिरफ्तारी की बात जानकर बड़ा विनोद मालूम हुआ। अगर स्त्रियों की गिरफ्तारी शुरू हो जायगी तो तुम्हारा

नंबर भी जल्दी आ जायगा। तुम तो सब तरह से तैयार हो ही। तुम्हें कुछ समय के लिए जेल की दुनिया का अनुभव तो मिल सकेगा ही, शांति भी मिलेगी। साथ ही, प्रजा में भी विशेष जीवन व जागृति आयेगी।

तुम्हें समय मिलता हो तो जेल के रहन-सहन आदि के नियमों के बारे में पू० बापूजी की 'यरवदा के अनुभव' तथा काकासाहब व राजाजी की लिखी हुई किताबें पढ़ना और जिन्हें जेल का अनुभव हो उनसे जानने का प्रयत्न करना। बीच में तुम्हारी तबीयत खराब हो गई थी। अब ठीक है, ऐसा सुना। जहांतक तुम लोगों को कसकर काम करना पड़ता है, वहांतक तबीयत न बिगड़ने पाये, इसका पूरा ख्याल रखकर खानपान की अनुकूल व्यवस्था, बिना संकोच के श्री गोमतीबहन के साथ सलाह करके कर लेना।

ईश्वर की अपने ऊपर पूर्ण दया व पूज्य बापूजी का आशीर्वाद है। तभी हम लोगों की इस प्रकार की बुद्धि हुई और सेवा करने का यानी अपनी कमजोरी कम करने का मौका मिला। तुम्हारी बहादुरी व हिम्मत देखकर मन में सुख होता है। मेरे स्वभाव की अनुदारता के कारण तुम जब-जब मिलती हो तब-तब तुम्हारे मुंह पर प्रशंसा की बात न करके तुम्हें हमेशा ही टोकने की बातें या तुम्हें विशेष रूप से जागृत करने के लिए तुम्हारी कमजोरियों के बारे में ही तुमसे कहा करता हूं। पर तुम इसका यह मतलब मत समझना कि मैं तुम्हें अपने से ज्यादा कमजोर समझता हूं। मुझे तो तुम्हारे बारे में व पूर कुटुब के बारे में पूरा संतोष है। तुम सबपर मुझे अभिमान है। मेरी यह इच्छा अवश्य है कि इस प्रकार के धर्मयुद्ध में हम लोगों में से सबोंकी या जो सबसे ज्यादा प्रिय हो, उसकी आहुति पड़ जाय तो वह हमारे लिए परम संतोष व सुख की बात होगी। एक दिन मरना तो है ही। फिर जिससे देश, जाति व कुल की प्रतिष्ठा बढ़े, वैसी पवित्र मृत्यु मिले तो फिर क्या कहना। अब तो जेल की मन में नहीं रही। अगर इच्छा है तो ऐसी मृत्यु की ही है। खैर, जो भावी होनी होगी, सो होगी। चिंता करने का समय नहीं है। अभी तो बहुत-से खेल खेलने और देखने हैं, ऐसा लगता है। भविष्य बहुत ही उज्ज्वल दिखाई देता है।

अगर तुम गिरफ्तार न हो और काम में अड़चन न पड़े तो आगामी २ जुलाई, बृहस्पतिवार, को या एक-दो रोज आगे-पीछे चि० कमलनयन

व चि० शांता को लेकर मिलने आ जाना। आने का निश्चित समय यहां सुपरिंटेंडेंट को पहले से लिखकर भिजवा देना, जिससे मुझे मालूम रहेगा। प्रिय बहन गोमतीदेवी को कहना कि इधर की बिलकुल चिंता न रखें। यहां आने के बाद हम लोगों का स्वास्थ्य और मन बहुत ठीक है। थाने की जेल के मुताबिक ही यहांपर भी अधिकारी-वर्ग हम लोगों को बहुत ही प्रेम व सम्मान के साथ देखते हैं। यहां तो काफी आश्रम-निवासी हैं। सब बहुत मजे में हैं। हां, गत सोमवार से हम लोगों ने 'सी' वर्ग का खाना शुरू किया है। अभी तक तो स्वास्थ्य बहुत ठीक रहता है। मेरे कब्ज की शिकायत एकदम मिट गई है। अपना स्वास्थ्य जरूर सम्भाल कर रखना। मोह-माया व हम लोगों की चिंता से स्वास्थ्य खराब करने का तुम्हें बिलकुल अधिकार नहीं है। चि० शांता के पत्र से तुम्हें हमारी दिनचर्या मालूम हो जायगी।

जमनालाल का प्रेमपूर्वक आशीर्वाद

: ७६ :

विलेपार्लें-छावनी

(जवाब दिया, २७-६-३० को)

प्राणेश,

शांतिबाई ने आज छावनी में आकर पत्र दिये। शांतिबाई दो-चार दिन यहां रहने को आयेंगी। छावनी से बीस कदम पर भाड़े से घर लिया है। राजकुमारी और मदु भी वहां रहती हैं। रात को कभी में सोने चली जाती हूं। मेरा और रिषभदासजी का खाना छावनी में होता है। रिषभदासजी छावनी में ही सोते हैं। उन्होंने जवाबदारी भी अच्छी ले रखी है। शांतिबाई भी वहीं रह जायेगी। भाड़ा, खाना-खर्च अपना ही लिखाती हूं।

हमारी ज़रा देर की गिरफ्तारी और छूटने की खबर आप जान गये। अभी औरतों को पकड़ना मुश्किल है। जेल के बारे में दीवाजी भाई समझानेवाले हैं। मेरी तबियत अब ठीक है। मेरी स्वार्थ की भावना ही मन को दुःख देती है, पर अब ठीक हो जायगी। और बातों में तो हिम्मत बढ़ती जाती है। खाने-पीने का अब ठीक कर लूंगी। यहां छावनी में अनुभव का लाभ भी बहुत है। अगर सूरत की तरफ के आश्रमों में रहती तो मेरा

टिकना मुश्किल हो जाता । यहां भी स्वभाव में मन की स्थिरता न होने से कभी-कभी कहां जाऊं, क्या करूं, ऐसा हो जाता है । पर फिर कहती हूं कि भरतजी ने तो चौदह साल निकाले थे । उस परिमाण में तो यह समय कुछ भी नहीं है । कठिनाई तो आप लोगों की है ।

'सी'-क्लास की खुराक खरी-भावना से लेने से प्रसन्नता तो जरूर रहेगी, पर वजन एकदम कम हो जायगा और कमजोरी से खांसी-वगैरा का भी डर है । परन्तु आप लोग तो सभी चतुर हो, इसपर विचारोगे ही। आपको संगति इच्छानुसार ही मिलती जा रही है, यह भी प्रभु की कृपा ही है । अपने कुटुंब के लिए सचमुच मन में तो अभिमान आता है, पर व्यवहार में संभाल नहीं पाती हूं । मैं तो अपने-आपको धन्य मानती हूं कि इस युग में स्त्री-जन्म मिला । निर्बुद्धि, निर्बल कहलानेवाली स्त्रियों से सरकार कांपने वाली है और स्वराज्य स्त्रियों के हाथ से आनेवाला है । मैं तो मानती हूं कि इसको वानर सेना ही जीतेगी, न कि विद्वान-बलवान लोग । इसलिए आप सुख से बैठे रहें ।

मुझे टोकने के बारे में तो आप निश्चिंत रहिये । जिसपर पूरा विश्वास और अधिकार हो, उसे ही टोका जा सकता है । मैं तो गुलावबाई से मजाक करती रहती हूं कि अब मैं मिलने नहीं जाऊंगी । मुझसे हमेशा लड़ते हैं । पर हम सब लड़ते-लड़ते ही चढ़ेंगे । मरने के बारे में, समय आवेगा, तब देखेंगे कि हँसना आता है कि रोना । भावी अच्छा होगा तो अच्छी मृत्यु होगी । दूसरे की चिंता करने का समय नहीं है, यह बिलकुल ठीक है ।

कमलनयन को, जहां खास लड़ाई का सामना हो, वहीं भेजें तो कर्तव्य किये का संतोष हो । पर बंबई में यहां छावनी के अन्दर जगह कम है । बरसात के दिनों में मलेरिया हो जाने का भय है । जो ताप आ जाय तो मुझे पास जाने की इच्छा हो जाय । उसका शरीर थोड़े दिन से ही तो खानपान से व्यवस्थित हो पाया है । वह और विद्यापीठवाले छोटी उमर के चार लड़के हैं बापू की टुकड़ी के । वे चाहे सो करें । चारों वही हैं । उनसे मैं कुछ भी नहीं कहती हूं । गोमतीबहन बहुत ही हिम्मत और जवाबदारी से काम करती हैं ।

सचाई से काम करने से ईश्वर सहायता देता है । घर में खुराक इतनी

भी नहीं ले सकते थे, पर यहां ठीक चलता है। आपके सब पत्र मैंने पढ़े हैं। दिनचर्या आपकी बहुत सख्त है। मैं तो इतना कुछ नहीं करती हूं। शाम को ९ बजे से पहले सोने से नींद पूरी होती है। गोमतीबहन भी कहती थीं, देखना कमजोरी आ जायगी। रूखी रोटी तो अपनको अनुकूल आनी मुश्किल है।

धर्मानंदजी कौसांबी की पुस्तक देखेंगे। पर मुझसे और मुझ-जैसी स्त्रियों से पुस्तक मुश्किल से पूरी होती है। वह यहीं रहते हैं। समय हो तो मदू का आधा घंटा वर्ग लेते हैं। आपको नमस्कार कहा है उन्होंने। वह सुपरिन्टेंडेंट को पत्र भिजवा देंगे। गोमतीबहन को सब पत्र पढ़ा दिये। दिनचर्या का पत्र प्रार्थना में पढ़ेंगे। 'टाइम्स' में छावनी की खबर देनेवाले हैं।

मदू को नर्मदा के साथ वर्धा जाने को कहा तो वह बोली, मैं तो यहीं मरूंगी। कमला को दिनचर्या की नकल भेज देंगे।

कमला की मां का प्रणाम

: ७७ :

नासिक रोड सेंट्रल जेल,
२७-६-३०

प्रिय जानकी,

तुम्हारा पत्र आज मिला। पढ़कर संतोष हुआ। चि० कमला का पत्र तुम्हारे नाम का पढ़ा। उसे जवाब भेजा है; तुम उसे भेज देना। मेरा स्वास्थ्य बहुत ठीक है। गत मंगलवार से ८ रतल वजन कम होने पर, दो रतल दूध और ५ तोले गुड़ लेने के लिए यहां के अधिकारियों ने मजबूर किया है। तुम लोगों की बजाय कम-से-कम मेरे लिए, अधिकारी मेरी चिंता ज्यादा रखते हैं, ऐसा अनुभव होता जा रहा है। तुम व श्री गोमती बहन हम लोगों के स्वास्थ्य के संबंध में किसी प्रकार की भी चिंता नहीं करोगी, ऐसी आशा है।

चि० शांता मिले तो उसे भी हिम्मत और प्रेम-भरी सांत्वना दिया करना। उसके मन पर चि० कृष्णा का वियोग तथा अन्य चिंता रहती है। शान्ता जैसी लड़की पर सच्चा प्रेम बढ़ाने से तुम्हारे प्रेम की माया भी बढ़ जायगी।

अगर विलेपार्ले में वर्षा के कारण काम करने का तुम्हारे लिए संभव नहीं रहे तो वहां काम करनेवालों की सलाह लेकर बंबई में श्री पेरीनबहन के साथ, उनके कहे मुताबिक, तुम लोग काम शुरू कर सकती हो।

हम लोग जेल से तो वजन वगैरा लिखा ही करेंगे, पर तुम्हारा व गोमतीबहन का वजन कितना घटता-बढ़ता है, वह तुम लोगों को भी लिखना चाहिए। खाने-पीने में आवश्यकतानुसार सुधार छावनी में तुम लोग कर सकती हो। छावनी के पास छोटा-सा मकान अलग ले लिया, यह बहुत ठीक किया। खर्च तो अपनेको ही उठाना चाहिए था। मकान छोटा पड़ता हो और नजदीक में दूसरा ठीक मिल जाय तो चि० रिषभदास को सलाह से ले सकती हो। खर्च का ज्यादा विचार करने की जरूरत नहीं। वहां कोई नौकर रखना जरूरी हो और विश्वास का आदमी मिले तो उसे रख सकती हो; क्योंकि वह तो छावनी नहीं है। संभव है, अब रिषभदास भी बाहर ही रहें। उसे मेरी समझ से बाहर रहने का ही खयाल रखना चाहिए। बाहर का काम ज्यादा कठिन व जवाबदारी का है। श्री धर्मानंदजी विलेपार्ले में हैं, यह जानकर बड़ी खुशी हुई। उन्हें मेरा सप्रेम प्रणाम कहना। गुजराती में उनका जीवन-चरित मैंने अभी ४-५ रोज पहले ही पूरा किया है। उनके सत्संग से तुम लोगों को, खासकर चि० मदालसा को, खूब लाभ पहुंचेगा। चि० शांता भी उनसे लाभ उठावे तो बहुत ठीक हो। श्री धर्मानंदजी के खाने-पीने की व्यवस्था बराबर रहे, इसका पूरा ध्यान रखना और उन्हें, बने वहांतक, छावनी से दूर मत जाने देना। ३ जून को तुम आओगी जब चि० कमल भी आ सके, तो साथ ले आना। मेरी इच्छा तो है कि वह यहां ही मेरे पास अतिथि बनकर आ जाय। मुलाकात के समय बात करेंगे।

जमनालाल का वंदेमातरम्

: ७८ :

विलेपार्ले छावनी,
२९-६-३०

प्राणेश,

आपका पत्र, ता० २८ की रात को ८ बजे, रामनिवास की मांजी ने मोटरवालों के साथ भेजा। तबियत के बारे में पूछा, कुछ चीज-वस्त

चाहिए सो भी पूछा। उसीके साथ पत्र की पहुंच का जवाव दे दिया।

लालजी गिडवानी एक साल के आराम में गये। सरोज को पत्र दे दिया है। गंगाबहन को भी दे दूंगी। मैं, कमल व शांतिबाई ता० २ को नासिक पहुंचेंगे।

आपके बारे में अधिकारी लोगों का व्यवहार देखते हुए कोई चिंता की बात नहीं। गोमतीबहन हिम्मत तो बहुत रखती हैं। शरीर से कुछ कमजोर होने से चिंता रहती है। मुझे अपना मुख्य स्थान तो छावनी में ही रखना है। यहां रोज सभाओं का काम चलता ही है। आज थाना में स्त्रियों की सभा है। कल चेंबूर में थी। दूसरी जगह रहकर काम करने की तो बिलकुल इच्छा नहीं है। वर्धा की तरफ जाने की जरूरत तो है। लेकिन पुरुषों की सभा में बोलना हो तो ज्यादा काम हो। सो जरा मन हिचकता है। खैर, देखेंगे। जैसा यहांवाले हुक्म देंगे वैसा करेंगे। कौसांबीजी के लिए लिखा, सो ठीक है। आपको रिषभदास उस संबंध में जवाब देगा। मैं दो वक्त छावनी में जीमती हूं। वहां अब रसोई अच्छी होती है। घर पर मैं आम और शक्कर छोड़कर कुछ भी खा सकती हूं। इतनी छूट मुझे बहुत है। घर के कारण बालकों को बहुत आराम है। मुझे भी बहुत सुभीता हो गया। बड़े घर की जरूरत नहीं है।

गोमतीबहन तो छावनी का प्राण है। बहुत कठोरता से रहती है। क्या करूं, मुझे संकोच तो होता है, पर इतनी छूट नहीं होती तो मैं ज्यादा दिन नहीं रह सकती थी। कमल आ गया है, आपकी इच्छा हो सो आज्ञा करें।

पद्मराजजी जैन की बेटी इंदुमती ने सरकारी नौकरी छोड़ने की सलाह देनेवाली एक पत्रिका छपाई। इस कारण उसे ९ मास की जेल मिली। उसके लिए कलकत्ते में हड़ताल हुई थी।

कमला की मां

: ७९ :

नासिक रोड जेल,
७-७-३०

प्रिय जानकी,

तुम्हारे मिलकर जाने के बाद आजतक मैंने अनाज न खाकर दूध,

चाय, काफी, काढ़ा ही पिया। वदहजमी व कब्ज की शिकायत को जड़ से उखाड़ने के लिए यही उपाय ठीक लगा। मित्र और अधिकारी मेरी पूरी चिंता रखते हैं, यह तुमने देख ही लिया। तुम विल्कुल चिंता न करना।

क्या तुमने वांदरा में कल चर्खा-वर्ग खोल दिया? वल्लभभाई का पार्ले का भाषण अभी पढ़ने को नहीं मिला। शायद कल मिल जाय। चि० कमल की इच्छा हो तो वह एक वार १०-१५ रोज के लिए हटुंडी (अजमेर) जा सकता है। इस समय वहां की आवहवा भी ठीक होगी। उसके जाने से वहां थोड़ा उत्साह आ जायगा। उसे कहना वह जरा अधिक सभ्यता व नम्रता का व्यवहार करने का ख्याल रखे, क्योंकि अव वह सत्याग्रह-दल में पू० वापूजी की टुकड़ी का स्वयंसेवक है। उसपर ज्यादा जिम्मेदारी है। उसे मुंह से एक-एक बात सत्य व तौलकर निकालनी चाहिए, जिससे आगे चलकर वह जिम्मेदारी के साथ काम कर सके। आज 'टाइम्स' में श्री वल्लभभाई के साथ जलूस में चि० व्यंकटलाल चंद्रा की माता को भी पैदल चंपावाई के साथ चलते देखकर खुशी हुई। अव तुम्हारा नंवर कब आता है? तुम्हें मथुरादासभाई के वाद खजांची वनना है। तैयारी कर रखना।

जमनालाल का वंदेमातरम्

: ८० :

विलेपार्ले,
१३-७-३०

प्राणेश्वर,

आपका ता० ७-७-३० का पत्र मिला। अभी तक अनाज नहीं लिया, सो ठीक है। वजन तो इस हालत में कम होनेवाला ही है। 'सी' क्लास के १९ कैदियों को थाना से विसापुर ले गये थे। वहां पार्ले की ४० स्त्रियां, थाने की १० और आसपास की ६० के करीव होंगी। तीन दिन लाइसेंस के विरोध का काम वहुत असरदार हुआ। वांदरा की पुलिस ने भूल की, पर थाने की पुलिस ने समझदारी से काम लिया। दरवाजे पर झंडा, राष्ट्रीय गायन सब-कुछ चलने दिया। ७ बजे सुबह से शाम तक एक समान जुलूस देखकर सवने यही कहा कि स्त्रियों ने कमाल कर दिया।

आपने लिखा कि मेरा नंबर कब आयगा सो अगर हम आपकी तरह

उतावली करें तो आज जा सकते हैं। पर अब तो जेल जाना कामचोर होना है। पर यह बात भी सही है कि स्त्रियों को जेल जाने की जरूरत है और जो राजकीय कैदी छूट जाय तो फिर मेरे भाग्य में जेल कहां है। पर हम तो जब ले जायंगे तब जायंगे। अब्बास तैयबजी की ६५ बरस की साली चेंबूर से गिरफ्तार हुई। घाटकोपर से कमला नाम की एक विधवा कल गई। पर इनको जोश दिलाने में कुछ भागीदार हम भी हैं। चर्खे का क्लास नटराजन के घर पर खोला था। उनकी बहन आज एक स्त्री को लेकर आई थी। गिरगांव पर प्रभु लोगों में इतवार को और खोलना है।

खजांची के बारे में लिखा, सो ठीक है। समय आने पर देखा जायगा। तैयारी तो क्या करूं? पडवेकर से बातचीत करने का मौका मिले तब आप ही अनुभव हो जायगा। इतना तो मैंने सोच लिया है और ज्यादा तैयारी करनी हो तो आप लिख दें।

कमल की मंशा मोटर का लाइसेंस लेकर चंदनसिंह से मोटर चलाना सीखने की थी। पर अब वह कहता है कि १८ वर्ष की उम्र से पहले मोटर चलाने का लाइसेंस झूठ बोलकर लेना पड़ता है, सो नहीं लूंगा।

छोटेबाबू को एक अच्छा २५-३० रुपये की तनख्वाह का मास्टर पढ़ाता है। मुझे तो बहुत संतोष है। शरीर से भी अच्छा हो गया बताते हैं। मेरे डर से भी बच गया!

अबकी बार की मुलाकात में शायद मैं और श्रीकृष्ण भी आवें। अगर गिनती पूरी हो जाय, क्योंकि वर्धावाले तो ५-६ हो जावेंगे, तो मैं नहीं आऊं। ज्यादा इच्छा नहीं है पर वजन कम होने से देखने की जंची है। मैं ही सोच लूंगी। कभी पकड़ी जाऊं, इसलिए भी एक बार मिल लेना है।)

(यह पत्र अधूरा मिला है।)

: ८१ :

नासिक रोड जेल
१९-७-३०

प्रिय जानकी,

मेरी तबियत तो अब बहुत ठीक है। आशा है, तुम अपने स्वास्थ्य का

बराबर ख्याल रखती होगी। मुझे अब ऐसा लगता है कि तुम्हें कुछ समय के लिए शायद आराम व दूसरे प्रकार के जीवन का अनुभव प्राप्त हो। इसके लिए तुम्हारी तैयारी वहुत दिनों से है ही। वहां जाना पड़े तो किस प्रकार की व्यवस्था तथा रहन-सहन रखना चाहिए, इस संबंध में कुछ विचार लिखता हूं। संभव तो यही है कि तुम्हें 'ए' वर्ग मिलेगा, नहीं तो 'बी' वर्ग में तो कोई संदेह है ही नहीं। अपनी तैयारी तो 'सी' वर्ग तक की है ही। परन्तु तुम्हें जो वर्ग मिले, तुम उसी वर्ग के मुताबिक उसका लाभ उठाना। ऊंचे वर्ग में कैसे रहूं, इसकी चिंता नहीं रखना। खान-पान तो 'ए' व 'बी' वर्ग का एक-सा ही है। बने वहांतक बाहर से दवा व पथ्य आदि की चीजें छोड़कर खाने का सामान अपने पैसे से नहीं मंगाना है।

१. तुम अपने साथ 'आश्रम भजनावली', डायरी, गीता, तकली, पूनी, अटेरन तो ले ही जाओगी। साथ में और भी २-४ हिन्दी व गुजराती की पुस्तकें, जो तुम्हारी रुचि की हों, साथ रखना। ओढ़ने-बिछाने तथा पहनने के जरूरी कपड़े ले लेना। साबुन, तेल आदि साथ ले सकती हो। लिखने के लिए २-३ कोरी कापियां, २-३ पेंसिलें, रबर आदि ले लेना। अक्षर जमाने के लिए तथा मुलाकात के समय उपयोग करने के लिए स्लेट व पेंसिलें साथ रखना ठीक होगा।

२. भोजन तो शुद्ध शाकाहारी का ख्याल व आग्रह तो रखना ही होगा। छुआछूत का विचार रखने से काम नहीं चलेगा।

३. तुम्हारे साथ में जो बहनें हों, उनने खूब प्रेम करना व उनके ऊपर सुन्दर असर पड़े, इसका ख्याल रखना। श्री पेरीनबहन आदि की संगत मिल जाय तो बहुत लाभ हो सकता है। थाने में तो स्वामी आनंद हैं ही। यरवदा में भी बहुत बहनें हैं। कष्ट नहीं होगा, ऐसी आशा है। अगर जेल के अंदर के जीवन का तुम्हें मौका मिला तो वह भविष्य के लिए बहुत लाभकारी होगा। बाहर की चिंता-फिकर एकदम कम कर देना।

जमनालाल का वंदेमातरम्

पुनश्च—अंदर जाना हो तो चि० मदालसा, श्री गोमतीबहन या चि० तारा के पास रह सकती है। और बालक अपने-अपने ठिकाने पर रह ही सकते हैं।

: ८२ :

नासिक रोड सेन्ट्रल जेल,
२३-७-३०

प्रिय जानकी,

देखो, मैंने तो १४ रोज में ७ रतल वजन बढ़ा लिया और तुमने बाहर रहकर दस रतल कम कर लिया। इसपर से मालूम हो सकता है कि तबियत को कौन ज्यादा संभालता है। श्री किशोरलालभाई का वजन भी एक रतल बढ़ा है। तुम्हारे बारे में मैंने जितना विचार कर देखा, तुम्हारे गये बाद भी, मुझे तो यही लगता है, तुम्हारे अंदर (जेल) जाने से तुम्हें तो लाभ है ही, साथ में देश को भी अधिक लाभ पहुंचेगा। लोगों में सुस्ती या कायरता आती होगी तो वह नहीं आयेगी और इसका परिणाम राजपूताना, मध्यप्रान्त तथा अन्य प्रान्तों में भी ठीक होना संभव है। मैं समझता हूं तुम गोमतीबहन को व रिषभदास को समझा सकोगी। इस समय दृष्टि बहुत दूर व बहुत आगे का विचार करने की ओर लगाना जरूरी है। सफलता तो ईश्वर के हाथ है। हम लोगों का तो यही धर्म है। सच्चाई के साथ थोड़ी कुरबानी व आहुति तुम दे सकोगी तो उसे ईश्वर का उपकार मानना चाहिए। इस समय ऐसी ही बहनों एवं भाइयों की देश को जरूरत है, नेताओं की नहीं। संत तुकाराम का उद्‌गार है—'बोले तैसा चाले त्याचीं वंदावी पाउलें' यानी "जैसा कहे वैसा करे, उसके चरणों की मैं वंदना करता हूं।' इतने पर भी तुम बाहर की हालत देखकर विचार कर सकती हो। पूज्य वल्लभभाई वहां हों तो मेरा पत्र उन्हें दिखा सकती हो।

जमनालाल का वंदेमातरम्

: ८३ :

विलेपार्ले
जुलाई, ३०

प्राणेश्वर,

पत्र २३-७-३० का मिला। तबीयत के बारे में लिखा, सो आपकी होशियारी और ईश्वर की सहायता है। कुछ कमी थी, सो भी अब पूरी हो जायगी।

आपने अंदर आने का लिखा, सो ठीक है। पर सभाओं में बोलने के लिए इनके पास यहां कोई स्त्री इस समय नहीं है। लोगों पर असर पड़े, ऐसी स्त्री भी चाहिए। पर बात यह भी है कि इस वक्त जो जेल नहीं देखेगा, वह जिन्दगी-भर के लिए कोरा रह जायगा। यों लगता है कि बाहर उपयोग ठीक होता है। काम भी ज्यादा होता है। पर न्यौता आया तो जाना है ही। लेकिन छावनीवालों का जी दुखता है। वैसे भी छावनी में रहने से लोगों पर असर अच्छा पड़ता है। यों मेरे लिए तो बाहर-अंदर दोनों एक-सा है। गोपीबहन ने कहा कि बाहर काम करने की ज्यादा जरूरत है। तब वल्लभभाई ने भी गरदन हिलाकर 'हां' कहा। पर फिर वह ही चेंबूर से पब्लिक मीटिंग में बोले—"सैकड़ों को जेल जाना चाहिए, वहां ज्यादा आदमी भेजना चाहिए।"

बापूजी से पूछने का मन होता है, पर उनसे पूछना भी ठीक नहीं। कावसजी जहांगीर हाल में पारसियों की सभा में बोलने की थोड़ी हिम्मत करनी पड़ी थी। पब्लिक में हिम्मत तो हो जाती है, लेकिन भूल होने का डर लगता है। बंबई की हद तक तथा गांवों में भी स्त्री-पुरुषों की सभा में काम चल रहा है। कुछ असर भी पड़ता दीखता है। अखबारों की ४-५ कतरनें भेजूंगी, जिससे आपको अंदाज हो जायगा कि किस तरह यहां का चल रहा है।

कमला की मां

: ८४

नासिक रोड सेंट्रल जेल,
११-८-३०

प्रिय जानकी,

तुम मेरे कहने की कोई चिंता मत करना। मेरी तो आदत ही है कि जो काम करता हो, उसे टोकते ही रहना। 'अंदर' जाने से दूसरे प्रांत जैसे कि राजपूताना, मध्यप्रान्त आदि को लाभ पहुंच सकता है, किन्तु फिर भी कोई बात नहीं। बाहर जिस प्रकार की परिस्थिति हो और तुम्हारी आत्मा जिस प्रकार सेवा अधिक करने का कहती हो, वही करना इस समय धर्म है। यह सेवा-कार्य करते-करते तुम्हारे भीतर निश्चय करने की आदत पड़

जायगी। उससे बड़ा लाभ होगा। चि० रिषभदास का पत्र मिला। उसके काम से संतोष है। उसे कह देना।

श्री गोमतीवहन को वंदेमातरम् कहना। श्री किशोरलालभाई को इन दो दिनों से थोड़ी श्वास की तकलीफ है, एक दो रोज में मिट जायगी। चिंता करने की जरूरत नहीं। पूरी संभाल व व्यवस्था की जा रही है। अगर आज धूप निकल आई तो वह आज ही ठीक हो जायंगे। वीच में, तेल खाने से थोड़ी गड़वड़ हो गई थी। चि० मदालसा, उमा आदि बालकों को इस बार पत्र अलग से नहीं भेजा है, तुमने सब कहा होगा। चर्खे मिल गए। लागत भिजवा देना।

जमनालाल का वंदेमातरम्

: ८५ :

विलेपार्ले, १९-८-३०

पूज्य श्री

ता० ११ का पत्र मिला। आपने बहुतों से कहलाया, पर आपके कहने का मुझपर पूरा असर नहीं होता है। यह अपने सबके स्वभाव में है कि जब हम अपने आदमी को देखते हैं तो मन कुछ दूसरा ही हो जाता है। हम जो पूरे सच्चे हों, तो वन्धन से ही छूट जायं न!

मुझे आप पहले साथ रखने को कहते थे, पर मैं इन्कार कर देती थी। अब इच्छा हुई है, पर अव कौन जाने कितनी परीक्षा के बाद मौका आता है? वड़ी परीक्षा यह भी तो है कि अपने स्वभाव में, कुछ अंश में, मुझे परिवर्तन भी करना पड़े। खैर, यह भी देख लेंगे। यह भी एक आनंद है।

जेल से बचे रहने की तो इच्छा नहीं है। पर जब काम ढीला पड़ा है तो किसीने पकड़ा नहीं। अब जब काम जोर से चलता है तब लोगों के कहने से सच लगता है कि जेल जाने के बजाय काम ही करना चाहिए। जैसे आप जेल गये तो आपकी वह जगह तो भरी नहीं। फिर बाहरवालों का कहना भी ठीक लगता है और मुझे भी समाधान है। पर अभी तो स्त्रियों से सरकार भी डरती है। पर जेल का प्रसंग आना मुश्किल नहीं है। कठिन प्रसंग आवेगा तो जेल जाना ही है और समझौता पंद्रह आने तो होगा नहीं,

ऐसा लगता है।[1] इतने से में स्वराज्य आया तो टिकेगा कैसे ? इसमें न सरकार को लाभ, न हमें। यह कैसे सुलझ सकेगा, यह ईश्वर जाने। पर अभी सबकी दृष्टि रुक-सी रही है। नया काम किसीको सूझता नहीं। वैसे जोश दिनोंदिन बढ़ता ही है। कमल का हटूंडी (अजमेर) जाना सब तरह से योग्य है।

आपका वजन कम हो तो हर्ज नहीं, पर चेहरे पर लाली नहीं है। बस तबियत ठीक है। ता० २३ को मथुरादासभाई की मीटिंग है, इसलिए ता० २२ को मुलाकात सुबह ९ बजे लेंगे, ताकि २ बजे की गाड़ी से वापस आ सकें।

मुझे छगनलालभाई दीवावले जेल नहीं जाने देते। कहते हैं कि तुम्हें कीर्ति की बड़ी इच्छा है, काम करते हुए पकड़े लेंगे तो पकड़ लेंगे। मैं क्या करूं ? परंतु पहले मैं उनकी अकल से चलती थी, अब अपनी भी लगाऊंगी। जेल की मेरी पूरी तैयारी है। आपने चिट्ठियां भेजीं सो मिल गई हैं। बापूजी की भी। सूंठ के बारे में हम आवेंगे तब आप कहेंगे जैसी भेज देंगे। आपको कौनसी पसन्द आई, यह मालूम पड़ना चाहिए।

मेरा प्रणाम

: ८६ :

नासिक रोड सेंट्रल जेल,
३१-८-३०

प्रिय जानकी,

ता० २९ का पत्र मिला। मेरा स्वास्थ्य बहुत अच्छा है। दोनों वक्त कम-से-कम चार मील घूमता और थोड़ा दौड़ता भी हूं। तुम चिंता मत करना। अब तो यहां खूब मन लग गया है। घूमने, अंग्रेजी पढ़ने व कातने में बड़ा मन लगता है।

आचार्य पी० सी० राय आज मुझसे मिल गये हैं। तुम्हारे बारे में भी बात करते थे।

श्री मथुरादासभाई को भी वेलजी का नाम मैंने ही कहा था। अब भी

---

[1] इन दिनों श्री सप्रू व जयकर जेल में महात्मा गांधी और पं० मोतीलाल नेहरू से मिलकर समझौते की बातचीत कर रहे थे।

दो-तीन नाम दूसरे कहे हैं, नहीं तो आखिर में तुम तो हो ही। मौका मिले तो श्री मथुरादासभाई की स्त्री से मिलकर उसे हिम्मत दे देना। मैंने भी पत्र लिखा है।

उग्र काम करना चाहो तो श्री छगनभाई को कह देना, जरूर कर सकती हो। अब तो तुम्हें काम करते हुए ही अंदर जाना पड़े तो जाना ठीक रहेगा, क्योंकि अब तो दिल्ली में सब ठीक हो गया, अंदर जाने की अपनी तरफ से विशेष कोशिश करने की ज्यादा जरूरत नहीं रही।

चि० कमल को अहमदाबाद से आने पर अवश्य मिलने भिजवा देना उसे पूरी हिम्मत बंधाना व सब बातें समझा देना।

चि० मदालसा व उमा की पूनियां बहुत ही अच्छी निकलीं। चर्खे व तकली पर भी बहुत उम्दा सूत काता गया। मित्रों ने भी देखीं तो उनको भी बहुत पसंद आईं। पूनियां खतम होने को आई हैं। वर्धा से नर्मदा भी थोड़ी भेजती है। चि० मदालसा व उमा को कहना कि ज्यादा पूनियां भेजा करें। अच्छी पूनी वहां तैयार होतीं हों तो उसमें से भी थोड़ी लेती आया करो।

जमनालाल का वंदेमातरम्

पुनश्च—यहां सब आनंद में हैं। देखें तुम अंदर पहले आती हो या हम लोग बाहर। श्री गोमतीबहन से राखी नहीं भेजने का...

(यह पत्र अधूरा मिला है।)

: ८७ :

नासिक रोड सेंट्रल जेल,
२२-९-३०

प्रिय जानकी,

ता० १० का पत्र मिला। समाचार जाने।

अब मुझे भविष्य की कोई चिंता नहीं है। बाहर के काम पर ही भविष्य का आधार है। पहले तो बीच-बीच में, जल्दी बाहर आने और काम करने की इच्छा हो जाया करती थी। पर अब तो एक प्रकार से पूरी शांति व सुख से जीवन बीत रहा है। बाहर आने की प्रायः इच्छा मन में पैदा नहीं होती। कभी-कभी होती है तो बहुत ही कम।

चि० कमल को जो सलाह दी, वह ठीक है। उसका पत्र आया हो तो साथ लेती आना।

आजकल तुम्हारी तवियत ठीक रहती है, यह जानकर संतोष हुआ।

श्री मुनिजी, मुकुंदजी आदि मित्रों को तुम्हारे समाचार कह दूंगा। कपड़ा सीना तो नहीं आया, कुछ दिन काम करना पड़ता तो आ जाता। परन्तु कोई काम सीखने का योग ही न हो तब क्या हो ?

अबकी मुलाकात २६ सितम्बर, शुक्रवार को रखी है। चि० मदालसा, उमा, चि० शांतिबाई, श्री केशवदेवजी व बहुत करके श्री रामेश्वरदास बिड़ला आवेंगे। तुम लोग यहां से सीधे ही वर्धा जाना हो तो जा सकती हो। विलेपारले के काम में मोह-प्रेम होना तो स्वाभाविक है। श्री गोमतीवहन-जैसी वहन का साथ, श्री छगनलाल व अन्य सच्चे मित्रों का समागम जिसमें मोह पैदा नहीं करेगा ? तुम्हारा बाहर घूमने जाने का हो, तो भी विलेपारले तो बीच-बीच में आना-जाना रखना ही होगा। श्री नरीमानजी ने तुम्हारे बारे में मुझसे बहुत-सी बातें की हैं। मैंने उन्हें कहा है कि तुम्हें एक बार बाहर दौरे पर जाने की सलाह मैंने दी है। तथापि वहां की परिस्थिति देखकर तुम्हें कोई सूचना दें तो इसका भी विचार तो करना ही पड़ेगा। वह तुमसे मिलेंगे ही।

अपना एक फोटो उतराकर उसकी एक नकल मेरे लिए लेती आना। एक छावनी में और एक वर्धा भिजवा देना। तुम्हें जेल में जाना पड़े या बाहर ही चोट खाकर मरने का सौभाग्य प्राप्त हो जाय तो फोटो हम लोगों के काम आयेगी। क्यों, अब तो मरने से डर नहीं लगता है न ? हम लोगों का तो बीमा सरकार ने ले ही रखा है। इससे अगर इच्छा भी हो तो भी मामूली तौर से मरने का कोई मौका नहीं दिखाई देता। हां, तुम लोगों को मौका मिलना संभव है।

गत शुक्रवार, चरखा-बारस को, हम लोगों ने भी खूब चर्खा चलाकर, पू० बापूजी के गुण गाकर व ईश्वर से प्रार्थना करके मनाया। तीनों वर्गों में खूब चर्खा चले। 'बी' वर्ग में तो तीन चर्खे ६१ घंटे तक रात-दिन चलते रहे। 'सी' वालों ने भी खूब चलाये। हम लोगों ने २४ घंटे चर्खा चालू रखा। उस रोज मैंने १०॥ घंटे सूत काता। खूब प्रेम व उत्साह होने से ठीक काता गया। जीवन में पहली बार इतना सूत काता। २५६० तार व ३४१३ गज

सूत काता गया। सूत उतारने आदि का समय अलग। सुवह ३ बजे उठकर प्रार्थना करके लगा सो रात को १२ बजे निवृत्त हुआ। बीच-बीच में अन्य कार्य भी किये। पू० बापूजी पर छोटा-सा लेख भी लिखा। नरीमानजी को यहां से विदा भी करना पड़ा। हजामत, स्नान, एक बार भोजन, प्रार्थना, भजन और सबके लेख आदि सुनाये गए। यहां हमारे वार्ड में, कातने में मेरा प्रथम नंबर आया। यह सूत मैंने अलग रखा है।

आजकल यहां की आवहवा बहुत उत्तम हो गई है। पेट कम करने की एक कसरत एक मित्र ने बताई है। उससे बड़ा लाभ हो रहा है। आशा है, बहुत दिनों की जो मंशा थी सो अब विना दवाई के पूरी हो जायगी, जिससे बाहर आकर ज्यादा स्फूर्ति व तेजी से काम कर सकूंगा। अब तो मुझे काम भी ज्यादा करना पड़ेगा, क्योंकि आजतक तो लोग मेरे काम से तुम लोगों को पहचानते थे। परन्तु इधर तो तुमने इतना काम कर डाला है कि जिससे बहुत-सी जगह, जहां तुमने काम किया है, वहां लोग मुझे 'यह जानकी देवी के पति हैं' इस प्रकार से पहचानेंगे। यह तुम्हारे लिए ही गौरव व प्रशंसा की बात नहीं है। मुझे भी इससे खूब सुख मिलेगा। परन्तु अपने वर्चस्व को कायम रखने की इच्छा, मनुष्य की महत्वाकांक्षा को मैं थोड़े ही कम होने दूंगा। सो तुमसे ज्यादा काम कर सकूं, इसकी जेल के अंदर से ही तैयारी करके आऊंगा। तुमको सावधान रहने के लिए यह लिखा है।

अब किशोरलालभाई पहले जैसे कमजोर बीमार होकर बाहर नहीं आयंगे, मजबूत होकर आयंगे और खूब काम करेंगे सो तुम्हें भी मजबूत हो जाना चाहिए, नहीं तो परीक्षा में नापास हो जाओगी।

इस पत्र का उपयोग तुम श्री गोमतीबहन, चि० शान्ता, मदालसा, राधाकृष्ण आदि बालक व मित्रों को पढ़ाने में कर सकती हो। यहां सब खूब आनंद में हैं।

जमनालाल का वंदेमातरम्

पुनश्च—श्री नरीमानजी व बंबई के कार्यकर्ता तुम्हें आग्रहपूर्वक जवाबदारी का काम लेने को कहें और तुम्हारी तैयारी हो तो तुम कर सकती हो। श्री नरीमानजी ने मुझसे इस विषय में बात की थी। इसलिए लिख दिया है। वहां जरूरत हो तो घबराने या डरने का कारण नहीं।

: ८८ :

विले पार्ले,
२९-९-३०

प्राणेश,

आपका पत्र हाल में नहीं मिला। अबकी बार आपका चेहरा तो ठीक था, पर मच्छरों ने उसे बहुत खाया था। मच्छरों को खून क्यों पिलाना चाहिए? अगर मच्छरदानी मिल सकती हो तो बांधने-खोलने की ही तो तकलीफ है।

मथुरादासभाई पकड़े गये। आपने पहले मेरे लिए खजांची होने के बारे में लिखा था सो माटुंगा के वेलजी लखनसी नपू नियुक्त किये गए। वह ही ठीक हैं।

मुझे ये लोग कहते हैं कि जेल जाने की बात न करो। चार मास तो उग्र काम उठाओ और घर में बैठे पकड़े जाओ तो ना नहीं है। इसपर मैंने कहा कि काम तो करूं, पर मुझे बांधते क्यों हो? मुझपर ही सारी जवाबदारी क्यों डालते हो? अभी मैं जबान तो नहीं देती हूं। पर काम तो होना ही अच्छा है। छगनभाई पकड़े जाने की कोशिश तो नहीं करने देंगे, पर काम ऐसा तो हो कि सरकार को पकड़ना पड़े। अब देखना है कि क्या होता है?

कमला को आपका संदेशा भेज दिया था। वह अभी परीक्षा में बैठी है, सो मैंने चिट्ठी आदि भेजने के लिए मना कर दिया।

कमला की मां

: ८९ :

नासिक रोड जेल,
(सितम्बर, ३०)

प्रिय जानकी,

अगर तुम्हें व रिषभदास को, जैसी कि बात हुई है, छावनी के कार्यकर्ता, बाहर के प्रचार का काम जरूरी समझकर, परवानगी दें तो तुम रिषभदास को लेकर पहले वर्धा, नागपुर, चांदा, गोंदिया की ओर; बाद में बरार, अकोला, अमरावती, खानदेश और फिर राजपूताना, कलकत्ता, बिहार, जा सकती हो। रिषभदास का छुटकारा नहीं हो सकता हो तो श्री धोत्रे को साथ ले

सकती हो। लड़कियों में, तुम्हारी व चि० मदालसा की इच्छा हो तो उन्हें ले सकती हो, नहीं तो वर्धा में या गोमतीवहन के पास, जिसके पास वे रहना चाहें, व जो उनकी जवावदारी लेनेवाला हो, उसके पास उन्हें छोड़ सकती हो। मुसाफिरी में खाने-पीने में छुआछूत का ज्यादा विचार मत रखना। अगर गाड़ी में बहुत भीड़ हो और काम ज्यादा जरूरत का हो तो सेकेंड का टिकट भी ले सकती हो और किसीको साथ लेना जरूरी समझो तो वैसी व्यवस्था कर लेना। इससे तुम्हारा आत्म-विश्वास भी काफी बढ़ जायगा और अनुभव भी खूब मिलेगा। अगर वहीं काम करने का निश्चय करना पड़े तो फिर एक बार वर्धा ही १०-१२ रोज जाकर वापस आ सकती हो। पर इस संबंध में अब तो तुम खुद ही निश्चय कर सको तो हमेशा के लिए ठीक रहेगा। मुसाफिरी में खर्चा आदि का बहुत ज्यादा संकोच मत करना। जिसके यहां उतरना हो, उसका प्रेम व श्रद्धा प्राप्त हो, भविष्य में और भी ज्यादा प्रेम का संबंध बने इसका ख्याल रखना। किसीका अपमान न होने पावे, इसका सबसे ज्यादा ख्याल रखना। आठ दिन की भ्रमण की रिपोर्ट बंबई भिजवा दिया करना, सो मुझे आने-जानेवाले के साथ मिल जाया करेगी या तुम मिलने आओ तब लिखकर साथ लेती आना। लिखी हुई बात का विचार करके जवाब देने में ज्यादा सुभीता होता है। मुलाकात में ज्यादा बात होना कठिन रहता है। बहुत ज्यादा आदमी मुलाकात के समय न आएं, इसका अब ख्याल रखना पड़ेगा। अधिकारियों के प्रेम का यों उपयोग करना ठीक नहीं मालूम पड़ता। इस बार तो तुम्हारे कारण ज्यादा नहीं आये। जिनके पत्र आये थे, उनमें से दो-तीन को मैंने स्वीकृति भिजवाई थी। श्री रामकृष्ण डालमिया का आया हुआ व जवाब दिया हुआ पत्र पढ़ लेना। बालकों को भी पढ़ा देना।

जमनालाल का वंदेमातरम्

: ९० :

नासिक रोड सेंट्रल जेल,
१-१०-३०

प्रिय जानकी,

वर्धा से पट्टा आज आ गया है। निश्चित होने पर अपना प्रोग्राम

लिखना। मेरा स्वास्थ्य खूब अच्छा है। श्री मुंशीजी तुमसे मिलने आवेंगे। तुम अच्छी तरह इनसे मिलना और परिचय कर लेना। मेरा इनके साथ अच्छा प्रेम का संवंध हो गया है। श्री पेरीनवहन को मेरा 'वंदेमातरम्' कहना। उनका स्वास्थ्य अच्छा होगा। उन्हें फुरसत मिले तो जेल का अनुभव उनसे जान लेना। चि० कमल का क्या हुआ? उसे पत्र लिखने को लिखना। श्री गोमतीवहन को कहना कि हम सव लोग आनंद में हैं। श्री किशोरलाल-भाई को अधिकारी आग्रह करके एक रतल दूध देते हैं। आशा है, इससे उनको ताकत आयेगी।

जमनालाल का वंदेमातरम्

: ९१ :

नासिक रोड सेंट्रल जेल,
८-१०-३०

प्रिय जानकी,

तुम्हारा विना मिती-तारीख का पत्र मिला। पू० वापूजी द्वारा लिखा तुम्हारे नाम का पत्र पढ़कर सुख मिला। पत्र मेरे पास है। तुम आओगी, तब तुम्हें दे दिया जायगा। ये सव पत्र संभालकर रखना।

अव यरवदा जाने की इच्छा कम हो गई है। यहां मन भी लग गया है। आवहवा भी अनुकूल आ गई है, मित्र लोग भी हैं। अधिकारियों से भी प्रेम-मित्रता का संवंध हो गया है। दूसरे, मेरी इच्छा है कि पू० वापूजी के पास या तो प्यारेलाल चला जाय या देवदासभाई। मेरी यह इच्छा नारायणदास, भाई की मार्फत पू० वापूजी को लिखवा देना। चाहे तुम ही इतना उतारकर भेज देना।

तुम मेरी चिंता विल्कुल न करो। मैं यहांपर भी वाहर जितना ही आनंद प्राप्त करने का प्रयत्न करता रहता हूं तथा वहुत अंशों में मुझे सफलता भी मिल रही है। एक जगह रहने के अनुभव की आवश्यकता थी, वह भी पूरी हो जावेगी। इस वार की मुलाकात के समय, तुम्हारे मन पर मेरी वात-चीत का कुछ असर हुआ दिखता है। पर इस प्रकार का मोह व वाहर काम करने की इच्छा जव कोई मिलने आते हैं तव कम हो जाती है, अन्यथा समय वहुत सुख व शांति से वीत रहा है। वाहर की चिंता प्रायः वहुत कम करता हूं।

'जामे जमशेद' में तुम्हारे बड़ी सभा में सभापति होने की खबर व तुम्हारा भाषण पढ़कर हम सबोंको आनंद हुआ। अब जिस प्रकार बोलने का अभ्यास बढ़ गया है, उसी प्रकार लिखने का अभ्यास भी बढ़ाने का ख्याल रखो। तुम्हारा आगे का कार्यक्रम बना हो तो भिजवा देना। चि० मदालसा और उमा की पढ़ाई की, उन्हें संतोष हो वैसी, व्यवस्था वर्धा में जरूर करा देना। साथ में थोड़ा काम भी किया करेंगी।

तुमने पू० बापूजी को मेरे बारे में पत्र नहीं भेजा, यह बहुत ठीक किया। इस दौरे में राजपूताना जाना होगा या दूसरी बार में? पू० मां को कह देना कि उसे मेरे जन्म-दिन के रोज याने कार्तिक सुदी १२ (३ नवम्बर) को उसका आशीर्वाद लेने बुलाना है। पू० विनोबाजी नहीं आवेंगे। उनके पास से आशीर्वाद का पत्र भिजवा सको तो मां के साथ भिजवा देना। अकोला में सब काम ठीक हो गया होगा। चि० तारा ठीक काम करती होती। क्या वह तुम्हारे साथ भ्रमण में नहीं रह सकती?

श्री नथमलजी चोरड़िया, जो अजमेर-जेल में हैं, उनका बड़ा लड़का एकाएक गुजर गया। बड़ा होशियार और होनहार था।

चि० कमल के पत्र मिले। मैंने उसे पत्र दिया है। उसके साथ भी किसी जवाबदार आदमी की जरूरत तो है। चि० गुलाबचंद सुगमता से जा सकता हो तो जाने का लिखना।

जमनालाल का वंदेमातरम्

: ९२ :

नासिक रोड सेंट्रल जेल,
१४-१०-३०

प्रिय जानकी,

आखिर तुम रह गईं। बहन गोमतीदेवी को तो आराम मिल ही गया। उन्हें जरूरत भी थी। तुम्हारे भ्रमण की रिपोर्ट, आशा है, रिषभदास भेजता ही रहेगा। अकोला वगैरा की खबर, जो अखबार वगैरा मुझे मिलते हैं, उनमें तो आई नहीं। पू० बापूजी का पत्र वापस भेजा है, संभालकर रखना।

क्या अब विलेपार्ले तुम्हें जाना पड़ेगा? वहां जाकर काम हो सकेगा? एक बार वहां जाकर, वहां काम होना संभव हो तो उसकी व्यवस्था करना

ठीक रहेगा। आशा है वहां के स्त्री-पुरुषों में पूरा उत्साह होगा। विद्यालय जैसे रचनात्मक काम की भी उन्होंने व्यवस्था की ही होगी।

श्री किशोरलालभाई का जन्म-दिन जेल में मनाया गया। मेरा भी २० दिन बाद यहीं जेल में ही आयेगा। आशा है, तुम्हें अपना जन्म-दिन, जो माघ बदी ५ को आता है, जेल-महल में बिताने का सौभाग्य प्राप्त होगा। तुम्हें आशा है न ?

सुभीता हो तो पू० मां आवे उस रोज तुम भी आ जाना, पर काम छोड़ कर नहीं। चि० मदालसा और उमा की पढ़ाई की ठीक व्यवस्था हो गई होगी।

जमनालाल का वंदेमातरम

: ९३ :

नासिक रोड जेल,
२३-१०-३०

प्रिय जानकी,

तुमसे आज मिलना हो गया, इससे खुशी हुई। ईश्वर तुम्हारे काम की कद्र करके अब तुम्हें अवश्य शांति दिलावेगा। जेल में अपनी कमज़ोरियां ढूंढ़ने का अच्छा मौका मिलता है। मैंने तुम्हें पहले ही लिख दिया था कि जेल में क्या-क्या ले जाना। वह पत्र या उसकी नकल साथ में ले जाना। तुम्हारा जन्म-दिन माघ बदी ५ सं० १९४९ का है। तुम्हें ३८ वर्ष पूरे होकर ३९वां लगेगा। जेल में ३८ वर्ष का आंकड़ा लिखा सकती हो। जेल में श्री गोमती-बहन से खूब घनिष्ठता प्राप्त कर एक जीव सरीखा संबंध बना लेना। और बहनों से भी, खासकर दयाबहन से। श्री गोमतीबहन को मेरा प्रेम व श्रद्धा-पूर्वक वंदेमातरम् कहना। उनका और उनके कार्य का जब-जब मन में विचार आता है तो सुख व संतोष मिलता है।

श्री किशोरलालभाई का स्वास्थ्य बीच में थोड़ा खराब था, अब ठीक है। उनके इलाज की व्यवस्था ठीक है। सुपरिंटेंडेंट खास ख्याल रखते हैं। स्वामी आनंद थाना में ही हैं। अधिकारी भी अच्छे हैं। तुम लोगों को कष्ट नहीं होगा। मुझे पत्र लिखो तो वह बंबई की मार्फत भेजती रहना। बंबई के पते के लिफाफे साथ ले जाना। तुम्हारा लिखने का अभ्यास थोड़ा वहां बढ़

जाय तो अच्छी बात है। पढ़ने का तो बढ़ेगा ही। मेरी तथा चि० कमल व बालकों आदि की फिकर करना छोड़ देना। ईश्वर सब ठीक करेगा।

तुम्हारे लिए मन में स्थान तो पहले ही अच्छा था, पर इस बार की तुम्हारी हिम्मत, सेवा और योग्यता का विचार करके जो सुख व संतोष मुझे मिलता है, वह शब्दों में कैसे लिखूं? हम लोग बहुत ही पुण्यशाली हैं। ईश्वर व पू० बापूजी की दया और आशीर्वाद से अपने जितने सच्चे सुखी संसार में प्रायः बहुत कम लोग होंगे। आशा है, जेल में से हम लोग और भी अधिक लायक व योग्य बनकर निकलेंगे। मैं आजकल पांच बजे बराबर प्रार्थना करके 'रघुपति राघव राजा राम' कहते हुए चर्खा चलाता हूं। बड़ी शांति व आनंद मिलता है। रात को भी बहुत बार भजन चलता है। कल नये दिन से पींजन सीखना शुरू किया है। खूब आनन्द आता है।

श्री सौभाग्यवती व चि० शांता का उत्साह और हिम्मत बढ़ाना और अन्य बहनों से भी मिल लेना। चि० राधाकिसन के नाम मैंने पत्र लिखा है, वह अच्छी तरह पढ़ लेना। जन्म-दिन के रोज ऐसा निश्चय करने का विचार है।

जमनालाल का वंदेमातरम्

: ९४ :

(३ दिसंबर १९३०)

प्रिय जानकी,

छपरा से लिखा हुआ ता० १३ का पत्र व गोरखपुर से दिया हुआ तार पढ़ा। भाई श्री बनारसीप्रसादजी से तुम्हारे काम की बातें कीं। इससे सुख मिला और इस बात का पूरा विश्वास हो गया कि मनुष्य में शक्ति व बल तो रहता है, परन्तु यह खुद नहीं जानता। समय पड़ने पर ही उसका पता लगता है। अब तो तुम वकील बैरिस्टरों से भी बाजी मारने लग गई हो।

भाई सूरजमलजी रूइया आज आये थे। वह कहते थे कि कम-से-कम बातों में तो, तुम मेरे से भी बढ़ गई हो। श्री महावीरप्रसादजी पोद्दार का सर्टिफिकेट भी एक प्रकार से पहुंच गया। यह सब जानकर किसे खुशी नहीं होगी। मेरी राय में तो जो हालत तुमने लिखी है व जो भाई बनारसीप्रसादजी

ने बतलाई, उसपर से देहातों में फिरना ज्यादा लाभकारी व परिणामकारक होगा, क्योंकि वहां प्रभावशाली लोग बहुत कम पहुंच पाते हैं।

वर्तमान हालत में व भविष्य में भी बाहरवाले अगर कलकत्ता से माल ही नहीं मंगावेंगे तो उन्हें लाचार होना ही पड़ेगा। कलकत्ते के लिए जितनी मंडियां लगती हैं उन सबोंमें पूरी तौर से घूमना हो जाय तो अच्छा है। बीच में या बाद में कुछ रोज कलकत्ते में भी काम करके देखना चाहिए। देहातों के बाद वहां जाने से ज्यादा सफलता की आशा है। उपवास और धरना देने की बात ध्यान में बराबर नहीं बैठती। इसमें कोई नैतिक दोष तो नहीं है, परन्तु इस प्रकार उसका उपयोग न किया जाय तो ठीक है। अगर कोई उपाय बाकी न रहे और यही एकमात्र उपाय रह जाय और वह फलप्रद दिखाई दे तो मृत्यु तक की बाजी लगाने की तैयारी व विश्वास हो तो ही उपवास करने का विचार किया जा सकता है।

तुम जिस तरीके से रचनात्मक और स्थायी काम कर रही हो, उससे तो शायद उधर तुम्हें जेल न जाना पड़े। अगर उधर भी इस प्रकार काम करने का मौका आ जाय तो सुन्दर व उत्साह देनेवाला ही होगा। उससे बचने का प्रयत्न करने की, मेरी राय से, बिल्कुल आवश्यकता नहीं है। आखिर तो जो कुछ परमात्मा की इच्छा है वही होता है। सच्चाई के साथ बिना डर रखे, प्रयत्न करते रहना ही अपना धर्म व कर्तव्य है। यह बात यहां मैंने इसलिए लिख दी कि तुम तो मेरे विचार जानती हो ही, मित्र लोग भी जान लेवें। खुद होकर कोशिश नहीं करना, यह उचित है। पर जब काम करते-करते खूब थक जाओ और आराम लेने की पूरी इच्छा हो जाय तो बंबई तो तुम्हें वरमाला पहनाने (जेल भेजने) व डिक्टेटर बनाने के लिए एकमत से तैयार है ही। श्रीनरीमान मेरे पास आगये। वह कहते थे कि हो सके तो बंबई या विलेपारले से आराम महल में (जेल में) जाना ज्यादा अच्छा है। बाकी जहां का अनुभव मिलना होगा, वहीं का मिलेगा। दूसरी जगह से गिरफ्तार होना पड़े तो भी विचार करने की जरूरत नहीं। ईश्वर सब व्यवस्था आप ही करा देगा। मित्र लोग तो प्रायः सब ही जगह हैं। वे संभाल लिया करेंगे। परन्तु ज्यादा संभाल की जरूरत ही क्या रहेगी? ऐसा मौका आ जाय तो चि० कमला, मदालसा भी, हिम्मत हो और तुम उचित समझो

तो, तुम्हारा काम चालू रख सकती हैं, अथवा व वर्धा या माटूंगा पहुंचा दी जा सकती हैं।

मेरा स्वास्थ्य व मन बहुत उत्तम व उत्साह में है। तुम्हारे काम की रिपोर्ट बराबर मिलती रहे, इसकी व्यवस्था कर देना। तुम्हारे काम के बारे में अखबार में कुछ छपे तो उसकी कटिंग काटकर भी बंबई भिजवा देना या चि० रामेश्वर को लिख देना। संभव हुआ तो वह भी देख लिया करूंगा। गोरखपुर में भाई हनुमानप्रसादजी पोद्दार ही होंगे। क्या महावीरजी की स्त्री भी काम करती हैं ? पू० राजेन्द्रबाबू के स्वास्थ्य के कारण थोड़ी चिंता है। उनके घरवालों से मिलने का फिर मौका मिले तो मेरा प्रणाम व वंदेमातरम् कहना।

कलकत्ते में रहने आदि के बारे में मैं सोचता हूं कि जहां बिल्कुल संकोच नहीं हो और जिनकी सहानुभूति इस काम की ओर हो वहां या काम की दृष्टि से स्वतंत्र ठहरना शायद ज्यादा ठीक हो। श्री महावीरजी व बनारसीप्रसादजी जैसा कहें वैसा करना।

जमनालाल का वंदेमातरम

: ९५ :

(कलकत्ता)

(जवाब दिया, १०-१२-३०)

श्रीयुत,

दिसम्बर ३ का पत्र आपका मिला। पहला पत्र, जन्मदिन का, डालमियाजी के नौकर ने टोकरी के कचरे में मिलाकर जला दिया। समाचार तो महादेवजी ने कह दिया था। महादेवजी को वल्लभभाई से मिलने इलाहाबाद भेजा था कि पहले कलकत्ते जायं या देहातों में घूमें। संभव है, वह कुछ और भी सलाह देते और कार्यक्रम में फेरफार बताते, पर वह इलाहाबाद से बंबई निकल गये थे।

आपसे मिलने की तो अभी मेरी भी इच्छा नहीं है। कारण, आपकी तबियत ठीक है और समाचार मिल ही जाते हैं। फिर एक-दूसरे के विचार हम जानते ही हैं। नजदीक रहें और कोई काम न हो तो यह कोई बात नहीं। पहले मिलने आया ही करती थी। मैं वकील-बैरिस्टरों से बात कर लेती

हूं—आपने यह जो लिखा, सो नई बात नहीं है। निर्भयता व लज्जा में तो 'पास' थी ही। वापूजी के सत्संग और उनके काम लेते रहने व उनके विचारों को जान लेने से काम चल रहा है। और फिर काम को काम भी तो सिखा देता है। एक वात है। आप बाहर आ जावें तो हमारी इतनी कीमत भी न रहे और हमारे से उतना काम भी न हो।

डायरी लिखने की इच्छा तो वहुत करते हैं, पर आलस्य के कारण रोज नहीं लिख पाते। कभी दो-चार दिन की लिख लेते हैं। गांवों की रिपोर्ट वना ली है। अब डायरी लिखने की भी कोशिश करेंगे।

कमल को यहां बुला लिया है। उसको अच्छी संगत में ही रखते हैं। पर यहां उसका कुछ उपयोग होता दिखता नहीं है। यहां अगर उपयोग नहीं हुआ तो हम कदाचित एक बार वर्धा ही जावें। यहां का काम तो ठंडा पड़ा हुआ है। नेताओं में भी फूट है। कृष्णदासजी (वापूजी के सेक्रेटरी) इस फूट को मिटाने की कोशिश कर रहे हैं। इनकी फूट अगर मिट जाय तो कुछ काम हो।

आपको बाहर का विचार नहीं करना है। समय पाकर सब ठीक हो जायगा। सच्चा काम तो देहातों में ही होगा। उधर आसाम और बंगाल का पानी भी खराव है। वैसे अभी घूमकर आई हूं, जिससे कहीं जाने का मन कम है।

देहातों में तो बहुत अच्छा काम हो रहा है। नरीमानजी आपके पास फिर आ गये, यह बड़ा अच्छा हुआ। वाहर तो वह रह नहीं सकते थे। तो फिर आपके पास ही अच्छे हैं। राजेन्द्रप्रसादजी का वजन तो बढ़ गया था। अभी कुछ दमे की शिकायत सुनी थी। पर अव ४-८ दिन में वे छूट जायंगे। उन्होंने जेल में काम ले लिया था, जिससे कुछ रोज माफ हो गये। परन्तु लंबी सजा-वालों को विना इच्छा काम करने की तकलीफ क्यों उठानी चाहिए। ईश्वर पर भरोसा रखना चाहिए।

राजेन्द्रवाबू से मिलना था। लेकिन काम तो कुछ है नहीं और एक रोज क्यों गंवाया जाय? इतने में दो गांवों में काम करेंगे, यह सोचकर छोड़ दिया। उस वक्त उनकी तवीयत भी अच्छी थी। कमला, मदु व मेरे पकड़े जाने के बारे में लिखा सो सब ठीक है। मदु की हिम्मत है। पर उसे अकेली

नहीं छोड़ सकते। कमला को उसकी सास नहीं छोड़ेगी। तो समय पर जैसी शक्ति होगी किया जायगा। अभी यहां काम करने की इच्छा है। उपवास वगैरा का पूरी तौर से सोचे बिना कुछ नहीं होगा। आप खाने-पीने में संभाल रखोगे ही। रोटी बनाने का झगड़ा तो है ही, लेकिन दूसरा साहसी हो तो अनुभव ले सकते हो।

राजेन्द्रबाबूजी की पत्नी को पत्र देना है। वह मेरे साथ एक रोज महेन्द्रप्रसादजी के कहने से रहीं। अब वह कुछ काम तो करेंगी, पर कमजोर हैं। आपका प्रणाम लिख देंगे। महावीरप्रसादजी के पिताजी उनको कुछ भी नहीं करने देते। हनुमानप्रसादजी से मैंने कहा कि आप आसाम जाओ और एक लाख की खादी बेचो, 'कल्याण' को छोड़ो। वह प्रेम तो बहुत दिखाते हैं, पर कबूल कुछ नहीं करते। थोड़े लोग दृढ़ निश्चयी नहीं बन सके। विद्वान पर्दे के बारे में रूढ़ि छोड़ने के लिए राजी नहीं हैं। बहुत-सी स्त्रियों से गांवों में पर्दा छुड़ाया, यह देखकर पुरुष आश्चर्य में पड़ गये। हर गांव में छोटा-बड़ा जुलूस भी निकाला गया, जैसा आजतक नहीं निकला। चंदाबाई के गांव में बरसात में भी जुलूस निकला। पर उन्होंने खुद पर्दा नहीं छोड़ा, जिससे कुछ अड़चन आई। पर स्त्रियां निकल ही गई। लेकिन अब पुरुषों के सहयोग न देने से शायद फिर बैठ जायगी। आपने नियम बनाया था कि दो स्त्रियों का घूंघट खोलूंगा। सो मैंने तो कइयों का खोल दिया है।

वर्धा में हिन्दी का एक मास्टर छः घंटे के लिए घर पर रख दिया है। बाबू, नर्मदा, उमा, पद्मा, केसरबाई के लिए। कमल ने पुष्कर के मेले में काम भी अच्छा किया और मार भी खाई। अखबारों में खबर छपने पर वर्धा के तार आये। मुझे बिहार में मालूम नहीं हुआ। एक कतरन भेजती हूं।

जानकी का प्रणाम

: ९६ :

नासिक रोड सेंट्रल जेल,
१०-१२-३०

प्रिय जानकी,

तुम्हारा पत्र मिला। चि० मदालसा, कमलनयन और महादेवलालजी के भी। समाचार जानकर संतोष व सुख मिला। मेरी भी यही राय है कि

वर्धा जाने की जल्दी नहीं करनी चाहिए। हो सके तो आसाम, उड़ीसा और बंगाल के देहातों में अच्छी तरह घूम लेना ज्यादा लाभकारी व सुपरिणाम-कारक होगा। मुसाफिरी में आनंद व अमूल्य अनुभवों के साथ कई जगह, जैसे गया, दुमका के अनुभव (चि० मदालसा ने चि० रामेश्वर के नाम के पत्र में जो लिखा वह पढ़कर खुशी हुई) मिलना भी संभव है। ऐसा एक जमाना १५ वर्ष पहले का था, जिसमें पूज्य व प्रसिद्ध नेताओं को भी नदी के किनारे सोने या ढाबे में या वहां से लाकर खाने का सुअवसर प्राप्त हुआ था। उस समय से तो अब हालत में जमीन-आसमान का फर्क दिखाई देता है। सब ही जगह मानपत्र, जुलूस व बड़ी-बड़ी सभाएं होती रहें तो फिर उसमें कोई विशेषता नहीं रहती। बीच-बीच में गया और दुमका जैसी जगह का अनुभव तो भोजन को स्वादिष्ट बनाने में मिठाई के साथ नमकीन का काम देता है। दुमका में तो भाई श्री प्रभुदयालजी हिम्मतसिंहका के घरवाले रहते हैं। संभव है, उन्हें मालूम नहीं पड़ा हो या उन्होंने भी समाज या राजनैतिक कारण से उदासीन रहना पसंद किया हो।

चि० कमलनयन को वर्धा भेज देना उचित मालूम होता है। फिर तुम्हारी व उसकी जैसी इच्छा हो वैसा करना। चि० कमला मुसाफिरी से थक जाय तो उसे भी वर्धा और वहां से बंबई भिजवा देना। न थकी हो तो तुम्हारे साथ घूमती ही है। उसकी सासूजी की उसको परवानगी भी मिल गई है। मुसाफिरी में फल व सूखा मेवा आदि खाने का ज्यादा अभ्यास व ख्याल रखना। नोंध के लिए डायरी तो साथ रखनी ही चाहिए। जिनसे विशेष परिचय हो उनका पता-ठिकाना भी बराबर लिख रखना चाहिए। यह काम कमला और मदालसा ठीक कर सकती हैं।

श्री कृष्णदासजी को वंदेमातरम् कहना। अगर उन्हें फुरसत मिले तो वहां की हालत का एक पत्र बंबई की मार्फत लिखकर भेजने को कहना। पूं० सतीशबाबू की पत्नी से मिली होगी, उन्हें मेरा प्रणाम कहना। वह भी बड़ी बहादुर व एक प्रकार से आदर्श देवी है। आशा है, तुम्हें खेतानों के घर में खादी व पर्दा दूर करने में सफलता मिली होगी। बड़ों को मेरा प्रणाम, बराबरीवालों को वंदेमातरम् और छोटों को आशीर्वाद कहना। मैं इन्हें कई दिनों से पत्र लिखने का विचार कर रहा हूं। अब तो कुछ समय

बाद ही लिखूंगा। तुम सबसे ठीक परिचय कर लेना। यह घर भी मुझे सदा अपने कुटुंबी घर की तरह ही लगता रहा है और आगे भी लगता रहेगा। तुम तो दो ही बातों में, खादी-प्रचार (विदेशी वस्त्र-बहिष्कार) व पर्दा दूर कराने में, अपनी पूरी बुद्धि, ताकत व सच्चाई का उपयोग करती रहना। बाकी बातें तो आप-ही-आप होती रहेंगी। मेरा मन व स्वास्थ्य बहुत ठीक है।

जमनालाल का वंदेमातरम्

: ९७ :

कलकत्ता,
१३-१२-३०

पूज्यश्री,

अबकी बार आपका पत्र भी बिना तारीख और वार का मिला।

मेरा विचार कलकत्ता रहकर ही काम करने का है। यहां पिकेटिंग भी शुरू हो गई। स्त्रियों को निकालने का काम मैंने ले रखा है। सभा में समझाने और यहां रहने से परिणाम में उतना ही काम होगा जितना बाहर फिरने से। दूसरे यहां थोड़े दिन आराम भी मिल जायगा। बिहार में एक मास घूमने का असर यहां बहुत अच्छा पड़ा है। अब अगर यहां के लोग मुझे बंगाल में भेजेंगे तो देख लूंगी, नहीं तो यहीं महीने-डेढ़ महीने रहूंगी।

मदु और लालू मेरे साथ रहेंगे। परसों १५ दिसम्बर को घनश्यामदासजी आयेंगे। अभी बृजमोहन बिड़ला और लक्ष्मीनिवास की पत्नियां आई थीं। जीमने के लिए कई बार कह गई हैं। मैंने कहा कि घनश्यामदासजी आयेंगे तब शाम को उनसे मिलना-जीमना सब होगा। अब अपने काम को मैं खुद समझ लूंगी। आप ज्यादा विचार मत करना। महादेवलालजी व बनारसी-प्रसादजी भागलपुर गये। महादेवजी का यहां काम नहीं था। जरूरत पड़ेगी तो बुला लेंगे।

यहां के बड़े नेताओं, सुभाष बोस व सेनगुप्ता में फूट थी, सो ईश्वर की दया से आज रात को समझौता हो गया। ऊपर से तो सब बातें कबूल कर ली गईं। अब सब कार्य में लग जावें तो ठीक। कृष्णदासजी ने बहुत मेहनत की, बीच में दो रोज अनशन भी किया था। एक बार मानकर फिर से मुकर गये थे। पैसे की भी कलकत्ता में तंगी है। बंबई में लोगों की बहुत

सहानुभूति है। मैं सुभाषबाबू के पास दो बार गई। वह भी एक बार खेतानों के यहां मुझसे मिलने आये थे।

मोतीलालजी नेहरू के पास अभी तक नहीं गई हूं। स्वरूपरानी यहीं हैं। मुझसे कहती थीं कि मोतीलालजी की तबीयत बहुत दवाइयों के बावजूद ठिकाने नहीं आती। हमेशा बुखार वगैरहा की ही सुनते हैं।

आप अपने वजन का ख्याल रखना, और क्या खाते हो कितना वजन है, यह लिखना। यहां स्त्रियों के लिए मोटर वगैरा का इंतजाम कर लेंगे। पैसे के लिए नहीं डरेंगे, चाहे ५-४ हजार अपने लग जायं। जब काम जोरों से चलेगा तो पैसा अपने-आप आ ही जाता है। काम शुरू होना चाहिए। अभी अनशन का विचार नहीं है। बहुत सोच-समझ के ही होता दीखेगा तब ही विचार होगा। पहले और तैयारियां हो जायं। घनश्यामदासजी से बात करके उनकी सलाह से भी विचार करेंगे।

कमला की मां का प्रणाम

: ९८ :

कलकत्ता, १३-१२-३०

पूज्य श्री,

आपका पत्र एकादशी का मिला। घनश्यामदासजी ने आपको पहले ही प्रणाम लिखवाया है। रामकुमारजी भी आज छूट गये, पर फिर से जाने की तैयारी कम दीखती है। पद्मराजजी जैन का तो मत ही निराला है। विरोधी की तरह लेख लिखते हैं। पर आजकल की हवा में, कुछ व्यापारियों के सिवाय औरों पर तो असर होने से रहा। खेतानों के यहां पांच-चार जनों को आपके समाचार बंचा दिये। कालीदासजी बहुत खुश हुए। उनके घर में खादी ने प्रवेश तो खूब किया, पर कुंती के सिवाय और किसीने प्रतिज्ञा नहीं ली।

घनश्यामदासजी द्वारा खादी की प्रतिज्ञा लेने पर बृजमोहनजी व लक्ष्मीनिवास की पत्नी ने भी झट प्रतिज्ञा ले ली। मुझे तो जाति में पुरुष ही कमजोर नज़र आये। जानकीबाई खेतान परसों की मीटिंग में अध्यक्ष हुई थीं। दौरे में जाने के बारे में कहती थीं, कोशिश करेंगे। बर्दवान, रानीगंज जा आईं। मारवाड़ी स्कूल में शायद सन् १९-२० में लिखा हुआ आपका

संदेश पढ़ा था। मुझसे भी लिखानेवाले थे। पर भूल गये। वहां कुछ माल जाना शुरू हो गया था। व्यापारियों की कमेटी बना दी, अब नहीं जायगा। पर उस रोज का गया हुआ नहीं मिला। धरना देने से तो तुरत मिल जाता दीखता, पर पुराने झगड़े पैदा होते। आर्डर दिये हुए में से दूसरे दिन एक कमेटी का आदमी आर्डर कैंसल कराने के लिए आया। एक पुलिंदा चढ़ गया, अब देखें वह वापस हो सकता है कि नहीं।

२७ दिसम्बर से झरिया की तरफ चारेक दिन के लिए जाना है। नियमितता में तो मैं थी जैसी ही हूं। जब कार्यक्रम होता है तो बिना घड़ी के भी पांच बजे नहाकर तैयार हो जाती हूं। पर जब काम न हो तो मजे से ही उठना-नहाना चलता है। और बातों में तो बहुत-सा परिवर्तन मालूम होता है। काम की कीमत होने से शंका वगैरा कम हो गई है। निश्चय करना भी आ गया है। किसी जगह महात्माजी की बातें, किसी जगह आपकी बातें अपने-आप काम करवा लेती हैं। जैसे बनता है वैसे दीर्घ दृष्टि, उदारता से काम चला रही हूं। अनुभव तो मिलता ही है। आपके साथ घूमने का मौका मिलता तो और ज्यादा फायदा होता।

आप वजन नहीं बढ़ावें, यह ठीक है, लेकिन कमजोरी नहीं होनी चाहिए। बाहर आने पर वजन तो बढ़ेगा ही, फिर जेल में जितना होता है होने दो।

कमला की मां

: ९९ :

पौ० ब० एकादशी (१६-१२-३०)

(जवाब दिया, २३-१२-३० को)

प्रिय जानकी,

समाचार सब जाने। श्री कृष्णदासजी को मेरी ओर से मुबारकबादी देना। ईश्वर ने किया तो सब ठीक होगा।

पूज्य मोतीलालजी से मिलने जाओ तो मेरा प्रणाम कह देना। मुझे उनके स्वास्थ्य की पूरी चिंता है। परमात्मा ठीक करेगा। मेरा स्वास्थ्य व मन बहुत ठीक है। खूब उत्साह और फुर्ती मालूम होती है। आजकल की आबहवा भी उत्तम है। मित्रों की संगति भी ठीक है। प्रायः सवेरे पांच बजे से

रात के नौ या कभी-कभी दस बजे तक संतोषकारक कार्यक्रम चलता रहता है। दिन-रात बड़ी जल्दी बीतते जाते हैं। बाहर की अपेक्षा जेल के दिन जल्दी बीतते हैं।

सब मित्र आनंद में हैं। श्री गोमतीबहन वगैरा सब साथी जल्दी ही छूट जायंगे—हाईकोर्ट के फैसले के कारण।

जमनालाल का वन्देमातरम्।

पुनश्च—खेतानों और श्री घनश्यामदासजी के यहां सब मित्रों को मैं याद किया करता हूं, तुम कह देना। सबको वन्देमातरम् कहना। श्री सुभाषबाबू मिलें तो उन्हें भी वन्देमातरम् कहना।

: १०० :

नासिक रोड जेल,
पौष सुदी १४, संवत् १९८७
(३-१-३१)

प्रिय जानकी,

तुम्हारा, श्री कृष्णदासजी, व चि० मदालसा के पत्र पढ़कर खुशी हुई।

अगर श्री सीतारामजी को फंसाने का सौभाग्य मुझे ही है तो मुझे उसके लिए सुख व संतोष है। परन्तु भाई सीतारामजी में सेवावृत्ति बहुत पहले से जागृत थी। वही अब काम आ रही है। मैंने तो इनसे बड़ी आशाएं बांध रखी हैं।

परदे के बारे में तुमने लिखा सो ठीक है। फैशन, नाटक, तमाशे, पहाड़ों पर या दूसरे मुल्कों में जाकर लोग पर्दा नहीं करते। याने पर्दा करना लोग नहीं चाहते हैं, परन्तु समाज के मिथ्या डर व सेवावृत्ति की कमी के कारण उन्हें पर्दा करना पड़ता है।

परदे के रिवाज से देश की बड़ी भयंकर हानि हुई है। जिसके हृदय में न्याय व सत्य के साथ सेवावृत्ति है, वह तो इस राक्षसी प्रथा को जड़ से ही नष्ट करने का प्रयत्न करेगा। लोगों को यह डर है कि परदा चले जाने से आंख की शर्म व मर्यादा भी चली जायगी। सो मुझे तो इसका डर कम है। अगर वह एक बार चली भी जाय व थोड़ी हानि भी पहुंचे तो भी अंत में तो परिणाम उत्तम ही होगा। सो तुम इस विश्वास को खूब समझाकर जोर देकर

व्याख्यानों के सिवाय खानगी वातचीत में भी उपयोग करते रहना।

रानीगंज में सुन्दर काम हुआ। और भी देहातों में श्री महाबीरप्रसादजी व कृष्णदासजी के साथ जाना पड़े तो जरूर जाओ। वहां भी अच्छा परिणाम आना संभव है। अगर बंगाल में प्रतिष्ठावाले व प्रामाणिक थोड़े लोग भी जी तोड़कर इस काम के पीछे पड़ जायं, तो वहुत लाभ पहुंचे। आज तो विदेशी वस्त्र का पूर्ण वहिष्कार होने पर ही भारत को सच्चा स्वराज्य प्राप्त होना व टिकना संभव दिखाई देता है। बंगाल में तुम्हें दो-चार मास भी रहना पड़े तो जरूर रहना। चि० मदालसा को बराबर समझा देना।

तुमने लिखा कि अनुभव खूब मिल रहा है, सो यह अनुभव तो जिंदगी-भर काम आयेगा व बाद में मेरे साथ घूमने में भी खूब मदद देगा। घर को ठीक तौर से संगठित करने में भी इससे सहायता मिलेगी। मेरी बहुत वर्षों से यह इच्छा थी कि तुम व बालकों की कद्र मेरे कारण न होकर अपने पवित्र सेवा-कार्य के कारण हो; क्योंकि उसमें तुम्हारा व बालकों का ही नहीं, मेरा भी श्रेय व गौरव है। इस इच्छा की पूर्ति अब जल्दी ही परमात्मा की दया से व पूज्य बापू के आशीर्वाद से देखने को मिल रही है।

केसर ने चि० प्रह्लाद को दूसरी बार भी हिम्मत से जेल भेज दिया, यह देखकर आनन्द होता है। अपने घर में अब सब छोटे-बड़े कम-ज्यादा प्रमाण में सेवा-कार्य करनेवाले निकलेंगे, ऐसा विश्वास होता जा रहा है। सेवाधर्म में जो अलौकिक आनन्द व सुख मिलता है, वह संसार की किसी अनमोल वस्तु, मान-सम्मान या वैभव से प्राप्त नहीं हो सकता। थोड़े समय के लिए चाहे वह अपनेको मोह-माया के कारण सुखी समझने लग जाय, परन्तु वह बनावटी सुख ज्यादा टिक नहीं सकता। परमात्मा हमें सच्ची सेवावृत्ति बनाये रखने की सद्बुद्धि प्रदान करें, यही प्रार्थना हम सबोंको हमेशा करते रहना चाहिए। दूसरी प्रार्थना की आवश्यकता ही नहीं।

मदालसा के पढ़ाने की व्यवस्था कर दी सो ठीक किया। श्री महाबीरजी व सीतारामजी ने शिक्षकों को पसंद किया है तो वे अवश्य ही चरित्रवान होंगे। मेरा यह मानना है कि चरित्रवान की संगत से जो लाभ बालकों को हो सकता है, वह केवल विद्वान की संगत से नहीं हो सकता। उलटे बहुत बार उससे हानि का ही डर रहता है।

आज मुझे पू० राजेन्द्रबाबू मिल गये। आनन्द हुआ। तुमसे वह ता० ८ या ९ जनवरी को कलकत्ता में मिलेंगे।

ता० १५ जनवरी को चि० कमला और उसकी सास मिलने आनेवाली हैं। अभी इसी २७ तारीख को बिड़ला-परिवार, जो बंबई में था, सब-छोटे-बड़े सहित मुझसे मिल गया है। आनन्द आया। बाजरे की रोटी और दही सबोंने दो रोज खूब खाया। और भी कई चीजें उनके प्रेम के कारण खाईं।

प्रिय कृष्णदासजी से कह देना कि उनका पत्र पढ़कर मुझे सुख मिला। ईश्वर अवश्य सफलता देगा। तुमको वह चाहें तबतक कलकत्ता रख सकते हैं। श्री बैजनाथजी केड़िया को जेल में मेरा नाम लेकर कहलाने से शायद कुछ फायदा पहुंचे। उन्हें बहका दिया गया होगा कि मारवाड़ियों के हाथ से रोज-गार निकलकर मुसलमानों के हाथ चला जायगा। उन्हें समझाना चाहिए कि मान लो ऐसा ही होगा तो इतना अपवित्र धंधा वे लोग करना चाहें तो करें। मारवाड़ी जाति तो उस घोर पाप से बच जायगी, जो उसने जानकर या अनजान में किया है। खूब जोर से काम होने से बंबई के माफिक रास्ता बैठ जायगा।

मेरा पत्र प्रेस में न छपे व ऐसे लोगों के हाथ में न जाने पावे, जिससे दुरुपयोग किया जाय। मुझे बीच-बीच में बंबई द्वारा खबर भेजते रहें, यह भी कह देना।

मेरा स्वास्थ्य बहुत ठीक है। अभी तो बड़ा उत्साह व ताकत मालूम देती है। श्री नरीमानजी को तो मैंने भगाते हुए, पांव में मोच पड़ने से, दो-चार रोज के लिए लंगड़ा भी कर दिया है।

भाई सीतारामजी! तुम्हें मैं क्या लिखूं। तुम्हारी व पन्ना की माता की सेवावृत्ति व चेहरा जब-जब याद आता है, बड़ा सुख मिलता है। अभी तो पूरी ताकत मेरी समझ से विदेशी बहिष्कार पर ही लगानी उचित होगी। इसमें किसीके प्रति दया या उदारता दिखलाने का हमें हक नहीं है। जितना ज्यादा परिचय व प्रेम-संबंध हो उतना ही ज्यादा जोर अहिंसावृत्ति पर कायम रहना चाहिए।

जमनालाल का वंदेमातरम्

: १०१ :

नासिक रोड सेंट्रल जेल,
९-१-३१

प्रिय जानकी,

आज तुम्हारे जन्मदिन का एकाएक ख्याल आया तो परमात्मा से प्रार्थना की है कि वह तुम्हें सद्बुद्धि प्रदान करता रहे। परमात्मा की कृपा से तुम्हारा यह ३९ वां वर्ष भी तुम्हारे जीवन में महत्व व आदर्श का बीतेगा। मेरी ओर से बधाई स्वीकार करना। जिस प्रकार हम दोनों जीवन के आदर्श के समीप आते जा रहे हैं, उसी प्रकार हमारा सच्चा व पवित्र प्रेम भी बढ़ता जा रहा है। हम एक-दूसरे के विशेष नजदीक आते जा रहे हैं। हमारे परस्पर गुणों और योग्यता का हमें विशेष परिचय होता जा रहा है। परमात्मा की कृपा व पू० बापूजी के आशीर्वाद से हम लोगों का अपने जीवन के आदर्श में सफल होना बहुत संभव दिखाई देता है। अगर हम अपनी कमजोरियों को बराबर पहचानते रहें और उन्हें निकालने का जी-तोड़ प्रयत्न करें, तो हम अपने जीवन को पूरी तौर से नहीं तो कुछ अंश में तो अवश्य ही सार्थक बना सकेंगे। आज तुम्हारे जन्म-दिन की खुशी के निमित्त जेल में आने के बाद प्रथम बार मैंने पापड़ खाया। उसका पूरा इतिहास तो जब तुम मिलने आओगी या मैं जेल से बाहर आऊंगा तभी सुनाने में आनन्द आवेगा। उबालकर तैयार किये हुए ३-४ सिंघाड़े भी खाये। याने हम लोगों ने तो तुम्हारा जन्म-दिन मना लिया। तुम्हें तो पता भी नहीं पड़ा होगा।

श्री नरीमानजी को तुम्हारे पत्र का, उनके संबंध का प्रसंग, पढ़कर सुना दिया। उन्हें आनन्द हुआ। नरीमानजी की तुम्हारे प्रति श्रद्धा व पूज्य भावना है। इन्होंने व उसमान सोबानी (उमर सोबानी के छोटे भाई) ने तुम्हें प्रणाम व वंदेमातरम् लिखवाया है। श्री उसमान तो मुझे बड़े भाई के स्थान पर मानता है। इनके यहां आ जाने से हम दोनों को ही खूब सुख मिल रहा है। महल में (जेल में) तुम्हारी इच्छा हो तो वहीं से काम करते हुए (न कि जबरदस्ती आगे बढ़कर) आराम लेने चले जाना।

मारवाड़ी समाज के लिए तो कलकत्ता में जेल जाने का मौका मिले तो भी

अच्छा ही परिणाम आ सकेगा। बाकी बंबई, कलकत्ता, वर्धा, अजमेर, सभी स्थान अपनी-अपनी जगह महत्व के हैं।

मेरा स्वास्थ्य बहुत ठीक है। तुम्हारा ठीक रहता है, यह जानकर संतोष हुआ। तुम भाई श्री कृष्णदासजी को लेकर एक वार सर जे० सी० बोस व लेडी बोस से मिल लेना। उनसे मेरा प्रणाम कह देना। उनका ता० ३० दिसंबर का पत्र ही मुझे मिला, पहला पत्र नहीं मिला। श्री कृष्णदासजी के साथ रहने से तुम्हें व उन्हें बंगला में भली प्रकार बातचीत समझा देंगे। उनकी संस्था भी तुम देख लेना। चि० मदालसा को भी साथ ले जाना। श्री कृष्णदासजी को पढ़ने के लिए सर जे० सी० बोस के पत्र की नकल नीचे देता हूं।[1] पत्र में तुम्हारा भी उल्लेख है।

जमनालाल का वंदेमातरम्

: १०२ :

नासिक रोड सेंट्रल जेल,
१५-१-३१

प्रिय जानकी,

तुम्हारा पत्र मिला। ता० ९ को तुम्हारे जन्मदिन के रोज पत्र भजा था। वह तुम्हें मिल गया होगा। चि० मदु की तबियत सुधर गई, यह जानकर खुशी

---

[1] श्री जे० सी० बोस के पत्र का हिन्दी-अनुवाद इस प्रकार है—

कलकत्ता

जमनालाल,

आशीर्वाद। अपने जन्मदिन पर तुमने जो पत्र लिखा वह मुझे मिल गया था। मैंने तुरंत ही तुम्हें एक लंबा पत्र लिखा था, जिसमें तुम्हें और तुम्हारे कुटुंबी जनों को हमने अपने स्नेह व शुभकामनाएं भेजी थीं। मुझे नहीं पता कि वह पत्र तुम्हें मिला या नहीं। तुम्हारा, तुम्हारी पत्नी और बच्चों का हमेशा ख्याल बना रहता है। ईश्वर से प्रार्थना है कि तुम्हें उसका आशीर्वाद सदैव मिलता रहे और तुम्हारा जीवन पवित्र आदर्शों से प्रेरित होता रहे।

तुम्हारा शुभेच्छु
जे० सी० बोस

हुई। तुम्हारा स्वास्थ्य भी ठीक रहता होगा। मेरा मन, स्वास्थ्य दोनों ठीक हैं। आज चि० कमला, उसकी सास, चि० कमलनयन, रामेश्वर, राजकुमारी आदि आये हैं। कमला व उसकी सासू से बातें की हैं। खाने का बहुत सामान वे ले आये हैं—दही, बाजरे की रोटी, बड़े आदि। आगे से तो मना कर दिया है।

तुम्हारा कार्यक्रम निश्चित हो जाय तो लिख भेजना। श्री नरीमानजी छूट गये हैं। तुम्हें पत्र लिखनेवाले हैं। श्री सत्यदेवजी का आज पत्र मिला। तुम उन दोनों को मेरी प्रसन्नता के समाचार, बधाई तथा उनके प्रति हमारे प्रेम का संदेशा भिजवा देना।

उनके (नरीमानजी के) पिता का देहान्त हो गया, जानकर चिंता हुई, पर कोई उपाय नहीं।

चि० मदालसा को कहना, उसका पत्र बहुत छोटा आता है। विगत प्रायः नहीं रहती है। सो रोज डायरी की तरह पत्र लिखने की आदत डालनी चाहिए। चि० पन्ना की माता को बालक हुआ होगा। लड़की हो तो भी मेरी ओर से बधाई देना। वर्तमान समय में लड़कों की जगह लड़कियों की ज्यादा आवश्यकता है। उनकी इज्जत व उनके प्रति प्रेम जरूरी है। लड़की के रहने से मन में उदारता और परोपकार की वृत्ति बढ़ती है। पुत्र के कारण स्वार्थ की वृत्ति बढ़ती है, यह भी कह देना। चि० लक्ष्मण रसोइया को वंदेमातरम् कहना, खूब प्रेम से। पन्ना की माता व कुटुंबियों की सेवा करने को कह देना।

जमनालाल का वंदेमातरम्

: १०३ :

नासिक रोड सेंट्रल जेल,
२४-१-३१

प्रिय जानकी,

इस बार तुम्हारा पत्र नहीं मिला। आशा है, तुम्हारा व चि० मदालसा का स्वास्थ्य ठीक होगा। आजकल फिर छूटने की गड़बड़ शुरू हुई है। संभव है, तुम्हारे जेल में जाने के पहले हम लोगों को ही बाहर आना पड़ जाय। अगर छूट गये तो शांतिमय जीवन छोड़कर फिर तूफानी समुद्र में आना पड़ेगा। तुम्हें तो सब खबरें अखबारों के द्वारा मिलती ही होंगी। छूटेंगे या नहीं, उसका

फैसला बहुत-कुछ इस महीने के आखिर तक हो जाता दिखता है। सब राजनैतिक मित्र शायद अभी न भी छूटें। फिर भी पुरानी वर्किंग कमेटी के सदस्यों का छूटना ज्यादा संभव दीखता है।

तुम्हारा क्या प्रोग्राम है ? श्री कृष्णदासजी ने तो आखिर फिर थोड़े रोज के लिए आराम लेने का विचार कर लिया। आज अखबारों में पढ़ा।

मेरा स्वास्थ्य व मन बहुत ठीक रहता है। आजकल ये खबरें पढ़कर जो कार्यक्रम शांतिपूर्वक चल रहा था, उसमें थोड़ी गड़बड़ी हुई है। तुम्हारे कार्यक्रम में कितने रोज कलकत्ता रहना आवश्यक है, जरूर लिख भेजना।

जमनालाल का वंदेमातरम्

: १०४ :

बंबई,
२७-१-३१

प्रिय जानकी,

आखिर कल एक बार तो जेल छोड़ना ही पड़ा। आज सुबह यहां आ गया। पू० बापूजी के साथ आज रात को प्रयाग जा रहा हूं। वहां से अगर हो सका तो एक रोज कलकत्ता आने का प्रयत्न करूंगा या तुम्हें वहां बुलाने की जरूरत समझूंगा तो बुला लूंगा।

चि० कमल मेरे साथ है। चि० कमला मेरे साथ पू० बापूजी से मिलती है। जेल में से जितना लंबा-चौड़ा पत्र लिख सकता था, उतना बाहर से लिखना कठिन है। मेरा स्वास्थ्य जेल में जितना ठीक रहता है, उतना बाहर रहेगा या नहीं, यह देखना है, क्योंकि इतनी शांति बाहर नहीं मिल सकेगी।

जमनालाल का वंदेमातरम्

: १०५ :

प्रयाग (चालू रेल में),
१४-२-३१

प्रिय जानकी,

तुम्हारा पत्र मिला। पू० बापूजी रफल देखकर बहुत खुश हुए। उन्होंने कहा कि मैं इसे दो वर्ष और चला सकूंगा। तुम्हारे लिखे हुए समाचार उन्हें कह दिये। तुम्हारी भेजी हुई पूनी उन्होंने आज कातकर देखी। उन्होंने कहा

कि रूई तो अच्छी है, परन्तु पूनी ठीक नहीं बनी। लंबी ज्यादा है व पोली भी है। आगे से बहुत अच्छी पूनी बना सको तो थोड़ी बापूजी को भेजने का प्रबंध करेंगे।

मैं आज पटना जा रहा हूं। वहां से ता० १९ तक कलकत्ता ठहरकर वर्धा आने का विचार है। अगर दिल्ली वगैरा न जाना पड़ा तो ता० २१ तक वर्धा पहुंच जाऊंगा। पू० स्वरूपरानी तुम्हें याद करती थीं। मैं सब घरवालों से प्रायः भली प्रकार से बातें कर सका, उसका मुझे संतोष है। चि० प्रह्लाद व कमल के बारे में पू० काकासाहब को, जो मुझे समझाकर कहना था, सो कह दिया है।

१५-३-२१

आज सुबह यहां दानापुर (पटना) श्री रामकृष्णजी डालमिया के पास पहुंच गया हूं। दोपहर को व कल बिहार के नेता व कार्यकर्ताओं से बात करके कल रात को कलकत्ता जाने का विचार है। चि० रमा पांच बजे सुबह मोटर लेकर स्टेशन आई थी। उसीकी मोटर में घर आये। लड़की बहादुर मालूम होती है। अगर कुछ समय आश्रम में या अच्छे वातावरण में रह जाय तो उसे अवश्य फायदा पहुंचे।

जमनालाल

: १०६ :

वर्धा, १३-४-३१

प्रिय जानकी,

डा० रजबअली व चि० राधाकिसन आज यहां आये। श्री बालकोबा को उन्होंने देखा। उन्हें यहीं रखकर इलाज करने का कहा है। अच्छा हो जाने की आशा बताते हैं। तुम्हारे बारे में डाक्टर से व राधाकिसन से बातें हुई। डाक्टर को तो वर्धा ज्यादा पसंद पड़ा। परन्तु यहांकी गरमी दिन-ब-दिन बढ़ेगी, वह तुम अभी सहन नहीं कर सकोगी। अगर सासवने में ठीक प्रबंध हो गया हो, तो ठीक है, नहीं तो मैं आऊं तबतक बालकेश्वर भाग्यवती बहन के पास बिना संकोच के ठहरना। मेरे वहां आने पर बंदोबस्त कर लिया जायगा। हो सकेगा तो चि० राधाकिसन को २-३ रोज के लिए भेजने का प्रबंध करूंगा। तुम्हें किसी प्रकार की फिकर, चिंता व क्रोध न करके जिस प्रकार मन को शांति मिले वैसे

रहने से ज्यादा लाभ मिलेगा। घर का भार तुम लक्ष्मण आदि पर छोड़कर खुद मेरे माफिक अतिथि बन जाओगी तो तुम्हें अधिक सुख व शांति मिलेगी। तुम्हारा स्वास्थ्य ठीक हो जायगा। बन सकेगा वहांतक मैं भी तुम्हारे साथ कुछ समय तक रहने का उद्योग करूंगा।

जमनालाल का वंदेमातरम्

: १०७ :

(इस पत्र का शुरू का पृष्ठ नहीं मिला है।)

चि० राधाकिसन के कारण भी मैं बेफिकर हूं। चि० उमा के व्यवहार से तुम्हें संतोष है, यह जानकर सुख मिला। आशा है, बड़ी होने के बाद यह लड़की भी ठीक निकलेगी। चि० मदालसा व नर्मदा की पढ़ाई ठीक चले, यह तो अच्छा है, साथ में उनका स्वास्थ्य खराब न होने पावे, इसका भी ख्याल रखना।

पू० बापूजी को, बहुत संभव है, लंदन जाना पड़े। चि० कमलनयन, प्रहलाद, गुलाब से इस समय ठीक बातें हो गई हैं। सबकी मंशा जान ली है। चि० कमल की इच्छा मुताबिक उसकी अंग्रेजी पढ़ाई का इंतजाम श्री बालजी-भाई देसाई के पास रखकर करने का एक बार तो निश्चय हुआ है। श्री बालजी-भाई को पू० बापूजी अल्मोड़ा भेज रहे हैं। कमल भी वहां चला जायगा। अल्मोड़ा की आबहवा तो बहुत ही उत्तम है। फिर श्री बालजीभाई सरीखा अंग्रेजी पढ़ानेवाला दूसरा आदमी मिलना बहुत ही कठिन है। पू० बापूजी ने तो पूना रखने की भी आज्ञा दे दी थी, परन्तु मुझे वहां का वातावरण, व्यवस्था व पढ़ाई पूरी जंची नहीं। अल्मोड़ा थोड़ा दूर तो पड़ेगा, परन्तु उससे संतोष रहेगा। प्रभुदासभाई भी वहां हैं ही। बीच-बीच में पत्र लिखा करना।

जमनालाल का वंदेमातरम्

: १०८ :

कल्याण, १५-१-३२

प्रिय जानकी,

नासिक रोड जेल का दृश्य देखते हुए व पत्र वगैरा पढ़ते हुए कल्याण

स्टेशन निकल गया। तुमको साथ नहीं लाया, इसका मेरे मन में थोड़ा विचार तो रहा, परन्तु वर्तमान परिस्थिति में तुम्हारा वर्धा रहकर ही काम करना उचित था। इसलिए ऐसा कठोर काम करना पड़ा। बंबई पहुंचने पर पू० मालवीयजी से मिलने पर जो प्रोग्राम निश्चित होगा, तुम्हें लिखूंगा। मेरी इच्छा तो जल्दी ही वापस वर्धा आने की है। तुम मन में किसी प्रकार की घबराहट मत रखो। परमात्मा जो कुछ करता है, वह ठीक ही करता है। मुझे तो पूरा विश्वास व आशा है कि परिणाम ठीक निकलेगा। इस सत्याग्रह में अपनेको तो बहुत ही उत्साह और हिम्मत से काम करना है। ईश्वर से प्रार्थना करना कि वह अपनेको सद्‌बुद्धि प्रदान करता रहे और सच्ची सेवा करने की ताकत देता रहे। घबराहट को बिल्कुल निकाल देने से ही काम ठीक होगा।

जमनालाल का वंदेमातरम्

: १०९ :

भायखला हाउस आफ करेक्शन,
१७।१८-१-३२

प्रिय जानकी,

आखिर बंबई की ही जेल मिली। यहां काफी मित्र हैं। सब बड़ा ही प्रेम तथा सम्मान करते हैं। मुझे तकलीफ न हो, इसका पूरा ख्याल रखते हैं। अभी तो मुझे एक दुमंजिले हाल में रखा है। हवा-पानी आदि का सुख है। तीन अन्य मित्र मेरे साथ रहते हैं। मेरे कान का इलाज बराबर हो सकेगा, ऐसा मालूम होता है। तुम चिंता बिल्कुल मत करना। अभी तो सप्ताह में एक बार पत्र लिखने और एक बार मुलाकात लेने का हक है। सजा होने के बाद जिस वर्ग में रखेंगे, वह नियम लागू होगा। मित्रों का कहना है कि मुझे यहां नहीं रखेंगे, दूसरी जगह भेज देंगे—नासिक या यरवदा। संभव है, नागपुर भी भेज दें। जहां उनकी इच्छा हो वहां भेज सकते हैं। सब ही जगह आनन्द मिलेगा।

मैं चि० शांति, गोमतीबहन, किशोरलालभाई आदि से थाना-जेल में मिल लिया था और चि० कमला से माटुंगा में। पकड़े जाने के समय तो तुम्हारी याद आई, बाकी सोचने से यही ठीक लगा कि तुम्हारा वर्धा रहना

ही इस समय ठीक रहा। बालकों को, सीकरवालों को, सबोंको कह देना कि मेरी चिंता बिल्कुल न करें। मैं अपना पूरा ख्याल रखूंगा। दो दिन से तो खेलकूद में तथा सोने में ही ज्यादातर समय बीत रहा है। खूब आराम है व सिर भी हल्का मालूम देता है। तीन मित्र नीचे जमीन पर सोते हैं। मुझे जबरदस्ती पलंग पर सुलाते हैं। मेरा सौभाग्य है कि जहां जाता हूं, वहां घर का-सा स्नेह-संबंध एवं मित्रता हो जाती है। ईश्वर की दया है। तुम भी अपनी जरूरत के मुताबिक पहले से जेल की तैयारी कर रखना, जिससे सुगमता रहे। मुझे जिस सामान की जरूरत थी, वह लिखकर मंगा लिया है। अबकी बार मुलाक़ात और पत्र-व्यवहार कम रखने का विचार है। इससे सुभीता रहेगा। जहांतक बंबई में हूं, वहांतक बंबईवाले तो मिल ही जाया करेंगे।

इतवार के पहले एक बार ११ से १ बजे के बीच में श्री लालजी व उसके साथ कोई आवे तो मिलने भेज देना। मैं खूब आनन्द में हूं।

जमनालाल का वंदेमातरम्

: ११० :

भायखला हाउस आफ करेक्शन,
७-२-३२

प्रिय जानकी,

तुम्हारा ता० ३१-१ व १-२ के दोनों पत्र कल ता० ६-२ को मुझे बंबई के पत्र के साथ मिले। मेरी समझ से अब सिर में ऐसे चक्कर नहीं आयेंगे, जिससे शरीर को जोखिम पहुंचे। कान का इलाज चालू है।

मेरे लिए जेलवाले मेथी या चौलाई का हरा साग भेज देते हैं। वही उबालकर, नमक डालकर, खाता हूं। उससे तबीयत खूब अच्छी रहती है। श्री सदानंद अभी यहां मेरे पास में ही रहता है। उसने तुम्हें पत्र भेजा था, ऐसा कहता था।

चि० कमलनयन हरदोई-जेल में है। वहां वह मजे में है, ऐसी खबर मिली ह। मुझे कोई चिंता नहीं है। वहां संगति अच्छी होगी ही। तुमको अवकाश मिले तो सप्ताह में एक पत्र भेज दिया करना, नहीं तो लड़कियों से लिखवा दिया करना।

जमनालाल का वंदेमातरम्

: १११ :

भायखला-जेल,
११-३-३२

प्रिय जानकी,

कल की मुलाकात में यह जानकर चिंता हो रही है कि तुम्हारा स्वास्थ्य नागपुर-जेल में ठीक नहीं रहता। मुझे बतलाया गया है कि तुम्हारी दवा, वगैरा की व्यवस्था बराबर हो गई है और जेल-अधिकारी भी पूरा ध्यान रखते हैं। यह जानकर संतोष है। संतरे वगैरा तुम्हें जो अनुकूल हों, खाने का बराबर साधन रखना। मैं तो यह उम्मीद करता था कि तुम्हारा स्वास्थ्य वहां आराम और शांति मिलने से सुधर जायगा। परन्तु समझ में नहीं आता कि तुम्हारी तबीयत क्यों बिगड़ गई? सविस्तर पत्र लिखकर बंबई-दूकान के पते पर मुझे भेजना, क्योंकि अब मैं इस जेल में तो १५ तारीख के बाद नहीं रह सकूंगा। दूकान पर पत्र पहुंचने पर मैं जहां व जिस जेल में रहूंगा, वहां दुकानवाले पत्र भिजवा देंगे।

मेरा स्वास्थ्य उत्तम है। मैं खाने-पीने में बराबर संभाल और ख्याल रखता हूं। खूब खेलता हूं, आनन्द करता हूं व औरों को भी आनन्द में रखने का प्रयत्न रखता हूं। यहां के अधिकारी तथा मित्र बड़े प्रेम का व्यवहार रखते हैं। तुम मेरी या चि० कमल की कोई चिंता मत करना। तुम्हारा स्वास्थ्य उत्तम हो जाय और तुम सब तरह से ठीक होकर वापस घर आओ, ऐसी परमात्मा से प्रार्थना है। वहां की बहनों को मेरी ओर से प्रणाम व वंदेमातरम् कहना। सबके साथ खूब प्रेम और कौटुम्बिक संबंध बढ़े व भविष्य में अपने स्थायी काम, समाज-सुधार, पर्दा-निवारण, अस्पृश्यता-निवारण आदि में बहनों की पूरी सहायता मिले, इसलिए भी उनसे अच्छा परिचय हो जाना चाहिए। मुझे तो जेल में भी हमेशा नये मित्रों से परिचय करने का ईश्वर की दया से व पूज्य बापू के आशीर्वाद से मौका मिल ही जाता है, जिससे मुझे बड़ा संतोष मिलता है।

जमनालाल का वंदेमातरम्

: ११२ :

विसापुर जेल जाते हुए (रेल में),
१५-३-३२

प्रिय जानकी,

कल शाम को तुम्हारा पत्र बंबई हवालात में मिल गया। पढ़कर संतोष हुआ। आशा है, अब तुम्हारा स्वास्थ्य ठीक रहता होगा। वजन बढ़ा होगा।

पोद्दारों के यहां से दूध, छाछ मांगना पड़े तो तुम मंगा सकती हो। इसमें कोई हर्ज नहीं। अगर जेल में ही दूध जमाकर दही व छाछ बना लो तो ज्यादा ठीक रहेगा, कारण, उनके बंगले से जेल दूर होने के कारण शायद उन्हें कष्ट हो अथवा समय पर नहीं पहुंच सके। जैसा ठीक समझो वैसा करना।

आशा है, सब बहनों के साथ अच्छा परिचय हो जायगा। तबीयत ठीक हो जाने पर खेलकूद आदि में शक्ति के माफिक थोड़ा-बहुत हिस्सा लेती रहना। मन को खूब आनंद में रखने का ख्याल रखना, जिससे स्वास्थ्य ठीक रहे। मेरी सजा वगैरा की खबर तो मदनमोहन ने बता ही दी होगी। मेरा मन और स्वास्थ्य ठीक है।

मुझे इस बार 'सी' वर्ग देकर विसापुर भेजा है। यह एक प्रकार से बहुत ठीक हुआ है। मेरी बहुत दिनों की इच्छा को पूरा करने का वहां मौका मिलेगा, वहां बहुत-से मित्र हैं। मेरे वहां रहने से मुझे और उनको लाभ पहुंचना संभव है। मुझे वहां ज्यादा दिन रखेंगे तो ठीक रहेगा। परंतु मुझे डर है कि मुझे वहां भी ज्यादा दिन नहीं रखेंगे। तुम मेरी ओर से बिल्कुल चिंता मत करना। मैं स्वास्थ्य को संभालते हुए सब अनुभव लेने का ख्याल रखूंगा। वहां से पत्र ज्यादा नहीं भेज सकूंगा। बाई केसर वगैरा तुम सब एक साथ हो गये, यह बहुत ठीक हुआ। आशा तो है कि जल्दी ही हम लोग बाहर आकर मिलेंगे।

जमनालाल का वंदेमातरम्

: ११३ :

नागपुर-जेल, कैदी नं० २५०९,
१२-४-३२

श्री जमनालालजी,

आपका ता० ११ मार्च के तार के बाद का पत्र मुझे मिला था।

ता० ११ को तार मिलते ही मैंने पत्र दिया था। सुना है, आपको मिल गया है।

आपके कान में अब पीप नहीं आती सो महात्माजी की कृपा से आशा है कान ठीक हो जायगा। विनोबा को प्रणाम मालूम हो। आपको विनोवा का साथ हो गया, यह परमात्मा की दया है। यह तो सोने में सुगंध है।

कमल को पत्र लिख दिया है। दो-चार दिन रामेश्वर के पास रहकर वर्धा ही आने का विचार रखे। मैं लिवर की शिकायत व छाती की धड़कन के के लिए जल-चिकित्सा का प्रयोग करती हूं। ५-३० बजे उठकर सबके साथ प्रार्थना। ७ से ७-३० टब में ३० मिनट बैठना। ३० मिनट व्यायाम और बरामदे में घूमना। उसीमें छाती धड़कती है, मगर १०-१५ मिनट में शांत हो जाती है। गीता-पाठ व साथ ही दो-तीन पूनी तकली। १०-३० बजे भोजन में मोटे आटे की १ रोटी, ताजा साग, आधा सेर मट्ठा। फिर वांचना, और बांचते-बांचते सोना। १०-१२ संतरे मिलते हैं। शाम को पाव भर दूध। शाम को चौक में खेलना, रामायण सुनना वगैरा। प्रत्येक का अलग-अलग ज्ञानोपदेश। फिर खुले में मच्छरदानी लगे पलंगों की लाइन में सोना, जैसे इंद्रभवन लगा हो, प्रभु की माया है। मैं हिन्दी का वाचन करती हूं। मेरे स्वभाव में अस्थिरता है, जिससे शांति ज़रा कम रहती है। परन्तु यहां शांति मिलेगी और टब से फायदा होगा। मन में श्रद्धा है।

वजन तो १४० का १३० हुआ है, पर स्वास्थ्य ठीक है। वह वजन जाड़े का था, सो गया। घी, शक्कर, अनाज कम खाने से वजन चाहे न बढ़े, पर लीवर ठीक हो जायगा। राधाकिसन को बच्चों के लिए संदेशा भेजा था तो उसने मुझे धमकाया कि तुम अब बाहर की दुनिया भूल क्यों नहीं जाती। तुम्हारी तरफ से हम मर गये, हमारी तरफ से तुम मर गये। तबसे मैं इस वाक्य का पाठ की तरह याद किया ही करती हूं। संदेशे भी कम कर दिए हैं। खैर, आप मेरी चिंता न करें। यहां हमारा कंपू (साथ) बहुत उत्तम

जुड़ा है। सब कुटुंब-भाव से रहते हैं। जाति, अछूत-सुधार में आपकी इच्छानुसार फायदा होगा।

जानकी का प्रणाम

: ११४ :

धुलिया-मंदिर (जेल),
(रामनवमी) १५-४-३२

प्रिय जानकी,

चि० राधाकिसन ने, गिरफ्तार हुआ उस रोज, याने ता० ३१-३ को, तुमसे मिलने के बाद, तुम्हारे स्वास्थ्य की खबर भेजी थी। तुम घर की थोड़ी चिंता रखती हो, ऐसा राधाकिसन ने लिखा था। सो जेल जाने के बाद भी चिंता रहा करेगी तो फिर जेल का क्या फायदा मिल सकता है? मेरी तरह बाहर की सब चिंता छोड़ देनी चाहिए और खूब आनन्द में हँसते-खेलते, विनोद करते व दूसरो बहनों को हिम्मत देते हुए समय बिताना चाहिए। आशा है, तुम अब ऐसा ही करोगी। सब बहनों को मेरा प्रणाम, वंदेमातरम् कहना। चि० तारा को आशीर्वाद। मेरा मन व स्वास्थ्य बहुत ही ठीक रहता है। पू० विनोबा की संगति, खेलन-कूदने व कातने में खूब आनन्द से समय बीतता है।

मुझे 'सी' में से 'बी' में रखने का हुक्म आया है। मैंने अभी स्वीकार नहीं किया है। मेरा वजन अब भी १९६ रतल है, याने बहुत ज्यादा है। इसपर से भी तुम मेरे मन की स्थिति जान सकती हो। मन का असर शरीर पर अवश्य पड़ता है। इसलिए मन को खूब आनन्द में रखना चाहिए। मेरी तो यहां भी थाना, नासिक आदि की तरह ही अधिकारी खूब प्रतिष्ठा करते हैं। जेल में सुधार भी होता जाता है। प्रायः जवाबदारी का काम एक प्रकार से अपने लोगों के ही सिपुर्द है। मैं सुबह ४ बजे व रात को ८ बजे विनोबा के साथ बराबर नियम से प्रार्थना करता हूं। मुझे व विनोबाजी को नासिक से भी बड़ी और स्वतन्त्र कोठरी दी गई है। तुम मेरी, चि० कमल की व घर की चिंता न करना, जिससे यह कहने का मौका न रहे कि स्त्रियां बिना कारण चिंता किया करती हैं।

जमनालाल का वंदेमातरम

: ११३ :

नागपुर-जल
२३-५-३२

श्री जमनालालजी,

यह है पू० बापूजी का कार्ड, २४-४-३२ का लिखा हुआ—

चि० जानकी बहेन,

मने कागळ लखजो। तमारी तबीयत केम खराब रहे छे? शुं खाओ छो? फळ बराबर लेवा जोइये। जमनालालनी के कमलनयननी के बीजा कोईनी फिकर करवानी होय नहीं। कंई वांचवानुं छे के? साथ कोनो छे? अमे त्रणेय मजामां छीये। तमन घणीवार संभारिये छीये।[1]

बापूना आशीर्वाद

मैंन इसका जवाब दे दिया है।

दस संतरे रोज पोद्दारों के यहां से आते हैं। मुनक्का, अदरख चाहिए तो वह भी मंगा लेती हूं। हिन्दी का वाचन खूब चलता है। सबके साथ खेलकूद, आनन्द रहता है। चारी ने प्रणाम कहा है। आप खुले में सोनें लगे होंगे। कमल के सिवाय और तो कोई विचार का कारण है नहीं। अब तो कमल का भी कोई विचार नहीं है। वैसे तो होशियार है ही। आप मेरी तरफ से निश्चिंत रहिए। अब मुझे आनन्द लेना भी आने लगा है।

विनोबाजी व कमल साथ ही आयेंगे सो कमल की इच्छानुसार पढ़ाई का काम उनको ही लेना पड़ेगा। घड़ी साथ ही रहती है। नियमितता का खूब

---

१. पत्र का हिन्दी-अनुवाद इस प्रकार है—

चि० जानकीबहन

मुझे पत्र लिखना। तबीयत क्यों खराब रहती है? क्या खाती हो? फल ठीक से लेने चाहिए। जमनालालजी या कमलनयन को या किसी दूसरे की फिक्र नहीं करनी है। कुछ पढ़ना होता है? साथ किनका है? हम तीनों मजे में हैं। तुमको बहुत बार याद करते हैं।

—बापू के आशीर्वाद

फायदा मिलता है। पांच बजे उठना, प्रार्थना-वंदन, ६ बजे टब बाथ-३० मिनट, ३० मिनट घूमना, आराम, पाठ, कातना। १० बजे भोजन, गपशप, १२ से वाचन करते-करते सोना। २-३० बजे उठकर नींबू का पानी पीना। थोड़ा लिखना भी दो-तीन रोज से शुरू किया है। ४-३० बजे बाहर निकलकर वापस खोली में। संतरे खा-पीकर ६ बजे से मौज, गरबा, वगैरा। डायरी लिखना। ७ बजे स्नान, दूध पीकर, राम की जगह 'बाम-नाम' की माला फेरते हुए पलंग पर पड़ना। कीर्तन वगैरा चलते रहते हैं। जाप में बापू के 'बा' और राम के 'म' इस तरह 'बाम-नाम' की रोज ३॥ माला फेरी जावे तो एक मास में सवा लाख नाम का जाप हो जाता है। फिरते-फिरते भी माला फेर लेते हैं। माला गले में या हाथ में ही रहती है। सब हँसते जाते हैं।

जानकी का प्रणाम

: ११६ :

धुलिया-जेल,
१-६-३२

प्रिय जानकी,

तुम्हारे स्वास्थ्य के समाचार जानकर संतोष हुआ। मेरा मन और स्वास्थ्य ठीक है। मेरा वजन पच्चीस रतल कम हुआ है। परन्तु उससे तो मुझे सुख ही मिल रहा है। ३५ रतल से ज्यादा कम होने लगेगा तब अवश्य खान-पान में फरक करूंगा। जेल-अधिकारी मुझे तो खुशी से फरक करने देंगे। तुम बिल्कुल चिंता मत करना। मुझे तो आशा है कि मैं बाहर आने पर पहले से ज्यादा शारीरिक परिश्रम कर सकूंगा। विनोबाजी की संगति व प्रवचन से बड़ा लाभ एवं सुख-शांति मिल रही है, जो आजीवन काम आयगी। आशा है, तुम भी सब प्रकार से मजबूत होकर बाहर आओगी। चि० कमलनयन छूटने पर मुझसे मिल जायगा। इमली-गुड़ के शरबत का आनन्द तुम्हारे नसीब में कहां है। टाल्स्टाय की कहानियों की किताब भिजवाई है, वह चि० तारा से सुनना। किताब उत्तम है।

जमनालाल का बंदेमातरम्

: ११७ :

धुलिया-जेल,
१४-७-३२

प्रिय जानकी,

विनोबा की जबानी तुम्हें यहां की सब हकीकत मिलेगी। इस मास के आखिर तक तुम छूट आओगी। चि० कमल भी छूट जायगा। बाद में मुझसे एक बार मिलने यहां आ जाना।

पू० विनोबा की संगति से बहुत सुख, शांति और लाभ मिला है। चि० कमल, मदालसा, रामकृष्ण आदि की पढ़ाई और रहन-सहन की व्यवस्था के बारे में विनोबा से बहुत चर्चा हुई है। हम दोनों एकमत हो गये हैं। आशा है, तुम भी उसे स्वीकार करोगी। विनोबाजी ने कमल को साथ रखने की उसे उत्तम अंग्रेजी पढ़ाने की जिम्मेदारी लेना स्वीकार कर लिया है। चि० रामकृष्ण को नाना कुलकर्णी के ही अधीन करना है, नहीं तो उसे बहुत हानि पहुंचने का डर है। चि० मदालसा की इच्छा बालकोबा के पास पढ़ने की है, तो वह भी व्यवस्था विनोबाजी उत्तम प्रकार से कर देंगे। अगर विनोबा का बाहर रहना हुआ तो जैसे तुम्हें संतोष हो उस प्रकार से उनके साथ चर्चा करके अपना समाधान कर लेना।

मेरा स्वास्थ्य उत्तम है। अब मैंने दूध, दही और गेहूं लेना शुरू कर दिया दिया है, जिससे कल १७१ रतल वजन हुआ, याने घटने के बदले १॥ रतल वजन बढ़ा है। अब वजन घटने का डर नहीं रहा। मुझे पहले से ज्यादा ताकत, उत्साह व हलकापन मालूम देता है। आशा तो होती है कि स्वास्थ्य ठीक सुधर जाने पर बाहर आना होगा। बिना दवा-दारू के इस बार 'सी' वर्ग की खुराक ने ३५॥ रतल वजन कम करके बहुत लाभ पहुंचाया है। मेरा वजन जरूरत से ज्यादा हो गया था। आजकल मेरी खुराक है—गेहूं की रोटी—इच्छा हो तो ज्वार की रोटी, दोनों वक्त हरा साग, एक वक्त थोड़ी दाल, एक रतल दूध अथवा आधा रतल दूध और आधा रतल दही, एक नींबू और ६ केले। और दिनचर्या है—सुबह ४ बजे उठना, प्रार्थना के बाद ठंडा पानी पीना, थोड़ी देर बाद निवृत्त होना। 'मनाचे श्लोक', तुकाराम के अभंग और विनोबा की 'गीताई' का पाठ—बाद में पांच जने मिलकर कुएं में से ६०

डोल पानी निकालना । चर्खा ५०० वार अंदाजन । कभी ज्यादा भी । भोजन, आराम, उत्तम पुस्तकें पढ़ना । शाम को थोड़ा खेलकूद । इस प्रकार आनन्द से दिनचर्या खतम होती ह ।

जमनालाल का वंदेमातरम्

: ११८ :

यरवदा-मंदिर, १२-१-३३

प्रिय जानकी,

म तुम लोगों के पत्र की राह आज तक देखता रहा । मुझे सविस्तर पत्र ता० ९-१ को या देर-से-देर १०-१ का अवश्य मिल जाना चाहिए था। खैर, तुम लोगों की प्रसन्नता के समाचार तो पूज्य बापू से सुन ही लिया करता हूं ।

यहां आने पर स्वास्थ्य मुझे तो बहुत ठीक मालूम देता है। जेल के बड़े डाक्टर मेजर मेहता प्रायः हर रोज ही जांच कर लिया करते हैं । तबियत बहुत हल्की और उत्साह से भरी मालूम देती है । भूख खूब लगती है । मुझे वजन की ज्यादा परवा नहीं है। मुझे आजतक खुराक इस प्रकार मिलती है— दूध २॥ रतल, मक्खन २॥ तोला, एक पपीता, गुड़ ५ तोला और साग दोनों समय पेट भरकर । साग मेरे लिए अलग बनकर आता है। तुम सब लोग मिलकर जितना साग खाते होगे उतना मैं अकेला खा लेता हूं । साग में फूलगोभी, बैंगन, लौकी वगैरा मुख्य रहती हैं। दो नींबू और ४ टमाटर भी मिलते हैं। रोटी चोकर की (ब्राउनब्रेड), एक रतल वजन की, जो यहां जेल में ताजा बनती है, लेता हूं । पू० बापू की सलाह मूजब उसका टोस्ट बनाकर दोनों वक्त खाता हूं । इस रोटी में भूसी ज्यादा होती है, आटा कम । पचने में यह ठीक रहती है। मेरा भोजन यहां सुबह ९॥ बजे व शाम को ३॥ बजे होता है । इस प्रकार का निश्चित समय घर में निभना कठिन है । चावल तो पहले ही नहीं खाता था । दाल भी प्रायः दो-अढाई महीने से नहीं खाता हूं ।

मेरी दिनचर्या अच्छी चलती है । पू० बापूजी से मिलने की तो बंबई सरकार से परवानगी आ ही गई है । अभी तक मैं उनसे सात बार मिल चुका हूं । पत्र-व्यवहार भी यहां-का-यहां होता रहता है । अस्पृश्यता-निवारण के कागज एवं पत्र-व्यवहार की फाइलें मेरे पास आती रहती हैं। मैं अब पूर्णतया

इस कार्य से परिचित रहता हूं। मुझे जो उचित मालूम होता है, बापू को लिखकर या उनसे मिलने पर कहा करता हूं। प्रायः रोज में पांच-छः घंटे हरिजनों के काम, उससे सम्बन्धित विचार, अध्ययन आदि में बिताता हूं। इससे मन को खूब सुख व संतोष रहता है। सुबह ४ बजे उठने की आदत पक्की हो गई। इससे भी खूब लाभ व संतोष रहता है।

दिनभर में मेरे पांच से छः घंटे हरिजन-संबंधी काम में, तीन घंटे करीब घूमने व व्यायाम में, दो घंटे दो बार के भोजन में (मैं दो बार ही खाता हूं), दो घंटे निपटने, स्नान व तेल लगाने आदि में, एक घंटा चर्खा, एक घंटा प्रार्थना, एक-दो घंटे दूसरी पुस्तकें पढ़ने, गपशप में या किसी दिन आराम या बापू से भेंट आदि में निकलता है। याने सुबह ४ से रात को ९ बजे तक का ठीक कार्य संतोषकारक चलता है। दिन-रात बहुत ही जल्दी जाते-आते दिखाई देते हैं। यहां की हवा, जल, दृश्य वगैरा सभी उत्तम हैं। मुझे सब प्रकार से शांति और आराम मिल रहा है। इतना आराम मुझे बाहर मिलना कठिन था।

तुम्हें इस ता० १६, याने माघ वदी पंचमी सोमवार को बराबर ४० वर्ष पूरे होकर इकतालीसवां वर्ष चालू होता है। उस रोज में भी परमात्मा से प्रार्थना करूंगा कि तुम्हें सद्बुद्धि प्रदान करे और तुम्हारा स्वास्थ्य उत्तम रखते हुए तुम्हारे शरीर और मन में सेवा-कार्य, खासकर बापूजी के बताये मुताबिक हरिजन-कार्य, करने की योग्यता प्रदान करे। तुम्हारे जन्म-दिन के निमित्त मेरा प्रेमसहित आशीर्वाद स्वीकार करना। तुम भी परमात्मा से सद्बुद्धि प्रदान करने की प्रार्थना करना। उस रोज पू० विनोबा के पास नालवाड़ी में भी कुछ समय बिताना। विनोबा की राय से अपने भावी जीवन का कार्यक्रम निश्चित करने का प्रयत्न करना।

माघ सुदी ५ को भेरूं का विवाह करना है ही। मेरे विचार तो तुम जानती ही हो। मैंने चि० गंगाबिसन व पूनमचंद को भी कह दिया था। कोई आडंबर तो करना है ही नहीं। तुम सब या केसर वगैरा रहो। बालकों की जरूरत नहीं। फिर तुम लोगों की इच्छा। सेलू जाना। रसोई सादी कच्ची तो जरूर हो। हो सके वहांतक सेलू में एक बार खाने का रखना। लड़की घूंघट तो निकाल ही नहीं सकती। साथ में लड़की व लड़का अपनी-अपनी

प्रतिज्ञा पहले से ही खूब अच्छी तरह समझकर पाठ कर लें और उनके मुंह से ही पाठ करवाने का ख्याल करना। इसमें गलती न होने पावे। मेरी ओर से तुम लड़की व भेरूं को आशीर्वाद व उपदेश देना। मैं इस संबंध में अलग पत्र नहीं लिख सकूंगा। चि० कमल को ता० १ फरवरी, याने माघ शुक्ला ७ बुधवार को १८ वर्ष पूरे होकर उन्नीसवां वर्ष लगेगा। परमात्मा उसे सद्बुद्धि प्रदान करे व ऐसी शक्ति दे कि वह अपना जीवन पवित्रता के साथ सेवा-कार्य में लगा सके व अपना जीवन सफल बना सके। चिरंजीव हो, ऐसी मैं भी प्रार्थना करूंगा ही। मेरी ओर से भी तुम इसे आशीर्वाद देना। वह भी जन्म-दिन के रोज अपने भविष्य जीवन का विचार कर कुछ निश्चय करना चाहे तो पू० विनोबा व तुम्हारी व चि० राधाकिसन की राय से कर सकता है। जिस प्रकार उसे सुख मिले वैसा ही वह विचार करे। उसे भी मैं अलग पत्र नहीं लिख सकूंगा।

चि० रामकृष्ण के स्वास्थ्य, पढ़ाई आदि की संतोषकारक व्यवस्था चि० राधाकिसन व श्री नाना आठवले की राय मजिब हो सके तो जरूर कर देना। उसे भविष्य में असंतोष न रहे, उसका ख्याल अभी से रखना। इसका गला, नाक कैसा रहता है? व्यायाम आदि कराते रहना चाहिए। मोह कम करके इसका सब प्रकार से कल्याण हो, तुम्हें उसी मार्ग का ख्याल करते रहना चाहिए।

चि० मदालसा के पत्र के हाल पू० बापूजी ने मुझे कहे थे। वह और तुम भी कभी-कभी नालवाड़ी विनोबा के पास जाया करती हो, यह ठीक है। चि० मदालसा, नर्मदा, रामकृष्ण, केसर वगैरा की तबीयत ठीक रहती होगी। अबकी बार तो मैंने भी थोड़ा डाक्टरी, वैद्यकी व खानपान, सूर्य-स्नान आदि का साधारण अनुभव प्राप्त किया है, वह आगे काम आवेगा।

चि० कमला, गुलाब, भाग्यवती, शांता, सुशीला (लंदन में) वगैरा को मदालसा या नर्मदा के द्वारा मेरी राजी-खुशी की व आशीर्वाद की सूचना भिजवा देना।

जमनालाल का वंदेमातरम्

पुनश्च—१६ जनवरी को तुम्हारा जन्मदिन आता है। गये साल इसी तारीख को मुझे जेल हुई थी। गये साल माघ बदी ५ को मैं भायखला-जेल से

गोकुलदास तेजपाल अस्पताल ले जाया गया था। वजन २०४ रतल हुआ था। इस साल वजन १६६ है। मुझे तो लाभ ही हुआ है।

: ११९ :

वर्धा, २४-६-३३

प्रिय जानकीदेवी,

मैं यहां कल आ गया। यहां आने से तबियत में कुछ शांति मालूम देती है। मैंने ऐसा विचार कर लिया है कि सिवाय अनिवार्य अपवाद के, मैं ता० २२ जुलाई तक मोटर या रेल में नहीं बैठूंगा। इससे कुछ ज्यादा शांति मिलने की आशा है। तुम मेरी चिंता न करना। डा०मेहता ने चोकड़ के आटे की रोटी, फल इत्यादि खाने को बताया था। उसके माफिक बहुत-कुछ आज से खाना शुरू कर दिया है। चोकड़ के आटे की रोटी खाने में अच्छी लगती है।

आज मैंने काकासाहब को पत्र लिखा है। वह तुमसे सलाह करके चि० कमला को डा० मेहता को दिखा देंगे तो ठीक होगा। मेरी गैरहाजरी में उसका इलाज शुरू हो जाय तो उसकी तरफ की थोड़ी चिंता कम हो जाय।

लक्ष्मण की तबियत अब ठीक होगी। जबतक उसकी तबियत बिल्कुल ठीक न हो जाय तबतक नानू को यहां भेजने की जरूरत नहीं है।

अधिक समय तो मैं मुकदमे के काम में ही लगाना चाहता हूं। दूसरे कामों को एकाध घंटा दूंगा।

चि० मदालसा के साथ आज घूमते हुए नालवाड़ी गया था। उसे पू० विनोबा के शिक्षण आदि से पूर्ण संतोष है। उसके स्वास्थ्य में भी लाभ है। मुझे भी उससे बातें करके सुख मिला। वर्तमान हालत में मेरे खाने-पीने तथा अन्य बातों की व्यवस्था जितनी अच्छी यहां हो सकेगी, उतनी और कहीं होना कठिन है। यहां कल रात को ८ घंटे सोया, आज दिन को तेल की मालिश हुई व दो घंटे सोने को मिला। इतना और कहां मिल सकता है।

जमनालाल का आशीर्वाद

पुनश्च—फुरसत मिले तो पत्र देना। पू० काकासाहब का पत्र पढ़कर उन्हें दे देना।

: १२० :

वर्धा, ३०-८-३३

प्रिय जानकीदेवी,

पू० बापूजी ने तुमको वहीं (पूना में) रहने को कहा है, सो एक तरह ठीक ही है। अगर तुम उनके कहने से वहीं बनी रहीं और खुदा-नखास्ता प्लेग की शिकार हो गईं तो मुझे तो संतोष रहेगा। ऐसी हालत में तुम्हें पू० बापूजी का आशीर्वाद मिल जायगा और उसके साथ-ही-साथ स्वर्ग भी मिल जायगा। इससे अब मुझे तुम्हारी चिंता तो कम है।

मेरी तबियत ठीक है। उसकी चिंता न करना। मरते वक्त तो चिंता बिल्कुल ही न करना, नहीं तो फिर संसार में वापस आना पड़ेगा। जो डरता है, उसे ही प्लेग दबोचता है। डरनेवाले क शरीर-तंतु कमजोर हो जाते हैं और कमजोरी में ही बाहरी बीमारियों को मौका मिल जाता है। इसलिए अगर मरना नहीं चाहती हो तो डरना मत। तुम अबकी बार बच गईं तो कम-से-कम प्लेग का डर तो तुम्हारा चला ही जायगा। खूब उत्साह और आनंद में रहना। दूसरे कोई घबरावें तो उनकी घबराहट दूर करते रहना। विनोद में लिखा है।

मेरी गवाही बहुत करके ता० ५ तक हो जायगी, ऐसी आशा है। पूना आऊं क्या ? या तुम बापूजी को यहां ला सकती हो ? अब तो तुम रामेश्वर से सेक्रेटरी का काम ले सकती हो।

जमनालाल का वंदेमातरम्

: १२१ :

पटना,
२९-६-३४

प्रिय जानकी,

आशा है कि तुम सब आनंद से वर्धा पहुंच गये होगे। मेरे साथ भागीरथीबहन व चि० अनसूया (जाजूजी की लड़की) है। मेरे खान-पान आदि का ये दोनों बहुत ख्याल रखती हैं। सबोंका वजन कितना बढ़ा यह लिखना। मेरा स्वास्थ्य ठीक है।

पू० राजेन्द्रबाबू के बड़े भाई का देहान्त हो जाने से घर की सारी

जिम्मेदारी उन्हींपर आ पड़ी है। में उसका प्रबंध कर रहा हूं। आशा है कि ऐसी व्यवस्था हो सकेगी, जिससे कि उनका पूरा समय कांग्रेस व देश के काम में लगता रहे।

पूना की दुर्घटना[1] में पू० बापूजी तो बचे ही, साथ में चि० ओम् वगैरा भी बच गईं। जिसको ईश्वर बचानेवाला हो उसे कौन मार सकता है? इस प्रकार की घटनाओं से ईश्वर की शक्ति व अस्तित्व में विश्वास बढ़ता है।

मेरा वर्धा आना अगस्त की १० तारीख तक होना संभव है। चि० कमल का स्वास्थ्य ठीक होगा। चि० सुशील की याद आया करती है। रामकृष्ण की पढ़ाई का इंतजाम भी ठीक तौर से होना जरूरी है। चि० कमलनयन, राधाकिसन व लोंढेजी की सलाह से प्रबंध करना ठीक होगा।

जमनालाल का वंदेमातरम्

: १२२ :

अल्मोड़ा,
(जुलाई ३४)

हे भगवान्,

सेठजी को पत्र एक साल दूसरों से लिखवाने का विचार था, इसलिए यह भगवान के नाम से लिखाती हूं।

अबकी बार यहां हमेशा जितनी ही वर्षा कई दिनों से नहीं आई है। कोठियों का पानी खत्म होने तक शायद आ जाय। कल जरा बादल आये थे। गुलाब के फूल अबकी बार नहीं दिखाई देते; पानी तथा ठंडा न होने का ही कारण होगा।

रोग तो यहां किसीको भी नहीं है। यह तो निर्भयता ही समझिये।

जिस कमरे में आबिद अली सोते थे, उस कमरे में हम रहते हैं और उसी कमरे में से रास्ता है। छोटी खोली में, जिसमें प्रभुभाई सोते थे, उसमें कोयले की सिगड़ी पर रोटी बनाते हैं, जिससे मकान काला नहीं हो सकता है। आज सब का तोल करा लिया। मास्टरजी कमल, कमला, सबकी पढ़ाई ठीक

---

[1] हरिजन-यात्रा में एक मीटिंग में जाते हुए पूना में किसीने गांधीजी पर बम फेंका था, जिसमें वे और उनके साथी बाल-बाल बच गये थे।

जमा रहे हैं। मैं भी रस तो लेती हूं। घूमना-फिरना अब ज़म जायगा। कमल तो घोड़ा ढूंढता है। फिर खूब फायदा हो जायगा। विसरवाले घोड़े को बेचकर नया घोड़ा लिया है। आप कुछ भी फिकर न करना।

नमस्कार! कार्यक्रम पीछे लिखेंगे।

जानकी का प्रणाम

: १२३ :

बंबई, १२-९-३४

प्रिय जानकी,

तुम्हारा पत्र मिला। भागीरथीबहन का हुकम काम में लिया सो ठीक किया। मेरा दूध, अखरोट, सेव, प्रून्स का सेवन बराबर चल रहा है। रात को सोते समय बदाम के तेल की मालिश सिर में नानू किया करता है। रात-दिन मिलकर नौ घंटे सोने में जाते हैं। यहां आने के बाद बोलना बहुत कम होता है।

परीक्षा के बारे में तुम्हें जिस प्रकार संतोष हो या चि० कमला जैसा कहे वैसा करना। तुम्हारे पास होने की तो कोई आशा है नहीं, फिर भी तुम्हारी इच्छा। साहित्य सम्मेलन की परीक्षा कब से कबतक है, लिखना। जिस प्रकार यहां मुझे शांति मिल रही है उस प्रकार बहुत ज्यादा दिन मिलेगी तो शायद शांति से थकावट आ जाय। खैर, अभी तो ठीक चल रहा है।

अब रोज चिट्ठी नहीं देने का विचार है, सबको कह देना।

जमनालाल का वंदेमातरम्

: १२४ :

बंबई, १९-९-३४

प्रिय जानकीदेवी,

तुम्हारी तो अभी परीक्षा की जोरों से तैयारी चल रही होगी। इसीसे तुम्हें इन दिनों में पत्र नहीं लिखा। मेरा गाड़ा ठीक लुढ़कता जा रहा है। किसी बात की चिंता नहीं करना। खूब पैसे कमाने की योजना सामने आ रही है, एक-एक धंधे में दो-दो लाख का नफा बताया जाता है। खेल-कूद, आराम, विनोद सब हो रहा है। परीक्षा देने के बाद पूरा हाल लिखना।

जमनालाल का वंदेमातरम्

: १२५ :

बंबई, २१-९-३४

प्रिय जानकी,

तुम्हारा पत्र मिला, समाचार मालूम हुआ। तुम परीक्षा में अवश्य बैठना। फेल होने से घबराने का कोई कारण नहीं। तुम लोगों की परीक्षा होने के बाद ही मेरा वहां आना ठीक रहेगा। तब तुम सब चिंताओं से मुक्त रहो। मेरा वहां आना अभी १२-१३ रोज तो होता नहीं दिखता।

जमनालाल का वंदेमातरम्

: १२६ :

बंबई,
२९-९-३४

प्रिय जानकी,

तुम्हारा पत्र आज मिला। मिल खरीदने का विचार तुम सबोंको पसंद नहीं आया, जानकर खुशी होती है।[1] खैर, अभी तो मिल लेने का विचार छोड़ दिया है।

कमल का अंग्रेजी का पर्चा ठीक गया होगा, लिखना। चि० कमला को कहना, पर्चा ठीक नहीं हुआ हो तो चिंता न करे। दूसरी बार परीक्षा दे सकेगी। मन पर असर नहीं होना चाहिए। तुम तो इस बारे में पक्की हो ही। तुम्हारे पत्र का हाल मैंने आज डाक्टर शाह को कह दिया है। उन्हें यह भी कह दिया है कि उन्हें पूरा संतोष हो तब ही वह मुझे छुट्टी देवें। पू० वल्लभ-भाई आज आ गये हैं। मिलना हुआ था।

बीच में तो तुम्हें परीक्षा के बाद कुछ रोज यहां बुलाने की इच्छा हुई थी। कुछ बातें भी करनी थीं। खैर, वहां जल्दी आना नहीं हुआ तो फिर विचार किया जायगा।

जमनालाल का वंदेमातरम्

पुनश्च—पू० मा को कहना कि आनंद स्वामी ने उनका संदेश भेरू की सगाई का दिया है। मेरे ख्याल में है। वह चिंता न करें।

---

[1] देखिए 'बापू के पत्र', पृष्ठ ११६।

: १२७ :

वंबई, १६-११-३४

प्रिय जानकी,

तुम्हारा बिना मिती व तारीख का पत्र मिला। पत्र में मिती या तारीख तो देनी चाहिए।

जहांतक मुझसे वनता है, मैं आराम लेने की पूरी कोशिश करता हूं। पू० काकासाहव तुमको वतायेंगे। पू० बापू अगर मेरी चिंता करना छोड़दें, तो मुझे कम तकलीफ हो। वे वल्लभभाई को समाचार लिखते हैं, उनका टेलीफोन आता है तो फिर मुझे वहां जाना पड़ता है। सरदारसाहव को मेरे पास वुलाने की ताकत अभी नहीं आई है। वह प्रेम तो खूब करते हैं, परन्तु जो ज्यादा प्रेम करता है, उसे हुकम करने का भी अधिकार होता है।

जमनालाल का वंदेमातरम्

: १२८ :

अंधेरी (वंबई)
१८-११-३४

प्रिय जानकी,

आज पैंतालीस वर्ष पूरे होकर छियालीसवां शुरू हो गया। कल दोपहर को मैं यहां अंधेरी में पू० मोतीवहन के पास आ गया था। रात को यहीं सोया था। सुबह जल्दी उठकर प्रार्थना की। बाद में समुद्र-तट पर पैदल घूमकर मित्रों से मिला। आज उपवास करने का विचार था। परन्तु मोतीवहन चातुर्मास कर रही थीं। पूर्णिमा को अन्न खानेवाली थीं। उन्होंने आज ही अन्न खाना शुरू किया। इनके प्रेम व आग्रह के कारण फल वगैरा लिये हैं। यहां ठीक शांति मिली है। पिछला साल ठीक नहीं गया। शारीरिक, मानसिक चिंता बनी रही। ईश्वर से प्रार्थना है कि इस वर्ष सद्‌बुद्धि रखे, मन में उत्साह बनाये रखे। तुम भी प्रार्थना करना।

पू० वापूजी, विनोवा आदि गुरुजनों को यहां मन से ही प्रणाम कर लिया है। बालकों को आशीर्वाद भी दे दिया है। चि० कमल आज रवाना होकर आ रहा है। उसकी वहां जल्दी ही पढ़ाई चालू हो जावे, इसका ख्याल रखना।

जमनालाल का वंदेमातरम्

पुनश्च—चि० मदालसा, उमा, रामकृष्ण, नर्मदा, राम वगैरा को आशीर्वाद कहना। पू० मां को प्रणाम कहना। केसर-गुलाब वगैरा को वंदे। खांसाहब, काका साहब, किशोरलालभाई, जाजूजी वगैरा को भी प्रणाम कहना। अलग पत्र नहीं लिखता।

: १२९ :

बंबई, २१-१२-३४

प्रिय जानकी,

चि० दामोदर ने अपने साहित्यिक व कवि के स्वभाव के कारण आज का वर्णन बढ़ाकर लिखा है। हां, यह बात ठीक है कि आज सब मिलकर १। घंटा आपरेशन टेबल पर रहना पड़ा होगा। बीच में थोड़ी देर तो मैंने नींद भी ले ली थी। उस समय तो एक प्रकार से बिल्कुल ही तकलीफ नहीं हुई। अभी भी बहुत कम तकलीफ है, चींटी काटने-जैसी। मैं तो कहता हूं कि रात को माटुंगा में कमला के यहां मच्छर काटने से जो तकलीफ होती रही, उससे भी कम तकलीफ हो रही है। तुम बिल्कुल चिंता नहीं करना। १०-१२ रोज में ठीक हो जाने की आशा है। खूब आराम ले रहा हूं। अबकी बार मेरे कड़कपने का माप मालूम हो जायगा कि जरूरत पड़ने पर मैं खुद कितना कड़क हो सकता हूं।

चि० लाली तो माटुंगा में कमला व सुशील से इतना हिल-मिल गया है कि वह तो दूसरी जगह चलने का नाम भी नहीं सुनना चाहता। आज तो कहता था, आप दूसरी जगह जायंगे या मुझे भेजेंगे तो मैं वर्धा चला जाऊंगा। रोया भी। सुशील से बहुत प्यार हो गया है। अच्छा लड़का है।

जमनालाल का वंदेमातरम्

पुनश्च—डा० साहब, डंकनभाई, किशोरलालभाई, गोमतीबहन की संभाल बराबर रहे, इस बारे में वल्लभ और राधाकिसन को कह देना। चि० मदालसा का हाल लिखना।

: १३० :

बंबई, १२-१-३५

प्रिय जानकी,

मेरे कान में ठीक लाभ हो रहा है। धीरे-धीरे चमड़ी आ रही है। आराम,

घूमना नियमित होता जा रहा है। डा० खानसाहब और उनका लड़का सादुल्लाखां दिल्ली से व उनकी अंग्रेज पत्नी व उसकी लड़की विलायत से आये हैं। चि० लाली तो यहांपर था ही। ये लोग तुमसे मिलने के लिए एक रोज के लिए वर्धा आ रहे थे। मैंने डाक्टरसाहब को समझाकर कहा है कि इतना कष्ट करने की जरूरत नहीं, मैं जब वहां रहूं तभी ५-१० रोज के लिए आना ठीक रहेगा। वह मान गये हैं। इनका इतना प्रेम है। ऐसे मित्र आज के जमाने में मिलना कठिन हैं। मुझे तो इनसे बहुत सुख और संतोष मिल रहा है।

जमनालाल का वंदेमातरम

: १३१ :

वर्धा, १५-१-३५

पूज्यश्री,

पत्र आपका कल मिला। खानसाहब सचमुच अद्भुत मनुष्य हैं। परंतु आपने उन्हें एक रोज के बदले दस रोज रखकर अपने प्रेम व उदारता को हद तक पहुंचा दिया। उनके लिए आपका बंबई में ही रहना, दिल्ली न जाना वगैरा सभी आपके प्रेम को प्रकट करता है। अच्छा है, एक बार डाक्टरों को पूरा समय दे दिया जाय, जिससे सबको संतोष रहे।

मदू का सब ठीक है। उसका वजन तो बापूजी के आने पर वह आप ही देख लेंगे। अभी विचार करना फिजूल है। खून में सफाई काफी होती दिखती है तो वजन बढ़ते देर भी न लगेगी।

जानकी का प्रणाम

: १३२ :

वर्धा, १६-१-३५

पूज्यश्री,

पत्र कल भी दिया था। बापूजी न डाक्टरों को कड़क पत्र दिया है और मुझसे पूछा है कि तुम जाओ तो उमा को ले जाओगी ? मैंने कहा, 'नहीं'। उमा का तो कार्यक्रम अच्छा जमा है। दिनभर सोने का मौका नहीं मिलता, रात को १० बजे सोती है, ५॥-६ बजे उठती है। बंबई में उसे फायदा नहीं। तब बोले, तुम्हें जाने का मोह छोड़ देना चाहिए। सो मुझे तो जंच गई। यह

भी बोले कि चक्कर तो रोज थोड़े ही आते हैं। यह तो, जैसे सांप आया और सर-सर करके निकल गया, उसी प्रकार का है। बापूजी की बातें सुनकर मुर्दों में जीवन आ जाय, सो मैं तो मनुष्य हूं। सचमुच रात को मुझे पूरी शांति रही। मदु बापूजी को छोड़ना पसंद नहीं करेगी। मेरा तो नुकसान नहीं होगा। बापूजी पर मेरी श्रद्धा तो है ही पूरी, पर आप उनका समय ज्यादा लेंगे। आप डर नहीं मानें तो मुझे यहां भी शांति है। बापूजीको देखकर विचार आता है कि अपनी तबियत सुधारनेवाला सुखी होकर दूसरों का काम कर सकता है, नहीं तो कइयों को चिंतित करता है। कमल का बर्ताव तो बड़ा ही संतोषकारक होता है।

अब मैं या तो कमल के साथ या बापूजी कहेंगे तब अपने आप आ जाऊंगी या आप बुलायेंगे तब। पर मेरा विचार नहीं करें। अंबालाल साराभाई आपसे मिलेंगे। कहते थे कि विलायत भेजो। और जर्मनी के डाक्टर आये हैं, उन्हें जरूर बताना। डा० शाह से पूछकर बतावें कि उसमें क्या है? यह तो मेरी भी इच्छा है।

जानकी का प्रणाम

: १३३ :

बंबई, २९-१-३५

प्रिय जानकी,

तुम बीमार क्यों हुई? क्या ओम् के साथ चक्की पीसने का प्रताप है या अधिक चिंता के कारण? कौन ज्योतिषी आया था, जिसने चि० रामकृष्ण को १२ ता० को कष्ट आने की बात कही थी? उसे कुछ दिया तो नहीं ना? मैंने सुना कि ज्योतिषी ने केसरबाई से प्रहलाद को कष्ट आने की बात भी कही। उसने डरकर उसे कुछ दिया भी। कितनी अज्ञानता अभी तक अपने घरों में भी विराजमान है! क्या तुम उस आदमी को पहचानती हो? उसे पुलिस में दे देना चाहिए।

आज मैं डा० शाह के अस्पताल में ड्रेसिंग के लिए गया था। डाक्टर न कहा, पन्द्रह दिन में बिल्कुल ठीक हो जाना संभव है। तुम्हारी इच्छा हो तो तुम आ सकती हो। वहां अगर चिंता करती हो तो उससे तो यहां आ जाना ठीक रहेगा। चि० दामोदर, नानू तो खूब सेवा और ख्याल रखते ही

हैं, साथ में श्री सुव्रताबहन, चि० शान्ता, भाग्यवतीबहन भी आया करती हैं। सुव्रताबहन व शांता तो भजन-चौपाई वगैरा दो रोज तक सुनाती थीं। चि० सफिया का संबंध तो बहुत ठीक हुआ न ? मुझे तो पू० बापू ने ठीक प्रमाणपत्र (सर्टिफिकेट) भेजा है। तुम भी इस प्रकार के कामों में मदद करो तो कितना ठीक हो ।

जमनालाल का वंदेमातरम्

: १३४ :

वर्धा, २९-१-३५

पूज्यश्री,

आपका तार आया। इधर से मैंने लिखाया, उधर से आपका आया। अरस-परस का संबंध कैसा जुड़ जाता है! मैंने एक रोज घी का भारी डब्बा उठा लिया, उससे छाती पर कुछ असर हुआ। पीछे उमा के साथ आटा पीसने बैठ गई। उस समय तो मालूम नहीं पड़ा। पर पीछे धड़कन शुरू हो गई। मेरा मन तो वर्धा छोड़ने का नहीं है। बच्चों की पढ़ाई वगैरा की जमती हुई व्यवस्था में यहीं रहना अच्छा लगता है। मगर अब यह भी लगता है कि आपके पास थोड़ा लड़ाई-झगड़ा कर आऊं और देख आऊं तो दोनों के मन में शांति ही होगी। बंबई से आने में ज्यादा दिन लगने का डर है। कमल के साथ आने का विचार करती हूं। बापूजी से मिलकर और आपको जरूरत हो तो कल भी निकलकर हम आ सकते हैं। उमा तो इतनी मेरे हाथ में आ गई है कि आठ आना, मन जानकर चलती है। और बालकों को तो पूरा संतोष हो रहा है।

(यह पत्र अधूरा मिला हैं।)

: १३५ :

वर्धा, ३०-१-३५

पूज्यश्री,

पत्र आपका आज भी मिला। कल मैंने सविस्तर पत्र दिया है। पर बापूजी के पास आने-जाने से मुझे यहीं शांति हो जायगी। कल से आज मन हल्का है। आपका यहां आना जल्दी नहीं होगा। इसलिए इसी समय आपके पास कुछ रहने से आदि फल वगैरा खिलाने आदि की कुछ सेवा हो जाय

इसीलिए आना है। बाकी ४-६ रोज में वापस आ नहीं सकूंगी। बापूजी ने आज आने से रोक दिया। कल आपका पत्र आवे और आपको मुझसे कुछ मदद मिले तो आऊं। मेरी तबीयत में तो बापूजी की बातों से और उनकी हिम्मत देखकर चेतनता आ रही है। मैं आऊं तो उमा बापू की सलाह से कन्याशाला या बगीचे में रहेगी। नाना के पास या बालकोबा के पास भी रह सकती है।

जानकी

: १३६ :

क्वेटा सेंट्रल रिलीफ कमेटी, करांची[1],
५-७-३५

प्रिय जानकी,

तुम्हारा ता० २८ का पत्र मिला। कल शाम को एक तार भी मिला। तार से मालूम होता है कि तुम लोगों ने खाली (अल्मोड़ा) में रहना निश्चित किया है। मैंने तो इस बात को अब तुम्हारी इच्छा व वहां के वातावरण पर ही छोड़ा है। कल भोगीलालजी को श्री आर० एस० पंडित को लिखे पत्र की नकल भी भेजी है। उसका उत्तर आने से उनके दिल के भाव भी मालूम हो जायंगे।

चि० कमल का पत्र आया है। तुम चाहो तो आगामी गरमी में कोलंबो जा सकती हो। इस समय वहां नहीं जा सकोगी, क्योंकि उसकी व्यवस्था अभी बराबर नहीं जमी है।

मैं तुम्हारे बारे में कोई खास चिंता नहीं करता हूं।

जमनालाल बजाज का वंदेमातरम्

: १३७ :

करांची-अहमदाबाद ट्रेन में
(मीरपुर खास), ७-७-३५

प्रिय जानकी,

ता० २ का पत्र मिला। तुमने खाली में रहना पसंद किया तथा अब

---

[1]क्वेटा में भयानक भूकंप हुआ था। उस समय की ब्रिटिश सरकार ने सार्वजनिक कार्यकर्ताओं को सेवा कार्य के लिए क्वेटा जाने पर रोक लगा

वहां रहने में कोई आपत्ति नहीं नज़र आती यह लिखा, सो ठीक। तुम्हें व चि० मदालसा को जिस प्रकार संतोष मिले, उसमें मुझे खुशी है। जप शुरू किया सो ठीक किया। मैंने जप का काग़ज़ देखकर तुम्हारी इच्छा मुताबिक फाड़ डाला। ईश्वर से हमेशा सद्‌बुद्धि की प्रार्थना किया करना।

क्वेटा में लोगों की बहुत बुरी दशा हुई है। एक महीने बाद करांची फिर आना पड़ेगा।

जमनालाल बजाज का वंदेमातरम्

: १३७ :

मुर्गी कुटीर (अल्मोड़ा),
३०-७-३५

पूज्यश्री,

पत्र बहुत आने-जाने लगे हैं। उमा का पत्र बड़ा व सुन्दर मिला। कमल के भी पत्र आते हैं। पर हमें तो काम नहीं है, इससे लिखते हैं। आपको सबके जवाब देने की जरूरत नहीं है। जाते वक्त पंडितजी[1] निश्चिंत होकर गए। वैसे आदमी अच्छे हैं। पर हमारी मुगलाई और उनके कायदे। कुछ भेद तो हरेक में होता ही है। बाद में वह हमारी सरलता और ढिलाई जान गये होंगे। यहां रहने में कुछ तो जेल के समान् घबराहट होती ही थी, पर मैं तो पक्की ही रही।

एक दिन वह हमसे कहने लगे—"बगीचे में किनारे की जमीन का टुकड़ा सपाट और सुंदर है। वहां से हिमालय तो चौथाई ही दिखेगा। पर मेरे बंगले के बजाय यहां जमीन ऊंची है। आपके लिए नल और बिजलीदार एक छोटा मकान बना दूंगा। दो वर्ष में यहांतक मोटर का रास्ता भी हो जायगा।"

---

दी थी। तब कांग्रेस ने करांची में एक रिलीफ कमेटी बनाई थी। जमनालालजी उसके संगठन के निमित्त करांची गये हुए थे।

[1] मदालसा का स्वास्थ्य बहुत चिंताजनक हो गया था। माताजी (श्रीमती जानकी देवी) उन्हें लेकर खाली (अल्मोड़ा) में रही थीं। जिस मकान में ये लोग ठहरे थे, वह श्री रणजीत पंडित के मकान का आउट हाउस (मुर्गीखाना) था।

इसी तरह के कई हवाई किले बांधते रहते हैं। पर हमें यहां काफी सीखने को भी मिला है।

मैंने कहा—"आपके २० हजार रुपये और लग जायंगे तब आपका मगज ठंडा हो जायगा।" वह ज़रा देर चुप-से रहे। फिर बोले—"अब लोग देखेंगे मैं खाली को कैसी बनाकर बताता हूं। अजब-अजब फूल-फल लगेंगे। लोग जैसे आज रहते हैं, वैसे पशुओं की भांति थोड़े ही रहेंगे। इनके सब मकान तोड़कर फिर नये बनाऊंगा।... वहां एक बगीचा बनेगा। सब अपनी-अपनी खेती करके राजा के समान रहेंगे।"

एक दिन वह नीचे के झरने को नाप रहे थे। बोले—"पानी सब ऊपर ले आऊंगा।"

पक्षी उड़ानेवाले लोग खेतों में, जैसे मचान पर बैठते हैं वैसे ही, मदु एक पटिया खिड़की के पास रखकर बैठती है, वहीं सोती भी है। दिन में तीनों उसपर चढ़ जाती हैं, स्वरूपजी (विजयलक्ष्मी पंडित) भी कुछ-कुछ हमारे जैसी ही लगीं। अब १५ सितंबर तक तो हम यहीं रहेंगे।

जानकी का प्रणाम

: १३८ :

खाली (अल्मोड़ा),
१७-८-३५

पूज्यश्री,

अढ़ाई सौ रुपये आ गये हैं। आपने तो रक्षाबंधन का अच्छा फायदा ले लिया। हमें तो सुबह याद था। गाय के बछड़े के गले में राखी बांधी। फिर सोचा कि पीछे कोई आयगा तो देखेंगे। उसके बाद याद ही नहीं आई। और फिर त्योहार तो सब साथ ही का होता है। सासूजी, केसरबाई, भाभीजी, गुलाबबाई को 'राखी का पांव लगना' कहना। कल ता० १६ को आपकी चिट्ठी मिली। यहां सबका स्वास्थ्य बहुत अच्छा है। हाथ-पांव भी चमकते हैं। मदू बेटी से बेटा दिखने लगी है। अब तो वजन लेंगे तब १०० पौंड हो ही जाना चाहिए।

आप अभीसे प्रोग्राम मांगकर ललचाते हो, बड़े चालाक हो। प्रहलाद का ब्याह होता तब तो केसरबाई से खुशामद कराती भी। पर पन्ना का ब्याह

होगा तब तो आना ही है। राम परीक्षा के बाद मद्र के पास आ सकता है।

आप कानपुर से यहां मेरे मेहमान बनकर आ जाओ। आपको आराम मिलेगा। खाली में भी आ सको तो जगह की तकलीफ नहीं पड़ेगी। एक कमरा बंगले का भी खुला तो छोड़ा है। पर उसकी भी जरूरत नहीं पड़ेगी। पंडितजी को खबर दे सकते हो या १५ सितंबर तक हम शांति कुटीर चले जायंगे। सो आपको ऊपर नहीं जाना हो तो शांति-कुटीर हम पहले आ जायंगे। पंडितजी ने तो कहा है कि चाहो तो १५ दिन और भी रह सकते हो। मैंने ही कहा कि क्या जरूरत है। आजकल वाचन ज्यादा करती हूं। मन लगता है, मगज ठिकाने आ रहा है। आपको देखकर बिगड़ जाय तो पता नहीं।

जानकी का प्रणाम

: १३९ :

वर्धा, २०-१०-३५

प्रिय जानकी,

आज भैया-दूज के शुभ अवसर पर चि० राधाकिसन का संबंध पू० जाजूजी की लड़की चि० अनसूया से होना निश्चित हुआ है। शाम को ६ बजे पू० बापूजी, बा इत्यादि सब लोगों के सामने सगाई की विधि हो जायगी। पू० मा को इस संबंध से संतोष है।

जमनालाल का वंदेमातरम्

: १४० :

बिंसर, अल्मोड़ा,
२३-१०-३५

पूज्यश्री,

आप सबोंके पत्र बराबर सविस्तर मिल जाते हैं। ओम् को भी ठीक अनुभव हो जायगा। राम ही अबके शरीर ठीक लेकर आया है। अब आप इसकी व्यवस्था अपनी इच्छानुसार कर सकते हैं।

भगवानजी भाई साबरमती से आराम लेने को आये हैं। तबियत अच्छी है। महादेवभाई का पत्र आया था।

राधाकिसन का (अनसूया से) चमत्कारिक योग ही मिला, जिससे कि डर के वदले सुख-शांति की ही आशा चारों तरफ दिखाई देने लगी है। मुझे माजी वगैरा की कभी कुछ-कुछ याद आ तो जाती है, पर सब जनों की राजी-खुशी की खबर आ जाने पर मुझे एकान्त में ही अच्छा लगता है। प्रहलाद के व्याह के सिवाय हमारा कार्य-क्रम पूरा माघ महीने तक यहीं रहने का है। आपको भी एक वर्ष यहां रहना जरूरी है। साथ हो जाता तो अच्छा था, तथा नेताओं के लिए शरीर व घर-सम्वन्धी सोचन की अक्ल भगवान ने ही नहीं दी।

वरफ गिरने में अव १॥ मास बताते हैं। वरफ देखकर जी चाहे तव उतर जावेंगे। हमारे ऊपर किसीका दवाव तो है नहीं। आनंद से रहते हैं, आप जरा भी विचार न कीजिये।

वालकोवाजी को क्षय की शंका के कारण डाक्टरों के पास ले गये हैं। विनोवाजी ने पहला स्टेज वताया है। मुझे विचार आया की उनको दवा-इंजेक्शनों के झगड़े में पटकने की बजाय यहां फायदा मिलेगा।

राधाकिसन, गुलावचंद, प्रहलाद, कमलनयन, चारों लड़कों का एक साथ विवाह हो तो कैसा रहे ?

जानकी के प्रणाम

: १४१ :

विन्सर,
(रात ९॥ बजे)
३०-१०-३५

पूज्यश्री,

आपका पत्र ता० २३ का २९ को बरावर मिल गया। उमा का ठीक हुआ। राम इस वक्त अच्छी तबियत लेकर आया है। अब इसे अकेले रहने लायक होशियारी भी आ गई है। अब आप इसकी पढ़ाई को देख सकते हैं। सुव्रतादेवीजी आवें और मैं न मिलूं, इससे बुरा तो लगता है, पर खैर। मदू की उन्नति कल्पना के बाहर हो रही है। पर उसको दशहरे तक यहां रखना जरूरी है। एक वर्ष आपको भी यहां रहना जरूरी है। कव पार पड़े वह तो भगवान जाने; अगर अभी साथ-साथ हो जाता तो अच्छा रहता।

एडनपुरा नामका एक बंगला ३-४ हजार में मिलता है। सो मैंने लेने का तय-सा कर लिया है। नीचे जाने पर तो यहां की याद भी करना मुश्किल है। पर इतने ऊंचे पहाड़ पर ऐसा हलका पानी दूसरी जगह मैंने नहीं देखा। बंगला टूटा-फूटा तो है, पर दो-तीन बार रह आ गये तो पैसे वसूल। उसमें पानी भी है। आपको खबर दे दी है, किसीको सूचना करनी हो तो। अगर वह ५ हजार के ऊपर गया तो फिर जाने देंगे। बंगला हाथ आ गया तो गर्मी में फिर ऊपर आना पड़ेगा।

अभी तो आधे मगसिर तक यहां रह सकेंगे, ऐसा नहीं लगता है। हमें यहां एकांत-सा तो लगता है, मदु को वर्धा की याद आ जाती है। मुझे भी माजी वगैरा का ख्याल आ जाता है। आज राधाकिसन की सगाई का तार मिला। मन को सच तो नहीं लगा, पर डर के वदले संतोष हो गया है।

जानकी

: १४२ :

वर्धा
८-१२-३५

प्रिय जानकी,

मैं कल बंबई से लौट आया हूं। यहां दिसंबर में चि० राधाकिसन, प्रहलाद, तथा भैंरूलाल का विवाह करना निश्चित है। अतः तुम सब लोगों का यहां दिसंबर में आजाना ठीक होगा। चि० उमा के यहां आने से चि० रामकृष्ण की पढ़ाई के बारे में भी विचार किया जा सकेगा। तुम यहां कबतक आओगी, लिखना। प्रायः घर के लोग तुम लोगों की याद करते रहते हैं।

आज मेरा जन्म-दिन है। ४६ पूरे हो चुके। आगामी वर्ष अच्छी तरह से जाय, इसके लिए तुम और मदालसा प्रभु से प्रार्थना करना। मुझे केवल सद्बुद्धि के सिवाय और कोई इच्छा नहीं है, यह तो तुम्हें मालूम ही है। पू० मां आज यहांपर है, इससे खुशी है। आज तुम सबोंकी ज्यादा याद आना स्वाभाविक है।

चि० रामकृष्ण व मदालसा को आशीर्वाद।

जमनालाल का वंदेमातरम्

: १४३ :

विंसर,
९-११-३५

पूज्यश्री,

अभी ४ बजने आये हैं। धूप निकली है। बाबू (रामकृष्ण) आया, जबसे घर पर नहाया ही नहीं है। झरने पर कभी दादा (धर्माधिकारी) के साथ व कभी भगवानभाई के साथ नहाता है।

यहांपर परसों शाम को १० मिनट तक जवारी की फूली-जैसे ओले पड़े। मैं, मदू व भगवानजी तो गरम पानी से घर पर नहा लेते हैं। लेकिन बाबू तो कहता है कि मैं घर पर गरम पानी से नहीं नहाऊंगा। एक तो वह जानता है कि घर पर 'ऐसे नहाओ', 'वैसे तेल लगाओ', यह खटपट, वह खटपट। और वहां डाला पानी और पहिने कपड़े। वैसे हिम्मत हो तो घर के बजाय झरने पर ही नहाना अच्छा है। मैं आपकी बंडी, बरसाती कोट, मोजा रात को भी पहने रहती हूं। हवा चलती है तो किवाड़ बंद कर आग की शरण में बैठ जाते हैं। धूप निकलती है तो बड़ी तेज निकलती है। भगवानजीभाई कल चार घंटे पलंग पर ही 'आत्मकथा' बांचते रहे।

अभी ४॥ बजे होंगे। मदू सोई है। भगवानजीभाई और मैं सिगड़ी के पास चिट्ठी-पत्री लिख रहे हैं। बाबू व भुवन पानी लेने गए हैं। तेज हवा की आवाज आ रही है, पर धूप अच्छी लगती है। शुक्रवार है, डाकिये के इंतजार में चिट्ठियां बढ़ रही हैं। डाकिया रात को आवेगा या कल सुबह। पूरे गांव में फिरता है।

मेरा मन लग रहा है। मदू गरम कपड़े पहनना कठिनाई से ही शुरू करेगी। पीछे आदत पड़ जावेगी। मुझे तो यहां का हवा-पानी जंच गया। मन लगता है। जाड़ा यहीं निकालने का विचार है। यहां का सोच मत करना। यहां से मन उचटा तो कैंटोन्मेंट में चले जायंगे। ये आगये बाबू वगैरा पानी लेकर। १ घंटा लगा।

जानकी का प्रणाम

: १४४ :

वर्धा, १०-११-३५

प्रिय जानकी,

मैंने कल पत्र दिया, वह मिला ही होगा। राधाकिसन के संबंध से यहां माजी तथा अन्य सबको ही संतोष है। यहां आने के बारे में मैंने कल के पत्र में लिखा ही है। तुमने पूछा है कि "चारों लड़कों का एक साथ ब्याह हो तो कैसा ?" सो तीनों का तो शायद एक मास में हो भी जायगा। चि० मदालसा कमल जैसी बढ़ रही है, सो ठीक है। उसको यदि कष्ट सहन नहीं होते हों तो अधिक कष्ट करना भी नहीं चाहिए। शक्ति के बाहर मोह रखना नहीं चाहिए।

मुझे वहां वर्ष-भर रहना जरूरी है लिखा, सो ठीक। चि० राधाकिसन का विवाह बहुत करके १६ दिसंबर सोमवार को होना संभव है। तुम्हें तो आना ही चाहिए। चि० मदालसा को भी एक बार ले आओ, सबोंसे मिल लेगी।

बापूजी भी दिसंबर के बाद गुजरात व दिल्ली जायंगे। विनोबा भी दौरा करनेवाले हैं। यहां भी गुलाबबाई, भगवानदेई वगैरा आवेंगे। तुम कब पहुंचोगी, सो लिखना। मेरा दिसंबर तक यहीं रहने का विचार है।

जमनालाल का वंदेमातरम्

: १४५ :

वर्धा, २२-११-३५

प्रिय जानकी,

चि० राधाकिसन का विवाह ता० २८ जनवरी, १९३६ का निश्चित हुआ है, यह तो मैंने तुमको इसके पहले भी लिख दिया है। अतः अब तुम लोग यहां ता० २२ दिसंबर को आ सको तो ठीक है, जिससे 'फेलोशिप' की सभा में भी सम्मिलित हो सको। चि० मदालसा का हिमाचल-वर्णन पं० माखनलालजी को सुन्दर प्रतीत हुआ है तथा उन्होंने उसे अपने पास रख लिया है। मदालसा इस प्रकार अपनी सात्त्विक साहित्यिक अभिरुचि का विकास करेगी तो अच्छा ही होगा।

अगर तुम लोगों की इच्छा दिसंबर के आखिर तक वहां रहकर ही आने की हो तो फिर ता० ३ जनवरी तक यहां आ सकती हो। चि० प्रहलाद का

विवाह कलकत्ते में होगा। शायद ५ जनवरी को हो। तुम्हें तो चलना ही पड़ेगा।

जमनालाल का वंदेमातरम्

: १४६ :

वर्धा, ९-१२-३५

प्रिय जानकी,

आज चि० रामकृष्ण का पत्र आया। समाचार मालूम हुए। इन दिनों पू० बापू का स्वास्थ्य कुछ नरम रहा है। बंबई से डा० जीवराज मेहता भी कल आ गये। ब्लड-प्रेशर बढ़ गया था। अब तबियत साधारणतः सुधर रही है। आराम की जरूरत है। इस समय भी राजकुमारी अमृतकौर परिचर्या कर रही हैं। परन्तु वह ता० १७ तक रह सकेंगी। आगे की परिचर्या का सवाल उपस्थित हुआ तब तीन नाम सामने आये थे। मेरा, राधाकिसन का व तुम्हारा। अभी कुछ निश्चित नहीं हो पाया है। अच्छा हो, यदि तुम भी इस बीच यहां आ सको। चि० मदालसा की इच्छा वहां रहने की हो तो उसके रहने का प्रबंध करके आ सकती हो। रामकृष्ण तुम्हारे साथ आवेगा ही। तुमको अपने निश्चित प्रोग्राम से केवल ५-६ रोज पहले आना पड़ेगा। यहां पहुंचने का तार भेज देना।

जमनालाल का वंदेमातरम्

: १४७ :

प्रयाग, ४-४-३६

प्रिय जानकी,

तुम्हारा पत्र आज मिला। तुम्हारे साथ चि० पार्वती (गंगाबिसन की लड़की) आना चाहती हो तो लेती आना। उसकी सगाई भी करनी है। यहां बापूजी के साथ कांग्रेस[1] से करीब ३।।-४ मील दूर पर रहना होता है। अबकी बार की प्रदर्शिनी देखने योग्य है। तुम आ जाओगी तो एक-दो लड़कियां भी देख ली जावेंगी। मैं तो खूब काम में रहूंगा। तुम किस गाड़ी से पहुंचोगी, लिख भेजना। ता० ८ को पहुंचना ठीक रहेगा। मैं भी ता० ८ को ही पहुंचूंगा।

---

[1] यहां लखनऊ में होनेवाली कांग्रेस का जिक्र है।

उसी रोज शाम को जवाहरलालजी का प्रोसेशन (जुलूस) निकलनेवाला है।

जमनालाल का वंदेमातरम्

: १४८ :

वर्धा, २७-८-३६

प्रिय जानकी,

मैं कल यहां सकुशल पहुंचा। आज से चर्खा-संघ की बैठक शुरू है। कल गो-सेवा-संघ की, और ३० को महिला-मंडल की।

आज पू० बापूजी सेगांव से आये हैं। बैठक अपने यहां बीच के कमरे में हुई है।

जमनालाल का वंदेमातरम्

: १४९ :

वर्धा, १७-९-३६

प्रिय जानकी,

तुम्हारा पोस्टकार्ड मिला था। आज तुम्हारा तार भी मिला। मैंने तार करवा दिया था, सो मिला होगा।

पूज्य बापूजी का स्वास्थ्य अच्छा है। चिंता की कोई बात नहीं है। तुमको दूध पचने लगा है, यह जानकर खुशी हुई। कल मैं सेगांव गया था। पूज्य बापू ने तुम्हारे बारे में पूछा था। मैंने उनको दूध के बारे में नहीं कहा। फिर जब आज या कल जाऊंगा तो कहूंगा। तुम्हारी कमजोरी तो दूर हो जायगी।

आज श्री नायडू भोजन करने आये थे। सरदार वल्लभभाई यहां १९ को आ रहे हैं। मैं ता० २५ तक बंबई आने का विचार कर रहा हूं। चिरंजीव उमा प्रसन्न होगी।

इस तरह की भविष्यवाणी[1] या ज्योतिष के परिणामों से घबराना नहीं चाहिए। ईश्वर पर भरोसा व श्रद्धा रखना आवश्यक है। मैं तो तुम्हारा स्वास्थ्य बिल्कुल ठीक हुआ तभी समझूंगा जब मुझे दीखने लगेगा कि तुम्हारी श्रद्धा व विश्वास बढ़ रहा है।

जमनालाल का वंदेमातरम्

---

[1] एक ज्योतिषी ने गांधीजी की मृत्यु की भविष्यवाणी की थी।

: १५० :

वर्धा, १८-९-३६

प्रिय जानकी,

मेरा पत्र व दोनों तार मिले होंगे। पू० बापू के बारे में (मृत्यु की) भविष्यवाणी, जैसी आशा थी, पूरी तरह से झूठ साबित हुई। कल ता० १७ को शाम को सिविल सर्जन को ले जाकर उनकी भली प्रकार से जांच करवा ली थी। ब्लड प्रेशर आदि सब ठीक थे। बापू खूब विनोद करते थे। आज सुबह स्नान करके मैं तो चि० अनसूया के साथ दही, बाजरे की रोटी व फल खाकर गया था। वहां से २ बजे बाद रवाना होकर आया हूं। पू० बापू को मैंने अकेले में ९।।। बजे करीब यह बात कही तो उन्होंने तो खूब विनोद किया। औरों से ज्यादा चर्चा नहीं की। सरदार कल आ जायंगे। घनश्यामदासजी आज आ रहे हैं। दो-तीन दिन थोड़ा-बहुत विनोद रहेगा। अब आगे से भविष्यवाणियों पर ज्यादा विश्वास नहीं रखना। तुम क्यों आना चाहती थीं और आकर क्या करनेवाली थीं? अब तो तुम्हें इस प्रकार की मिथ्या चिंता छोड़कर व श्रद्धा रखकर अपना स्वास्थ्य खूब उत्तम बना लेना चाहिए। चि० राधाकिसन का पत्र मिला। उसने तुम्हें उचित ही सलाह दी।

जमनालाल का वंदेमातरम्

: १५१ :

बनारस, २३-१०-३६

प्रिय जानकी,

आज सुबह मैं यहां पहुचा तो वर्धा का तार मिला कि चि० विनय कल ता० २२ को सुबह चल बसा। थोड़ा दुःख तो हुआ, परन्तु विचार करके देखने से व कमला की वर्तमान शारीरिक स्थिति देखते हुए ईश्वर ने जो कुछ किया, वह ठीक ही किया। विनय तो कई झंझटों से मुक्त हुआ। वह जिंदा रहता तो भी शारीरिक सुख का लाभ तो उठा नहीं सकता था। मैंने चि० कमला को तार व पत्र दिया ही है। तुम चि० रामेश्वर की मां को समझाना। रामेश्वर को भी लिख देना।

तुम अपना स्वास्थ्य बिना कारण मत बिगाड़ना। तुम्हारा प्रयोग

बराबर चलते रहने देना। मैं वर्धा ता० ४ तक पहुंच सकूंगा। बाद में कमला की जैसी इच्छा होगी, वैसा किया जायगा। कुछ समय तक तो उसे मेरे साथ रखने की इच्छा है, जिससे वह चिंता करना छोड़ दे। शायद कल पू० बापूजी भी यहां आयेंगे। लक्ष्मणप्रसादजी, सावित्री भी शायद आ जाय। उन्होंने इच्छा प्रकट की है।

जमनालाल का वंदेमातरम्

: १५२ :

बनारस, २६-१०-३६

प्रिय जानकी,

तुम्हारा ता० २३-१० का पत्र कल २५ को मिला। विनय के बारे में बापू ने सब स्थिति कही। दवा, इंजेक्शन, कमला की बहादुरी, दान वगैरा का हाल मालूम हुआ। चि० विनय तो मुक्त हुआ, इसमें जरा भी संदेह नहीं। कमला भी विचार कर देखेगी तो कई चिंताओं से मुक्त हुई है। ईश्वर की दया ही समझनी चाहिए। तुम्हारा वजन बढ़ रहा है, जानकर सुख मिला। चि० सावित्री नहीं आ सकी।

जमनालाल का वंदेमातरम्

: १५३ :

वर्धा, ६-११-३६

प्रिय जानकी,

मैं कल यहां सकुशल पहुंच गया। रास्ते में गाड़ी में भुसावल से भीड़ हो गई थी, दो-तीन घंटे ताश खेलकर समय निकाला गया। यहां आ जाना बहुत अच्छा हुआ। कल बापू से मिल आया। यहां विद्यालय का उत्सव है, सभाएं हैं।

पू० मां की तबियत अब ठीक है। तुमसे आते समय विशेष बात नहीं हो सकी, थोड़ा विचार रहा। कोई बात नहीं। तुम्हारा स्वास्थ्य उत्तम हो जायगा तो मन पर भी उसका ठीक परिणाम होगा।

जमनालाल का वंदेमातरम्

: १५४ :

वर्धा १६-११-३६

प्रिय जानकी,

चि० रामेश्वर व श्री मोतीलालजी एलिचपुर से आज प्रातः यहां आये हैं। अभी चार बजे चि० शान्ता की सगाई चि० रामेश्वर के साथ आज यहां पू० मांजी व अन्य गु जनों की उपस्थिति में करने का निश्चित किया है।

श्री एंड्रूज अभी यहीं हैं। आज श्री राजेन्द्रबाबू तो आ गये हैं; जवाहरलालजी शाम की गाड़ी से आयंगे। मैं कल मेल या एक्सप्रेस से बंबई आ रहा हूं। किसी भी हालत में परसों तो बंबई पहुंचना ही है।

जमनालाल का वंदेमातरम्

पुनश्च—चि० शांति गंगाविसन की लड़की की सगाई चि० रामेश्वर एलिचपुरवाले से आज कर दी गई है। एक चिंता कम हुई। तुम्हारी झोंपड़ी बन रही होगी।

: १५५ :

जुहू,
२६-१-३७

पूज्यश्री,

आपके गये बाद से मन अशान्त हो रहा है। पीछे टैक्सी में गोविंदलालजी के यहां भी गये। सोचा था कि आते समय आपकी मोटर मिल जायगी। गोविन्दलालजी से कहा था कि हम लोग यहां आ गये हैं, यह आपको कह देना। वह कहते थे कि कह दिया था। मोटर की आस लगा रक्खी थी, सो गुस्सा आ गया था। अनमेल के सामने मन को स्थिर रखना मेरे लिए मुश्किल-सा हो गया था। वाक्-चातुर्य की तो पूरी कमी है ही। कर्तव्यच्युत बन रही हूं। सब दिये के समान दीखता भी है, सब बात की ताकत भी है, पर पता नहीं कौन से पाप आड़े आ रहे हैं। तुकारामजी का दृश्य सब आंखों के सामने रहता है। पर भाग्य में पश्चात्ताप ही बदा दीखता है। आपको कुछ विचार आये हों तो सुधार लें। सब साधन होते हुए, उनका उपयोग लेना नहीं आये, उसे कर्महीन ही समझना चाहिए। साधन हों, वहां इच्छा

नहीं, इच्छा हो वहां साधन नहीं। अब किसको दोष दें, भगवान् ही जाने!

आपकी,

जानकी

: १५६ :

कल्याण (चालू रेल में),

२५-४-३७

प्रिय जानकी,

तुम्हें दुखी देखकर दुखी होना स्वाभाविक है। मैंने तुमसे कई बार कहा है कि तुम हंसते-खेलते आनंद से रहोगी तो मुझे भी बहुत मदद मिलेगी। कम-से-कम मेरे पीछे से तो तुम आनंद में रहो, इतनी खातरी भी मुझे रहे तो फिर मेरे प्रवास आदि में मुझे चिंता करने का कारण न रहे। तुम्हें मैंने जाने या अनजाने में काफी दुःख पहुंचाया है। परंतु उसका उपाय क्या! तुम्हारा अगर विश्वास हो तो मैं यह कहता हूं कि मेरा तुमपर प्रेम, श्रद्धा और भक्ति तीनों का मिश्रण है। मैं अपने जीवन में आवश्यक फेरफार करने का विचार कर रहा हूं। ईश्वर की मदद व तुम्हारा पूरा सहयोग रहा तो भावी जीवन सुख से बीत सकेगा, अन्यथा जैसा भी समय आवे, उसीमें सुख व शांति मानकर चलना होगा। मैं यह पत्र तो इसलिए लिख रहा हूं कि तुम्हें थोड़ी शांति मिले। नर्मदा की सगाई, संभव हुआ तो, पूना की होने का प्रयत्न चल रहा है। लड़के को व नर्मदा को विवाह में आने का कहा है। यह पत्र लिखने के बाद मुझे थोड़ी शांति मिल जावेगी, ऐसी आशा करता हूं।

जमनालाल का वंदेमातरम्

: १५७ :

वर्धा, ९-५-३७

प्रिय जानकी,

चि० रामेश्वर का व तुम्हारा पत्र मिल गया। मैं कलकत्ता केवल विवाह का तार आने के कारण नहीं जा रहा हूं। मुझे १६ ता० को केस के लिए यहां आना जरूरी है ही; तब फिर जिन कामों का मेरे मन पर बोझ

रहता है, वह साफ होना जरूरी है। खासकर कलकत्ते में इतने काम कर लेने हैं:

१. गोला की शक्कर मिल की व्यवस्था गत दो वर्षों से ठीक नहीं रहती, इसका मन पर बोझ बना रहता है, क्योंकि मैं उस मिल के बोर्ड का चेयरमन हूं। कलकत्ते में श्री केशवदेवजी, रामेश्वर, श्रीगोपाल व घनश्यामदासजी बिड़ला से बातचीत करके व्यवस्था-संबंधी फैसला कर लेना है, अन्यथा मुझे गोला १०-१५ रोज के लिए जाना पड़ेगा।

२. श्री लक्ष्मणप्रसादजी व सावित्री को भी विवाह-संबंधी छोटी-मोटी बातों का खुलासा हो जाने से संतोष रहेगा। अपनेको उनकी स्थिति का पूरा परिचय रहने से अपनी हालत भी ठीक रहेगी। एकदम वक्त पर नई जानी-बूझी बातों में फर्क करने में तकलीफ रहती है।

३. श्री सीतारामजी को भी इन दिनों काफी चिंता व असंतोष रहता है; उनको थोड़ी शांति मिल जायगी।

४. अगर संभव हुआ तो थोड़ा हिन्दी-प्रचार के लिए चंदा करने की व्यवस्था कर आऊंगा।

इनसब बातों में से थोड़ी भी बातों का निकाल हो जायगा तो मुझे उतना ही संतोष मिलेगा। थोड़ा वातावरण बदल जाने से भी मुझे शांति मिलेगी।

चि० नर्मदा को थोड़ा ज्वर आता है। इसके ज्वर की बात उसकी मां से कहने की जरूरत नहीं। बिना कारण चिंता करेगी। ज्वर मामूली है। चि० उषा (दादा धर्माधिकारी की लड़की) चि० मदालसा के पास कुछ दिन रहना चाहती है। तुम्हारी परवानगी होगी तो वह नर्मदा के साथ वहां आ जायगी। अभी मुझसे पूछने आई थी।

जमनालाल का वंदेमातरम्

: १५८ :

वर्धा, १५-६-३७

प्रिय जानकी,

केस का काम ठीक चला है। तुम होती तो खूब मजा आता। चि० उमा को तो खूब ही आता। अपनी ओर के वकील कल बंबईवाले

मुंशीजी व केदार थे। केदार आज भी है और कल भी रहेंगे। वार्लिंग से खूब कुश्ती हुई। आखिर वह कल बीमार पड़ गया। कल व आज बड़ी सनसनी रही।

चि० कमल का हवाई डाक द्वारा कार्ड आ गया है। वह बहुत करके उसी रोज बंबई से रवाना होकर वर्धा आना चाहता है। कमल का परसों वहां मेरी ओर से भी स्वागत करना और बातें यहां आने पर।

जमनालाल का वंदेमातरम्

: १५९ :

जानकी-कुटीर, जुहू,
१३-१०-३७

प्रिय जानकी,

मेरा पत्र मिल गया होगा। तुम्हारा पत्र कल शाम को मिला। मैं वर्धा आने के लिए कल यहां से रवाना हो चुका था। लेकिन वर्धा से टेली-फोन आ जाने से मैं नहीं आया। अब ता० १७ की कान्फरेंस खत्म करके मेरा वहां आने का इरादा है।

श्रीमन की माताजी आ गई होंगी। सावित्री का इलाज ठीक से चल रहा है। श्री सीतारामजी का इलाज कल से शुरू हो जायगा। मेरा मन तो वर्धा में लगा हुआ है। परन्तु कांफ्रेंस व सावित्री तथा सीतारामजी के कारण खासकर रहना पड़ा है। अब यहां की व्यवस्था इस प्रकार कर दी है कि अपने दोनों की गैरहाजिरी में भी यहां का काम ठीक चलता रहेगा। श्रीमन की माताजी को मेरा प्रणाम कहना। पू० बापूजी आ गये हैं। वे तो टाइफाइड के सबसे बड़े अनुभवी डाक्टर हैं। श्रीमन के नर्सिंग का इंतजाम खूब अच्छा रखना।

जमनालाल का वंदेमातरम्

: १६० :

(चालू रेल में) बिलासपुर,
२५-१०-३७

प्रिय जानकी,

बापूजी और उनकी पार्टी कलकत्ता जा रही है। श्रीमन तो अब ठीक

है। तुम देहरादून में चि० जगदीश (सावित्री के भाई) से जरूर मिलना। उसका पता सावित्री से पूछकर लिख लेना व उसे भी सावित्री से पत्र लिखवा देना।

मलजीभाई को कह देना कि नई झोंपड़ी सावित्री की इच्छा मुजिब वनावें। अगर तुम देहरादून से वर्धा आनेवाली हो तो मुझे उस प्रकार लिख देना तव मैं वर्धा आने की जल्दी नहीं करूंगा। सीतारामजी का क्या हाल है ? मैं कलकत्ता जाकर वजन घटाऊंगा और वह वंवई में घटा रहे हैं।

जमनालाल का वंदेमातरम्

: १६१ :

वर्धा, १७-११-३७

प्रिय जानकी,

हालांकि गाड़ी में थोड़ी भीड़ थी, तो भी नींद ठीक मिल गई और यहां कुशलपूर्वक पहुंच गया। शाम को सेगांव जाऊंगा। वापूजी के आने के वाद अगर हो सका तो कुछ रोज सेगांव रहने का विचार है।

आशा है कि मुझे यहां ज्यादा शांति मिलेगी, क्योंकि काम में लगा रहना पड़ेगा।

जमनालाल का वंदेमातरम्

: १६२ :

वर्धा, २०-११-३७

प्रिय जानकी,

तुम्हारा पत्र अभी मिला। मैं यहां आया उसी रोज से रात को सेगांव सोता हूं। वापू का स्वास्थ्य वहुत कमजोर हो गया है। वहुत संभाल रखने की जरूरत है। आज तो वहां से सुवह पैदल ही आया। दो रोज से यहां गांधी-सेवा-संघ की महत्वपूर्ण सभा हो रही थी। परमात्मा ने किया तो मन को शांति मिल जायगी। तुम अपना स्वास्थ्य व मन उत्साहित रखना। प्रफुल्ल वातावरण वनाये रखने का ख्याल रखोगी तो ज्यादा लाभ पहुंचेगा। श्रीमन का पत्र मिला। मदालसा का भी। मैं तो अव वहां की चिंता वहुत कम करता हूं। तुम लोग अपने आने की व्यवस्था वरावर करवा लेना। पीछे से सीतारामजी की व्यवस्था सुन्दर रहनी चाहिए।

जमनालाल का वंदेमातरम्

: १६३ :

वर्धा,
२२-११-३७

प्रिय जानकी,

तुम्हारे दो पत्र मिले। थोड़ा आश्चर्य व दुःख भी हुआ। तुम्हें वहां शांति नहीं हो तो तुम्हें यहां चले आना चाहिए था। मैं तो बंबई से यहां आया, उसी रोज से सेगांव में सोने की व्यवस्था रखी है। सिर्फ कल नागपुर में काम था। रात के ग्यारह बज गये थे, इसलिए गिरधारी के पास सोना पड़ा। दामोदर साथ था। आज सुबह तो सेगांव हो आया। अब शाम को फिर वहां चला जाऊंगा। पू० बापूजी का स्वास्थ्य बहुत नरम है। ईश्वर की जैसी मरजी होगी, वैसा होगा। ईश्वर हमें सद्बुद्धि व आत्म-विश्वास प्रदान करता रहे। मैं तुम्हें और क्या लिखूं?

जमनालाल का वंदेमातरम्

पुनश्च—पत्र न देने से शांति मिलती हो तो न देना ही ठीक है। फिर तुम्हारी मरजी!

: १६४ :

(प्राइवेट) जुहू, २३-२-३८

पूज्यश्री

तार दिया तो था। पर तबियत ठीक है, यह लिखाना भूलने से आपको विचार हो जाना स्वाभाविक था। पीछे तो विनोबा को बड़ा सुन्दर पत्र भी लिखा है।

कमल की इच्छा है कि मैं जवाहर बनके पिताजी को सुख दूं। उनसे मैं बहुत-कुछ सीखूंगा। मोतीलालजी को तो हमने गलती से खो दिया, पर पिताजी के सादे जीवन के कारण हम उनका ज्यादा लाभ ले सकते हैं। भगवत् इच्छा! ज्यादा सुख अजीर्ण करता होगा।

मेरे शरीर को पूरा आराम यहीं मिल सकता है और मिल भी रहा है। मन तो चूल्हे में जाय। उसपर किसका बस? ५ बजे ऊपर जाकर सो जाती हूं। अकेली को नींद पूरी आ जाती है। ६ बजे महादेवी आकर प्रार्थना कराती हैं। बस खाना और सोना। दिन में भी स्वप्नवत पड़ी रहती हूं। न

तो पूरी नींद आती है और न उठने की ही इच्छा होती है। पर थोड़े रोज इस तरह पड़े रहना भी शरीर को शायद ताकत दे दे। दिन में महादेवी से रामायण पढ़वाती हूं। चार चौपाई पढ़ना मैंने भी शुरू किया है, ताकि आपके दिमाग व मेरे मन को शान्ति मिले।

आप मेरा फिकर छोड़िये। मनुष्य को दूर फेंकने से ही वह अपने-आपको संभाल सकता है। जब दूसरा पीछे है तो वह कभी खड़ा नहीं हो सकेगा। यह प्रत्यक्ष दीख ही रहा है। सब तरह के सहारे होते हुए भी शरीर में जीवन नहीं है।

कल के मेरे तार के कारण आपको फोन करना पड़ा और आपने कहा कि इस तरह घोड़े दौड़ाने से क्या लाभ है। सो सच है, अब संभालूंगी। आपने यह भी पूछा कि आने की इच्छा है क्या। सो अभी तो यहीं रहना अच्छा लगता है। विनोबा आयें तो उनकी तबियत का ख्याल रखकर मैं भी उनसे शान्ति लूंगी। मैं क्या करूं। आपको किसी तरह भी सुख नहीं पहुंचा सकती। पर आप तो सुख मान ही लेते हैं। और अपने तरीके से जी सकोगे। अब आप इस पत्र का जवाब देने का विचार ही न करें। जवाब मैं जानती ही हूं।

इच्छा होगी तो लिख दूंगी। वैसे पत्र लिखने का आलस्य है ही। भगवान शान्ति दें।

पत्र टोकनी में पड़े।

आपकी
पागल टोली में की एक

: १६५ :

बजाजवाड़ी, वर्धा,
३-३-३८

प्रिय जानकी,

कल फोन पर बात हुई थी। पू० विनोबा से आज भी पुछवाया, उनकी इच्छा जुहू आने की कम है, सो वे नहीं आवेंगे। तुम किसी तरह की चिंता नहीं करना। तुम वहां खूब शांति से मन लगाकर अपना स्वास्थ्य पूर्ण तौर से सुधार लेने का पूरा ख्याल रखोगी तो ठीक रहेगा।

मैं ता० १० के आस-पास सावित्री के पास कुछ रोज के लिए जाने का विचार कर रहा हूं। चि० उमा परीक्षा में लग रही है।

जमनालाल का वंदेमातरम्

: १६६ :

वर्धा,
७-३-३८ (सुबह पांच बजे)

प्रिय जानकी,

तुम्हारा पत्र परसों मिल गया था। पढ़कर एक प्रकार से संतोष ही मिला। श्री सुभाषबाबू व मौलाना आज जानेवाले हैं। अगर संभव हुआ तो मैं भी कल ही रांची चला जाऊंगा, वरना परसों तो जाना है ही। रांची से तार व पत्र आये हैं। उसमें तो तुमको भी आने के लिए लिखा है। मेरा वर्धा ता० २ अप्रैल के लगभग लौटना होगा। चि० उमा की परीक्षा अभी तक तो ठीक हुई है। उसे संतोष है। आगे के लिए भी मेहनत तो खूब करती है।

चि० मदालसा का मन दूध से ऊब गया हो तो श्री गौरीशंकर भाई को कहकर फेरफार करवा देना। महादेवी ने विनोबा को लिखा है कि मदालसा को कुछ भी फायदा नहीं है, वह प्रयोग से थक गई है। मैंने तो विनोबा से कहा था कि धीरे-धीरे उसका वजन बढ़ने लगा है, शायद फायदा हो जाय। विनोबा ने तुम्हारा कार्ड मेरे पास पढ़ने भेजा है। वह आज पवनार अपने मकान में रहने जानेवाले हैं।

मुझे पत्र रांची के पते से देना।

जमनालाल का वंदेमातरम्

: १६७ :

जुहू, ९-३-३८

पूज्यश्री,

पत्र ता० ७ का मिला। आपके पत्र विचारों में कुछ मददरूप होते तो हैं। पर पत्र का उत्तर देना यही मेरी कमजोरी है। विचार तो आया कि पत्र किसको लिखती है। दुनिया स्वार्थ से पागल है। अपने में इतना क्रोध होकर भी स्वाभिमान क्यों नहीं है, पर अपने दोष भी तो इतने हैं कि

स्वाभिमान का स्थान ही नहीं। बस खाओ और पड़ी रहो। लेकिन दया भी आती है कि घायल मगज से अब क्या चाहती हो ?

यह मन हल्का करने को लिखा है। इसे मजाक समझकर फाड़ देना। 'त्रिया चरित्र जाने न कोय', वह भी किसी ने हमारी जाति के लिए सच ही लिखा होगा।

तुलसीदासजी ने घायल हृदय से ये भाव निकाले होंगे :

**मिलत एक दारुण दुख देही। बिछुरत एक प्राण हर लेही ॥**

पर यह सब मगज का भी दोष है। जब विचार या जीवन सरल होगा, तभी भगवान दर्शन दे सकते हैं और देंगे। जीवन में कसौटी भी अच्छी चीज है। आपने जो लाटरी डाली थी, उसमें भी अपने भले की ही बात बताई। दुनिया के पीछे कुछ आधार मदद देता है। यह सब लिखना पागलपन की निशानी है। मन काम पर लगा कि यह सब भूल जायगा।

दामूभाई ने कहा, मालिक की आज्ञा हो तो सूली चढ़ जाऊं। उसपर कविता लिखी है, वह साथ में भेज रही हूं। वह तो हँसेगा ही, पर अपनी-अपनी दृष्टि से अर्थ सब तरह का निकलता है। सो आपके जंचे तो दिखाना, नहीं तो वापस भेज देना। मैं फाड़ भी सकती हूं।

अब मेरा भी मन हलका ही रहेगा। जवाब का विचार ही न करना। मैं भी खुश रहूंगी।

आपकी,
बावली

: १६८ :

पोद्दार हाउस, रांची,
१०-३-३८

प्रिय जानकी.

मैं आज यहां प्रसन्नतापूर्वक पहुंच गया। टाटानगर तक श्री सुभाषबाबू साथ थे। यहां मुझे शारीरिक व मानसिक आराम अच्छा मिलता दिखाई दे रहा है। चि० सावित्री का स्वास्थ्य उत्तम है।

तुम्हारा स्वास्थ्य ठीक रहता होगा। मदालसा को डॉ० दास को

दिखाना ठीक समझो तो दिखाना। चि० कमल विलायत से शायद इस गर्मी में अब नहीं आयगा।

जमनालाल का वंदेमातरम्

: १६९ :

कलकत्ता, २-४-३८

प्रिय जानकी,

मेरा वर्धा ता० ५ को पहुंचना होता दिखता है। तुम्हारे पास जल्दी आने की इच्छा जरूर है और अबकी बार यह भी मन में विश्वास होता है कि परमात्मा दया करेगा तो तुम्हें मानसिक शांति जिस प्रकार मिल सके, उसका पूरी तौर से ईमानदारी के साथ प्रयत्न करना है। चि० कमल भी शायद आ जायगा। मेरे कारण तुम्हें बहुत कष्ट दुःख पहुंच रहा है, इसका ख्याल आने से मन में काफी उथल-पुथल होती रहती है। परमात्मा अबकी बार जरूर कोई मार्ग सुझायेगा। तुम हिम्मत व उदारता से काम लेने का ख्याल रखो। ईश्वर से प्रार्थना करती रहो। अधिक मिलने पर। तुम्हें जिस प्रकार पूरा संतोष मिलना संभव हो, वह सब बातें तुम नोट कर रखोगी तो ज्यादा ठीक रहेगा।

जमनालाल का वंदेमातरम्

: १७० :

जुहू, १९-४-३८

पूज्यश्री,

अभी कार्ड मिला। आपको जाते समय धन्यवाद देना भूल गई थी। आपका फोन आया तब तक तो पड़ी थी। पर उसी क्षण भोगीलालभाई से पूछा कि बिड़ला-हाउस से निकल गये होंगे क्या? फोन पर बुलाने की हिम्मत नहीं होती थी। आपका ही फोन आगया। आपने कहा, वजन बढ़ा ले तो सब ठीक हो जाय। सो कुछ तो जरूर बढ़ेगा। मगज कुछ तो हल्का हुआ है।

मन नहीं लगता। सब सूना-सूना लगता है। रहो तो बेचैन, जाओ तो झुरना। पर शुद्ध झुरना भी तो तप का फल देता है। आशा थी कि आप धुलिया नहीं जाओगे तो २०-२१ ता० को ही यहां जाओगे। लेकिन अब

ता० २४-२५ तक आने का पढ़कर धक्का तो लगा। पर आपको हमसे क्या सुख मिला कि आपको जल्दी बुलाने की हमारी हिम्मत हो। आपने तो सबको सुखी देखने के लिए तन, मन और धन से सहायता की और सब कर्मानुसार सुखी हो गये। पर आपका साथी तो भगवान ही रहा।

सच्चा व शुद्ध प्यार भी जीवन-जड़ी है। पर वह पुण्याई से ही प्राप्त होता है। आपके लिए तो जहां सुख-शान्ति हो, वहीं रहना अच्छा है।

बापूजी का समय लेने का भी अब समय आ गया है। मैं रहूं या न रहूं, समान है। मुझे बोलना ठीक नहीं आता। इसलिए लिखना जरूरी-सा हो जाता है। क्या करूं ? मांजी को मेरा प्रणाम।

धन्यवाद तो आप भी मन-ही-मन देते हो, वरना मैं जी कैसे सकती ?

जानकी का प्रणाम

पुनश्च—परसों पांच मिनट की मौज हुई। नींद में सोई थी कि उमा ने राम से कहा कि वर्धा का फोन है, मां को उठा। मेरे तो हाथ-पांव ढीले हो गये—हे राम-हे राम करते फोन के पास गई। पर झूठ निकला। बच्चे क्या जानें ? पानी पीने को दे दें या सिर पर गीला कपड़ा रख दें ? मैं खुद ही नल के नीचे सिर भिगोकर पानी मुंह में लेकर बड़ी कुर्सी पर पड़ी रही।

देखिये, जीवन को कैसे संभालती हूं। किसी-न-किसी दिन सबके काम आवेगा ही। मेरे मन की आप जब समझ लेंगे तब वजन बढ़ते भी क्या देरी लगेगी। 'धीरां धीरां ठाकरां, धीरां सबकुछ होय।'

भूल-चूक माफ। प्रणाम !

: १७१ :

दिल्ली, २७-९-३८

प्रिय जानकी,

शिमला का प्रवास पूरा करके ता० २० को मैं यहां आया। शिमला में थोड़ी सर्दी तो थी। वहां हिन्दी साहित्य सम्मेलन के काम की वजह से काफी काम रहा। यहां भी आल इंडिया वर्किंग कमेटी का काम काफी रहा। अभी भी रोज वर्किंग कमेटी की महत्वपूर्ण सभा चल रही है। यूरोप में युद्ध के बादल घिर रहे हैं। परिस्थिति क्या होगी, कोई कल्पना नहीं की जा सकती। लड़ाई

छिड़ने से कौन कहां रहेगा, यह कहना भी संभव नहीं है। तुम अपना प्रोग्राम ऐसा बना लो, जिससे दीपावली पर वर्धा आ सको। सावित्री को भी दीपावली पर वर्धा बुला लेना है। एक वार घर के सब लोगों का दीपावली पर एक साथ घर पर मिल लेना अच्छा रहेगा।

यहां से जयपुर होकर जाने का विचार था। जयपुरवाले भी मेरे वहां जाने पर रोक लगाने का विचार कर रहे हैं। आखिर जयपुर के प्रश्न पर भी विचार करना पड़ेगा। पर अभी तो जयपुर नहीं जाऊंगा, सीधे वर्धा ही जाऊंगा।

जमनालाल का वंदेमातरम्

: १७२ :

पवनार (वर्धा), कार्तिक सु० १२, सं० १९९५
जन्मदिन, (४-११-३८)

प्रिय जानकी,

मुझे यहां ठीक शांति मिल रही है। मुझे ४९ वर्ष पूरे हो गये, पचासवां वर्ष चालू हुआ है। तुम तो भली प्रकार जानती ही हो कि मुझे कुछ वर्षों से जीने में उत्साह नहीं मालूम देता है। इसका कारण तो साफ ही है कि मेरा जीवन शुद्ध नहीं रह सका। मेरे मन की महत्वाकांक्षा मन में ही रही है। मेरा संकल्प तो यह रहता आया है कि मैं जनता-जनार्दन की सेवा पूरी प्रामाणिकता ए ं सच्चाई के साथ करूं। परन्तु देखा जाय तो मैं तुम्हारे-जैसी पवित्र व पूजने-योग्य देवी का भी समाधान नहीं कर सका। तुमने मेरे पीछे जो त्याग किया, जिस प्रकार उत्साह के साथ मदद की, वह मैं कैसे भूल सकता हूं! तुम्हारा उपकार क्या थोड़ा है! परन्तु दुःख है कि मैं उसके लायक नहीं निकला। मैंने तुम्हें खूब सताया और अभी भी सता रहा हूं। क्या करूं, कोई उपाय दिखाई नहीं दे रहा है। कई वार मन में निश्चय करता हूं कि मैं तुम्हें अब नहीं सताऊंगा, तुम्हारी इच्छा पूरी करने की कोशिश करूंगा। परन्तु पता नहीं जब वात होती है तो ज्यादातर मुझे क्रोध आ जाता है। तुम्हारे प्रति अन्याय कर ैठता हूं। बाद में दुःख व पछतावा भी होता है। परन्तु उपाय नहीं सूझता। यह तो तुम भी कबूल करोगी कि तुम्हारे प्रति मेरा प्रेम तो है ही। तुम्हें सब प्रकार से ऊंची उठी हुई देखने की मेरी कितनी इच्छा रहती

हैं, इसलिए तुमसे जरा-सी भी भूल हो तो मुझसे बरदाश्त नहीं होती। इसके विपरीत मैं तो भयंकर भूल कर बैठता हू, फिर भी तुम्हें सताने को तैयार रहता हूं। मालूम नहीं, क्यों ऐसा होता है ? मेरे मन में भीतर-ही-भीतर खूब संघर्ष चलता रहता है। उसका परिणाम अब इस निराशा में प्रकट होने लगा दिखाई देता है।

यह बात तो सत्य है कि मेरे सोचने-विचारने का तरीका तुम्हारे तरीके से बिल्कुल उल्टा है। कितना अच्छा होता अगर मेरा तरीका मैं तुम्हें समझा पाता या तुम्हारा तरीका मैं ग्रहण कर पाता। परन्तु अब तो यह असंभव है। कमल को यहां रख लेने में मेरे मन में तुम्हारा भी विचार रहा करता था कि वह तो भी तुम्हें संतोष पहुंचा सकेगा और मैं स्वतंत्रतापूर्वक अपनी उन्नति का मार्ग साधने में लग जाऊंगा। तुम मेरे अपराधों को उदारतापूर्वक माफ कर सको तो कर दो व परमात्मा से प्रार्थना किया करो कि मुझे सद्बुद्धि प्रदान करे। मुझमें जो कमजोरियां आ गई हैं या आया चाहती हैं, उन्हें न आने देवें, और जो हैं वे जल्दी निकल जायं।

तुम भी अपनी कमजोरियां तुम्हारे स्वास्थ्य को बर्दाश्त हो, उस मुताबिक धीरे-धीरे, निकालने का प्रयत्न रखोगी तो उसका लाभ तुम्हें अवश्य मिलेगा। साथ में मुझे व सब घर के लोगों को सुख व शांति मिलेगी। तुम्हारे प्रति सबका प्रेम व भक्ति बढ़ेगी। ज्यादा क्या लिखूं ? तुमसे कई बार बहुत स्पष्ट बातें कीं व करने का प्रयत्न किया, परन्तु उससे तुम्हें भी लाभ नहीं पहुंचा व मुझे भी शांति नहीं मिली। इसलिए चर्चा बंद करनी पड़ी, क्योंकि झूठ बोलने का मौका आवे या विचार भी आवे तो उससे तो कोई लाभ पहुंच ही नहीं सकता।

अब मेरी तुमसे यही प्रार्थना है, जो बहुत वर्षों से रही है, और यह तुम भली प्रकार जानती हो—कि तुम मेरा पांव न धोया करो। मुझे उस समय प्राय: हमेशा ही दु:ख पहुंचता है। कारण साफ है। मैं अपने-आपको उसके योग्य नहीं समझता। आशा है, इस प्रार्थना का तुम उल्टा अर्थ नहीं करोगी। मैंने जिस भावना से लिखा है, वही अर्थ लोगी। मुझे अब संसार के मामूली साधारण मनुष्यों की पंगत में आने दो। शायद उसके बाद मुझमें उत्साह पैदा हो और जीवन में रस आये। आज जो रस दिखता

है उसमें बनावटीपने का भाग ज्यादा है । जबतक एकांत जीवन म मनुष्य को रस या उत्साह नहीं मालूम होता है तबतक बाहरी उत्साह से क्या लाभ हो सकता है ? मेरी बीमारी तो अब मानसिक है । वह तो किसी चतुर व अनुभवी डाक्टर की संगति से ही निकल सकेगी। तुम मुझे मेरी बीमारी दूर करने के हेतु लंबी मुद्दत के लिए कोई उदार सेवाभावी, मेरे प्रति प्रेम रखने वाले चरित्रवान सेवक के साथ किसी उपयुक्त डाक्टर के पास जाने के लिए प्रसन्नतापूर्वक छुट्टी दे सकोगी तो उसमें हम दोनों का बड़ा कल्याण होगा । संभव है, आगे जाकर फिर संतोष के दिन आवें । प्रयत्न करना हमारा कर्तव्य है, फल ईश्वर के हाथ है । मैंने अभी हिम्मत बिल्कुल तो नहीं हारी है । ईश्वर हमें सद्बुद्धि दे ।

जमनालाल का वंदेमातरम्

: १७३ :

(जवाब दिया, २९-१-३८ को)

लो भई, चिट्ठियों से बात करने में भी कुछ विशेषता होगी ! भगवान भक्तों को कसौटी पर कसता ही है । पर अभी कुछ बिगड़ा नहीं है । भगवान जब समय-समय पर हाथ पकड़कर रक्षा करता आया है, तो अंत भी वह जरूर सुधारेगा ही ।

मैं तो आपको योगभ्रष्ट योगी ही मानती आई हूं । आपके ही पीछे दुनिया का सारा वैभव देखा और उसके सिवाय और किसी स्वर्ग की इच्छा नहीं की । मोक्ष की तो इच्छा करती ही नहीं ।

आपके पैरों के जल का आचमन जबसे मैंने शुरू किया है तबसे एक ही इच्छा रही है । चरणोदक हमेशा शीशी में भरकर साथ रखती हूं कि जहां भी रहूं वह साथ रहे और मरूं तो मेरे मुंह में डाला जाय। अब तो निश्चय ही कर लिया है कि यदि चरणोदक अंतकाल में मिलेगा तभी गंगाजल-तुलसी वगैरा प्रेम से लूंगी । इच्छा तो यही है कि मेरे मरते समय आप अपने हाथ से अपना चरणोदक दें । पीछे चाहे गंगाजल, तुलसीदल मिले न मिले । तब चैतन्यदेव से परे पहुंचने की ताकत आ जायगी ।

'अंध, बधिर, क्रोधी, अति दीना'—यह बात अभी तो हिन्दू धर्म से निकलना कठिन है । और आपके पश्चात्ताप का तो कोई कारण है नहीं ।

आपसे किसीका बुरा तो चाहा ही नहीं गया। पर एक बात जरूर है। थोथी चर्चा ही वातावरण में ज्यादा रही। मैं सबको सुखी कर दूं, यही भावना दुखदायी बन गई है।

मैं आपको नर मानूं कि नारायण! यही मेरी समझ म नहीं आ रहा है। मेरी कमजोरियां आपके तेज में बाधक हो रही हैं। यह प्रत्यक्ष देख रही हूं। इसमें मेरा कोई पाप आड़े आ रहा है क्या?

'हिम्मते-मर्दां तो मददेखुदा' की तरह जो एकदम हिम्मत कर लूं तो सारा वातावरण तो तेजमय बना हुआ है ही, सोने में सुगंध हो जाय। पर मेरा मन तो इतना 'नरवस' हो गया है कि आपको आकर वापस जाते देखते ही सारे शरीर में सनसनी होने लगती है। कहीं काबू के बाहर न हो जाऊं! उपाय मेरे पास नहीं रहा है। आत्मा एक है, मिट्टी में क्या मोह है। और आत्मा ही परमात्मा है, यह सच है। पर क्या करूं?

आपको तो मैं क्षमा क्या ूं? मैं खुद कई बार आपसे मांगना चाहती हूं। पत्र के पढ़ने पर तो कुछ रहता ही नहीं। केवल आपकी इच्छा पूरी करूं, यही इच्छा है। और भगवान जरूर वह दिन दिखायगा कि आपको पूर्ण-शांति मेरे ही जरिये मिलेगी। मैं प्रयत्न करूंगी। आप मुझपर खुश रहा करो। आपके दिल में तो मैं ही रहती हूं और आशा है कि आगे भी रहूंगी।

अब मन में है वह बात भी लिख दूं। वैसे तो आप जानते ही हैं, पर मुंह से कह दोगे कि अमुक बात तू ठीक कहती थी, लेकिन मैंने उसपर ध्यान नहीं दिया, उस दिन मुझे आनंद मिलेगा। प्रमाण में हम सब घर के एक से ही हैं, पर आपको तो मैं ही पार उतारूंगी ना। फिर आशा, प्रेम व क्रोध जाय कहां? पर मैंने अपना विश्वास ही खो दिया, उसको कैसे प्राप्त करूं? 'मन न मिले जासे मिलण्णे किस्यो, पर लगी ह प्रीत वांसे परदो किस्यो।' सो आपके पत्र की बात 'टेम्परेरी' मानती हूं, नहीं तो खतरनाक है

दो बातें मुझे लिखनी हैं —

१. यह सही है कि मुझे क्या करना चाहिए यह मैं जानती हूं। पर इसका यह तो मतलब नहीं होना चाहिए कि मैं मन की बात भी किसीसे कह-सुन न सकूं।

२. आप जो कुछ कहते हैं, उसका आपकी च्छानुसार पालन नहीं

होता है, सो मैं मानती हूं। लेकिन पालन क्यों नहीं होता, इसपर आप विचार नहीं करते। यही सारी उलझन की जड़ है, जो मुझे न मरने देती है, न जीने। क्रोध में रोकर अपना दुःख आपको सुनाऊं तो आपकी बीमारी का डर रहता है, और न सुनाऊं तो कबतक सहूं—आखिर कोई सीमा तो होनी चाहिए न?

माता तो जैसे बच्चे का दोष भूले वैसे ही पति का। अनुचित वाक्य, अपमान, निंदा, तिरस्कार भी मेरे लिए तो चंदन हैं। कृष्ण-लीला भगवान ने भले ही दिखाई, पर मन की शांति मिलने की आशा पूरी करना भी तो आवश्यक है। समझाने से ही मन समझे कैसे? जबकि पास में साधन भी हों। थोड़े से ही तो यह मन बिचारा खुश होनेवाला है। आप जानते हैं, मेरे मन की ताकत कितनी है। सो दुखी न करके मुझे संतोष से समझा दीजिये, भूलचूक क्षमा कीजिये।

जानकी के प्रणाम

इस पत्र का जवाब जमनालालजी ने २९-१२-३८ को इसी पत्र के नीचे लिख दिया था :

तुम्हारा लिखना बहुत अंशों में ठीक है। मैंने अब व्यवहार में तुम्हें सन्तोष पहुंचाने का प्रयत्न अधिक प्रमाण में करने का निश्चय किया है।—ज०

जमनालालजी के उपर्युक्त जवाब पर जानकीदेवी का यह नोट है—

दो बातें पूरी कीं। प्रश्न यह है कि अंदर तो सच्चा प्यार है ही, परन्तु प्रकट में भी प्यार मिलेगा, तभी शांति मिल सकेगी। फिर कुछ भी कहेंगे तो दुःख नहीं होगा। दुःख तो तभी होता है जब और कोई कहने आता है, और वह सब सुनना पड़ता है। तो यह सब साफ होने पर ही आगे का रास्ता साफ होगा न? दबाने से तो नहीं होगा।

जानकीदेवी

: १७४ :

दिल्ली, ३१-१-३९

प्रिय जानकी,

मैं कल रात को यहां आया हूं। शास्त्रीजी व चिरंजीलालजी मिश्र बारडोली में मिल लिए थे। दोनों जयपुर गये हैं।

तुम्हें भी जयपुर के लिए मेरे साथ रहने की इच्छा तो थी ही, लेकिन

अभी थोड़े दिन आराम ले लोगी तो जयपुर के काम में ज्यादा उपयोगी हो सकोगी। मैंने पू० बापूजी से भी जाते समय यह कह दिया था। उनकी भी यही राय रही कि अभी आराम लेकर बाद में काम करना ठीक रहेगा। बापूजी ता० २ को वहां आने ही वाले हैं।

जयपुर की खबरें तो तुम्हें मिल ही जाती होंगी। खास कोई खबर होगी तो मैं दिलवा दूंगा। अखबारों में तो अब शायद कई झूठी खबरें भी आयेंगी। उनको लेकर चिंता करना ठीक नहीं।

चि० रामकृष्ण पहुंच गया है। सभी जगह ठीक उत्साही वातावरण है। तुम खूब प्रसन्न व उत्साहपूर्वक रहोगी तो स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। काम भी खूब कर सकोगी। वर्धा का मुहूर्त खूब ही अच्छा हुआ है। बच्चों को प्यार, आशीर्वाद।

जमनालाल का वंदेमातरम्

: १७५ :

मोरांसागर (जयपुर राज्य की जेल),
२१-२-३९

प्रिय जानकी,

यहां से ता० १५-२ को मैंने तुम्हारे नाम पत्र व दूकान के नाम तार भेजा था।

यह स्थान जयपुर से करीब ८० मील की दूरी पर है। दोसा, लालसोट होकर यहां आना पड़ता है। स्थान रमणीक है। जलवायु भी उत्तम है। यहां बड़ा तालाब भी है। आजू-बाजू पहाड़ होने से बहुत ही मनोहर मालूम देता है।

सुबह प्रायः पांच मील करीब घूम लेता हूं। शाम को एक घंटा चर्खा कातता हूं। सर्वोदय के तीन अंक तो पूरे पढ़ डाले। तीन और बाकी हैं। तीन-चार रोज में पूरे हो जायेंगे। पुलिस के अधिकारी व सिपाही वगैरा मुझे आराम पहुंचाने का ख्याल रखते हैं। अच्छे लोग हैं।

यहां आस-पास न तो तार-घर है, न पोस्ट आफिस, न रेलवे, और न मोटर की राहदारी। इससे एकांत का पूरा आनंद मिलता है। मिलने-जुलने-वालों के लिए भी यह स्थान काफी दूर होने के कारण वह झंझट भी नहीं

रहती है। पूरा प्रयत्न करने पर आठ रोज के बाद कल तूवर (अरहर) की दाल आई है। मेरी इच्छा स्वाभाविक तौर से ही पूरी हो जाती है, याने भोजन में सिर्फ दाल, रोटी व एक साग होता है।

जयपुर से फल, साग वगैरा अधिकारियों ने भेजे थे। आगे के लिए मैंने फल भेजने को तो मना करवा दिया है। अखबार एक बार जयपुर से ता० १५ को आये थे, बाद में अभी तक नहीं आ सके। क्या करें बेचारे अधिकारी लोग, वे भी बहुत-सी झंझटों में फंस रहे हैं। यहां मोटर से भेजें तो करीब १५ गैलन तेल आने-जाने में लग जाय। वैसे तो एक सुंदर मोटर मेरी नज़र के सामने दिखाई देती रहती है।

मेरी समझ में मेरे अकेले के ऊपर जयपुर सरकार का पांच सौ से ज्यादा मासिक खर्च हो रहा है। अगर मुझे जेल में या अन्य मित्रों के पास रख देते तो बहुत ही थोड़े में काम हो जाता। इन लोगों का इतना फिजूल खर्च होते देख बुरा भी मालूम देता है। परन्तु उपाय क्या? जहां रुपयों की छूट हो वहां ठीक या बेठीक खर्च तो होगा ही।

यह तो यों ही थोड़ा-सा वर्णन लिख दिया। वैसे मैं शरीर से शांत, सुखी व उत्साही हूं। उत्साह बढ़ता हुआ दिखाई देता है। पू० बापूजी का स्वास्थ्य ठीक रहता होगा।

पू० मां को प्रणाम कहना। इस पत्र के साथ सामान की फेहरिस्त भेजी है[1], वह जयपुर आई. जी. पी. की मारफत भिजवा देना।

---

[1] सामान की फेहरिस्त इस प्रकार है—

१. चख की छोटी व बड़ी, दो-दो मालें,
२. जपने की माला,
३. पूनी अच्छी,
४. लाल दन्तमंजन, तीन शीशी,
५. एक जोड़ी चप्पल सादी व एक जोड़ी पठानी ढंग की, पीछ से बांधन की। वहां बंगले पर होगी, नहीं तो मेरा नाप तो है ही, बनवाकर भिजवा देना।
६. मेरी जीवनी की एक-एक पुस्तक,

तुम 'सर्वोदय' मासिक अगर नहीं पढ़ती हो, तो जरूर पढ़ना शुरू कर देना। तीसरे अंक में पृष्ठ ३८ पर विनोबा का प्रवचन—'निर्दोष दान और श्रेष्ठ कला का प्रतीक खादी'—जरूर पढ़ना व औरों को पढ़ाना। बापू के पत्र योग्य हैं। और अंकों में भी काकासाहब वगैरा के माननीय लेख भी पढ़ने रहते हैं।

जमनालाल का वंदेमातरम्

पुनश्च—यहां से मोरध्वज राजा की नगरी 'मोरां' चार मील पर है। वहां गर्म पानी का सुन्दर कुंड है। कई शिलालेख भी बतलाते हैं। गुफाएं बहुत हैं। पर्वत का नाम रत्नगिरी है। इस पहाड़ पर ब्राह्मी, सफेद मुसली, पीपल, खाने के पान वगैरा बहुत-सी जड़ियां होती बतलाते हैं।

: १७६ :

मोरांसागर,
२२-२-३९

प्रिय जानकी,

कल तुम्हें लिखा हुआ पत्र वापस शाम को आया, क्योंकि रास्ते में दूसरा आदमी चिट्ठियां व सामान लेकर आ रहा था। इसलिए वह भी वापस आ गया। वह और साथ में यह दूसरा पत्र भी भेज रहा हूं।

तुम्हारा बिना तारीख का पत्र मिला। मेरा ता० १५-२ का पत्र पीछे से मिल गया होगा। मुझे यहां पूरी शांति व संतोष है। बहुत दिनों की इच्छा पूरी हो रही है। मैं तो इतनी भीड़ भी नहीं चाहता था। यहां पुलिसवालों की भीड़ तो है ही। रात को बंदूकों का पहरा भी लगता ही है।

तुम कमला के जापे का काम पूरा करके जब स्वास्थ्य ठीक हो, मन में पूरा उत्साह हो और मां की इच्छा ही तभी यहां आ जाना। जल्दी की जरूरत नहीं।

---

७. 'सावधान केस' व 'जयवन्त केस' के फैसले की नकलें (मैंने अभी तक नहीं पढ़ी हैं।) अपील का क्या हुआ ?

८. आश्रम-भजनावली, दो प्रतियां।

९. उर्दू सीखने की किताबें (शायद अपने वहां होंगी)।

बैठने, उठने, मालिश वगैरा की बातों का ख्याल रहेगा तो रख लिया जावेगा। यहां आने के बाद सिर्फ सिर की ही मालिश करता हूं। आगे चलकर बदन की भी कराना शुरू कर दूंगा। मेरे पत्रों की ज्यादा आशा नहीं रखोगी तो मुझे अधिक शांति मिलेगी। खाने का सामान बाहर से आया हुआ मैं पसंद नहीं करता। मुझे जरूरत होगी, वह मिल जायगा। कम-से-कम यहां तो खाने-पीने के झगड़ों से मुक्त रहें। समें मुझे व तुम सबोंको संतोष होना चाहिए।

विट्ठल के भाई के मरने के समाचार उसे कल ही कह दिये। उसे जाना हो तो जा सकता है, यह कह दिया। वह कहता है, अच्छा हुआ भाई दुःख से मुक्त हो गया। वह बिल्कुल नहीं जाना चाहता। मेरी सेवा खूब प्रेम व श्रद्धा से करने का ख्याल रखता है। आज उसके भाई का १३वां दिन है। मैंने कहा, यहां एक-दो ब्राह्मण जिमा दें। उसने कहा, कोई जरूरत नहीं है। पक्का सुधारक भी है।

जमनालाल का वंदेमातरम

: १७७ :

मोरांसागर,

(जवाब दिया, २२-२-३९ को)

पूज्यश्री,

मैं आपके लिए सुरक्षित शांति—व मेरे लिए आनंद-रूपी निर्भयता चाहती थी। भगवान बड़ा ही अनुकूल है।

कमल की कड़ाई और सावित्री की स्पष्टता से मेरी दुविधा के मिटने में मदद मिल रही है। मैं बड़े आनंद में हूं। यंगसाहब से कहिये कि सीकर की रानीसाहब को लेकर आती हूं। रावला खुलवा दें।

आपकी उदारता की अधिकता से हम सब थक गये हैं, सो अब हमारे दुःख-सुख का ख्याल न करें। सब अपने स्वतंत्र हैं।

आप जयपुर के सिवाय दूसरा ख्याल न करें।

बापूजी की चिट्ठियां आती रहती हैं। उन्हें जो जरूरत होती है, सो उसी समय मंगवाकर भिजवा देते हैं। वह मुझसे संकोच करेंगे, इसलिए मैंने २-३ चिट्ठी भेज दी थीं कि बंगले पर ही आ जाओ, मैं आपके साथ रहूंगी। पर

उन्होंने कहा कि जयपुर व राजकोट का मामला उलझ गया तो आना नहीं होगा। बापूजी की सेवा तो भगवान देते जाते हैं। आपके सामने तो हमारा पता भी नहीं लगता था। कमल भी समझदारी से रहता है।

किसी भी तेल की मालिश रोज कराते होंगे। सीधा सोना हो तो सिर के नीचे कपड़े की गोल चूमर करके विट्ठल रख देगा। सो उससे सीधे रहोगे और सिर में जमीन गड़ेगी नहीं।

तैरनेवाली पुरानी सूती गंजी है, सो भेजने का विचार है। उसे रात-दिन पहने रहने से पेट को सहारा मिलेगा। आप कातते समय व वैसे भी बैठते समय में बापूजी जैसी पीठ पीछे लकड़ी की पट्टी रखते हैं, वैसी पट्टी रखें व विनोबा जैसी छोटी पालथी लगावें। घुटने पर घुटना आ जावे तो बस, वह पेट के लिए पट्टा जैसे हो गया। जेल में भी यह एक दूसरी जेल तो हो ही जायगी, पर आपको खुशी होगी। कातते वक्त माला सामने रखी हो तो राम-राम भी रटा जा सकता है, बस। पर आपका तो बिना जपे ही जाप है। मेरा सुधारना जरूरी है। भगवान वह भी पूरी करेगा।

ज्यादा खबर देने-लेने की कोई जरूरत नहीं। वहां तो बेफिक्री रखिये। मेरा मन खुश है। सावित्री दिनोंदिन संतोष से रहती है। प्यार करती है। बैठी है। आप सब हालत में मना तो लेते ही हो।

सब मजे में हैं। आपकी गैरहाजिरी में दूकान स्वर्ग है।

जानकी का प्रणाम

: १७८ :

वर्धा, २६-२-३९

पूज्यश्री,

खाने-पीने का अब कुछ विचार नहीं है। पर ब्राह्मी की चटनी खाने से मगज को लाभ होता है, स्मरण-शक्ति बढ़ती है।

छोटेपन में जो माला आप फेरते थे, वह मेरे पास है। मैं तो सोते समय अंगुलियों में से हाथ में लपेट लेती हूं। जागूं जब राम-राम, नहीं तो लिपटी रहती है। खास समय की जरूरत नहीं है। सिरहाने ही पड़ी रहती है। नींद न आये, तब मदद करती है।

मेरा वजन इलाज के समय ११५ पौंड था, अब १२० पौंड है। नींद अच्छी आती है।

'सर्वोदय' देख लूंगी। आपने लिखा वह सब भी।

लक्ष्मण प्रणाम कहता है। काकीजी कहती हैं कि मेरे बारे में कुछ नहीं लिखा।

जानकी का प्रणाम

: १७९ :

मोरांसागर,
होली, ५-३-३९

प्रिय जानकी,

तुम्हारा ता० २६-२ का लिखा पत्र चि० दामोदर व रामकृष्ण ने ता० १-३ को मुझे दिया। मेरे दोनों पत्र मिल गये थे जानकर संतोष हुआ।

नागपुरवालों को सीकर ले जाना तो ठीक नहीं रहेगा। श्री गोपीजी तकलीफ पायेंगे तथा वे इन बातों का महत्व भी नहीं समझते। अपनेको जबरदस्ती संकोच व शर्म में डालकर किसीको तैयार नहीं करना है। उत्साह हो तो चि० शांता को साथ ले जा सकती हो। चि० उमा की परीक्षा हो जाने के बाद वह आ सकती है। चि० मदालसा के बारे में तो चि० श्रीमन्नारायण व विनोबा उसके अंदर का उत्साह व तैयारी देखकर जो निश्चय करें, वही ठीक रहेगा। चि० सावित्री, मदालसा त्रिपुरी-कांग्रेस जायेंगे सो ठीक। चि० बिच्छू (राहुल) का सुन्दर फोटो मिल गया। बड़े ठाठ से व ऐंठ से, प्रसन्नतापूर्वक फोटो खिचवाया है। फोटो भेज दिया सो अच्छा किया।

चि० विट्ठल खूब राजी है—पीर, बवर्ची, भिश्ती, खर चारों का काम वही करता है। मेरे पास उसका पूरा मन लग रहा है। वह तो रात-दिन इसी कोशिश में था कि उसे मेरे पास रहने को मिले। सो उसकी इच्छा सफल हो गई। बीच-बीच में उसकी स्त्री की खबर लेती रहना।

मेरी जन्मपत्रिका के अनुसार उज्जैन के किसी नामी ज्योतिषी ने मेरा भविष्य छपवाया है। मुझे भी भिजवाया है। देखें, कितनी बातें मिलती हैं!

मुझे तो भविष्य उज्ज्वल ही दिखाई देता है। कम-से-कम मेरा आध्यात्मिक कल्याण तो अवश्य है ही।

सोते समय बड़ा तकिया तुम्हारा पत्र आने के बाद निकाल दिया। अब छोटे से ही काम ले रहा हूं।

तैरनेवाला कपड़ा नीले व काले रंग का होने के कारण रात-दिन पहनना, खासकर रात को, पसंद नहीं है। मुझे सफेद कपड़े के अलावा दूसरा कपड़ा देखने में भी अच्छा नहीं लगता, फिर पहनने की तो बात ही कहां रही। समुद्र में नहाने की बात दूसरी है। इतने पर भी तुम्हारा आग्रह रहा तो वह भी कर देखूंगा।

माला पहुंच गई है। यहां भजन तो ज्यादा होता ही रहता है। माला का उपयोग भी होगा ही।

तुम्हारा वजन इलाज के वक्त ११५ था, अब १२० है। नींद ठीक आती है। इससे मालूम देता है कि मगज भी ठीक हो रहा है। बिना मगज ठीक हुए नींद बराबर नहीं आ सकती।

मेरा वजन २०५ रतल है। अब मुझे वजन कम करने का उत्साह नहीं रहा, क्योंकि मेरे सामने श्री यंग—यहां के आई०जी०पी०—का उदाहरण है। उनका वजन मुझसे बहुत ज्यादा था, तीन सवा तीन सौ रतल याने पक्के ४ मन के वह किसी समय थे। इतने भारी होते हुए भी उनमें इतनी फुर्ती है कि आश्चर्य होता है। वह बहुत कम खाते हैं। सोते भी बहुत कम हैं। दारू नहीं पीते, सिगरेट भी नहीं पीते। ऐसे अच्छे व्यक्ति की शक्ति का किसी अच्छे काम में उपयोग होता तो कितना अच्छा था। मुझे तो अभी भी आशा है कि भविष्य में कोई समय आयेगा जब उनमें जरूर परिवर्तन होगा। यह व्यक्ति बहुत ही उदार व दानी सुना जाता है। जो पगार मिलती है, उसमें से बहुत ज्यादा तो विद्यार्थियों को, सिपाहियों को, गरीबों को बांट देता है। अपने ऊपर बहुत कम खर्च करता है। याने जो जयपुर में मिलता है वह पैसा बहुत ज्यादा प्रमाण में वहीं खर्च कर देता है। इस व्यक्ति के प्रति मेरा आदर काफी बढ़ा है। किन्तु जो काम उसके हिस्से में आया है, उसका जब विचार करता हूं तो दुःख होता है और उसके ऊपर दया आती है। परमात्मा की लीला वही जाने! मैंने तो इनका नाम मेरे वजन घटाने के उदाहरण के

प्रसंग में लिखना चाहा था, किंतु मैं तो प्रवाह में इनकी जीवनी ही लिख गया।

फल वगैरा की जरूरत समझूंगा तो खाता रहूंगा। तुम तो वहांसे जब कभी कोई आये तब संतरे भिजवा दिया करना। खाने से ज्यादा बांटने में सुख मिलता है।

मेरी दिनचर्या मामूली तौर से ठीक चल रही है।

सुबह ५।।-६ बजे उठना, हाथ-मुंह धोना।

६।।-७ प्रार्थना, भजन वगैरा।

७-९ घूमना। वर्षा या हवा नहीं रही तो पहाड़ की तरफ जंगल में करीब पांच मील, नहीं तो अढ़ाई मील डेरे में ही।

९-१०।। पढ़ना।

१०।।-११ स्नान

११-१२ भोजन—सुबह रोटी गेहूं व बाजरे की, मूंग की दाल, एक साग।

१२-१२।। घूमना।

१२।।-२ आराम।

२-५ पढ़ना, कभी थोड़ी देर शतरंज खेलना। सर्वोदय के सातों अंक पूरे कर दिये। जयपुर से अखबार वगैरा इन दिनों सप्ताह में दो बार के करीब आ जाते हैं, उन्हें देखना।

५-६ घूमना।

६-६।। निवृत्त होना।

६।।-७। भोजन।

७।।-९।। चर्खा, रामायण, भजन।

१० बजे सोना।

आज मैं गाय का घी खुद खरीदकर लाया, एक किसान के यहां से। एक रुपये का सवा सेर मिला। इधर के लोगों की आर्थिक हालत बहुत गरीब है। यहां दूध-घी कम मिलता है। लेकिन जो मिलता है, वह अच्छा मिलता है।

पू० बा को प्रणाम लिख भेजना।

जमनालाल का वंदेमातरम्

: १८० :

मोरांसागर,
७-३-३९

प्रिय जानकी,

तुम्हें ता० ५-३ को पत्र लिखा था, परंतु वह भजा नहीं जा सका। इस पत्र के साथ भेज रहा हूं। इन छः दिनों में कोई अखबार या तार-चिट्ठी नहीं मिली है। मैंने जो पत्र सेक्रेटरी, कौंसिल आफ स्टेट, जयपुर के नाम २५-२ को लिखा था अभी तक उसका जवाब भी नहीं मिला है। मैं आज फिर लिख रहा हूं—मुलाकात व अखबार आदि के बारे में।

यहां होली-छारंडी हमारे रक्षकों के साथ अच्छी मनाई गई। गये साल रांची में मनाई थी व इस साल मोरांसागर में। कल पहली बार चावल के दर्शन हुए। मूंग चावल, मालपुए, खीर वगैरा बने थे। यहां राजपूत, जाट, गूजर, दरोगा, मुसलमान, मेहतर वगैरा सब जाति के लोगों के साथ होली-जैसे महत्वपूर्ण त्योहार पर मैंने भोजन किया। यहां पान तो बहुत ज्यादा होते हैं, परन्तु पान का साग किसीको बनाना नहीं आता, नहीं तो फिर हरे साग की कोई अड़चन नहीं रहती। तुम्हें पानों का साग बनाने की विधि आती हो तो लिख भेजना।

जमनालाल का वंदेमातरम्

पुनश्च——ता० १-३ के बाद की दुनिया का या अन्य खबरों का मुझे कुछ भी पता नहीं लग रहा है।

: १८१ :

वर्धा, ७-३-३९

पूज्य श्री,

आपके लम्बे-लम्बे पत्र और खबरें सब मिलती रहती हैं। दादा धर्माधिकारी को आपका पत्र पढ़ा दिया था। जयपुर-आन्दोलन के बारे में मदद करने को सर्वोदय में लेख लिखने के लिए उन्हें कहा है।

मेरी कमर का दर्द कम तो है, पर अभी कुछ समय लगेगा। दादीजी, अनसूया, शांताबाई व कदाचित नागपुरवाली दादीजी मेरे साथ सीकर जायं।

आपको तो मौका मिला है, मस्त रहो। आप १-२ साथी मांग सकते हो; पर सबके साथ तो हमेशा का झंझट है ही। वाकी आपकी समझ को तो आप ही पहुंच सकते हैं। मैंने तो योंही लिख दिया। मेरे लिखने का न तो उत्तर चाहिए, न विचार करना। स्वभाव की आदत। मन में आया कह दिया। यहां तो सुनने-सोचने को मगज भरा रहता है।

मैं मिलने को आने में डरती हूं। वैसे तो मिलना होगा तो इच्छा होना स्वाभाविक है। न मिलने से जो नहीं दुखता, पर वापस छोड़कर आने पर दुःख होगा।

राजकोट में बापूजी का उपवास पांच दिन के बाद छूटा। कैदी भी छूट गये और समझौता हो गया। आपको तार ता० ७ को दिया, सो मिला होगा।

मैं बड़ी नसीववाली हूं। भगवान सबकी इच्छा पूरी करता है।

आपको समय मिले व स्वाभाविक इच्छा हो तो पत्र लिखना।

भगवान मुझे भी ज्ञान देवेगा सही।

जानकी का प्रणाम

: १८२ :

मोरांसागर,
९-३-३९

प्रिय जानकी,

सात रोज के बाद, कल शाम को मुझे पांच तार, पत्र व अखबार मिले। इन सात दिनों तक मुझे दुनिया का, बल्कि कहो कि यहां से दो कोस तक का भी कुछ पता नहीं था। पू० बापूजी के उपवास करने व तोड़ने की एवं राजकोट के फैसले की खबर भी कल एक साथ ही मिली। कमला के लड़की हुई, उसका तार भी कल ही शाम को मिला। मैंने आज तार तो भिजवाया है। कमला को बधाई व आशीर्वाद देना। मुझे तो लड़की होने की खुशी है। लड़की तन्दुरुस्त होगी।

आज विट्ठल ने भी सुबह शेर देखा। पांच बजे, जब मैं मुंह-हाथ धो रहा था तब। मुझे तो अभी देखने को नहीं मिला। उसके पैरों के चिह्न व उसकी गुफा जरूर देख ली है। लोगों ने कहा कि वह उसमें सोया पड़ा है।

यहां तो छोटे-छोटे लड़के भी शेर से नहीं डरते हैं। क्या तुम्हारी भी देखने की इच्छा है ? अब तो मुलाकात के लिए छुट्टी हो गई है। जयपुर यंगसाहब को सूचना करके आना। मिलने जो चाहे आ सकता है।

जमनालाल का वंदेमातरम्

: १८३ :

मोरांसागर,
१९-३-३९

प्रिय जानकी,

इधर तुम्हारा पता नहीं लगा। तुम कहां हो ? तुम सब अच्छे होगे। मेरे मन को ठीक समाधान, शांति और एकान्त का सुख व अनुभव हो रहा है। परमात्मा की दया है। मुझे इसकी बहुत आवश्यकता थी।

चि० सीताराम चौबे की मृत्यु से बुरा तो मालूम हुआ, दुःख भी हुआ। परन्तु वह तथा घर के लोग रात-दिन के संकट से मुक्त हुए। उसकी स्त्री को धीरज देना व समझाना। चि० गजानन्द को भी मेरी ओर से समाधान व शांति दिलाना। चि० कमला व बच्ची राजी होंगी। लालाजी (राहुल) झेबूजी (शरद नेवटिया) व गौतम आनन्द से होंगे। चि० सावित्री व मदालसा से कहना कि त्रिपुरी का पूरा सविस्तार वर्णन, वर्धा से निकलकर, वापस आये तबतक का, लिखकर भेजें। सुख-दुःख, विनोद, क्रोध, झुंझलाहट आदि का पूरा चित्र होना चाहिए, ताकि जब मैं पढ़ूं तब मुझे सावित्री, मदालसा की आंख, नाक, मुंह, माथे की सलवट, भौंहें चढ़ना वगैरा का पूरा ख्याल आ जाय।

उपरोक्त पत्रों से हँसने की सामग्री मिलेगी ही। तुम्हारे पत्र भी कभी-कभी कवितामय होते हैं। परन्तु, यों करो और त्यों करो से नाक में दम आ जाता है। यहां तो आजाद रहने दिया करो। अबके अच्छी कविता बनाकर भेजना।

जमनालाल का वंदेमातरम्

पुनश्च—चि० शांता को भी कहना कि वह भी अपना अनुभव लिखे। उसे तो खूब हैरानी हुई होगी।

: १८४ :

पूज्यश्री,

वर्धा, २५-३-३९

शांत और एकांत करें पुकार
पर आदत से लाचार
मान घर-भर एक समान;
सो किसको-किसको दें दोष ?
बीच में जो पड़ें उसीपर रोष ।

मन के मालिक हैं आप
पर शरीर पर काबू होता नहीं;
इसीसे रोग का अंत होता नहीं ।
मिले जो खाने को अपने-आप,
तो रुचि-अरुचि का नहीं उसमें संताप;
तभी तो होता है नित ताप ।

पैर की चोट का सरल इलाज—
लगाओ टिंचर, रूई लपेटो
और पट्टी दो बांध ।
ऐसा करो दिन-रात
तो दर्द होय तुरत काफूर ।
चार साल की मोच थी मेरी
हो गई थी इसी तरह निर्मूल ।

ये दो बातें हो जायं,
तो होगा विटठल पास ।

पर रहो आप शांत और आजाद,
लिखने का मानो मत कुछ भार ।

याद रह जाय उसका ही बस भाग
उत्तर की हमें जरा नहीं है आस।

आपका १९ का पत्र मिला। आपने कविता मांगी थी, सो झगड़े के रूप में पांच-दस मिनट में कच्ची कर डाली है। किसीको दिखा भी नहीं पाई और औरतों के छूटने की खबर आजाने से पत्र भी ४ रोज से नहीं डाला।

आप खांसी के लिए सोते वक्त मुलेठी को, जो यहां से भेजी थी, पीसकर शहद में मिलाकर चाटें तो अच्छा है। शहद भी भिजवाया था, और चैत्र में नयें नीम की पत्ती काली मिर्च के साथ खाया करें। मिट्टी मिली हो तो अच्छा। न हो तो अकेली भी लाभकारी है।

मैं बड़ी सुख में हूं। उमा, राम, सावित्री सबकी व्यवस्था दुकान पर मन माफिक है।

आप अगर जल्दी छुटकर आ गये तो कई लोगों के मन-की-मन में रह जायगी। वैसे आपको भी तो छुटने का डर तो रहता ही है। डर तो मुझे भी लगता है कि कहीं आपके छूटने का तार सचमुच ही न आ जाय। मैं तो बड़ी सुख में हूं; पर आपको जो सुख मिलेगा, वह तो और ही बात होगी।

जानकी का प्रणाम

: १८५ :

मोरांसागर,
१-४-३९

प्रिय जानकी,

तुम्हारा ता० २५-३ का लिखा हुआ मेरे व विट्ठल के नाम का पत्र आज मिला। तुम्हारी कविता दो बार तो पढ़ ली है, और भी पढ़नी पड़ेगी। मेरे आफीसर को भी तुम्हारी कविता में ठीक रस आ रहा है।

अब तो इस पहाड़ी जंगल में मन लगता जा रहा है। ज्यादा दिन रहना पड़ा तो शायद इस भूमि से प्रेम हो जाय।

विट्ठल के घर का एक पत्र ता० १२-३ का लिखा हुआ आज आया। उसमें उसकी स्त्री को कई दिन तक ज्वर आया, यह लिखा है। अब वह ठीक होगी।

तुम्हारे स्वास्थ्य का हाल जाना। वजन थोड़ा बढ़ा, यह तो ठीक है। परन्तु दर्द तो चला जाना चाहिए था।

जमनालाल का वंदेमातरम्

: १८६ :

मोरांसागर,
१३-४-३९

प्रिय जानकी,

मेरा स्वास्थ्य उत्तम है। मेरा वजन शुरू में २०५ व बाद में २०८ हुआ, अब १९६ है। मुझे ठीक मालूम दे रहा है। हलका शरीर रहने से उत्साह ठीक रहता है, आलस्य कम हो जाता है, जिसकी मेरे लिए बहुत जरूरत है। आजकल तो मैंने १०-१२ मील तक चलने का अभ्यास कर लिया है। इससे मुझे ठीक लगता है। अगर संभव हुआ तो दिनभर में पंद्रह मील तक तो अभ्यास बढ़ा लेने की इच्छा है।

आजकल मुख्य चार प्रोग्राम हैं—घूमना, पढ़ना, कातना और सोना। कभी-कभी थोड़ी देर शतरंज खेलना। आजकल में भोजन तो एक बार ही करता हूं। शाम को पपीता दूध वगैरा लेता हूं। इससे तबीयत ठीक रहती है। यहां का पानी भारी है, इसलिए भी यह प्रयोग ठीक रहता है। खाने में चावल छूट गये हैं, तूवर की दाल छूट गई, चुपड़े हुए फुल्के छूट गये। अब तो घी गरम करके उसमें थोड़ा हींग या प्याज बारीक काटकर दाल में डालकर खाता हूं। मूंग की दाल खूब रुचने लगी है। आजकल एक मिस्सी रोटी याने आधा हिस्सा जौ, पाव भाग गेहूं और पाव हिस्सा बेसन मिलाकर इसकी रोटी बनाते हैं। इसमें घी भी मोन में व ऊपर से लगाया जाता है। मेरे रक्षक की सलाह इन मामलों में बहुत उपयोगी व लाभकारक सिद्ध होती है।

मदालसा, शांता, उमा आदि अपना प्रोग्राम जिस प्रकार उन्हें उत्साह मालूम हो वैसा ही बनावें। मैंने तो मेरे ध्यान में जो आई वह सूचना कर दी थी। इधर भी घूमना उपयोगी व अच्छा ही है। परन्तु बिना मन हुए केवल मेरे लिखने के कारण इधर का प्रोग्राम न बनाया जाय।

विट्ठल राजी है। उसका वजन यहां आया तब १०० था, अब १०९ हुआ

है। वह घर की चिंता नहीं करता। खूब आनन्द व प्रेम से मेरी सेवा करता है। उसे भी आराम थोड़ा मिल जाता है, क्योंकि मेहमानों का भार बहुत कम रहता है। पर बीच-बीच में थोड़ी चिंता हो तो जाती है। उसके घर कहला देना।

जमनालाल का वंदेमातरम्

: १८७ :

मोरांसागर,
२६-४-३९

प्रिय जानकी,

तुम्हारे ता० १० व १६-४ के पत्र मिले। मेरा स्वास्थ्य उत्तम है। कल तो मैं आठ मील घूमकर आया। आज अब जा रहा हूं।

तुम्हारे डर व प्रेम के कारण जो फल वगैरा आते हैं, खाता हूं। आम रोज खाता हूं। वजन थोड़ा कम हो जाने से भी मन में शांति है।

तुमको सुख व शांति मिलती हो तो भले ही वह प्रयोग करती रहो। वास्तव में तो दूसरे ही प्रयोगों की ज्यादा जरूरत है।

कहां जाय कहां ऊपजे, कहां लड़ाए लड्ड।
ना जाने किस खड्ड में ये जाय पड़ेंगे हड्ड॥

देवलीवाले भागवतजी के पास जप करवाये और भागवत में से दसवां स्कंध पढ़ाया सो ठीक किया। तुम्हें शांति मिलनी चाहिए। मुझे तो प्रायः यहां शांति मिलती ही रहती है।

शनि का कोप निकल गया या निकल जावेगा, सो यह तो मैं तुम्हें हँसते हुए व उत्साहित व पहले से विचार करते देखूंगा तब समझूंगा कि शनि महाराज की कृपा-दृष्टि हुई है।

जमनालाल का वंदेमातरम्

: १८८ :

मोरांसागर,
८-५-३९

प्रिय जानकी,

मेरे नाम व विट्ठल के नाम ता० ३-५ के लिखे हुए तुम्हारे दो पत्र मिले। विट्ठल ने तुम्हें जवाब लिख भेजा है।

कमल तो आ ही गया है। उमा, मदालसा अगर जयपुर आयंगी तो मिल जायंगी। उन्हें अभी हाल में सुभीता न हो तो कोई जल्दी भी नहीं है।

तुम्हारे बारे में तो जैसा तुम्हें ठीक लगे और जिसमें शांति मिले, वैसा ही कार्यक्रम रख लेना।

जो कवित्त मैंने लिखा था, वह मेरा बनाया हुआ नहीं था। मुझमें कविता बनाने की योग्यता कहां है? यह शक्ति तो परमात्मा ने तुम्हें व तुम्हारी संतानों को ही (जिसमें एक जामाता भी शामिल हैं) बख्शी है। मैंने जो दोहा लिखा था, वह मुझपर लागू होता था। श्री कुशलसिंहजी, डिप्टी सुपरिन्टें-डेण्ट पुलिस, जिनकी देखरेख में मैं हूं, ने यह दोहा एक रोज कहा। मुझे ठीक लगा और मैंने नोट कर लिया। वह तुम्हें भी लिख दिया।

मेरा गाड़ा ठीक चल रहा है। चिंता करने की कोई कारण नहीं है।

भरतजी की एक चौपाई जो मुझे बहुत पसंद है, लिख देता हूं—

हृदयं हेरि हारेऊं सब ओरा। एकही भांति भलेहि भल मोरा॥
गुर गुसांईं साहिब सिय रामू। लागत मोहिं नीक परिणामू॥

अगर शरीर साथ दे तो घूमने का अभ्यास तुम्हें भी जरूर धीरे-धीरे बढ़ाते रहना चाहिए। उस समय जप भी कर सकती हो।

जमनालाल का वंदेमातरम्

: १८९ :

कर्णावतों का बाग, जयपुर
११-५-३९

प्रिय जानकी,

मेरे पत्र मिल गये होंगे। आज सुबह मुझे मोरांसागर से यहां जयपुर से चार-पांच मील पर कर्णावतों के (साहब नटवाड़ों) के बाग लाया गया है। आशा है, यहां के जलवायु से ठीक रहेगा। मेरे घुटने का दर्द धीरे-धीरे कम होता मालूम हो रहा है। अब यह स्थान जयपुर के नजदीक होने के कारण दवा, खान-पान का ठीक इंतजाम हो जायगा और फायदा जल्दी होगा। तुम चिंता नहीं करना। मैं आनन्द में हूं।

जमनालाल का वंदेमातरम्

: १९० :

सीकर, १०-७-३९.

पूज्यश्री,

संतवाणी पूरी कर दी है। कविता भेज रही हूँ,

रानीजी ने भेज बुलाया करी खूब मनुहार,
आदर देकर बातां पूछी किया प्रेम व्यवहार।
रानी घणी सयानी जी।
मति बिगड़ी काणे अफसर की किया जो आपको क़ैद,
मनचाहा एकांत आपको पाकर था आनन्द।
दोनों की मनमानी जी।
उजड़ी बगिया दूर पड़ी थी सबने दी थी त्याग,
बसे आप तो तातां लागा जागे उसके भाग,
बीती बात पुरानी जी।
मास तीन जब होने आये, जगा पुराना शाप,
हुआ दर्द घुटने में भारी, दिया बड़ा संताप।
दुःख से भरी कहानी जी।
सेंक हुआ बिजली का चालू, चिंता थी दिन-रात,
खरी कसौटी के सम्मुख थी, सहनशक्ति की बात।
आप हार नहिं मानी जी।
जला पांव का मांस सेंक में, बातों में था ध्यान,
गंध उड़ी घबराया डाक्टर, सूखे उसके प्राण।
शक्ति आपकी जानी जी।
योग-भ्रष्ट भोगी योगी ने लिया मनुज अवतार,
बंध छुड़ाने और मिटाने, मातृभूमि का भार,
प्रजा बड़ी हरखानी जी।
धन्य भाग्य हैं धन्य साधना साधो अपना योग,
बापू का प्रण पूरा होगा जय बोलेंगे सब लोग।
कहै जानकी 'बानीजी।

मांजी तो मुझे देखकर बहुत राजी हुईं। उनको मैं एक अनार रोज खिला

देती हूं क्योंकि मवाद और लोहू में अनाज कम खाना ही अच्छा है। दही ठीक रहता है। थोड़ा दही और मिसरी दवा की तरह लेती थीं। इनको ज्यादा की आदत नहीं है। अपने-आप ही अच्छी हो रही हैं। मुझे भी बहुत अच्छा लग रहा है। आप ज़रा भी फिकर मत करना। मांजी की बातों से मेरा भी मन वहला रहता है। उनका मुझपर प्रेम भी है। उनका मन होगा तो अपने साथ ले आऊंगी और आपके पास भेज दूंगी। बातें तो खास क्या करनी हैं? वे-ही-वे बातें बार-बार बोल जाती हैं, पर आपके पास रहने से आपको और उनको दोनों को अच्छा लगेगा।[1]

जानकी

---

१. जयपुर-सत्याग्रह के दौरान में जब जमनालालजी फर्णावतों के बाग में नजरबन्द थे तब जानकीदेवीजी ने ऊपर का पत्र उन्हें लिखा था। यह अधूरा ही मिला है। इस पत्र के साथ एक पत्र विट्ठल के नाम का भी था, जो इस नजरबंदी के दरम्यान बड़े भक्ति-भाव से जमनालालजी की सेवा कर रहा था। जानकीदेवीजी को उससे बड़ा संतोष मिला था। विट्ठल आज भी जमनालालजी की दूकान में काम कर रहा है। विट्ठल को लिखा पत्र इस प्रकार है—

विट्ठल,

तुम्हारा रहना-करना देखकर मेरे मन में शांति हो गई है। अनार इसलिए भेजा है कि उसका रस लेने से खून में ठंडक होती है और ताकत बढ़ती है। सो काकाजी लें तो पूछकर देते रहना। हम यहां सरबती गेहूं खाते हैं उसका दाना छोटा होता है, पर रोटी कोरी भी मीठी लगती है। उसका नमूना और आटा भी भेजेंगे। खास टीबड़ी का बाजरा मंगाया है, सो रोटी या खिचड़ी बनाकर देखना। मुंगोड़ी नई बना कर भेजी है। उसमें जरा हींग और अदरख डालने से ठीक रहता है। मीठा नीम अपने झाड़ का ही है। वह छौंक में भी दे सकते हो और साग में साबुत भी डाल सकते हो। खाते समय उसे निकाल दिया जा सकता है। उसमें सुगन्ध भी है और विटामिन तो हैं ही।

काकाजी टब में नहावें तब पेट पर कपड़ा फिराते हुए टब का पानी खल-खल करता हुआ जितना हिलता रहे उतना अच्छा। इसका ख्याल

: १९१ :

जयपुर-स्टेट-कैदी,
१२-७-३९

प्रिय जानकी,

तुम्हारे कई पत्र मिले, कविता भी मिली। हीरे की परख तो जौहरी ही जान सकता है, किसान-जाट क्या जाने। नवाब होता तो विना देखे-समझे भी तारीफ के ढेर लगा देता। कोई जौहरी मिलेगा तो उससे परीक्षा कराने का ख्याल रखूंगा।

यंगसाहब तो गये। नये टेलरसाहब आये हैं। अभी मिलना नहीं हुआ है। अचरोल ठाकुरसाहब व श्री पीरामलजी परसों मिल गये थे।

श्री स्वामी लच्छीरामजी की मृत्यु परसों ता० १० को हो गई। नामी व अच्छे व्यक्ति चल बसे।

तुम्हारी सही में तो एक मात्रा मुझसे ज्यादा है। मेरे तो ज० ब० ही है, तुम्हारे जा० ब० है। तुम मुझसे बढ़ी हुई हो।

मां की तबीयत सीकर पहुंचते ही ठीक हो गई, यह जानकर चिंता कम हुई। पहले थोड़ी चिंता हो गई थी।

काशी का पानी मिला, पी भी लिया।

तुमने चार पैसे के लिफाफे में पत्र भेजा। यहां के लिए तो देशी डाक से दो पैसे में ही पत्र आ सकता है। आगे से ख्याल रखना।

गुलाब आगई होगी। डेडराजजी वैद्यजी वगैरा को कह देना, चिंता नहीं रखें।

जमनालाल का वंदेमातरम्

: १९२ :

जयपुर-स्टेट-कैदी,
२-८-३९

प्रिय जानकीजी (महाराज),

आखिर अभी आपका ही पत्र पहले मिला। मेरा तो बहुत-सा समय

---

रखना। मैं तो टब में बैठती हूं तो उससे मेरी आंख की नजर भी ठीक होने लगी है। और उसके तो बहुत फायदे हैं ही।

अधिकारियों के पत्र-व्यवहार में चला जाता है। कमल परसों आगरा होती हुआ वर्धा रवाना हो गया। तुम्हारे बारे में मुझे ठीक उपदेश दे गया है। एक तो तुम्हें दौरेमें न भेजा जाय। दूसरे, हाल में सीकर ही रहने दिया जाय, आदि।

अब के दौरे में तुम्हें कष्ट तो जरूर हुआ, परन्तु तुम्हारा दौरा बहुत सफल रहा। स्त्रियों में चर्खा, खादी, पर्दा की काफी-अच्छी चर्चा की शुरुआत हुई। मुझे तो हमेशा काम का लोभ रहा है। पर विचार करता हूं तो मुझे कबूल कर लेना चाहिए कि अवश्य यह मेरी ज्यादती है। अब इस आदत को सुधारने का विशेष प्रयत्न करूंगा। उमा की क्या व्यवस्था करनी है? वर्धा, देहरादून, हटूंडी जहां चाहो तुम दोनों विचार करके उसे भेजना। खाने-पीने का ठीक ध्यान रखता हूं। मौज है। पू० मां को प्रणाम। गौतम खूब नाचता होगा।

जमनालाल का वंदेमातरम्

: १९३ :

जयपुर-स्टेट-कैदी,
८-८-३९

प्रिय जानकीजी (महाराज),

अभी-अभी सावित्री के लड़की होने का तार मिला। तुम्हारे पास भी आया होगा। कमल ने दिया है। वह दो दिन के लिए कलकत्ता गया था, कल वर्धा पहुंच जायगा।

पैर का घाव भर रहा है। प्राकृतिक इलाज से घाव की जलन तो करीब-करीब सब कम हो गई है। उमा सुबह आती है, शाम को चली जाती है। तुम्हारी गैरहाजिरी में तो काम भी ठीक करती है और हँसाती भी है।

आजकल तो मुझे जल्दी छोड़ देने की खबरें व अफवाहें अखबारों व लोगों द्वारा पहुंचती रहती हैं, इससे स्थायी कार्यक्रम थोड़ा चल-विचल हो जाता है, नहीं तो काम जमा हुआ है। तुम्हारी तबियत ठीक होगी? जब तुम्हारी इच्छा हो आ सकती हो।

जयपुर के प्रधानमंत्री भी एकाएक यहां से छोड़कर चले गये। ठीक उथल-पुथल हो रही है व आगे भी होनेवाली है। पू० मां को प्रणाम, चि० गौतम को प्यार। मुकुन्दगढ़ का हाल लिखना।

जमनालाल का वंदेमातरम्

: १९४ :

न्यू होटल, जयपुर,
२-१०-३९

प्रिय जानकी,

चि० राधाकृष्ण कल शाम को राजी-खुशी यहां आ पहुंचा है। मैं आज रात की गाड़ी से दिल्ली जा रहा हूं। वहां दो रोज रहकर ता० ४ की शाम को वर्धा के लिए रवाना हो जाऊंगा।

श्री घनश्यामदासजी परसों ३॥ वजे शाम को यहां आ गये हैं। वह कल ११ वजे महाराजासाहव से मिले थे। वाद में वनस्थली गये। फिर रात की गाड़ी से दिल्ली चले गये। मैं कल महाराजासाहव से मिला। १॥ घंटा वातचीत हुई।

दो रोज से पैर में फिर दर्द शुरू हो गया है। कल दोपहर को विजली का इलाज कराया था।

श्री घनश्यामदासजी दो-तीन रोज रहे। यहीं होटल में मेरे पास ठहरे थे।

तुम्हारा पत्र मिला, मुझे बुरा लगने का तो कोई कारण नहीं। तुम व मां मुझसे तो कह ही सकती हो, थोड़ा परमात्मा से भी प्रार्थना करना जरूरी है। पत्र वर्धा दना। यहां वहुत ही ज्यादा काम रहा। परमात्मा की दया से परिणाम ठीक आ जाता दिखता है।

जमनालाल का वंदेमातरम्

: १९५ :

वर्धा, ११-१०-३९

प्रिय जानकी,

जयपुर से रवाना होने के वाद, अभी तक मैं तुम्हें पत्र नहीं दे सका। यों तो जयपुर में ही वहुत काम में फंसा था। वहां से फिर दिल्ली में तथा अव यहां तो और भी ज्यादा काम रहता है। कल अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी की मीटिंग समाप्त हो गई।

वंगला तथा सारा गेस्ट हाउस मेहमानों के लिए रखे थे। दोनों ही वंगले भरे हुए हैं। मेरे कमरे में श्रीमती सरोजिनीदेवी ठहरी हैं। तुम्हारे कमरे में

श्री एण्ड्रूजसाहब हैं। दो रोज के लिए आचार्य नरेन्द्रदेव भी थे। मैं तो यहां पर बतौर मेहमान के रहता हूं। चि० मदालसा के यहां रहता व खाता-सोता हूं। एक-दो दफे खाने के लिए बंगले गया था। मदालसा के यहां रहने से मुझे काफी संतोष व शांति है। बंगले की फिक्र करने की जरूरत नहीं रही। प्रबंध का काम सदा के मुताबिक ठीक चल रहा है। मदालसा के यहां मैं, ओम् व मृदुलाबेन रहते हैं।

इन दिनों पैर में दर्द कम है। दिल्ली में कुछ ज्यादा था। परन्तु यहां खांसी है। गड़बड़ की वजह से दवा का साधन रख न सका। अब १५-१६ तक बंबई जाने का इरादा है। वहां जाकर तय करना है कि इलाज के लिए कहांपर २-३ माह के लिए रहना है—बंबई या पूना।

तुम अपने कार्यक्रम से मुझे वाकिफ करती रहना।

पू० बापू से भी इलाज के बारे में बात हुई थी। श्री दीनशा के पास दो-तीन रोज जाकर रहना है व सारी बातें तय करनी हैं।

मेहमान कलतक यहां से जानेवाले हैं। इस बार वर्धा में खूब चहल-पहल रही, ऑल इंडिया कांग्रेस कमेटी के कारण। कई लोग तुम्हारे बारे में पूछताछ करते थे। मुझे भी लगा कि तुम यहां रहतीं तो अच्छा रहता। मदालसा ने अपना घर अच्छा जमा रखा है।

जमनालाल का वंदेमातरम्

: १९६ :

वर्धा, १५-१०-३९

प्रिय जानकी,

ता० १० की रात का लिखा हुआ तुम्हारा पत्र अभी मिला। पढ़कर दुःख व चिंता के साथ थोड़ा समाधान भी हुआ। मैंने तो तुम्हारी इजाजत के बिना ही तुम्हारा पत्र चि० कमल को पढ़ा दिया है। मैं चाहता हूं कि वह तुम्हारी मनःस्थिति पूरी तरह से समझ ले। मैं आज ही बंबई जा रहा हूं। चि० मदालसा को साथ ले जा रहा हूं, उसकी नाक का इलाज कराने के लिए। क्या तुम बंबई आना पसंद करोगी या पूना अथवा वर्धा? तुम्हें ज्यादा दिन सीकर नहीं रहना होगा। शायद एक बार बीच में मुझे जयपुर आना पड़े। जयपुर में दीवान तो हिन्दुस्तानी आ ही गया है। उससे भी मिलना जरूरी है।

परन्तु इलाज शुरू करन के बाद तो आना-जाना संभव नहीं है। तुम्हें जिस प्रकार शांति व समाधान मिले, वह रास्ता अगर परमात्मा तुम्हें दिखा दें तो सब ठीक हो जायगा।

पू० बापूजी से खुलकर बातचीत करने का मौका मिल गया था। वह मेरी स्थिति पूरी तरह जान गये हैं।

तुम्हें तो कुछ ईश्वर पर विश्वास रखना चाहिए। बिना श्रद्धा व विश्वास के संतोष या शांति मिलना कठिन है। मदालसा के मेरे साथ रहने से मुझे भी सुख-शांति मिलेगी व उसका इलाज भी हो जायगा।

परमात्मा तुम्हें सद्बुद्धि प्रदान करे। तुम्हारा पत्र तीसरी बार पढ़कर फाड़ डाला है।

जमनालाल का वंदेमातरम्

पुनश्च—वर्धा में तुम्हारे लिए जितना आदर, प्रेम व श्रद्धा है वह और कहां मिलनेवाली है ? बापू, विनोबा आदि सभी तो यहीं हैं। तुम्हारे मन में सीधे विचार आने चाहिए, उल्टे नहीं।

: १९७ :

वर्धा, २७-१०-३९

प्रिय जानकीजी,

कल पत्र लिखा ही है। शाम को तुम्हारा यहां इतवार को पहुंचने का तार पढ़कर मुझे व मदालसा को खुशी हुई। यहां ठीक समय मिलेगा—खेलने व गप्पें मारने को। शतरंज ले आना।

इतवार को लगभग १२॥ बजे एक्सप्रेस आती है। उस गाड़ी पर मदू या विट्ठल स्टेशन पर रहेंगे। प्रोग्राम में फेरफार नहीं करना।

जमनालाल का वंदेमातरम

: १९८ :

जुहू, १०-३-४०

पूज्यश्री,

कल मेरा मन ठीक न होने से राधाकिसन के नाम का पत्र मैंने दे ही दिया। बाद में, शान्ताबाई ने कहा कि बापूजी वहीं हैं। सो सब समाचार जानकर मन शान्त है।

कांग्रेस-अधिवेशन में जाने की आपको बापूजी से ठीक सलाह मिल ही जायगी। लेकिन पैर का दर्द अगर हलका नहीं पड़ा, तो वहां आपको आराम कैसे मिलेगा ? आगे आपका जैसा उत्साह !

मुझे अकेले-दुकेले की तो कुछ भी परवा नहीं है। आपके सामने तो मैं ऊबी हुई-सी रहती हूं। आपके पीछे सूनी-सूनी। चेतनता को बुलाती रहती हूं। पर अब मैं शान्त हूं। आप कोई सोच मत करना। आप अब तो खुश रहो। भगवान ने आपकी अबतक रक्षा की है, अब भी करेगा ही।

पगली का प्रणाम

: १९९ :

वर्धा, ११-३-४०

प्रिय जानकी,

मैं कल शाम को यहां पहुंचा। ता० १३ या १४ को सुबह मेल से रामगढ़ जाऊंगा। मेरा स्वास्थ्य ठीक है।

तुम्हारे दोनों पत्र मिले। जयपुर में परिश्रम तो हुआ, परन्तु रास्ता बैठ जायगा, ऐसा लगता है। पू० बापूजी यहां हैं, इस कारण आना पड़ा। उन्हें पूरी स्थिति समझा दी है। मुझे फिर जयपुर जाना होगा। अगर तुम अपना मन शान्त रखोगी व उसे असली मार्ग पर लगाती रहोगी तो तुम्हें अवश्य शांति मिलेगी व मुझे भी जरूर मिलेगी। मेरे स्वास्थ्य की ज्यादा चिंता करने से कोई लाभ थाड़े ही होनेवाला है। घर पर सारे लोगों में प्रेम व विश्वास का वातावरण देखने की इच्छा मुझे रहती है। ईश्वर ने किया तो देख सकूंगा। अन्यथा विशेष दुःख करने से तो कुछ होनेवाला नहीं है। आखिर, उदारता से ही सारा मार्ग ठीक बठेगा, ऐसी मेरी दृढ़ धारणा है। ईश्वर सद्बुद्धि प्रदान करेगा। तुम वहां बच्ची को लेकर अकेली हो, अकेलेपन का लाभ उठा सको, तो जरूर उठाना। पत्र जल्दी में लिखा है।

जमनालाल का वंदेमातरम्

: २०० :

जुहू, २१-३-४०

पूज्यश्री,

कल पत्र आपका ता० १८ का मिला। मैं खूब आनन्द से रहने की

कोशिश करती हूं। घड़ी के कांटे की तरह नियमित रूप से मेरा इलाज चल रहा है। मैं तो आपकी कृष्ण-लीला देखकर गोपियों की तरह बिना सुध की हो जाती हूं।

कल एक पत्र डाकिये को देने को दिया, पर डाकिये की साइकिल मिली नहीं। अब दोनों पत्र साथ ही मिलेंगे।

पांच रोज की छुट्टी होने से पार्टियों की धूम है। परसों इतवार को यहां होली की गोठ है, २००-३०० आदमियों की। सो अपने यहां रखना चाहते थे। मैं अकेली हूं, इससे पूछने आये थे। कहना ही पड़ा, हां, आओ, आपकी ही जगह है। जरा बापू का डर लगा, पर 'जानकी-कुटीर' की लाज भी तो रखनी थी ना!

खास मिलने आने की तो जरूरत नहीं लगती है। आपका जयपुर का १०-१२ दिन का काम बाकी लगता हो तो निबटा आओ। यदि एक आध-महीना लगे तो सीकर में बैठकर काम करने से होटल का खर्च बच जायगा। अगर आपको लगता हो कि आपका मगज अब हलका है और मेरा बोझ न लगे तो मैं सीकर में दूध का प्रयोग तो चला सकती हूं। इसं ७ ता० को प्रयोग के तीन मास तो पूरे हो जायंगे।

आपको दूसरे कान से सुनाई देने लगे तो बापू को १००) और आपका मगज शान्त हो तो ५००) देनें का सोचा है। आप इस ओर ज्यादा ध्यान दो, इससे पत्र में लिख दिया है।

अब मैं उदारतासहित खुश हूं। आप जयपुर का तो काम कर आओ। हम तो बेटे-बहू की शरण में पड़े हैं। पढ़कर आप जरूर हँसोगे।

आपकी,
पगली

: २०१ :

न्यू होटल, जयपुर,
४-४-४०

प्रिय जानकी,

मैं परसों सुबह यहां आया। प्राइम मिनिस्टर से कल व परसों बात हुई थीं। समझौता होगा या नहीं इसका अंदाजा लगना अभी मुश्किल है।

१० ता० को आखिरी निर्णय मालूम हो जायगा। तुम तैयारी से रहना। यदि समझौता नहीं हुआ तो तुम्हें यहां आना होगा। तुम्हारा नाम वर्किंग कमेटी में दे दिया गया है।

समझौते की खबर देने के लिए एक तार आज सुबह बंबई आफिस के पते से दिया था। श्री केशवदेवजी ने कहा ही होगा। या तो मैं यहां से १३ ता० को निकलकर १५ ता० की वर्किंग कमेटी में वर्धा जाऊंगा, नहीं तो यहीं रहने का विचार है। सावित्री व कमल के वहां आ जाने पर ही तुम्हारा प्रोग्राम निश्चित हो सकेगा। दूध का प्रयोग चलता होगा।

मुन्नी अब राजी होगी। याद आ जाया करती है। राम के पढ़ने का क्या निश्चय हुआ ? बंबई में ठीक संतोषकारक व्यवस्था हो सकती हो तो ठीक ही है। राम व कमल मिलकर निश्चय कर लेंगे।

जमनालाल का वंदेमातरम्

: २०२ :

जयपुर, १४-४-४०

प्रिय जानकी,

समझौता न हुआ तो तुम्हारी यहां आने की तैयारी है, इस आशय का तुम्हारी ओर से दिया हुआ तार मिला। अभी तो यहां समझौता हो गया है। परन्तु लिखित जवाब अभी तक जयपुर सरकार की ओर से नहीं आया है। कल मैं महाराजासाहब से भी मिला। करीब १॥ घंटे बातें हुईं। यहां की परिस्थिति को सुधारने के लिए मुझे कुछ समय यहां रहना पड़ेगा। यहां के कार्यकर्ताओं व राजवालों दोनों की यह इच्छा है। वातावरण ठीक करने में समय लगेगा, परन्तु पूरी तरह वातावरण ठीक हो सकेगा या नहीं, इसकी मुझे शंका ही है। तुम्हारा दूध का प्रयोग खत्म हो गया होगा।

श्री प्रताप सेठ भी कुटुंबसहित यहां आकर वनस्थली देख आये हैं। दो हजार की सहायता देना तो स्वीकार कर लिया है। तुम इस समय यहां रहती तो आने-जानेवाले मेहमानों व समझौते की बातचीत में रस ले सकती थीं। मेरा इधर अभी कुछ समय तक रहने का इरादा है।

जमनालाल का वंदेमातरम्

: २०३ :

वर्धा, १५-६-४०

प्रिय जानकी,

मैं आज सुवह यहां सकुशल आ पहुंचा। अभी यहां मेहमानों में श्रीटंडनजी हैं। कल से वर्किंग कमेटी के लिए मेहमानों का आना शुरू हो जायगा। २० ता० तक कमेटी की भी मीटिंग चलेगी। तुम लोग सब २१ ता० को यहां पहुंच सकते हो।

चि० मदालसा से कह देना कि मैं व राम परसों से यान सोमवार से उसके घर सोने एवं नहाने-धोने के लिए जावेंगे। श्रीमन राजी हैं।

जमनालाल का वंदेमातरम्

: २०४ :

नई दिल्ली, ३-७-४०

प्रिय जानकी,

तुम्हारा पत्र मिला। तुम्हारे स्वास्थ्य के समाचार कमल ने टलीफोन से मालूम कर लिए थे। आज पत्र पढ़कर चिंता कम हुई।

बंबई में अबकी बार दोनों कामों में बहुत थोड़े समय में ही काफी सफलता मिली। मुझे तो यह तुम्हारी हार्दिक शुभ विदाई का ही परिणाम मालूम पड़ता है। कालेज के लिए थोड़ी मेहनत में ही सवा लाख तो नगद वसूल हो गये, बाकी पच्चीस हजार भी आ जायंगे। सारी हक़ीक़त दामोदर कहेगा ही। स्टेट कमेटी के चुनाव में भी अच्छे लोग आ गये। मैं भी भविष्य का प्रोग्राम सोच रहा हूं। परमात्मा ने किया तो शांति के साथ पूरी सफलता भी मिलेगी। मैं यहां से वर्धा आऊंगा। ता० ७ को वहां पहुंचूंगा। श्रीमन से कह देना कि कालेज के उद्घाटन का समारंभ सुन्दर व आकर्षक ढंग से हो। आश्रम की बहनों के मंगलगीत भी हों। बाहर से आनेवालों का इंतजाम दामोदर व सागरमलजी के जिम्मे कर दिया जायगा। ओम् का पत्र मिल गया था।

जमनालाल का वंदेमातरम्

: २०५ :

जयपुर, ४-९-४०

प्रिय जानकी,

यहां आने के वाद मैं तुम्हें एक भी पत्र लिख नहीं सका। यहांपर हम लोग सब अच्छी तरह पहुंच गये थे। रेल के सफर की थकावट व वर्षा के कारण पू० राजेन्द्रवावू को थोड़ी तकलीफ जरूर रही। परसों उनका स्वास्थ्य कुछ खराव हो गया था। आज ठीक है। कल हम लोगों का सीकर जाने का विचार है। वहांपर कुछ रोज रहना होगा। पार्वतीवाई डीडवानियां भी यहीं है। प्रजा-मंडल की वर्किंग कमेटी की मीटिंग में आई थी। कल रात को यहां एक पब्लिक मीटिंग हुई थी। राजेन्द्रवावू वीमारी की वजह से जा नहीं सके। काफी जोरदार मीटिंग हुई। नया व अच्छा हिन्दुस्तानी प्राइम मिनिस्टर चाहिए, इसकी मांग की गई।

अगर ज्यादा दिन इधर रहना हुआ तो तुम्हें वुलवाने की इच्छा है। चि० मदू के दो पत्र आ गये हैं। कमल, सावित्री, वालक सव अच्छे होंगे।

जमनालाल का वंदेमातरम्

: २०६ :

पवनार

९-९-४०

पूज्यश्री,

आपका ता० ४ का जयपुर का मित्र मिला। मुझे लगा तो था कि आप पत्र दे नहीं सके हैं। आपके मन में लग रहा होगा कि ये मैं ही क्यों न दे दूं। पर सोचा अभी क्यों दूं, पीछे ही दूंगी। वहां का हवा-पानी सव अच्छा है। आप थोड़े दिन मुझे भूलकर रहिए।

अव तो खुर्शीदवेन ने कहा है कि अपनी कमजोरियां ढूंढ़-ढूंढ़कर निकालने की कोशिश करो। सो ऐसा ही करने का सोचा है। अंत में शांति तो खुद की प्राप्त की हुई ही मिल सकती है; नहीं तो जहां मोह रहेगा, जीव वहां फंसा रहेगा। खैर, इस जन्म में तो भगवान् की कृपा अपूर्व रही है, आगे की लाज श्री भगवान रख देगा तो सोने में सुगंध है।

ओम् से कहा है कि विनोवा के पास आकर रह जा। पर उसका मन

कम है और उसका मेरे पास जमेगा भी नहीं। बाकी मुझे किसीकी जरूरत है नहीं। मेरा सब मजे में चल रहा है।

आपकी सहचरी का प्रणाम

: २०७ :

जयपुर,
१३-९-४०

प्रिय जानकी,

तुम्हारा ता० ९-९ का पत्र मिला। तुम्हें फिर से बवासीर की गड़बड़ हो गई, यह पढ़कर चिंता हो रही है। मेरी समझ से तुम चि० उमा को लेकर यहां आ जाओ तो इधर जयपुर या अजमेर में इलाज करवा लिया जा सकेगा। जयपुर में भी ठीक इलाज करनेवाला सुना है।

पू० राजेन्द्रबाबू अब ज़रा ठीक हैं। बीच में बुखार हो जाने से कमजोरी ज्यादा हो गई थी। हवा-पानी तो इस समय बहुत अच्छा है, खासकर सीकर की तरफ। तुम्हें ज्यादा शांति शायद जयपुर में मिले। तुम विचार कर लेना। चि० राधाकिसन भी थोड़े दिन यहीं रहेगा, इससे भी मदद मिल सकेगी। तुम जो निर्णय करो सो मुझे लिख देना। मेरे शरीर की गाड़ी तो ठीक-ठीक चल रही है, पर मन का अभी संतोषकारक रास्ता नहीं बैठा है। श्री खुरशेद बहन की सलाह तो ठीक ही है।

जमनालाल का वंदेमातरम्

: २०८ :

पवनार,
१५-९-४०

पूज्यश्री,

मैं जानती थी कि आज आपका पत्र आयेगा। कारण आप कहीं भी रहें, आपका ख्याल तो बना ही रहता है ना। शरीर तो खूब हिटलर के बाप का-सा था, इसलिए चल रहा है। मन का भी अब ठिकाना बैठ जायेगा। भगवान का कोप अब हट रहा है। जहां से चीज बिगड़ी हो वहीं से सुधर सकती है—दुनिया का यही नियम है। जैसे बबूल का कांटा बबूल से ही निकलता है।

आपने मुझे बुलाया, सो आपका लिखना स्वाभाविक ही है। पर मुझे

सोच-समझकर यहीं रहना चाहिए, इसीमें आपकी और मेरी दोनों की भलाई है। मैं जानती हूं कि मेरे न आने से आपका बहुत दिनों का मगज का भारीपन हलका ही होगा और मगज के उस हलकेपन का सुख मुझे ही मिलेगा।

एक दिन कुंदर से बातें करते हुए सहज ही विनोबाजी बोले—"किसी-से बात पूछना मेरे स्वभाव में नहीं है। कहे, सो सुन लेता हूं। जमनालालजी बातें खोदकर निकालते हैं और वह उसमें से कुछ निकाल भी लेते हैं, पर कभी-कभी बिगड़ भी जाता है। वह मुझे पसंद नहीं है।"

एक दिन विनोबा का कुंए का ठंडा पानी पीने को मन हुआ। मैंने कहा—"कुंए का पानी लाओ।" नौकर ने कहा—"आप ले आओ, मैं नहीं दूंगा। उनका गला जल्दी खराब होता है। उबाला हुआ पानी पीते हैं।" मुझे चुप रहना पड़ा। यह तो मुझमें कमी है।

मैं घर गई तब पीछे से उनकी घड़ी बिगड़ गई। दगडू ने मेरी घड़ी रख दी तो विनोबाजी वापस मेरे सामान में रख गये। बोले कि बिना पूछे क्यों ली। पर शाम को फिर दगडू ने ले जाकर चुपचाप रख दी। अब तक चल ही रही है, ऐसी मजे की बात है।

कमल दो बार यहां आया पिकनिक में।

(यह पत्र अधूरा मिला है।)

: २०९ :

पवनार, १८-९-४०

पूज्यश्री,

आपका सच्चाई और हृदय से भरापत्र पढ़कर आंख में थोड़ा पानी आ गया। लगा कि भगवान को भी संतों की परीक्षा में खूब मजा आता है। बाद में मन को खूब शांति हुई। रात को अच्छी नींद आई।

मदू को तो बुलाना ठीक नहीं होगा, उसका मगज अस्थिर है। सास के पास पेट भर रह ले तो ठीक है। मैंने कह भी दिया था कि तेरे काकाजी बुलावें तो मन मत डुलाना। कमल कहता है कि मां, काकाजी तो खर्च बहुत करते हैं, तू तो कम कर। एक बार मुझे कर्ज कम करने दे, पीछे खर्च करना,

सो भी ठीक है। मैं भी तो रिद्धि-सिद्धि वाली ठहरी। जगह छोड़ी कि हजारों के खर्चे समझो।

कल से तो मुझ इतना आनंद हो रहा है, जैसे पवनार रहने का पूरा फल मुझे तत्काल ही मिल गया हो। मेरा यह आनंद आपको पहुंचेगा ही—जाने-अनजाने में भी 'करंट' तो चलता ही है ना ?

अब आपका गाड़ा संतोषकारक ही चलनेवाला है। आप तो बापूजी से भी ज्यादा भाग्यशाली हो। आपके जाये (बालक) आपका इहलोक-परलोक दोनों सुधारनेवाले हैं। वे आपको जीवन-मुक्त कर रहे हैं न !

विनोबाजी धुलिया-जेल में लिखे अपने गीता के प्रवचनों का सुधार कुंदर से कराते हैं, तब वे मुझे भी सुनने को मिलते हैं। खाते समय रोज विनोबाजी जब थोड़ा-सा दही निकालते हैं तब दगडू कहता है कि कुछ खाओगे भी कि सदा 'यह निकाल, वह निकाल' ही करोगे। विनोबाजी कहते हैं कि तेरे कहने से खाता, तो अबतक मेरी समाधि बन गई होती पवनार में। मैंने विनोबाजी से कहा कि दगडू तो तुम्हारी लुगाई ही है—खाने की मौज तो खानेवाले और खिलानेवाले के हुए बिना हो ही नहीं सकती।

एक दिन सारा महिला-आश्रम यहां आया था। टंकी पर जीमे। ९।। से १०।। तक विनोबाजी का प्रवचन बड़ा ही बढ़िया हुआ। ११ से १२ बजे तक सबके साथ नहाये, १ घंटा। लेटने की बजाय १।। घण्टा पत्थरों पर चलकर धबधबे के पास पड़े रहे। छोकरियां पड़ती-फिसलती गईं, मैं भी फिसल पड़ी। एक चप्पल गई।

जानकी का प्रणाम

: २१० :

सीकर, २४-९-४०

प्रिय जानकी,

तुम्हारा पवनार से लिखा ता० १८-९ का पत्र मिला। चि० मदू को आग्रह करके नहीं बुलाऊंगा। वनस्थली का जलसा दशहरे पर है। उस समय बुलाने की इच्छा है। पू० राजेन्द्रबाबू दल-बल सहित कल यहां पहुंच गये हैं। यहां उन्हें लाभ पहुंचेगा। श्री सीतारामजी सेकसरिया, महाबीर-

प्रसादजी पोद्दार तथा अन्य मित्रों का ठीक जमघट रहेगा। मुझे सच्चा आस्तिक बनने की इच्छा हो रही है। देखें कब और कैसे पार पड़ती है।

मसों की तकलीफ कम हो रही है, सो तो ठीक, परन्तु आखिर खान-पान या इलाज का तो ध्यान रखना ही पड़ेगा। विनोबाजी की राय तो मिलती ही है।

विनोबाजी के स्वभाव में बात पूछने की आदत नहीं है, ऐसा तुमने लिखा सो मेरी समझ में नहीं आया। मिलना होगा तब खुलासा हो जायगा।

मेरा दशहरे तक तो जयपुर की तरफ ही रहने का विचार है। शायद बाद में भी रहना पड़े। जकात व दीवानसाहब के बारे में आंदोलन चल रहा है। देखें क्या परिणाम होता है। शायद कुछ दिनों के लिए रुकना भी पड़ जाय। जो होगा सो ठीक ही होगा। तुम चिंता नहीं करना। मन व शरीर खूब प्रसन्न रखना। परमात्मा से प्रार्थना करना कि मेरी सद्बुद्धि कायम रखे।

मुझे कुछ और दौरा करना पड़ेगा। शरीर की संभाल तो पूरी रखता हूं। शरीर भी राजी है। मगर मन उतना राजी नहीं है। उसमें मेरा ही दोष है।

जमनालाल का वंदेमातरम्

: २११ :

सीकर, ३-१०-४०

प्रिय जानकी,

तुम्हारा पत्र दिल्ली से वापस आने पर मिला। पू० राजेन्द्रबाबू तो अक्तूबर तक सीकर में रहेंगे। यहां का हवा-पानी इन्हें अनुकूल आ गया है। दोनों समय छः मील के करीब पैदल घूम लेते हैं। मेरा भी ता० २० तक तो जयपुर, उदयपुर, वनस्थली वगैरा रहना होगा। श्री सीतारामजी भी यहां १०-१५ रोज रह लेंगे। महावीरजी गये। तुम्हारा पत्र चि० राधाकिसन को भेज दिया है। मेरा स्वास्थ्य ठीक है। तुम्हारा ठीक रहे तो आसाम के दौरे में तुम्हें ले जाने की इच्छा है। तुम्हारे पत्र वापस भेज दिये हैं, तुम संभालकर रखना।

जमनालाल का वंदेमातरम्

: २१२ :

वर्धा, ६-११-४०

प्रिय जानकी,

तुम्हारा छोटा-सा पत्र तो मुझे जयपुर में मिल गया था, प्रसाद नहीं मिल सका था। तुम्हारा वह पत्र चि० उमा ने आगरे में अपने पास रख लिया था, तुमसे विनोद करने के लिए। मुझे यहां स्टेशन पर ही मालूम हुआ कि तुम एक रोज पहले ही पू० वापूजी के कहने से बंवई मसों का आपरेशन कराने के लिए चली गईं। तुम्हारे साथ घर का कोई जवावदार आदमी नहीं गया, जानकर मुझे वुरा तो मालूम दिया। वाद में तो कमल तुम्हारे पास पहुंच ही गया है। आखिर डाक्टरों ने क्या फैसला किया ? मैं तार की राह देख रहा हूं। पू० वापूजी की राय तो है कि आपरेशन कराना ही पड़ेगा। मेरी समझ से भी आपरेशन कराना ही ठीक रहेगा। चि० मदालसा आने को तैयार है। तार आते ही मैं भी दो-चार रोज के लिए आ सकूंगा।

पू० वापूजी वहुत करके उपवास अब नहीं करेंगे, आज निश्चय हो जायगा। जवाहरलाल तो ठिकाने (जेल) पहुंच ही गये हैं। तुम जल्दी अच्छी हो जाओ तो ठीक रहे। मेरा इरादा अब ज्यादा समय वर्धा में ही रहने का—कई कारणों से—हो रहा है। यहां सब अच्छे हैं।

जमनालाल का वंदेमातरम्

: २१३ :

सेवाग्राम,
२५-६-४१

प्रिय जानकी,

सुवह आखिर दोनों ओर से पूरी सावधानी रखने पर भी मुझे क्रोध आ ही गया। उसका मुझे दुःख है। मैं देख रहा हूं कि शारीरिक कमजोरी के कारण भी मानसिक अशांति तो प्रायः रहा ही करती है। मुझमें क्रोध की मात्रा बढ़ती जा रही है। इसकी रोकथाम तो मुझे जल्दी ही करनी होगी। सुवह की वातचीत में मेरी ओर से भी आवेशवश कुछ गलतफहमी हो, ऐसी बातें हो गईं।

पू० बापू से मौका मिलने पर अपन क्रोध आदि आने की, मेरा व्यवहार

तुम्हें प्रायः असंतोष देनेवाला होता है, इत्यादि कहने की स्वयं मेरी इच्छा है। तुम्हें तो कहने का पूर्ण हक व अधिकार है ही। कोई रास्ता निकल सके तो संतोष ही होगा। ज्यादा क्या लिखूं ? कमल भी यहां आया है। तुम उससे भी पेट भरकर बात कर लोगी तो शायद तुम्हें शांति मिले। मैं तो आज सेवाग्राम ही हूं। आने की सूचना बंगले भेज देना सो वह मोटर की व्यवस्था कर देंगे। नत्थू के बारे में जो ठीक समझो, निर्णय करना।

जमनालाल का वंदेमातरम्

: २१४ :

(जून, १९४१)

पूज्यश्री,

आपकी लीला अकसर समझ में नहीं आती। घर का हर आदमी आपके जैसा बन जाय, यह तो हो नहीं सकता। आप मुझे अपने से भी ऊंचा देखना चाहते हैं और इसी आशा से क्रोध भी आपको हो जाता है। यह क्रोध तो प्रेम का ही रूप है। मैं तो आपको योग-भ्रष्ट योगी ही समझती आई हूं और इसी धारणा को लेकर डरते हुए जीवन निबाहती आई हूं। आपकी लीला ऊपर से कठोर पर भीतर से कोमल—यह मैं क्या जानूं ! मेरे दिल में यह लोभ तो स्वाभाविक था कि आप दीर्घजीवी बनें और कहीं मैं आपको खो न बैठूं। आप जैसे बड़े आदमी से सन्तान-प्राप्ति हो गई, मेरे लिए इतना काफी है। आपके मुंह से वैराग्यभरे शब्द तो निकलते ही रहते हैं। मुझे गर्व था कि मेरे पति न तो मुझ-जैसे चेहरे के हैं, न बूढ़े हैं, न दुजबर हैं। मैं सबसे भाग्यवान हूं। परन्तु मेरा वह गर्व नष्ट हुआ। दुखी दुनिया का, और पुरुषों की स्वार्थवृत्ति का पूरा अनुभव मुझे हो गया।

ज़रा मेरी जिंदगी के बारे में भी तो सोचिये कि :

१. १३ साल अबोध अवस्था में बीते, तब जीवन का रस तो कुछ जानती ही नहीं थी;

२. पांच साल, गर्भवती अवस्था के, जिसमें पुरुष को छूना पाप समझा;

३. सत्रह साल जोश में गये;

४. तीन साल जेल के;

५. शेष आठ साल में से मुसाफिरी के निकालिये। कितने दिन साथ रहा ? लेकिन विश्वास दृढ़ था, शरीर भी आपसे चंगा था, संयम से समय बीता। सतियां हुईं, क्योंकि उन्होंने सहन किया; किन्तु 'सता' तो आजतक एक भी नहीं सुना। गर्व किसीका रहता नहीं। अपनेको तो मैंने भी नीच माना। वह नीचता छोड़कर सुबुद्धि इस जन्म में नहीं पा सकूंगी; पर आपने तो आशावाद की हद करदी। लेकिन भगवान गर्व दूर करना चाहते हों तो !

आप समझते हैं, सबकुछ सुख-सुविधाएं उपलब्ध हैं; पर क्या यह भी जानते हैं कि मेरी नींद व मेरा दिल तो जैसे उड़ ही गये हैं। कुछ खो गया-सा लगता है। मैं तो दूसरा स्नानघर आदि भी पसंद नहीं करती। आपके स्नानघर में ही नहाना अच्छा लगता है। मन की ऐसी स्थिति में, मेरी सुने विना ही, आप मुझे इस प्रकार दबाओ कि आपकी बात मुझे कबूल ही करना चाहिए, और कबूल न करूं तो मुझे डर कि कहीं आपके सिर की नसें न फट जायं। उतरती अवस्था में पुरुष की डांट से हृदय फट जाता है। लड़के-बच्चों का तो फिर भी सहन कर लेते हैं। किन्तु पुरुष का मुश्किल से सहन होता है। फिर, और बातों में चाहे कितना गुस्सा हो खास बातों का तो संतोषदायक उत्तर मिलना चाहिए। फिर अन्य बातों के बारे में मनुष्य लापरवाह बन सकता है। भीतर और ही कुछ चाहता हो तो मनुष्य का हर बात में चिड़चिड़ा होना स्वाभाविक है और इससे आपको और गुस्सा आता है। मैं आपकी आशाओं को कैसे पूरी कर सकूं ? आप ज़रूर मेरी आशाओं को पूरी कर सकते हैं। यह मत भूलिए कि मेरी शांति में आपकी शांति भी समाई हुई है।

अपने आदमी से भी हारकर इस तरह कागजों से बात करनी पड़े, यह भी क्या जीवन है ! मैं कुछ बातें और रखती हूं। पढ़ते-पढ़ते गुस्सा आवे तो पढ़ना वहीं बन्द कर दें :

१. आप किसीके पीछे बिक जाओ, यह कोई कैसे सहन करेगा ?

२. तीन बातें आपके मन में मेरे बारे में पन्द्रह आने झूठी जम गई हैं; वे आज तो नहीं बताऊंगी; पर कालांतर के बाद तो सब ठीक मान ही लेंगे। इसी आशा पर ही तो जीवित हूं। और यह आप भी

अच्छी तरह जानते हैं। वे तीन बातें कौन-सी हैं, अभी न पूछना ही ठीक होगा।

३. कमल ने कहा था, आगे चलकर सोलह आने दुःख पहुंचता दीखे, और आज दो आने में मामला सुलझता हो तो डरना नहीं, उसे मंजूर कर लेना चाहिए।

यह सब लिखने से मेरा मगज तो हल्का हुआ; पर आप पर क्या असर होगा? यह पत्र फाड़ डालूं या दिखाऊं?[1]

कइयों में से एक पागल

: २१५ :

पवनार,

(जवाब दिया, २७-१०-४१ को)

पूज्यश्री,

समस्याओं के समाधान खोजती रहती हूं। लेकिन ये तीन शिकायतें मिटा नहीं पा रही हूं। ज्यों-ज्यों समय बीतता है, ये ज्यादा दुःख देनेवाली बनती जा रही हैं। आप ही इनका समाधान कर सकते हैं। इसलिए इनका खुलासा किया है। इन विचारों के लिए क्षमा चाहती हूं।

---

[1] गांधीजी का मार्गदर्शन पाकर जब जमनालालजी आत्म-साक्षात्कार के पथ पर आरूढ़ हुए तो उन्होंने अपने परिवार और स्वजन-मित्रों को भी इस साधना में लगाने का प्रयास किया। इस महान् यात्रा में जानकीदेवीजी छाया की तरह उनका साथ देने का प्रयत्न करती रहीं, किन्तु स्वभाव एवं क्षेत्र में भिन्न दो सहयात्रियों में दृष्टिभेद होता ही है। जमनालालजी और जानकीदेवीजी के जीवन-प्रवाह में भी यही दृष्टि-भेद था। प्रारंभ में वह उतना प्रखर नहीं था, जितना बाद में प्रकट होने लगा। समस्याएं उठती थीं और फिर सुलझती जाती थीं, क्योंकि दोनों परस्पर स्पष्ट-तर होते गये, यहांतक कि अपनी वैयक्तिक समस्याएं भी दोनों सार्वजनिक जीवन की कसौटी पर कसने लगे थे। जानकीदेवी के कई पत्र इन समस्याओं और उससे संघर्ष का उल्लेख करते हैं। इन वर्षों में लिखे गये जानकीदेवीजी के कुछ खास पत्रों में से उपर्युक्त पत्र एक है।

पहली शिकायत काशी के सम्बन्ध की है—आपने मेरे भरोसे एक स्त्री को छोड़ा, पर आपको पछताना ही पड़ा। आपका यह लिखना ठीक भी है। मुझे भी हमेशा यह लगता रहा है कि मेरे पास काशी और राधा (काशी की लड़की) थोड़े-थोड़े से के लिए तंगी भोगती हैं। मेरे मन में संकीर्णता भले ही हो, पर फिर भी ऊपर से तो कहती ही रहती हूं और मन में यह समझती भी रहती हूं कि दूसरों को देने और खिलाने से तो काशी के घर कुछ पहुंचे या राधा को खाना मिले तो ठीक। काशी के विचारों में तो स्थितप्रज्ञता है। पर राधा को एक रोज आपने चौके में मदद करते देख लिया, सो मजाक में ही आप बोले कि तू मुफ्त में काम क्यों करती है? और आपने उसे साड़ी दिलवा दी। उसी दिन से उस छोकरी के मुंह से मेरे प्रति उपेक्षा प्रकट होने लगी।

मेरे मन में भी दर्द तो है ही। और जो कुछ बचता है, वह औरों की अपेक्षा काशी को मिले तो अच्छा ही लगता है। पर अब मेरे मन में फरक आ रहा है। यह अगर काशी को मालूम पड़ेगा तो वह दुःखी ही होगी।

ज्यादा सोचूं तो थोड़ा-सा यह भी लगता है कि दूसरी शिकायत है मदू के सम्बन्ध की। मदू का तो आप सब जानते हो। आपका प्रेम मुझे न मिलने से मैं उसे जितना चाहिए, उतना प्रेम नहीं दे सकती।

तीसरी शिकायत रामगोपाल की पत्नी के सम्बन्ध की है। इसको मैं व राधाकिसन जितना जानते हैं उतना और कोई नहीं। मैं अच्छी से अच्छी बात कहूं वह भी काटी जाय तो मेरी अकल ही काटी जाय, ऐसा मुझे लगता है। उसकी मांग तो ५०) रुपये है। उतनी में पूरी करना चाहती हूं। दूकान से रुपये न दे सकें तो मेरा देना ठीक है। पर आप जो कहोगे सो कबूल है।

चौथी शिकायत स्वयं शैतान जानकी की है। बापू के पास गये पीछे कल छाती में धड़कन और सिर में हिस्टीरिया के असर ने सताया; पर मूर्खता मेरी है और मैं लाचार हूं। मेरा मोह सब जगह से निकलकर अब आपके प्रति रह गया है। पर कल्याण तो मोह में नहीं है। मेरी समझ से मैं आपकी इच्छा पूरी करने में सदा लगी रही। पर बीच में भगवान ने परीक्षा ली तो क्या किया जाय?

अब भी मदद करने की मन में रहती है। आपसे दूर रहन में दोनों का भला है, ऐसा भी लगता है, पर क्या बताऊं !

अगर आप कोई प्रायश्चित्त करना-कराना चाहें तो हम लोग तय करें। फिर अमल में लाने की ताकत तो आपमें है ही।

अंत में एक बात यह कि नौकरों के सामने स्वाभाविक रूप से अनजाने आपसे डांटना-फटकारना हो जाता है। इसका परिणाम यह होता है कि वे लापरवाह हो जाते हैं और उनकी नज़र में मेरे प्रति अपमान का-सा भाव आ जाता है।

इसके लिए मुझे ऐसा लगता है कि आपका खाना, भले कोई भी तैयार कर दे, पर खिलाऊं मैं। यह परीक्षा भी कड़ी ही है।

इन चारों बातों में राधाकिसन, किशोरलालभाई जो निकाल दे दें वह मंजूर करने की कोशिश करने के लिए मैं तैयार हूं ?

बलिहारी उस धर्म की बिन स्वारथ बिन मान,
एक दूसरे के लिए, नर-नारी दें प्रान।

जानकी

**जानकीदेवी की इन शिकायतों का जवाब श्री जमनालालजी ने उसी कागज पर इस प्रकार लिख दिया—**

श्री किशोरलालभाई, जाजूजी, हरिभाऊजी या राधाकिसन मिलकर या अकेले, किसी के भी समाधान से तुम्हें संतोष हो, उससे समाधान करा सकती हो। वह जो फैसला करेंगे उसका खयाल मैं भी रखूंगा। —ज०

**इतना लिखने के बाद जमनालालजी ने जानकीदेवीजी की प्रत्येक शिकायत का नीचे लिखा सिलसिलेवार जवाब दिया—**

२७-१०-४१

१. काशी के बारे में मेरी भावना व विचार मैं तुम्हें अभी तक नहीं समझा सका, इसका मुझे भी दुःख है। अगर मेरे विचार तुम समझना चाहतीं व समझ लेतीं तो तुम्हें भी दुःख नहीं होता व मुझे भी समाधान मिल जाता। काशी से तुम खूब प्रेम करती हो। तुम्हारे स्वभाव को देखते हुए खूब प्रेम से तुमने उसे निभाया है, यह मैं मानता हूं। परन्तु मेरी वृत्ति व विचार से हम लोगों को व अगर मैं घर में रहता हूं व मुखिया हूं तो मुझे, इस बार काशी

चाहे जिसकी गलती से ओम के साथ गई, उसका प्रायश्चित्त करना ज़रूरी मालूम देता है। काशी की लड़की को अगर सुधारना भी है तो तुम्हारे तरीक़े से वह नहीं सुधर सकती है। यह बात मैंने तुम्हें भी कही है।

२. मदू के बारे में तुमने जो यह लिखा कि मेरा प्रेम तुम्हें न मिलने से तुम उससे प्रेम नहीं कर पाती, सो मेरा प्रेम तुमपर है या नहीं, इस बारे में मैं क्या कहूं! हां, मोह अगर है तो मैं उसे हटाना चाहता हूं—पूरी कोशिश करके।

३. चि० रामगोपाल की पत्नी को मेरी समझ से १०-१५ रुपये की मदद की ज़रूरत है। दूकान से ज्यादा दिलाने की कोशिश करने से दूसरे आदमियों पर वुरा असर पड़ता है। तुम अपने पास से ज़रूरत के माफ़िक १०-१५ रुपये महीने की मदद, जबतक उसका लड़का कमाने लायक न हो जाय, तबतक करना चाहो तो ज़रूर कर सकती हो।

४. शैतान जानकी का मतलब मेरी समझ में नहीं आया।

नौकर के सामने डांटने-फटकारने की इच्छा तो रहती नहीं। खासकर तो खान-पान के मामले में तथा नौकरों के मामले में हम लोगों का बहुत गहरा मतभेद बहुत वर्ष से चल रहा है। मेरी इच्छा रहती है कि तुम्हारी वृत्ति में फरक पड़ जाय तो सुख से गंगा बहने लगे। मेरे मोह के कारण इसमें मेरी ज्यादा कोशिश रहती है। यह मैं जानता भी हूं कि उसका परिणाम ठीक न आकर विपरीत ही आता है। परन्तु मैं भी अपनी आदत से लाचार हो गया हूं। संभाल रखते हुए भी तुम्हें कहने की भूल हो ही जाती है। पर मान-अपमान की तुम्हारी कल्पना व मेरी कल्पना में बहुत फर्क है।

जैसा कि बालक व मित्र लोग करते हैं, मैं भी मानता हूं कि हम लोग मोह को तो कम करें व प्रेम को बढ़ाते रहें। यह कार्य तो रात-दिन नजदीक रहकर सम्भव नहीं है। इसलिए दूर रहकर प्रसन्नतापूर्वक समझकर व्यवहार रखें तो आशा है, दोनों सुखी रह सकते हैं। बालकों व नौकरों पर भी अच्छा असर हो सकता है।

मुझे तो अब तुम्हें सुधारने का प्रयत्न करने का मोह छोड़कर खुद अपने-को ही सुधारना चाहिए। अपनी कमज़ोरियां निकालते रहना चाहिए। दूर रहकर शान्त, शुद्ध व प्रेममय वातावरण में ही यह सम्भव है। मैं तो

समझता हूं कि तुम्हें भी खुद अपने ही लिए प्रयत्न करते रहने में जो सुख व समाधान मिल सकेगा, वह और तरह से नहीं। तुम्हें जिस प्रकार शान्ति व समाधान मिल सके, उसका मार्ग पू० बापू की सलाह से तुम्हें निश्चित कर लेना चाहिए।

—ज०

: २१६ :

पवनार, ५-११-४१

प्रिय जानकी,

पू० मां को प्रणाम कहना और मेरी ओर से भी रोज़ बन सके तो प्रणाम कर लिया करना। गोपुरी आने के बाद भोजन, भजन, प्रार्थना में श्री महादेवीबहन की या श्री काशी की मदद लेने की इच्छा होती है। जबतक मदालसा को ज़रूरत है, तबतक तो काशी से मदद ली नहीं जा सकती। उसकी अधिक मदद तो उसकी लड़की का विवाह हो जाने के बाद ही ली जाना संभव है। यदि मेरी लिए उपयोगी लगे तो अपने विचार यहां से, नहीं तो रास्ते से, लिख भिजवाना। चि० राधाकिसन की राय भी लेना चाहो तो ले सकती हो। मेरी इच्छा वर्तमान में बहनों में महादेवी, काशी, रेहाना बहन, चि० शांता इन चारों के अंदर संबंध विशेष रखने की है। भजन आदि की दृष्टि भी इसमें है और स्वभाव-प्रेमलता की भी। बाकी रेहाना व शांता का तो ज्यादा उपयोग होना संभव नहीं है। मदालसा, अनसूया का तो बालकों के कारण फिलहाल उपयोग ज्यादा नहीं मिल सकेगा। आशा है, तुम खूब उत्साह व विश्वास प्राप्त करके आओगी।

जमनालाल का वंदेमातरम्

: २१७ :

सीकर, ११-११-४१

पूज्यश्री,

पत्र राधाकृष्ण को पढ़ा दिया है। मांजी को मैंने रास्ते में कह दिया था कि रोज़ उनको आपकी तरफ से प्रणाम करना है, सो वह रोज़ मुझे याद करा देवें। सो रोज़ कह देती हैं—जमनाधर को और तुझे दोनों को आशीष। तब मैं प्रणाम कर लेती हूं। आज अब और कह दूंगी।

महेश आपके पास आ जाय तो अच्छा। अब उसका मन भी ऊब गया है। सो राधाकिसन के आने तक उसे ले आओ, तो उसका भी मन हलका हो जाय। खाना तो वह संभाल ही सकता है।

मुझे रोना आया करता था सो वह तो अब गया। नींद भी निश्चिंत आ जाती है। और बातों के लिए तो पहले का पुण्य कहीं से खोदकर निकालना पड़ेगा। पर भगवान की दया ज़बरदस्त है, सो कुछ काम आवेगी ही। कुछ करना चाहिए, इतना जंचता है। उत्साह भी आ जायगा, यह बड़ी आशा है। मेरा मन प्रसन्न है।

बापूजी के नाम का पत्र ठीक समझो तो दिखा देना, वरना नहीं।

जानकी का प्रणाम

: २१८ :

वर्धा

१७-११-४१

प्रिय जानकी,

तुम्हारा ११-११ का पत्र मिला। मां तुम्हें रोज़ आशीर्वाद देकर प्रणाम की याद दिला देती हैं सो एक प्रकार से ठीक ही है। महेश का आना अभी संभव नहीं होगा। यहां ज़रूरत भी नहीं है। चि० गोपी व विट्ठल तो मेरे पास हैं ही। रिषभदास, बंग वगैरा भी घूमते-फिरते रहते ही हैं। चि० शांता, श्रीमन भी साथ हो जाते हैं। ठीक चल रहा है। मन में शांति व समाधान बढ़ता जा रहा है। गो-सेवा के कार्य में ठीक मन लगता जा रहा है, यह अच्छी निशानी है। बंगले के प्रायः दो चक्कर हो जाते हैं। चि० मदू व बच्चा खुश हैं। कमला व ओम् भी हँसती-हँसाती रहती हैं। उसके आस-पास आनंदी वातावरण दिखाई देता है। कल हम सब एलाकेली हुड्डा पार्टी में गये थे। चि० कमल, सावित्री, कमला, अनसूया, पूरा महिलाश्रम, बजाजवाड़ी व दूकान के लोग भी थे। ठीक रहा। तुम्हारी भी कम-से-कम ऐसे मौके पर तो याद आ ही जाती है।

खुरशीद बहन १०-१२ रोज से व मृदुला ५-७ रोज से बंगले पर ही हैं। खुरशीद तो मदू के साथ ठीक बैठती है। तुम अगर आनंद में रहने लग

जाओ तो मेरी तो समझ है, सारे घर-भर में चारों तरफ अब आनंद-ही-आनंद दिखाई देने लग जायगा। मुझे लगता है कि ऐसा हो जायगा। राधा के विवाह के बाद ही काशी का गोपुरी आना ठीक रहेगा। मदू के पास ज़रूरत होगी तो वहां रह जायगी। चिंता का कारण नहीं। शायद पू० विनोबा व राम एक बार तो तुम्हारे आने के पहले छूटकर आ जाते दिखते हैं।

जमनालाल का वंदेमातरम्

: २१९ :

सीकर, २२-११-४१

पूज्यश्री,

पत्र पढ़ा। समाचार जाने। मदालसा का गाड़ा प्रसन्नता से चले, बस। आपकी तरफ से भी निर्भयतारूपी जीवनदान मिल ही गया। अब आप आनन्द से विचरो। मैं भी रोज़ ही आपको याद आये बिना थोड़ी ही रहूंगी? मुझे आपको कुरेदे बिना चैन नहीं पड़ती और आपके जप में विघ्न पड़े बिना नहीं रहता! बस, यही मौज है। सो भी भगवान की दया ही है।

जानकी का प्रणाम

: २२० :

गोपुरी, वर्धा
२७-११-४१

प्रिय जानकी,

तुम्हारा छोटा-सा पत्र मिल गया। चि० राधाकिसन के साथ ही आना ठीक रहेगा, क्योंकि चि० कमला को बंबई व ओम् को शायद एक विवाह में जाना पड़े। मेरा गाड़ा तो रास्ते लग गया दिखता है, इससे मन में समाधान व उत्साह है। गोपुरी की झोंपड़ी ठीक जगह व ठीक मौके पर बन गई है। इसमें तो अकेले का मन भी लग सकता है। फिर मेरे साथ तो गोपी व विट्ठल भी हैं। घूमने-फिरने के समय अच्छा दल-बल हो जाता है। महेश भी बीच-बीच में आता रहता है। बीच में दो-तीन रोज़ एक योगी आ गये थे। वह गो-सेवा से काफी प्रेम रखते थे, भजन भी गाया करते थे। अब तो गोपुरी में ही रिषभदास, गोपी वग़ैरा मिलकर भोजन एक वक्त बनाया करेंगे।

चि० शांता ने मेथी थोड़ी-सी बना दी थी वह कल पूरी हो जायगी। उसके बाद कल मां के बनाये हुए लड्डू भी आ जायंगे। दो-तीन रोज़ वह भी खा देखूंगा। मेथी खाना तो ठीक है, पर पथ्य बहुत कड़क मालूम देता है। संतरे, मोसंबी, टमाटर, दही, नींबू, खटाई सब बंद रखना पड़ता है। केले, सीताफल भी। खैर, १०-१५ रोज़ की सज़ा है, सो भुगत ली जायगी। पू० मां को कह देना। तुम्हारा नाम तो प्रायः बहुत-से छापों में सीकर जाते ही छप गया है। चि० मदू, बेबी राज़ी हैं। श्री दयावती बहन आकर ६-७ रोज़ रह गई थी, आज गई है। जैसा उसका नाम है वैसी ही मालूम देती है।

जमनालाल का वंदेमातरम्

: २२१ :

गोपुरी, वर्धा,
१९-१२-४१

प्रिय जानकी,

यहां सब ठीक चल रहा है। चि० मदू व राम परसों मेरे साथ भोजन करने यहां मेरी झोंपड़ी (महल) में आये थे। एक रोज़ शांताबाई के पास गये थे। मदू, बेबी खुश हैं। अब तो कमला व ओम् की कलकत्ते की कुछ मित्र-मंडली का यहां आना संभव हो रहा है। गांव में मकान देखना शुरू है। इन दिनों पू० विनोबा के प्रवचन बहुत ही भावपूर्ण हो रहे हैं। सुरगांव में भी ठीक संघटन जम रहा है। चि० कमल, सावित्री कलकत्ते पहुंच गये होंगे। संभव है, इधर जल्दी ही आ जावें। तुम्हारा पू० मां को लेकर यहां किस तारीख तक पहुंचने का विचार है? मेरा ठीक चल रहा है। मन को ठीक शांति व उत्साह मिल रहा है। परमात्मा ने किया तो अब भविष्य उज्ज्वल दिखाई देने लग गया है। लड़ाई के कारण कलकत्ते वग़ैरा की ओर घबराहट बढ़ती जा रही है।

पू० मां को प्रणाम, चि० गुलाबबाई, डेडराजजी, हरगोविंद को आशीर्वाद।

जमनालाल का वंदेमातरम्

# परिशिष्ट

## जमनालालजी बजाज के जीवन से संबंधित कुछ महत्त्वपूर्ण तिथियां

| | |
|---|---|
| ४ नवंबर, १८८९ | कासी का वास (राजस्थान) में जन्म। |
| जून, १८९४ | गोद आये; वर्धा रहने लगे। |
| १ फरवरी, १८९६ | विद्यारंभ। |
| ३१ मार्च, १९०० | स्कूल छोड़ा। |
| मई, १९०२ | जानकीदेवी से विवाह। |
| १९०६ | कलकत्ता-कांग्रेस में भाग लिया। |
| दिसंबर, १९०८ | आनरेरी मजिस्ट्रेट बने। |
| १९१० | समाज-सुधारार्थ मारवाड़ का भ्रमण। |
| १९१२ | मारवाड़ी हाई स्कूल की स्थापना। |
| १९१५ | मारवाड़ी शिक्षा-मंडल की स्थापना; महात्मा गांधी से परिचय और संपर्क। |
| १९१७ | राजनैतिक जीवन में प्रवेश; रायबहादुरी की उपाधि मिली। |
| १९१८ | राजस्थान-केसरी का संचालन। |
| १९२० | महात्मा गांधी के पांचवें पुत्र बने; नागपुर-कांग्रेस के स्वागताध्यक्ष तथा कांग्रेस के कोषाध्यक्ष। |
| १९२१ | असहयोग-आंदोलन में पूर्ण सक्रियता। |
| ९ अप्रैल, १९२१ | सत्याग्रहाश्रम, वर्धा की स्थापना; विनोबाजी का वर्धा-आगमन; रायबहादुरी लौटा दी। |
| अगस्त, १९२१ | 'हिन्दी-नवजीवन' का प्रकाशन। |
| १९२३ | अखिल भारतीय खादी-मंडल के सभापति; गांधी-सेवा-संघ की स्थापना। |
| १३ अप्रैल, १९२३ | नागपुर में झंडा-सत्याग्रह का संचालन। |

| | |
|---|---|
| १७ जून, १९२३ | नागपुर में गिरफ्तारी । |
| १० जुलाई, १९२३ | डेढ़ वर्ष की क़ैद और तीन हज़ार रुपये के जुर्माने की सज़ा । |
| ३ सितंबर, १९२३ | नागपुर-जेल से रिहा । |
| १९२५ | चरखा-संघ के कोषाध्यक्ष; 'सस्ता साहित्य मण्डल' की स्थापना । |
| जनवरी, १९२६ | साबरमती-आश्रम में बापू की उपस्थिति में कमला-बाई का विवाह । |
| १९२६ | अग्रवाल महासभा, दिल्ली-अधिवेशन के सभापति । |
| १९२८ | वर्धा का निजी लक्ष्मीनारायण-मंदिर हरिजनों के लिए खुला किया । |
| १९२९ | हिन्दी-प्रचार के लिए दक्षिण-यात्रा । |
| १९३० | नमक-सत्याग्रह में विलेपार्ले छावनी की स्थापना । |
| ७ अप्रैल, १९३० | गिरफ्तार; २ वर्ष सख्त क़ैद और ३०० रुपयें जुर्माने की सज़ा । |
| २६ जनवरी, १९३१ | नासिक-जेल से रिहा । |
| १४ मार्च, १९३२ | बम्बई में गिरफ्तार; १ वर्ष का सपरिश्रम कारावास तथा ५००) जुर्माने की सज़ा, 'सी' वर्ग के क़ैदी । |
| १५ मार्च, १९३२ | वीसापुर-जेल में । |
| २५ मार्च, १९३२ | धूलिया-जेल में । |
| २६ नवबंर, १९३२ | यरवदा सैंट्रल जेल में । |
| २५ मार्च, १९३३ | यरवदा-मंदिर से बम्बई आर्थर रोड जेल में । |
| ५ अप्रैल, १९३३ | बम्बई-जेल से रिहाई । |
| १९३४ | बापू को वर्धा में बसाया । |
| १९३४ | कांग्रेस के कार्यकारी अध्यक्ष । |
| १९३७ | हिंदी साहित्य सम्मेलन, मद्रास-अधिवेशन के सभापति |
| १९३८ | जयपुर राज्य प्रजा-मंडल के अध्यक्ष; महर्षि रमण के साथ वार्त्तालाप; योगिराज अरविंद के दर्शन । |

| | |
|---|---|
| २९ दिसंबर, १९३८ | जयपुर-राज्य में प्रवेश-निषेध। |
| १ फरवरी, १९३९ | जयपुर-सरकार के हुक्म की अवज्ञा। |
| १२ फरवरी, १९३९ | जयपुर-सत्याग्रह में गिरफ्तार। |
| ९ अगस्त, १९३९ | जयपुर से रिहाई। |
| ३१ दिसंबर, १९४० | वर्धा में गिरफ्तार। |
| ३ जून, १९४१ | नागपुर-जेल से रिहाई। |
| १९४१ | मां आनन्दमयी में जगन्माता का साक्षात्कार। |
| २१ सितंबर, १९४१ | सेवाग्राम में बापूजी की सलाह से गो-सेवा के कार्य का निश्चय। |
| २२ सितंबर, १९४१ | गो-सेवा-संघ का कार्य शुरू किया। |
| ३० सितंबर, १९४१ | बापूजी के हाथों गो-सेवा-संघ का उद्घाटन; गोपुरी की स्थापना। |
| ७ नवबंर, १९४१ | गोपुरी की कच्ची झोंपड़ी में रहना शुरू किया। |
| १ फरवरी, १९४२ | वर्धा में गो-सेवा-सम्मेलन; गो-सेवा-संघ के सभापति |
| ११ फरवरी, १९४२ | वर्धा में देहावसान। |

## जमनालाल बजाज सेवा-ट्रस्ट से प्रकाशित और प्रचारित पुस्तकें

१. बापू के पत्र : संपादक—काकासाहब कालेलकर १.२५
'पांचवें पुत्र को बापू के आशीर्वाद' का संक्षिप्त संस्करण (अजिल्द)
(प्रस्तावना—डा० राजेन्द्रप्रसाद)

२. स्मरणांजली—स्व० श्री जमनालाल बजाज के संस्मरण १.५०
तथा उनके स्वर्गवास पर दी गई श्रद्धांजलियां। (अजिल्द)
संपादक-मण्डल : काका कालेलकर, हरिभाऊ उपाध्याय,
शिवाजी भावे, श्रीमन्नारायण, मार्तण्ड उपाध्याय
(प्रस्तावना—बनारसीदास चतुर्वेदी)

३. पत्र-व्यवहार (पहला भाग) संपादक—रामकृष्ण बजाज ३.००
जमनालालजी का राजनैतिक नेताओं से पत्र-व्यवहार (सजिल्द)
(प्रस्तावना—च० राजगोपालाचार्य)

४. पत्र-व्यवहार—(दूसरा भाग) संपादक—रामकृष्ण बजाज ३.००
जमनालालजी का देशी रियासतों के कार्यकर्ताओं से पत्र-व्यवहार, (सजिल्द)
(प्रस्तावना—पट्टाभि सीतारामैया)

५. पत्र-व्यवहार (तीसरा भाग) संपादक—रामकृष्ण बजाज ३.००
जमनालालजी का रचनात्मक कार्यकर्ताओं से पत्र-व्यवहार, (सजिल्द)
(प्रस्तावना—जयप्रकाश नारायण)

६. विनोबा के पत्र : संपादक—रामकृष्ण बजाज ४.००
बजाज-परिवार के नाम लिखे विनोबाजी के पत्र, (सजिल्द)
जमनालालजी की डायरी में से विनोबा-संबंधी अंश और बजाज-परिवार के सदस्यों द्वारा लिखे विनोबाजी के संस्मरण,
(प्रस्तावना—शिवाजी भावे)

७. पत्र-व्यवहार (चौथा भाग) संपादक—रामकृष्ण बजाज ३.५०
(जमनालालजी का अपनी पत्नी जानकीदेवी बजाज के साथ) (सजिल्द)
(पृष्ठभूमि—जानकीदेवी बजाज)

८. बापू-स्मरण : संपादक—रामकृष्ण बजाज (प्रेस में) जमनालालजी की डायरी में से बापू-सम्बन्धी अंश और बजाज-परिवार के सदस्यों द्वारा

लिखे बापूजी के संस्मरण। (इसे एक प्रकार से 'बापू के पत्र' का दूसरा भाग समझना चाहिए।)

## जमनालालजी-सम्बन्धी अन्य पुस्तकें

१. **पांचवें पुत्र को बापू के आशीर्वाद** : संपादक—काका कालेलकर जमनालालजी व गांधीजी का पत्र-व्यवहार : जमनालालजी की डायरी तथा पत्रों से गांधीजी-सम्बन्धी अंश तथा जमनालालजी-सम्बन्धी महात्माजी के संपर्क की अन्य सामग्री।
(प्रस्तावना—जवाहरलाल नेहरू)
जमनालाल बजाज सेवा-ट्रस्ट-प्रकाशन। (अप्राप्य)

२. **पांचमा पुत्रने बापूना आशीर्वाद** (गुजराती-संस्करण) ३.००
संपादक—काका कालेलकर; प्रस्तावना—जवाहरलाल नेहरू
(नवजीवन-ट्रस्ट, अहमदाबाद द्वारा प्रकाशित)

३. **To a Gandhian Capitalist**
Editor : Kakasahib Kalelkar
Foreword : Jawaharlal Nehru
'बापू के पत्र' का अंग्रेजी संस्करण : जमनालाल बजाज सेवा-ट्रस्ट-प्रकाशन

४. **श्रेयार्थी जमनालालजी**—लेखक हरिभाऊ उपाध्याय (प्रेस में)
श्री जमनालालजी बजाज की विस्तृत जीवनी
प्रस्तावना—डा० राजेन्द्रप्रसाद
(सस्ता साहित्य मण्डल-प्रकाशन)

५. **श्रेयार्थी जमनालालजी**—(संक्षिप्त संस्करण) (अप्राप्य)
(सस्ता साहित्य मण्डल-प्रकाशन)

६. **जमनालालजी**—घनश्यामदास बिड़ला (प्रेस में)
(जमनालालजी का चरित्र-चित्रण : सस्ता साहित्य मण्डल-प्रकाशन)

७. **जमनालाल बजाज**—लेखक स्व० रामनरेश त्रिपाठी (अप्राप्य)
(जमनालालजी की जीवनी : हिन्दी मन्दिर, इलाहाबाद का प्रकाशन)

८. **जीवन-जौहरी**—रिषभदास रांका (अप्राप्य)
(जमनालाल के जीवन-प्रसंग : भारत जैन महामंडल, वर्धा का प्रकाशन)

१०. **कृतार्थ जीवन**—लेखक दा० न० शिखरे २.००
जमनालालजी का मराठी जीवन-चरित
(जमनालाल बजाज सेवा-ट्रस्ट, वर्धा का प्रकाशन)

११. मेरी जीवन-यात्रा—जानकीदेवी बजाज २.००
जानकीदेवी बजाज की आत्मकथा
(सस्ता साहित्य मण्डल-प्रकाशन) प्रस्तावना—विनोबा

१२. माझी जीवन-यात्रा—अनुवादक बा० भ० बोरकर ३.००
जानकीदेवी बजाज की जीवन-यात्रा का मराठी-अनुवाद;
(पापुलर बुक डिपो, बंबई का प्रकाशन)

## जमनालाल बजाज सेवा-ट्रस्ट के आगामी प्रकाशन

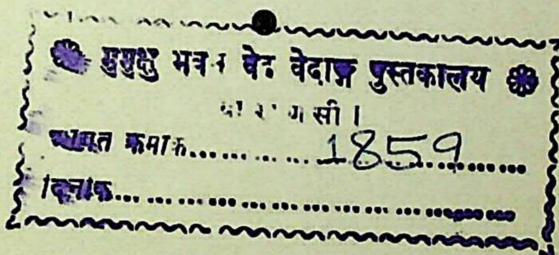
**पत्र-व्यवहार (पांचवां भाग)**
(जमनालालजी का अपने परिवार के सदस्यों से)

**पत्र-व्यवहार (छठा भाग)**
(जमनालालजी का देशी रियासतों के अधिकारियों से)

**पत्र-व्यवहार (सातवां भाग)**
(जमनालालजी का सामाजिक कार्यकर्ताओं व व्यापारियों से)

**जमनालालजी के पत्र**
जमनालालजी का विभिन्न क्षेत्रों के व्यक्तियों के साथ का चुना हुआ पत्र-व्यवहार।

**जमनालाल की डायरियां**
जमनालालजी की डायरियां राजनैतिक व ऐतिहासिक महत्व की हैं। तीन या चार भागों में इन डायरियों को प्रकाशित करने की योजना है।



## [illegible]ल [illegible]ाज-संबंधी साहित्य

[illegible] जर.

—घनश्यामदास बिड़ला

२. श्रेयार्थी जमनालालजी (संक्षिप्त)

—हरिभाऊ उपाध्याय

३. बापू के पत्र

—संपादक : काकासाहब कालेलकर

४. स्मरणांजलि

—संपादक : काकासाहब कालेलकर

५. जीवन जौहरी

—रिषभदास रांका

६. एक देश-सेवी परिवार

—विनायक कुलकर्णी

७. बापू-स्मरण

—संपादक : रामकृष्ण बजाज

८. पत्र-व्यवहार—१ : राजनैतिक नेताओं से

९. पत्र-व्यवहार—२ : रियासती कार्यकर्ताओं से

१०. पत्र-व्यवहार—३ : रचनात्मक कार्यकर्ताओं से

११. पत्र-व्यवहार—४ : जानकीदेवी बजाज के नाम

१२. विनोबा के पत्र : बजाज-परिवार के नाम

साढ़े तीन रुपये